अंक 3 : जून, 2022
चौ-मासिक, बेंगलूरु

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

लर्निंग कर्व

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

खोए हुए समय से मुक़ाबला

सम्पादन समिति

प्रेमा रघुनाथ, मुख्य सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता, सह-सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

चन्द्रिका मुरलीधर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
chandrika@azimpremjifoundation.org

निमरत खण्डपुर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org

सम्पादकीय कार्यालय
सम्पादक, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
Phone : 080-6614 4900
Fax : 080-6614 4900
Email: publications@apu.edu.in
Website: www.azimpremjiuniversity.edu.in

शोभा लोकनाथन कवूरी
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shobh.kavoori@azimpremjifoundation.org

सलाहकार
हृदय कान्त दीवान, सचिन मुले
एस. गिरिधर, सुधीश वेंकटेश, उमाशंकर पेरिओडी

प्रकाशन समन्वयक
शहनाज़ बेगम

हिन्दी अनुवाद
एकलव्य फ़ाउण्डेशन

अनुवाद पुनरीक्षण :
भरत त्रिपाठी, सुशील जोशी (एकलव्य फ़ाउण्डेशन)

कॉपी एडिटर (हिन्दी)
कविता तिवारी
अनुज उपाध्याय (एकलव्य फ़ाउण्डेशन)

हिन्दी अंक सम्पादन
राजेश उत्साही

आवरण चित्र
अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़
चित्र सौजन्य : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

डिज़ाइन
Banyan Tree
98458 64765

हिन्दी अंक लेआउट एवं मुद्रक
आदर्श प्रा.लि. भोपाल
+91-755-2555442

कृपया ध्यान दें :
इस अंक में प्रकाशित लेख मूलतः अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व (अँग्रेज़ी) अंक 11, दिसम्बर, 2021 के लेखों के हिन्दी अनुवाद हैं। लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'' अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का एक प्रकाशन है। इसका उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-अध्यापकों, स्कूल प्रमुख, शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और गैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे प्रासंगिक और विषयगत मुद्दों में पहुँच बनाना है जो उनके रोजमर्रा के काम से सम्बन्धित हैं। लर्निंग कर्व शैक्षिक जगत के विभिन्न दृष्टिकोणों, अभिव्यक्तियों, परिप्रेक्ष्यों, नई जानकारियों और नवाचार की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका मूल विचार 'शैक्षणिक' और 'अभ्यासकर्ता' के मध्य सन्तुलन हेतु उन्मुख पत्रिका के रूप में स्थापित होना है।''

सम्पादक की ओर से

एक पुरानी कहावत के अनुसार समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते और यह बात जितनी बच्चों के लिए सही है, शायद और किसी के लिए नहीं। उनके दिन का हर मिनिट उनके आसपास के संसार को समझने में समर्पित होता है और उनके इस 'अभियान' में, कुछ ऐसे पक्ष होते हैं जो उन सूचनाओं को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं, जिनकी बमबारी बच्चों पर हर तरफ़ से होती है। इनमें स्वाभाविक रूप से माता-पिता, फिर शिक्षक और एक विशाल ढाँचा शामिल होता है, जिसे स्कूल कहा जाता है। इन सबका तब तक सही मूल्यांकन नहीं किया गया था, जब तक कि *कोविड-19* ने सम्पूर्ण विश्व पर अपना शिकंजा नहीं कस दिया था। इसने जीवन, सभी ज्ञात पेशों, जीवन जीने के तरीक़ों और संगठनों, जैसे कि शैक्षणिक संस्थानों को बदल कर रख दिया। इसके नतीजतन सुरक्षित रहने के लिए शुरू हुए संघर्षों में पहले मार्च 2020 में स्कूलों को बन्द कर दिया गया, ताकि इस संक्रमण को नियंत्रित किया जा सके। कोई नहीं जान सकता था कि यह बवण्डर लगभग दो साल तक चलेगा और इसमें लाखों लोगों की मृत्यु हो जाएगी। इतना ही नहीं, अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के जीवन में व्याप्त हुए भय, आघात और जीवन को परिवर्तित कर देने वाले बदलाव (जैसे मृत्यु, प्रवास, रोज़गार की क्षति) अभी भी कइयों को परेशान करते रहते हैं।

व्यावहारिक स्तर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों को अपने आपको नई परिस्थितियों के हिसाब से ढालना पड़ा; शिक्षकों को उनकी शैक्षणिक पद्धतियों में और विद्यार्थियों को उनकी सीखने की क्षमताओं में। रातों-रात, सब कुछ डिजिटल हो गया — स्मार्टफ़ोन, कम्प्यूटर और टीवी स्क्रीन मुद्रित पृष्ठ बन गए और आगे बढ़ने के साथ सभी लोग सीखते चले गए। हालाँकि, हमारे देश में डिजिटल विभाजन की व्यापकता इतनी ज़्यादा है कि उसे अनदेखा करना बहुत मुश्किल है और कुछ महीनों के अन्तराल के बाद यह स्पष्ट हो गया था कि कुछ क्रियाकलाप रूबरू भी होने पड़ेंगे। इसलिए मोहल्ला स्कूल और व्यक्तिगत रूप से वर्कशीट पहुँचाने जैसे प्रयास हुए जिन्होंने कुछ दरारों को पाटा। लेकिन हर बीतते महीने के साथ यह स्पष्ट होता गया कि ये प्रयास कभी भी भौतिक रूप से लगने वाले उन स्कूलों का स्थान नहीं ले सकते जिनमें न जाने कितने स्तरों पर कितने तरह के मेलजोल और संवादों को जगह मिलती है।

ऊँचे दर्जों की कक्षाओं के लिए स्कूलों के फिर से खुलने के साथ ही अब हम सजगता भरी उम्मीद की स्थिति में पहुँच गए हैं। प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा और बुनियादी भाषा व गणितीय कौशल हासिल करने के दो महत्त्वपूर्ण वर्ष समय की गर्त में चले गए हैं। अधिकांश बच्चे शायद वह सब भूल भी गए हैं जो उन्हें *कोविड-19* के आने के पहले तक पता था। शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों ने स्कूलों में बच्चों को सामान्य स्थिति की लय में लौटने के लिए सहयोग करने के साथ-साथ पढ़ाई के पुनः शुरू होने के लिए कैसे तैयारी की है? लर्निंग कर्व का यह अंक उन प्रश्नों को समर्पित है जो सभी के द्वारा पूछे जा रहे हैं : स्कूल में लौटने पर प्राथमिक स्कूल के बच्चों के सामने निस्सन्देह आने वाली समायोजन की कठिनाइयों को कम करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

हमारे पास कुछ ऐसे लेख हैं जो बच्चों को बीते दो सालों की नकारात्मकता से उबारने की प्रक्रिया में कला और संगीत के महत्त्व पर ज़ोर देते हैं। कुछ लेख हैं जो कहानी सुनाने जैसी 'साधारण' गतिविधियों के साथ भागीदारी का एक ऐसा उत्साहपूर्ण वातावरण बनाने की बात करते

हैं, जिसमें सभी को दोस्ती और अपनेपन के दायरे में शामिल किया जा सकता है। हमारे पास, संक्रमण से बचाव और बच्चों को स्वस्थ रखने में पोषण की भूमिका पर एक विशेषज्ञ की राय उपलब्ध है। एक अन्य लेख हमें स्कूलों के फिर से खुलने के बाद सतर्क रहने और आवश्यक स्वास्थ्य सम्बन्धित नियमों के पालन करने की महती आवश्यकता के बारे में बताता है। एक अन्य लेख से हमें इस बात का विवरण मिलता है कि महामारी ने समाज में मौजूद विभाजनों को पूरी तरह से उघाड़कर जगजाहिर करते हुए ग़ैर-चिकित्सकीय तरीक़ों से समाज पर क्या असर डाला। हमेशा की तरह, *आवाज़ें* खण्ड लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों एवं कक्षाओं में पुनः दाखिल होने से जुड़ी योजनाओं का लेखा-जोखा है। शिक्षकों और अभिभावकों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई जानकारियों के साथ कुछ स्रोत सामग्री भी इसमें शामिल हैं।

सबसे ज़्यादा ख़ुशी की बात यह है कि दुनिया भर में इतनी तबाही मचाने वाला यह भयानक वायरस मनुष्य के जीवट को नहीं कुचल पाया है, जो इस अंक में हर जगह अपनी मज़बूती, नवाचार और गिरकर उठने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। साथ ही यह अपने बच्चों के विकास और प्रगति के माध्यम से उनके जीवन को पुनः व्यवस्थित करने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। साथ ही, यह पहले तो स्कूलों के बन्द होने का अभ्यस्त होकर और अब उनके फिर से शुरू होने का वैज्ञानिक और मानवतावादी दोनों तरीक़ों से स्वागत करके अपने बच्चों के जीवन को विकास और प्रगति के माध्यम से एक बार फिर व्यवस्थित करने की क्षमता भी दिखाता है।

कृपया अपनी टिप्पणियों और विचारों के साथ हमें लिखें।

प्रेमा रघुनाथ
सम्पादक
prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

अनुवाद : चेतन जैन

इस अंक में

न्यू नॉर्मल की परिभाषा 01
हृदय कान्त दीवान

बच्चों के स्कूल लौटने पर उनके सीखने के प्रति एक समग्र नज़रिया 06
जेन साही

सामाजिक दायरे के तौर पर स्कूलों को नया आकार देना 12
सुबीर शुक्ला

स्कूलों को दोबारा खोलना : पुनरुत्थान का अवसर 17
टुलटुल बिस्वास

स्कूलों के पुनः खुलने पर शिक्षकों के सामने क्या चुनौतियाँ होंगी 22
विमला रामचन्द्रन

स्कूल दुबारा खुलने के बाद शिक्षण-अधिगम : एक नैदानिक दृष्टिकोण 26
आँचल चोमल व शिल्पी बनर्जी

सामुदायिक कक्षाओं के ज़रिए प्रभावी प्रक्रियाओं को क़ायम रखना 32
दुर्गेश कुमार मानेराव

पुस्तकों से बहाली : एक पुस्तकालय परियोजना 35
लक्ष्मी करुणाकरण

वायरस के संग जीना 38
डॉ मधुमिता दोबे

आवाज़ें

बुनियादी संख्या ज्ञान : चुनौतियाँ और रणनीतियाँ 43
अर्धेन्दु शेखर दास

लॉकडाउन से अनलॉक तक : असरदार वर्कशीट 48
लोविस साइमन

स्कूलों को दोबारा खोलने में समुदाय को संलग्न करना 52
मोहम्मद अली रिज़वी

योजना बनाने का समय अब है 54
नवलेश कुमार

बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय शिक्षण आगे बढ़ने का तरीक़ा है 57
निकेत सागर

सीखे गए सबक़ : अज़ीम प्रेमजी स्कूलों से 60
पल्लवी चतुर्वेदी

सामुदायिक अधिगम समूहों का जारी रहना ज़रूरी है 63
राघवेन्द्र बी टी

इस अंक में

कला : विद्यार्थियों को स्कूल से फिर से जोड़ने के लिए 66
रुचि कोटनाला

ख़ुद से सीखने को प्रोत्साहन देना : सरकार, स्कूल और परिवार की भूमिका 70
सज्जन कुमार चौधरी

कोविड के बाद स्कूलों में सामाजिक मेलजोल और संवाद 72
सारिया अली

प्रत्याशित चुनौतियाँ और कुछ समाधान 74
विपिन कुमार

अभिव्यक्ति को सुलभ बनाने के लिए कला-एकीकृत पाठ 76
विश्वनाथ

विद्यार्थियों से जुड़ाव के अर्थपूर्ण तरीक़ों को बनाए रखना 79
मालविका राजनारायण और जितेन्द्र शर्मा

बुनियादी अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना ज़रूरी है 85
नन्दिनी शेट्टी

स्तर-उपयुक्त सीखने के लिए क्षमता-वार समूहीकरण 89
नवनीत बेदार

अशान्त दौर : कोविड-19 का मनोवैज्ञानिक प्रभाव 94
रवि कुमार

बच्चों का स्वास्थ्य और पोषण : कोविड-19 के प्रभाव को कम करना 97
श्रीलता राव शेषाद्री

स्कूल की सीखने की संस्कृति की तरफ़ चरणबद्ध वापसी 101
श्रीकान्त श्रीधरन

सीआरसी | बीआरसी | डाइट की बदली हुई भूमिका 105
शुचि दुबे

आँगनवाड़ियों को पुन: खोलना : शिक्षकों को क्या करना चाहिए 109
योगेश जी आर

कोरोना वायरस के बारे में बच्चों से बातचीत : कुछ स्रोत 113
शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता

स्कूल बन्द रहने के सभी सन्दर्भ लेख लिखे जाने के समय तक की अवधि के हैं।

न्यू नॉर्मल की परिभाषा

हृदय कान्त दीवान

पहले तो इस बात पर विचार करना ज़रूरी है कि 'न्यू नॉर्मल' या नई सामान्य अवस्था के बारे में बात करनी चाहिए भी या नहीं। वैसे तो हमारा यह सोचना उचित हो सकता है कि भले ही *कोविड-19* की स्थिति लम्बे समय से खिंच रही है पर फिर भी अस्थाई ही है और अन्ततः समाप्त हो जाएगी जिसके बाद स्कूल अपनी पहले की स्थिति में वापस आ जाएँगे। पर यह सोच पिछले डेढ़ साल में हुए गहन अनुभवों और उनसे जन्मे संवादों को ध्यान में नहीं रख पाती जिन्होंने स्कूलों और शिक्षा, दोनों को नई दिशाओं में मोड़ दिया है। सुझाव आ रहे हैं कि टेक्नोलॉजी का अधिक इस्तेमाल किया जाए और ऐसे शिक्षा तंत्र का रुख किया जाए जो टेक्नोलॉजी से ज़्यादा जुड़ा हो। ऐसे सुझाव भी आए हैं कि उन विद्यार्थियों को, जो उन्नत अधिगम (advanced learning) के लिए प्रयासरत हैं, उन विद्यार्थियों से अलग कर देना चाहिए जो सीखने या अधिगम के कुछ बुनियादी अंशों यानी न्यूनतम आवश्यकता से ही सन्तुष्ट हो जाएँगे। ये और ऐसे कई दूसरे कारक हैं, जिनके कारण हमें 'न्यू नॉर्मल' के बारे में बात करनी ही चाहिए ताकि हम इस बहाव, बदलाव, सांविधानिक प्रतिबद्धताओं को सुनिश्चित करने के संघर्षों और उन्हें बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को लेकर जागरूक रह सकें। एक समाज के रूप में हम जो दबाव महसूस करते प्रतीत हो रहे हैं, बढ़ती असमानताओं के कारण जो कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं और हमारे रहने व संसाधनों का इस्तेमाल करने के तरीक़ों की जो अस्थाई प्रकृति है — इन सब वजहों से भी हमें न्यू नॉर्मल के बारे में सोचना ही चाहिए। और हमें यह एहसास भी हो सकता है कि इस न्यू नॉर्मल की मूल बातें सार्वजनिक चर्चा में एक लम्बे समय से मौजूद हैं और बस कुछ मूलभूत सिद्धान्त ही हैं जिन्हें वर्तमान समय के सन्दर्भ में वापस से दोहराया जा रहा है।

कोविड-19 का अनुभव कई अलग-अलग तरीक़ों से तबाही वाला रहा है। यह अभी ख़त्म नहीं हुआ है और यह स्पष्ट नहीं है कि हम इससे पूरी तरह से छुटकारा कब तक पा पाएँगे या पाएँगे भी कि नहीं। यह घट तो रहा है, लेकिन इसके वापस लौटने का डर बना हुआ है और इस डर ने हमें कुछ अपरिचित तरीक़ों से बदल दिया है। जहाँ हम सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सम्मेलनों को अपरिहार्य मानकर देखते हैं, वहीं स्कूलों के खुलने का विषय पीछे ही छूटा हुआ है। कई जगहों पर बच्चे जोखिम उठाते हुए पहले से ज़्यादा बाहर निकलने लगे हैं। आपको मैदानों में खेलते हुए बच्चों और युवाओं की बड़ी संख्या दिख सकती है। पर कई लोगों के पास यह मौक़ा नहीं है, वे बहुत ही सीमित बाहरी मेलजोल के साथ अपने घर में रहने को विवश हैं। बच्चों और उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में हमारे सामने कई सवाल और काफ़ी कम चुनाव और विकल्प हैं। पिछला डेढ़ साल एक अलग अनुभव रहा है। बच्चों को तनावों का सामना करना पड़ा है और कइयों को अत्यधिक तंगी, विस्थापन और उससे भी बदतर यानी परिवार में बीमारी या मौत तक का सामना करना पड़ा है। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि पिछले साल के अनुभव ने उन पर क्या प्रभाव डाले हैं और जब तक सामान्यता का आभास नहीं लौटने लगता, तब तक पता नहीं और कौन-सी स्थितियाँ सामने आएँगी। यह कहना भी मुश्किल है कि उन ढेर सारे बच्चों पर इस महामारी का क्या स्थाई असर होगा जिनके परिवार हमेशा से ही संघर्ष करते आए हैं।

इसी समझ के साथ हमें उस आने वाली पीढ़ी के विकास की राह के बारे में सोचना चाहिए, जो कि भविष्य को बसाएगी और सम्भालेगी भी। यह राह होनी चाहिए उनकी शिक्षा की, उन्हें उनके बचपन को फिर से खोजने में मदद करने की, घबराहट के भाव को कम करने की और उन्हें उनके संज्ञानात्मक कौशल व ज्ञानाधार को इस तरह बनाने में मदद करने की कि वे अपने जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना कर पाएँ और इस तरह सशक्त हो सकें जो सबके लिए फ़ायदेमन्द हो, पर्यावरण और धरती समेत।

वैश्विक महामारी के बीच जीना

इस वैश्विक महामारी के दौरान बच्चों तक पहुँचने और उनके साथ जुड़ने के लिए कई तरह के अलग-अलग प्रयास किए गए थे। कार्यक्रमों के इस विस्तार में कई लिहाज़ों से अलग-अलग केन्द्र-बिन्दु थे जैसे — उन बच्चों के सन्दर्भ में जिन तक पहुँचने के प्रयास किए गए और पहुँचा जा सका, उन तरीक़ों के सन्दर्भ में जिनके द्वारा उन तक पहुँचा गया और उस विषयवस्तु के सन्दर्भ में जिसके सहारे उन तक पहुँचा गया।

जब हम धीरे-धीरे एक ऐसी स्थिति की तरफ़ लौटने की उम्मीद करते हैं जहाँ *कोविड-19* का डर कुछ हद तक या काफ़ी हद तक कम हो जाएगा और हम उस दुनिया के बारे में सोचते हैं

जो हम बनाएँगे, तो हमें बच्चों को और संविधान की प्रस्तावना में हमारे द्वारा किए गए संकल्पों को ध्यान में रखना होगा। इन दोनों ही के बारे में हम आसानी से भूल सकते हैं क्योंकि रोज़ी-रोटी की चुनौतियाँ और स्वास्थ्य से जुड़ी निरन्तर चिन्ताएँ हमें अभी भी सता रही हैं। यह पूर्वानुमान लगाना सुरक्षित होगा कि दुनिया कम-से-कम मध्यम से लघु अवधि (यानी कुछ पीढ़ियों तक) में तो पहली लहर के पूर्व के दिनों में शायद नहीं लौटेगी। तो समायोजन के नए मानदण्ड और नए तरीक़े विकसित होंगे। इस 'नॉर्मल' (सामान्य अवस्था) के तत्व क्या होने चाहिए और इसमें बच्चों की शिक्षा के लिए ही नहीं बल्कि उनकी ज़िन्दगी के लिए क्या बातें शामिल होनी चाहिए?

निश्चित रूप से, हमें यह एहसास तो है कि पिछले एक साल या और अधिक समय (यह अवधि बढ़ भी सकती है) से स्कूल नहीं जा पाए बच्चे उन चीज़ों को भी भूल गए हैं जो उन्हें पता थीं। ऐसे अध्ययन हैं जो दर्शाते हैं कि इस वैश्विक महामारी के दौरान, स्कूल में जो कुछ भी ज़रूरी और प्रासंगिक माना जाता है उसके सीखने के स्तरों में बच्चों में महत्त्वपूर्ण गिरावट आई है। जिस तरह से स्कूल सीखने को लेकर व्यवहार करते आए हैं यानी 'ज्ञान' का नाम देकर केवल जानकारियों के टुकड़े सौंप देना, यह साफ़ कर देने की ज़रूरत है कि बच्चे जिन स्तरों तक पहुँच चुके थे, उसमें आई स्पष्ट गिरावट से हम कैसे निपटना चाहते हैं।

इस दौरान बच्चों के साथ काम करने की जो बहुत-सी कोशिशें हुईं उनमें से एक कोशिश टेक्नोलॉजी को एक प्रमुख वाहन के रूप में उपयोग करने की रही है। टेक्नोलॉजी तक पहुँच न बना पाने वाले बच्चों के लिए मोहल्ला कक्षाएँ शुरू करने के प्रयास कहीं-कहीं ही हुए और मुख्य रूप से ये कुछ ग़ैर-सरकारी शिक्षा संस्थाओं द्वारा किए गए थे। ज़्यादा ध्यान तो टेक्नोलॉजी द्वारा संचालित कार्यक्रमों पर ही था और बच्चों के लिए सॉफ्टवेयर बनाने वाले विभिन्न चैनल और संगठन इस दौर में ख़ूब फले-फूले। चूँकि ये सब बाज़ार द्वारा संचलित थे तो स्पष्टतः इनका लक्ष्य अभिजात्य वर्ग था और उनकी रुचियों व अनुभव इनमें प्रतिबिम्बित हो रहे थे।

पृष्ठभूमि

बच्चों की लम्बी-लम्बी दूरियाँ तय करने वाली मर्मभेदी छवियाँ पहले ही भुलाई जा चुकी हैं। वृहत्तर विमर्श में इस तथ्य पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा कि कई बच्चों को उन सदमों से बाहर निकलने में लम्बा समय लगेगा जिनसे वे गुज़रे हैं। बहुत-से बच्चों का पता लगाकर और उन्हें बचाकर स्कूल में वापस लाना होगा। स्कूल, बच्चों और उनके सीखने की अब कभी-कभार बात होती है। स्कूल फिर से खोलने को लेकर जो मुख्य चिन्ता है वह इस बात की है कि बच्चों ने पर्याप्त सीखा नहीं है और कुछ ऐसा रास्ता सोचने की ज़रूरत है जिससे जो सीखना था उसे कम-से-कम समय में और जल्दी-से-जल्दी पूरा किया जा सके। लेकिन इससे पहले कि हम उस गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, पढ़ने और लिखने के बारे में सोचें जिसे बच्चों ने अपनी पाठ्यपुस्तकों से खोया है, हमें ऐसी कई और ज़रूरी चीज़ों के बारे में सोचना चाहिए जो बच्चों ने खोई हैं। हो सकता है कि उन्होंने बहुत-सी चीज़ें खोई हों और बहुत गहन अनुभव प्राप्त किए हों। अब सवाल यह है कि स्कूल और समाज इस बारे में क्या करने वाला है? चूँकि आजीविकाओं में कोई सुधार नहीं हुआ है और महामारी बनी हुई है, इसलिए बच्चों के लिए कई वास्तविकताएँ बदतर हो गई हैं। जो स्थिति पहले थी वह स्वीकार्य नहीं थी और उसने आर्थिक व सामाजिक तौर से कमज़ोर तबक़ों के बच्चों को न सिर्फ़ नुक़सान पहुँचाया बल्कि उन्हें शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाने की कगार पर ला दिया और ऐसे लगभग सभी बच्चे अपनी शिक्षा के किसी-न-किसी चरण में इस स्थिति से गुज़र चुके हैं। हमें यह ध्यान में रखने की ज़रूरत है कि अब तो ये सम्भावनाएँ भी इनमें से कई परिवारों और बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं होंगी। महामारी के बाद की शिक्षा के भविष्य के बारे में सोचने की प्रक्रियाओं में इन चिन्ताओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

महामारी के दौरान शिक्षा के अनुभवों के विश्लेषण से हमें इस बारे में सोचने में मदद मिलनी चाहिए कि 'न्यू नॉर्मल' क्या होना चाहिए। शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक असमानता और एकतरफ़ा प्राथमिकताओं से ग्रसित रही है। इस व्यवस्था की संस्कृति और दिशा अत्याधिक चिन्तित अभिभावकों के एक समूह की व्याकुलताओं के द्वारा नियंत्रित रही है। ये अभिभावक व्यवस्था और अपने बच्चों, दोनों पर ही दबाव बनाते हैं, बच्चों को प्रतिस्पर्धा करने के लिए उकसाते हैं, उन्हें सीखने और सफल होने के लिए हर तरह की सामग्री व साधन उपलब्ध कराते हैं और यह अपेक्षा करते है कि बच्चे तेज़ और बड़ी उपलब्धियों के साथ उल्लेखनीय नतीजे देंगे। वे ऐसी अपेक्षाओं के लिए सारे संसाधन जुटाने में समर्थ होते हैं जो अधिकांश दूसरे लोगों के लिए प्राप्त करना मुश्किल होती हैं। एक अत्यधिक स्तरीकृत शिक्षा व्यवस्था में, अलग-अलग बच्चों को प्राप्त विविध तरह की सुविधाएँ, उन बच्चों के सीखने के मौक़ों को भी काफ़ी अलग-अलग बना देती हैं। सीमित साधनों वाले बच्चे जिस बाधा के साथ शुरुआत करते हैं, उसमें वे ख़ुद को घिरा हुआ महसूस करते हैं और घबरा जाते हैं। ऐसे ज़्यादातर मामलों में, इन बच्चों के अभिभावकों के पास समय, संसाधन, चाह के साथ ही यह आत्मविश्वास भी नहीं होता कि उनके बच्चे सीखने में

आ रही बाधाओं को पार कर सकते हैं या वे अपनी शिक्षा का उपयोग कर सकते हैं।

हक़ीक़त यह है कि बजाय इसके कि स्कूलों में विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों को एक साथ लाया जाए ताकि उनका आपसी संवाद व मेलजोल हो और वे एक-दूसरे की ज़िन्दगियों के बारे में जान सकें और उनमें से कुछ जिस स्थिति में जी रहे हैं, उससे समानुभूति महसूस कर पाएँ, हमने स्तरीकृत स्कूल बना रखे हैं जिनमें से बहुत-से ऐसे हैं जिनके भीतर पृथकता और बढ़ती जा रही है। स्कूलों में एक और तरह का पृथक्करण उभरकर आ रहा है, जिसके पीछे व्यवस्था की उन बच्चों को वर्गीकृत और श्रेणीबद्ध करने की इच्छा है जो बाक़ी बच्चों की तुलना में उच्च क्षमता के सोचने के कौशल विकसित करने के क़ाबिल हों।

इस तरह जिन बच्चों को वर्गीकृत किया गया है, उन्हें भिन्न पाठ्यचर्याओं द्वारा पढ़ाया जाएगा और इस कारण से कई बच्चे सीमित महत्त्वाकांक्षाएँ ही रख पाएँगे। यह एक तरीक़े से व्यवस्था की नीयत (जो ज़मीन पर पहले से मौजूद है) की औपचारिक पुष्टि है। इसका मतलब है कि अब बच्चों को उच्च-प्राथमिक स्तर पर भी अलग किया जा सकता है, जिनमें एक तरफ़ वे होंगे जो 'हल्की' पाठ्यचर्या के तहत पढ़ेंगे और बाद में व्यावहारिक विशेषताओं व कौशल विकास कार्यक्रमों की ओर बढ़ जाएँगे, वहीं दूसरी तरफ़ वे बच्चे होंगे जो 'शैक्षिक' पाठ्यचर्या के तहत पढ़ेंगे ताकि उच्च शिक्षा के लिए प्रयास कर पाएँ। इस वर्गीकरण के नतीजों की कल्पना करना आसान है क्योंकि हाथों से होने वाले काम के लिए पारिश्रमिक देने के तरीक़े एवं इसे अकुशल और निम्न स्तर के काम के रूप में देखने के नज़रिए में कोई सुधार नहीं हुआ है।

एक ओर जहाँ महामारी ने चौंका देने वाली विषमताओं को सामने ला खड़ा किया, वहीं कुछ समय के लिए इसने प्रतिस्पर्धा की बजाय सह-अस्तित्व और करुणा के महत्त्व को भी दिखाया। वे लोग जिन्हें 'दूसरा' और इसलिए असमान माना जाता है, उनकी पीड़ा के लिए अत्यधिक तिरस्कार और उपेक्षा के भावों के साथ ही उनकी सलामती की चिन्ता भी थी। उनके सहयोग और सामूहिक कार्रवाई के लिए कुछ सामुदायिक प्रणालियाँ भी स्थापित की गईं। और कुछ समय के लिए ही, पर उनके द्वारा किए जाने वाले तथाकथित 'अकुशल घरेलू काम' के महत्त्व और ज़रूरत का एहसास भी किया गया। हमारे लिए चुनौती यह है कि इसे एक ऐसी सीख बनाया जाए जो शिक्षा एक सामान्य संवेदनशीलता के रूप में पैदा करती है। इसलिए, न्यू नॉर्मल के लिए मुख्य बात यही है कि इस तरह की शिक्षा की प्रक्रियाओं को स्थापित किया जाए जो अधिक न्यायपूर्ण, अधिक समावेशी, अधिक सहभागिता-आधारित हो और ऐसे व्यक्तियों के विकास पर ध्यान देती हो जिनमें दया व मानवता हो और जो संविधान के मूल्यों से प्रेरित हो। यह महामारी सम्पन्न और वंचित लोगों के बीच मौजूद जिस असाधारण असमानता को सामने लाई है, उसके स्थापित व पुख़्ता होने की सम्भावना है, क्योंकि संसाधनों और सम्भावनाओं तक पहुँच और कम हो जाने के कारण वंचितों के लिए ख़ुद को शिक्षित करने के विकल्प और कम हो जाते हैं। शुरुआत से ही 'अकादमिक शिक्षा' के अवसरों के लिए एक ज़रूरी तत्व के रूप में प्रदर्शन पर ज़ोर लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल अर्थव्यवस्था में, बल्कि विचार बनाने वाले विश्लेषणों और साहित्य में भी सम्भावित अवसर बाधित होंगे। विद्यार्थियों की छँटाई की प्रक्रिया को निष्पक्ष और न्यायसंगत माना जाएगा क्योंकि वह योग्यता (मेरिट) की वर्तमान धारणा पर आधारित होगी। खेलों में पदकों और आकर्षक अवसरों के अतिप्रचार से भी ऐसी ही प्रक्रियाएँ उत्पन्न हो सकती हैं जो सक्षम अभिजात वर्ग को लाभ पहुँचाती हों। इस प्रकार न्यू नॉर्मल या तो ऐसी धारणाओं, विचारों के वस्तुकरण का रूप ले सकता है या फिर न्यायोचित सम्भावनाओं की दिशा में बढ़ने के एक स्पष्ट प्रयास के रूप में उभर सकता है। इस सम्भावना का बोध हमसे यह माँग करता है कि हम न्यू नॉर्मल के बारे में एक चुनाव करें।

न्यू नॉर्मल के बारे में एक और महत्त्वपूर्ण चिन्ता शिक्षा के संज्ञानात्मक पहलू को केन्द्र-बिन्दु में समायोजन करने के बारे में भी है। पिछले 20 वर्षों में, पाठ्यक्रम में शामिल सामग्री और उसके अनुसार विद्यार्थियों के प्रदर्शन करने की क्षमता के बारे में चिन्ता व्यक्त की जाती रही है। जानकारी का भण्डार होने की बजाय क्षमताएँ विकसित करने की आवश्यकता की वक़ालत सभी संवादों के ठण्डे बस्ते में रही है और विस्तृत रूप से परिभाषित किए गए परिणामों के मुताबिक़ विद्यार्थियों के आकलन और प्रदर्शन पर नज़र बनाए रखना ही केन्द्रीय तत्व रहा है। आकलन, आदर्श रूप से परिभाषित कुछ अपेक्षाओं के सामने विद्यार्थी को मापने का एक प्रयास है। इस वास्तविकता के बावजूद कि अधिकांश बच्चे उन क्षमताओं को हासिल करने और सीखने के अपेक्षित चरणों के अनुसार प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं हैं, यह बड़ी अजीब बात है कि इन अपेक्षाओं को एक उम्र के लिए मानक और उपयुक्त मानकर स्वीकार कर लिया गया है। और जब स्कूल खुलते हैं, तो हम विद्यार्थियों के साथ वह सब पूरा करने के लिए जल्दबाज़ी न करें जो उन्होंने उस अवधि में किया होता जब स्कूल बन्द थे। विद्यार्थी न केवल जो जानते थे और कर सकते थे, उसमें कुछ नया जोड़ नहीं पाए हैं, बल्कि वे जो कुछ जानते थे उसमें से भी बहुत कुछ भूल गए हैं।

शिक्षा में टेक्नॉलोजी

वर्तमान स्थिति में जहाँ कि समाज स्तरीकृत है, शिक्षा में टेक्नॉलोजी के उपयोग के मुद्दे पर ध्यानपूर्वक विचार करना होगा। यदि संसाधन चिन्ता का विषय नहीं हैं, तो प्रश्न बन जाता है : क्या यह सुझाव देने के लिए पर्याप्त आधार हैं कि टेक्नॉलोजी काफ़ी हद तक सीखने में मदद करती है? क्या यह बेहतर अनुपूरक सहयोग के रूप में आगे बढ़ने की दिशा है? यह बहस इस दृष्टिकोण से अलग है कि इस वास्तविकता को देखते हुए कि महामारी ख़त्म नहीं हो रही है और इस तरह के और अधिक संकट उत्पन्न हो सकते हैं, अधिक-से-अधिक टेक्नॉलोजी-केन्द्रित सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं की तरफ़ बढ़ना उचित है। इस तरह की प्रक्रियाओं की बेहतर निगरानी भी की जा सकती है और इनमें शिक्षकों के लिए व इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है कि ख़ुद बच्चों के लिए केन्द्रीय मार्गदर्शन उपलब्ध रहा है।

पहले से ही और ज़्यादा टेक्नॉलोजी व सॉफ्टवेयर के विकास के साथ-साथ इन तक पहुँच बढ़ाने की माँग बढ़ती जा रही है। हमें टेक्नॉलोजी के उपयोग के सवाल के साथ-ही-साथ अनजाने में यह मार्ग जिस तरह की दिशाओं की तरफ़ ले जाएगा, इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि लगभग हर जगह बच्चों ने ऑनलाइन कक्षाओं को अस्वीकार कर दिया है और स्कूलों में लौटने की उत्सुकता दिखाई है। हमने टेक्नॉलोजी के बढ़ते उपयोग की वजह से लोगों में बढ़ते विघटन और ग़लत सूचनाओं के प्रसार को देखा है जिसमें बाँटने वाले और सामाजिक रूप से हानिकारक विचार भी शामिल होते हैं। जैसे-जैसे मानवीय सम्पर्क और मेलजोल के अनुभव कम हो रहे हैं, वैसे-वैसे पृथकता और अविश्वास के प्रसार के ख़तरे बढ़ते रहेंगे। कोई भी नया नियम जो किसी भी कारण से मानवीय सम्पर्क कम करने को एक बुनियादी प्रक्रिया के रूप में लेकर आता है, अच्छा विकल्प नहीं है। टेक्नॉलोजी का न्यायपूर्ण ढंग से उपयोग करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन यह उस स्कूल के अतिरिक्त होना चाहिए जिससे हम भलीभाँति परिचित हैं, हालाँकि वह स्कूल अधिक सहयोगात्मक होना चाहिए जो साथ मिलकर सीखने को बढ़ावा देता हो और प्रतिस्पर्धा व दबाव को कम करता हो। शिक्षा व्यवस्था दावों और दबावों को तब तक कम नहीं कर सकती जब तक कि उपलब्ध विकल्प अधिक न्यायपूर्ण न हों और छँटनी की प्रक्रिया प्रारम्भिक स्तर पर ही शुरू न हो जाए।

सवाल यह है कि क्या हम बच्चों की लगातार तुलना करने के लिए केन्द्रीय रूप से परिभाषित सीखने के परिणामों और मानकों पर नज़र रखने वाले तकनीकी उपकरणों को मज़बूत करें या हम अपेक्षाओं को निर्धारित करने की समुदाय और शिक्षक-नीत प्रक्रियाओं की तरफ़ बढ़ें? मानवीय सम्पर्क के बदले टेक्नॉलोजी के उपयोग की जो चाह है, उसकी वजह से यह अत्यावश्यक होगा कि हम मानवीय सम्पर्क और मेलजोल के महत्त्व को पहचानें और उसे मुमक़िन करें। टेक्नॉलोजी, जो कि पर्याप्त निवेशों के बाद, आज की तुलना में बेहतर हो सकती है, के अत्यधिक इस्तेमाल की तरफ़ जाना बेहद आसान होगा। पिछले 20 वर्षों में ऑनलाइन अधिगम में काफ़ी निवेश हुआ है और महामारी ने इसे कई गुना बढ़ा दिया है। सरकारी स्कूलों में जाने वाले वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों की चिन्ताएँ महँगे-से-महँगे प्राइवेट स्कूलों में जा रहे बच्चों के माता-पिता की चिन्ताओं से बहुत अलग हैं। आर्थिक रूप से कमज़ोर पृष्ठभूमियों के बच्चे चाहेंगे कि स्कूल जल्दी खुलें और नियमित रूप से जारी रहें। जहाँ अभिजात वर्ग स्कूल को मिश्रित तरीक़े से चलता हुआ देख रहा होगा और उसका झुकाव टेक्नॉलोजी द्वारा समर्थित व्यक्तिगत शिक्षा की ओर होगा, वहीं ग़रीब ग्रामीण बच्चों के हित स्कूलों के खुलने में हैं। झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों के लिए भी पूरी सावधानियों के साथ किसी-न-किसी रूप में नियमित तौर से लगने वाले बस्ती-स्कूल के अलावा कोई विकल्प नहीं है। अल्पावधि में हम जिन समाधानों की तलाश कर रहे हैं, वे दीर्घकालिक चिन्ताओं से और हमारे उन नज़रियों से जुड़ते हैं कि शिक्षा की संरचना किस तरह से होनी चाहिए।

सारांश

महामारी के घट जाने के बाद बच्चों की शिक्षा के पुनर्निर्माण का कार्य चुनौतियों से भरा है। एक बड़ा ख़तरा है कि बड़ी संख्या में बच्चे और अधिक हाशियाकृत हो सकते हैं व शिक्षा के कुछ ख़ास अवसरों को पूरी तरह से खो सकते हैं, जिससे कि समाज में कुछ ख़ास भूमिकाएँ और पद प्राप्त करने की उनकी सम्भावनाएँ भी समाप्त हो जाएँगी। हमें सभी बच्चों को एक न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली में शामिल करने का वादा पूरा करने की ज़रूरत है, जिसके ज़रिए एक लोकतांत्रिक और समान आर्थिक अवसरों वाली स्थिति निर्मित हो सके जिससे धीरे-धीरे सामाजिक मेलजोल और भाईचारा बढ़ सके। यह तभी किया जा सकता है जब इस बात को सुनिश्चित करने का सम्पूर्ण प्रयास किया जाए कि वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों को वे सभी अतिरिक्त सुविधाएँ मिलें जिनकी ज़रूरत उन्हें संसाधनों की अथाह कमी की भरपाई के लिए होगी। साथ ही सामाजिक और आर्थिक रूप से सम्पन्न बच्चों के साथ बराबरी से चलने के उनके संघर्ष में उन्हें सहयोग की आवश्यकता होगी।

शिक्षा की पुनर्रचना को यह स्वीकार करना चाहिए कि टेक्नॉलोजी ज़्यादा-से-ज़्यादा एक सहायक तत्व हो सकती है और शिक्षा का बड़ा अंश तो शिक्षकों और साथियों के साथ बातचीत, सम्पर्क के माध्यम से, पाठ्यपुस्तकों जैसी पठन सामग्री और अन्य संसाधनों का उपयोग करके ही प्राप्त किया जा सकता है। 'न्यू नॉर्मल' को तभी चुना जाना चाहिए, जब

हम इसके लिए रचनात्मक रूप से काम करें। हम सुनिश्चित करें कि यह शिक्षा प्राप्त करने और सामाजिक व आर्थिक भूमिकाएँ चुनने के मौक़ों की मौजूदा असमानताओं को न बढ़ा रहा हो। इसके लिए पूरी तरह से बदली हुई धारणाओं और मान्यताओं की आवश्यकता होगी और यह जल्दबाज़ी में नहीं हो सकता। लेकिन हमारे प्रयास को इस लक्ष्य की ओर सचेत रूप से बढ़ना होगा, बजाय कि बढ़े हुए स्तरीकरण और लगातार बढ़ते फ़ासलों को अपना सहयोग देने के और उन्हें स्वीकार करने के।

हृदय कान्त दीवान 40 से अधिक वर्षों से विभिन्न क्षमताओं में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु के 'अनुवाद पहल' के साथ सम्बद्ध हैं। वे एकलव्य, भोपाल के संस्थापक सदस्य हैं और विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर के शैक्षिक सलाहकार हैं। विशेष रूप से, वे शैक्षिक नवाचार और राज्यों के शैक्षिक ढाँचों के सुधार के प्रयासों से जुड़े रहे हैं। उनसे hardy@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सिमरन साध

बच्चों के स्कूल लौटने पर उनके सीखने के प्रति एक समग्र नज़रिया

जेन साही

यह लेख लॉकडाउन और उससे उभरी उथल-पुथल के संकट के तुरन्त बाद जो कुछ चीज़ें की गईं उन पर नज़र डालता है। लेख में इस बात पर विचार किया गया है कि जैसे-जैसे बच्चे स्कूल लौट रहे हैं, हम उनकी ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए किस तरह के क़दम उठा सकते हैं, विशेष कर छोटे बच्चों के लिए।

कोविड-19 के पहले हमले से असंगठित क्षेत्रों में काम कर रहे श्रमिकों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। इससे एक आपात स्थिति उत्पन्न हुई जहाँ कई लोगों के पास भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य सेवा का अभाव था। कई बच्चे कठिनाइयों, उपेक्षा, अभाव के साथ ही इस डर से भी गुज़रे कि उनका क्या होगा क्योंकि वे महामारी के ख़तरों और जोखिमों के बारे में टीवी पर समाचार देखते थे या घर में बड़े लोगों के बीच होने वाली बातें सुनते थे।

पिछले वर्ष के दौरान कई सारी संस्थाओं, स्कूलों, पुस्तकालयों, शिक्षकों और स्वयंसेवियों ने न केवल सक्रिय रूप से बच्चों की शारीरिक ज़रूरतों पर ध्यान दिया बल्कि उनकी सृजनात्मक ज़रूरतों का भी ख़्याल किया। क्राफ़्ट की गतिविधियों, कहानियों या उनके प्राकृतिक परिवेश के बारीक़ अवलोकन जैसी गतिविधियों से उन्हें जोड़ने की कोशिश की।

प्रकाशकों, कहानी सुनाने वालों, पुस्तकालय शिक्षकों, चित्रकारों और लेखकों ने ऑनलाइन कहानियाँ उपलब्ध करवाने का भरपूर प्रयास किया। कई स्वयंसेवियों ने मोबाइल फ़ोन पर बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाईं या परिवारों को 'क़िताबों के झोले' प्रदान किए। प्रथम बुक्स द्वारा स्थापित *स्टोरी वीवर (Story Weaver)* ने 26 से अधिक भाषाओं में अनेक पुस्तकों को नि:शुल्क रूप से ऑनलाइन उपलब्ध करवाया।

स्टोरी वीवर द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें सीधे महामारी से सम्बन्धित थीं। ये अलग-अलग आयु समूहों के लिए थीं और इनमें विशेष लेकिन बहुत प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया। इनमें से एक है *कोरोनावाइरस : हम यूँ बच सकते हैं (The Novel Coronavirus : We can Stay Safe)*।[i] यह क़िताब बच्चों को ऐसे कुछ कारणों को समझने में मदद करती है, कि जो चीज़ें हुई, वे क्यों हुई। ये बातें इस तरह से प्रस्तुत की गई हैं कि छोटे-से-छोटे बच्चे वायरस से ख़ुद का और दूसरों का बचाव करने का काम कर सकते हैं। *हमारे सुपरहीरो (Everyday Superheroes)* एक और क़िताब[ii] है जो संकट के समय में हमारी अन्तरनिर्भरता को और इस बात को दर्शाती है कि कैसे हर एक व्यक्ति ज़िम्मेदारी लेने के प्रति एक सकारात्मक भूमिका निभा सकता है।

कहानियाँ सुनाने और पढ़ने के अलावा कुछ संस्थाओं ने बच्चों को ख़ुद की कहानियाँ, चित्र और जर्नल रचने के लिए प्रोत्साहित किया। शुरुआत में, यह ख़ासतौर से बच्चों के महामारी के अनुभव के सम्बन्ध में था। निम्नलिखित दो ऐसे उदाहरण हैं कि पेशेवरों ने किस तरह बच्चों के साथ जुड़ाव बनाने के प्रयास किए। बेंगलूरु में ऐसा एक संगठन है *बुगुरी* जो कचरा बीनने वाले समुदाय के साथ काम करता है। उन्होंने सफलतापूर्वक एक रेडियो स्टेशन स्थापित किया जिसके माध्यम से वे कहानियों, समाचारों और जानकारियों का प्रसारण करते थे। इसमें शामिल थी एक बोलते पेड़ की कठपुतली जो महामारी के बारे में बच्चों के सवालों का जवाब देती थी। *बुगुरी* बच्चों को वायरस के बारे में उनकी समझ और उसके प्रभावों के बारे में उनकी भावनाओं को चित्रों और कॉमिक पट्टियों द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती थी।

मुम्बई स्थित शैरन इंग्लिश स्कूल ने विभिन्न तरीक़ों से बच्चों से जुड़ाव बनाया। वे बच्चों को अपनी बदलती भावनाओं, एकाकीपन के बोध और उन पर लगे भौतिक प्रतिबन्धों से

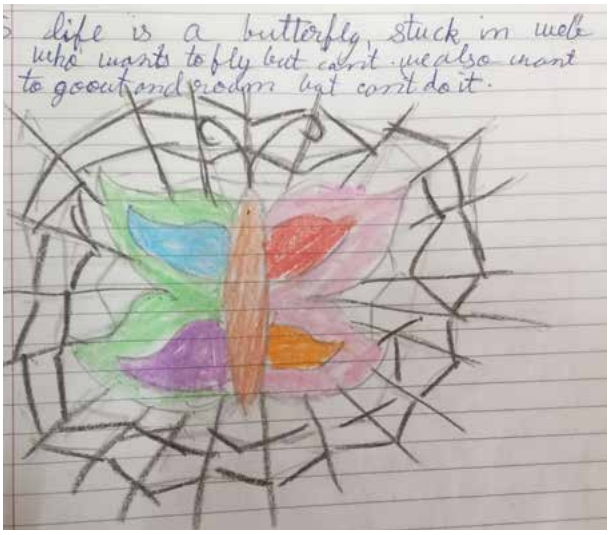

लॉकडाउन में गुज़रे जीवन पर कक्षा आठवीं के विद्यार्थी द्वारा बनाया गया चित्र।

उपजी कुंठा व निराशा को पहचानने के लिए रूपकों के माध्यम से सोचने के लिए प्रेरित करते थे।[iii] एक लड़की ने लिखा, 'जीवन एक तितली की तरह है जो जाल में फँसी है, जो उड़ना चाहती है, पर उड़ नहीं सकती। हम भी बाहर जाना चाहते हैं।' एक लड़के ने लिखा कि लॉकडाउन में जीवन एक बिना चाबी की कार की तरह था क्योंकि आने-जाने के लिए हमारे पास टाँगें तो थीं लेकिन हमें बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी। अन्य बच्चों ने कहा कि वे पिंजरे में बन्द शेर या घर में नजरबन्द व्यक्ति जैसे महसूस कर रहे थे।

उसी स्कूल के बच्चों को शब्दों और चित्रों द्वारा यह दर्शाना था कि उन्हें क्या करने में मज़ा आया, वे अपना समय कैसे बिताते थे, उन्हें किन चीज़ों की कमी खली और उन्होंने कौन-सी भावनाएँ महसूस कीं। उनकी प्रतिक्रिया काफ़ी विविध थी। नीचे दो उदाहरण पेश किए गए हैं :

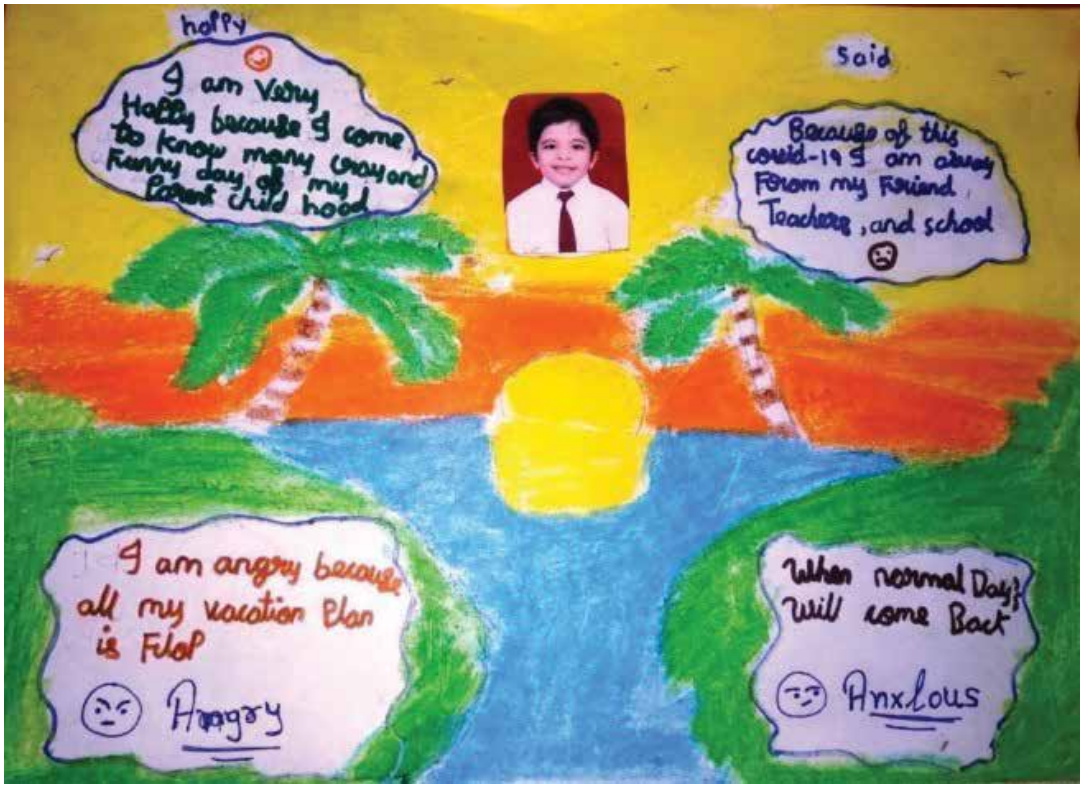

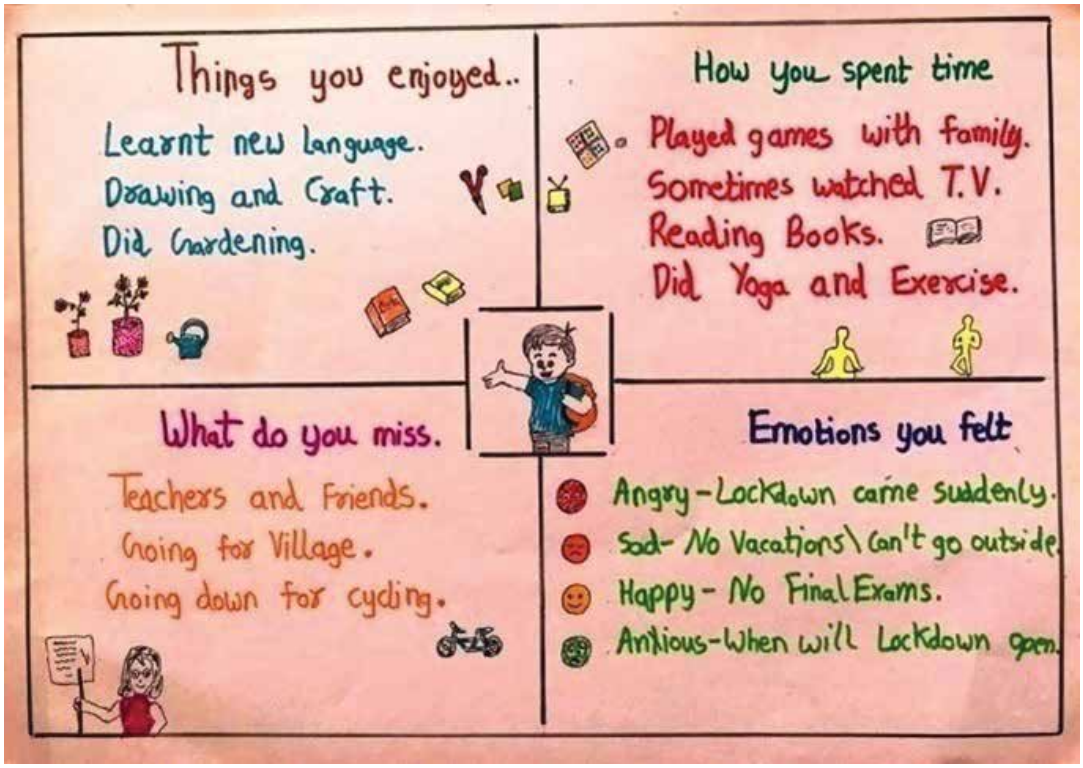

फिर भी, अधिकांश बच्चे अपनी चिन्ताएँ न तो व्यक्त कर पाए और न ही कोई उन्हें सुन पाया। भौतिक और अकादमिक चुनौतियों के अलावा, कई सारे बच्चों को विस्थापन, परिवार में मृत्यु, घर में मतभेद, अकेलेपन या चीज़ों की विकट कमी के अपने अनुभवों को व्यक्त करने का अवसर नहीं मिला। ज़ाहिर है, इन बातों ने बच्चों को उनकी उम्र, स्वभाव और परिस्थितियों के अनुसार अलग तरह से प्रभावित किया होगा। पर ऐसे अनेक बच्चों ने भी मीडिया पर दर्शाई गई अफ़रा-तफ़री और दहशत को देखा-सुना होगा, जो प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं हुए थे। सभी बच्चे पीड़ित नहीं हुए हैं या उन्हें आघात नहीं पहुँचा है, लेकिन बच्चों का जीवन निश्चित रूप से बदल गया है और बाधित हो गया है। कई बच्चों के जीवन में एक ख़ालीपन-सा रहा है और उन्हें उत्साहित करने के लिए कुछ ख़ास नहीं था। ग्रामीण इलाक़ों में रह रहे कई सारे बच्चों को खुली जगह और एक-दूसरे के साथ का फ़ायदा रहा है। निश्चित रूप से उनमें से कुछ बच्चे निश्चिन्त और बड़ों के नियंत्रण से मुक्त समय से लाभान्वित हुए होंगे। लेकिन शहरी क्षेत्रों में बच्चों के लिए जीवन अधिक प्रतिबन्धित रहा है।

प्राथमिकताओं पर विविध दृष्टिकोण

> बच्चों के कक्षा में वापिस लौटने पर शायद 'आगे बढ़ने' की और उन समस्याएँ को भुलाने की प्रवृत्ति देखने को मिल सकती है जो शायद उनमें से कइयों ने झेली होंगी। बच्चों के लचीलेपन की शक्तियों पर अक्सर टिप्पणियाँ की गई हैं। लेकिन जीवित रहने की इन्हीं रणनीतियों के कई बार दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं जब बच्चे इन तनावपूर्ण स्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने या समायोजन करने के लिए संघर्ष करते हैं। यदि बच्चों के जीवन में आने वाले इन व्यवधानों का समाधान नहीं किया जाता, तो उनके सीखने की तत्परता और उत्साह में बाधा आ सकती है।

महामारी के बच्चों पर पड़े प्रभावों पर हुई चर्चाएँ मुख्य रूप से अभाव पर केन्द्रित रही हैं या जिसे 'सीखने में प्रतिगमन' भी कहा जाता है। संसाधनों और प्रेरक तत्वों के अभाव में कई बच्चों के साक्षरता और संख्या ज्ञान सम्बन्धी कौशल गम्भीर रूप से प्रभावित हुए हैं। एक विशेष चिन्ता प्रवासी बच्चों की रही है जिनकी घर की भाषा स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा की भाषा से अलग होती है। उन्हें अब एक आधी भूली हुई भाषा में सीखने का 'सामना' करना पड़ रहा है। हालाँकि, ऑफ़लाइन विद्यार्थियों के लिए शायद सबसे बड़ा नुक़सान सीखने के एक सकारात्मक माहौल से दूर होना रहा है जहाँ बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता था। स्कूल एक सीखने वाले समुदाय की क्षमता प्रदान करता है जहाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों पर अपेक्षाएँ और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। यह एक ऐसी परिस्थिति होती है जहाँ विद्यार्थी भी एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और सीखते हैं। अधिकांश राज्य सरकारों द्वारा इन बच्चों को लगभग 17 महीनों से भी अधिक समय तक प्रोत्साहन या सहयोग देने में दिखाई गई उदासीनता चिन्ताजनक रही है। ज्याँ द्रेज़ लिखते हैं कि किस तरह व्यवस्था ने ऑफ़लाइन बच्चों को उनके हाल पर छोड़ दिया (*द हिन्दू*, अगस्त 15, 2021)।

अधिकांश शिक्षकों को, जो ऐसे बच्चों के साथ काम कर रहे थे जिनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी, यह महसूस हुआ कि कक्षा की संरचना, एक निश्चित पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणालियों की रूपरेखा के बग़ैर उनके पास बच्चों को देने के लिए कुछ नहीं था। यह स्पष्ट हो गया है कि अति-केन्द्रीकृत व्यवस्था ने न केवल बच्चों, बल्कि उनके शिक्षकों को भी स्वायत्तता से वंचित कर दिया है। अख़बार में एक शीर्षक आलंकारिक प्रश्न पूछता है, 'बच्चे पाठ्यपुस्तकों के बिना क्या सीख सकते हैं?' ऐसा लगता है मानो सीखना और पाठ्यपुस्तकें पर्यायवाची हैं! कर्नाटक में, कुछ विलम्ब से बच्चों को वर्कशीट भरने के लिए सौंपी गईं। लेकिन यह शायद ही बच्चों की वास्तविक ज़रूरतों के प्रति पर्याप्त प्रतिक्रिया है।

कहानियों के माध्यम से अर्थ गढ़ना

तत्काल चुनौती यह है कि हम स्कूल वापस लौटने वाले बच्चों का सर्वोत्तम सहयोग कैसे कर सकते हैं, विशेषकर उन बच्चों का, जिन्हें घर या स्कूल से सहायता नहीं मिली। बच्चों के खोए हुए समय की भरपाई करना और साक्षरता व संख्या ज्ञान सम्बन्धी कौशलों में उनकी महारत को तेज़ करना हमारी प्राथमिकता प्रतीत होती है। इसके लिए पहले बच्चों के सीखने के स्तरों का आकलन करना होगा और फिर उनके लिए प्रासंगिक उपचारात्मक कार्य प्रदान करने होंगे। इससे कक्षा में विभेदित सीखने की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पर ध्यान दिया जा सकता है। हालाँकि यह भी सीखने की तत्परता की गहरी समस्या के प्रति आंशिक प्रतिक्रिया ही होगी। ख़तरा यह है कि हम शायद भाषा सीखने को अर्थ निकालने (डिकोडिंग) और संकेतीकरण करने (एंकोडिंग) के कौशल प्राप्त करने तक सीमित कर रहे हैं और गणित सिखाने के लिए बच्चों को यांत्रिक अभ्यास करवा रहे हैं। इसके अलावा, पाठ्यचर्या के अन्य पहलुओं, जैसे कला, संगीत, नाटक और पर्यावरण अध्ययन एवं विज्ञानों में प्रायोगिक कार्य को दरकिनार कर दिया जाएगा। ऐसे भी सुझाव हैं कि छुट्टियाँ रद्द कर दी जानी चाहिए! पहले से कहीं अधिक, इस विशेष समय में, बच्चों को सीखने के लिए एक सन्तुलित, समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है और इसमें उत्सव के कुछ अवसर शामिल होने ही चाहिए।

मैं सुझाव दूँगी कि बच्चों को शिक्षित करने की वर्तमान चिन्ताओं के लिए एक सन्तुलित दृष्टिकोण का अर्थ होगा,

व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के भाषा और गणित के बुनियादी कौशलों पर ध्यान देना, साथ ही बच्चों की अपने हाथों से काम करने की आवश्यकता को पूरा करना, निकट के परिवेश से उनका जुड़ाव बनाना एवं कल्पनाशील, चिन्तनशील और रचनात्मक गतिविधियों को व्यक्तिगत और सहयोगी, दोनों ही रूपों में स्थान देना।

कहानियाँ साझा करना बच्चों को कल्पनाशील और विचारपूर्वक रूप से जोड़ने का अच्छा तरीक़ा है। शिक्षक, पुस्तकालय शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता कहानियों को सुनने और पढ़ने में बच्चों की सहायता कर सकते हैं और साथ ही उन्हें अपनी कहानियाँ सुनाने और लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

जीवन की तरह, कहानियाँ उभयभावी और मिश्रित गुणवत्ता की हो सकती हैं। भोजन की तरह, वे पौष्टिक हो सकती हैं लेकिन अगर उनका यंत्रवत रूप से उपयोग किया जाता है तो वे अपचनीय और अरुचिकर भी हो सकती हैं। कुछ कहानियाँ हास्य के माध्यम से या कोमलता और करुणा की भावनाएँ जगाकर उपचार और सांत्वना की प्रक्रिया में मदद करती हैं। हालाँकि, बच्चों की प्रतिक्रियाओं का अनुमान नहीं लगाया जा सकता और न ही उनमें हेर-फेर की जा सकती है। कहानियाँ सबसे अच्छा तब काम करती हैं, जब वे बहुस्तरीय होती हैं, जिज्ञासा जगाती हैं और बच्चों को अपने तरीक़े से प्रतिक्रिया देने की छूट देती हैं। यह ज़रूरी है कि बच्चों को चुनने के लिए विविध प्रकार की कहानियाँ मिलें।[iv]

कुछ कहानियाँ व्यक्तिगत यादों से सम्बन्धित होती हैं; कुछ अन्य रोज़मर्रा की वास्तविकता पर आधारित होती हैं जिनमें कल्पना के कुछ पहलु शामिल हो सकते हैं। कुछ पुस्तकें जानकारियाँ साझा करने के लिए कहानी की रूपरेखा का उपयोग करती हैं। इन कहानियों से परे, कुछ ऐसी होती हैं जो वैकल्पिक दुनियाएँ निर्मित करती हैं — 'दूर कहीं' या 'कहीं नीचे', उदाहरण के लिए जादू और सम्मोहन की कहानियाँ, वैकल्पिक हक़ीक़त का वर्णन करती हैं; लेकिन ये कहानियाँ रोज़मर्रा की कठिन परिस्थितियों और द्वन्द्वों को समझने या उनका सामना करने का तरीक़ा प्रदान करती हैं।

कुछ कहानियाँ जिनमें स्पष्ट रूप से कोई विशिष्ट समस्याएँ नहीं उठाई जातीं, अवचेतन रूप से काम करती हैं। वे न केवल हानि, जोखिम और अन्याय से सम्बन्धित भय और निराशा को, बल्कि आशा को भी आवाज़ देती हैं। ऐसी कई कहानियाँ हैं जो मुश्किल, दर्दनाक और यहाँ तक कि हिंसक अनुभवों के माध्यम से एक नायक की ख़तरनाक यात्रा का वर्णन करती हैं। ऐसी कहानियों में नायक या नायिका (नर या मादा) दुनिया में काम करने वाली दयालु ताक़तों की सहायता प्राप्त कर आन्तरिक दृढ़ता से अन्ततः जीतते हैं। शास्त्रीय कहानियाँ, जैसे कि महाभारत में बताई गई उत्तंक की कहानी, जिसे मजबूरन अधोलोक में किसी ऐसी खोज के लिए यात्रा करनी पड़ती है, जिसमें उसकी कोई चाहत नहीं है या फिर ध्रुव, जो स्वीकृति की खोज में अकेले ही जंगल के भय का सामना करता है। दोनों कहानियाँ समाधान के रास्ते पेश करती हैं। बुद्धि और जादू की कहानियों का एक मूल्यवान स्रोत है सुधा मूर्ति की *द बर्ड विथ गोल्डन विंग्स* (2009, पफ़िन बुक्स)।

ऐसे समकालीन लेखक हैं जो पारम्परिक कहानियों की शक्ति और रूपकों का उपयोग करते हैं, लेकिन उन्हें फिर से गढ़ते हैं, जैसे कि सलमान रुश्दी की बच्चों की क़िताब *हारून एंड द सी ऑफ स्टोरीज़*। *द हैपी ऐडिंग* एक ऐसी कहानी है जो यह दर्शाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक है कि आपदा अन्तिम स्थिति नहीं होती। टोवे यानसन का सुझाव है कि एक विकल्प यह है कि 'बच्चे के लिए कहानी को आगे बढ़ाने के लिए खुला छोड़ दिया जाए।'[v]

चमत्कार की कहानियाँ एक जादुई दुनिया के भीतर मौजूद हैं जहाँ जीव और निर्जीव के बीच कोई स्पष्ट रेखा नहीं होती : चट्टानें बात कर सकती हैं, नदियाँ दिशा बदल सकती हैं और पेड़ चल सकते हैं। यहाँ जीवित प्राणियों के बीच तरलता है, जहाँ मेंढक नायक में बदल सकते हैं; नायक पिंजरे में क़ैद पक्षी बन सकते हैं और पक्षी सुनहरी मछली में बदल सकते हैं। इन कहानियों में अन्तर्निहित मान्यता यह होती है कि जीवन जुड़ा हुआ है और व्यवधान व मृत्यु से परे, जीवन में एक निरन्तरता है। पहली नज़र में, ये कहानियाँ सिर्फ़ काल्पनिक लग सकती हैं, लेकिन इनमें एक सूक्ष्म नैतिक रूपरेखा है जो यह स्थापित करती है कि दयालु और अच्छा अन्ततः पुरस्कृत होता है और लालची, आलसी व स्वार्थी को दण्डित किया जाता है। अनपेक्षित मददगार, चाहे इन्सान हों या जानवर, उन लोगों की मदद करते हैं जो सच्चे और स्नेही होते हैं। यथार्थवाद की कमी के लिए ऐसी कहानियों की आलोचना की गई है। लेकिन यह तर्क दिया जा सकता है, जो इतालो कैल्वीनो भी कहते हैं, कि ये कहानियाँ अन्याय, हिंसा और मृत्यु की कड़वी हक़ीक़तों का सामना करती हैं। वे हमारे मार्गदशक के रूप में कार्य करती हैं जब हम एक अस्पष्ट दुनिया में अपना रास्ता खोजते हैं जो उजाले और अँधेरे, दोनों से भरी है।

जब यानुश कोर्चैक, 1940 के दशक में वारसा घेटो में बच्चों के साथ काम करते थे। उन्होंने टैगौर के नाटक *डाक घर* को रुपान्तरित किया ताकि बच्चे उसका मंचन कर सकें। उनका उद्देश्य था कि नाटक के मंचन द्वारा बच्चों को वर्तमान की डरावनी स्थितियों और अनिश्चित भविष्य के आतंकों का मुक़ाबला करने में मदद मिल पाएगी। यह नाटक जीवन और मृत्यु पर एक प्रतीक कथा है, पर फिर भी डब्ल्यू बी येट्स ने उसका वर्णन ऐसी कहानी के रूप में किया है जो 'कोमलता और शान्ति की भावना' व्यक्त करती है।[vi]

बच्चों को चुनने के लिए विभिन्न प्रकार की कहानियों की आवश्यकता होती है। *स्टोरी कार्ड* छोटे बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की कहानियों का एक अद्भुत संसाधन प्रदान करते हैं। उन्हें सोच-समझकर चुना गया है और उनमें खोज, दोस्ती और समानुभूति के विषयों पर कहानियों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है। इन्हें कक्षा में बहु-उपयोग के लिए बच्चों के अनुकूल और सुलभ बनाने हेतु सावधानीपूर्वक प्रारूपित किया गया है।

प्रकृति का अध्ययन : छोटे समूहों में काम करते बच्चे

कहानियाँ एक चेतनशील तरीक़ा हैं। इनके द्वारा हम उन विविध विस्मयकारी मान्यताओं और अन्त:क्रियाओं का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं जिनसे हम गुज़रते हैं। साथ ही हम हमारी कल्पनाशीलता को 'मुमकिन दुनियाओं' के बारे में सोचने के लिए पोषित करते हैं। बच्चों को भी संवेदी अनुभवों के माध्यम से प्रकृति से जुड़कर और कुछ करके, बनाकर, उगाकर वर्तमान में जीने की आवश्यकता है।

कृष्ण कुमार ने लॉकडाऊन के बीच 'बाहर सीखने' के आवश्यक मूल्य और ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी समृद्ध क्षमता के बारे में लिखा। 'बरसात का मौसम प्रकृति पर ध्यान देने, चीज़ों को रिकॉर्ड करने और जाँच करने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। बगुले और अन्य बड़े पक्षी भोजन की तलाश में धान के तर-बतर खेतों में इत्मीनान से चलते हैं। उनकी अलग-अलग मुद्राओं को देखना और उनके चित्र बनाना ख़ुशी देता है। बारिश का पानी भरने से चींटियाँ अपने भूमिगत घरों से बाहर निकल आती हैं। इस मौसम में तितलियाँ प्रवास करती हैं। ये तो उदाहरण मात्र हैं; पौधों और पेड़ों में देखने के लिए सैंकड़ों चीज़ें होती हैं।'[vii]

हम सभी की उन्नति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण तरीक़ों में से एक है कि हम अपने परिवेश के लिए 'जागृत' रहें चाहे वह शहर हो, परिनगरीय क्षेत्र या गाँव।

गतिविधियाँ जो बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ती हैं

हाल ही में, जिस लर्निंग सेंटर से मैं जुड़ी हूँ, उसके दो शिक्षकों ने क़रीब के शासकीय प्राइमरी स्कूल के बच्चों के एक समूह के साथ एक नई प्रकाशित पुस्तक *पिशी और मैं* [viii] साझा की। यह उपनगरीय सड़कों पर अपनी बुआ के साथ चल रहे एक बच्चे की कहानी है। ऐसा क्या है जिससे यह एक कहानी बन जाती है? इसमें बच्चे को रुककर चीज़ों को देखने, सूँघने, छूने, इकट्ठा करने और सँजोने की अनुमति है।

एक स्थानीय सरकारी प्राइमरी स्कूल में यह क़िताब पढ़ने के बाद रद्दी काग़ज़ से ओरिगेमी बक्से बनाए गए। अगले सत्र के दौरान, बच्चे अपने द्वारा एकत्र किए गए 'खजानों' को दिखाने के लिए लौटे। उनमें से कई ने अपने बक्सों के लिए ढक्कन

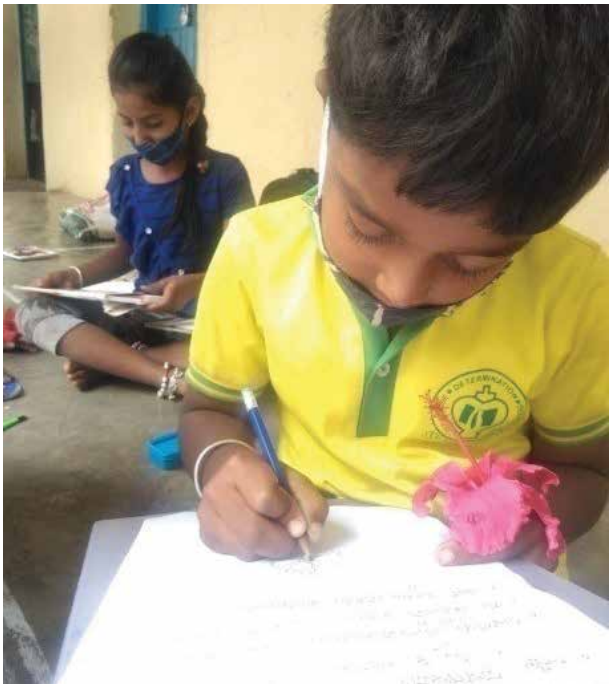

फूलों और स्वरूपों का मोबाइल प्रदर्शन करने में जुटे बच्चे।

बनाए और कुछ ने अपने बक्सों को रंगीन काग़ज़ और बीजों से सजाया। एक बच्चे ने बताया कि उसने अपनी माँ को बक्सा बनाना सिखाया था। उन्होंने अपने बक्से में रखने के लिए कई सारी चीज़ें एकत्रित की थीं — पत्थर, पंख, फलियाँ, सीप, फूल, लेस के टुकड़े, कप्पोचिप्पु (समुद्र के सीप) और सुतली-धागे के टुकड़े।

पिछले कुछ महीनों में, अप्रैल में दूसरे लॉकडाउन को छोड़ कर, लर्निंग सेंटर की टीम के तीन सदस्यों ने नेचर कंज़रवेशन फ़ाउण्डेशन के सहयोग से पुस्तकालय गतिविधियों और प्रकृति अध्ययन पर पास के गाँव के बच्चों के साथ काम किया है।

हाल ही में, बच्चे फूलों और स्वरूपों से सम्बन्धित एक परियोजना में लगे हुए हैं।[ix] इसमें कई क्रियात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे चित्र बनाना, पॉप अप (अचानक प्रकट होने वाले चित्र या खिलौने) बनाना, कहानियाँ साझा करना, फूलों के बारे में गीत और कविताएँ सीखना व अवलोकन अभ्यास करना जिनसे बच्चों को मिट्टी, हवा और पानी तथा वनस्पतियों और जीवों के बीच के सम्बन्धों के जटिल नेटवर्क को समझने में मदद मिली। उन्होंने यह भी समझना शुरू कर दिया है कि दिन और रात तथा मौसम के स्वरूप प्राकृतिक संसार को कैसे प्रभावित करते हैं।

फूलों को क़रीब से देखने से बच्चों को एक जीवन चक्र का बोध हो सकता है जहाँ क्षरण और पुनर्जनन जीवन का एक आन्तरिक भाग हैं। बीज, कलियाँ, फूल, गिरी हुई पंखुड़ियाँ और फल सभी एक ही प्रक्रिया का भाग हैं जो एक बीज से दूसरे बीज के निर्माण में, जीवन से नए जीवन की ओर बढ़ते हैं।

प्रकृति के सम्पर्क में रहने से हमें अपनी नाज़ुकता और मज़बूती तथा व्यापक दुनिया में हमारी भूमिका का एहसास होता है। कुछ लोगों को यह लग सकता है कि इस समय तितलियों और फूलों को देखने का कोई बहुत फ़ायदा नहीं है। लेकिन बच्चों की उत्सुकता और सवालों से लगता है कि यह बच्चों की बुनियादी शिक्षा, कल्पनाशीलता और सवाल पूछने की भावना को बढ़ावा देने की एक सम्भावना थी। बच्चों ने इस तरह के सवाल पूछे — 'कुछ फूलों के एक से अधिक रंग क्यों होते हैं?' 'कुछ फूल रात को क्यों खिलते हैं?' 'गुड़हल के फूल के लम्बे धागे क्यों होते हैं (पुंकेसर का ज़िक्र करते हुए)?'

कल्पवृक्ष[x] द्वारा अँग्रेज़ी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्राकृतिक परिवेश पर क़िताबें प्रकाशित की गई हैं। ये क़िताबें जानकारी का बहुत ही उत्तम स्रोत हैं और अलग-अलग आयु के बच्चों के लिए कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता के साथ बनाई गई हैं।

निष्कर्ष

महामारी का यह दौर ज़्यादातर लोगों के लिए विचलित करने वाला रहा है, चाहे बच्चे हों या वयस्क। शायद कई बच्चों का दुनिया की स्थिरता और स्वास्थ्य से आत्मविश्वास हिल गया है। अँग्रेज़ी शब्द 'catastrophe' (तबाही) ग्रीक भाषा से आया है जिसका अर्थ है, 'क्रान्तिकारी परिवर्तन' या 'a turning point'। हालाँकि, लोगों में काम करने के परिचित तरीक़ों पर लौटने की इच्छा है, लेकिन यह एहसास भी है कि वर्तमान और भविष्य की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा।

बच्चों के स्कूल वापस लौटने के साथ तात्कालिक स्थिति से जुड़े संकट के एहसास का केवल यह अर्थ नहीं हैं कि त्वरित सीखने के लिए आगे बढ़ना है, ताकि जो खोया है उसे पाया जा सके। कुछ समय के लिए थम जाने की भी आवश्यकता है ताकि हम स्वस्थ और तरोताज़ा हो सकें तथा पहचान सकें कि विकास के लिए ज़रूरी अर्थपूर्ण और स्थाई सीखना क्या होता है। कहानियों को साझा करना, प्रकृति की ओर ध्यान देना और सचेत रहना, ऐसे कौशलों का अभ्यास करना जो दूसरों के और ख़ुद अपने जीवन को समृद्ध करते हैं, चीज़ों को बनाना और दूसरों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना कुछ ऐसे तरीक़े हैं जो शिक्षकों और बच्चों को एक अधिक जीवनदायी भविष्य के लिए तैयार करेंगे।

Endnotes

i *The Novel Coronavirus: We Can Stay Safe*, Pratham Books.
ii *Everyday Superheroes,* Minakshi Diwan, Pratham Books.
iii Maher M and J Thomas have kindly shared these photos and texts.
iv Story Cards are a rich multilingual resource of stories for young readers across genres. They are published by Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation. See https://rajifoundation.in/storycards/about.html
v Quoted in Weinreich T. 2000. *Children's Literature – Art or Pedagogy?* Frederiksburg: Roskilde University Press. pp112.
vi One adaptation of this story for children is *Amal and the Letter from the King,* retold by Chitra Gajadin and illustrated by Helen Ong. 1993. Rupa & Co.
vii Krishna Kumar. *Schools Without Freedom*, The Hindu, August 20, 2020.
viii Timira Gupta. *Pishi and Me*. Pratham Books.
ix Roshan Sahi, Gousia Taj and Sarojini Ramachandra Hegde facilitated this project.
x See https://kalpavriksh.org/product-category/childrens-books/

Resources

For more games and activities, visit Nature Conservation Foundation website: https://www.ncf-india.org/blog/hidden-housemates-part-1

जेन साही ने एक वैकल्पिक स्कूल में कई वर्षों तक पढ़ाया। फिलहाल वे गोवा में बुकवर्म के लाइब्रेरी एजुकेटर्स कोर्स में पढ़ाती हैं। वे एक शिक्षार्थी केन्द्र से भी जुड़ी हैं जो स्थानीय सरकारी स्कूलों के साथ काम करता है। यह केन्द्र मुख्य रूप से बच्चों के साथ पुस्तकालय गतिविधियाँ और ऐसे सत्र आयोजित करता है जिनमें बच्चों को अवलोकन, कहानियों और कला से जुड़े विभिन्न कार्यों के माध्यम से प्रकृति पर ध्यान देने का मौक़ा दिया जाता है। उनसे janehelensahi@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनु गुप्ता

सामाजिक दायरे के तौर पर स्कूलों को नया आकार देना

सुबीर शुक्ला

शायद स्कूल अब वैसा नहीं रहा जैसा हम उसे समझते हैं

सन 1995 में उत्तर प्रदेश के ज़मीनी दौरे पर मैं एक दूरदराज़ के इलाक़े में स्थित स्कूल में गया। उसी समय एक अफ़वाह चल रही थी कि विश्व बैंक की एक बड़ी योजना, जो स्कूलों की आधारभूत संरचना के विकास के लिए फंडिंग कर रही थी, बन्द हो रही है। सभी परेशान और डरे हुए थे कि एक बार फंड मिलना बन्द हो जाएगा तो स्कूली संरचना ठप्प हो जाएगी। हालाँकि, एक शिक्षक ने कुछ ऐसा कहा जिसने शिक्षा को लेकर मेरा नज़रिया पूरी तरह से बदल कर रख दिया। उसने दृढ़ता भरे स्वर में कहा, "मैं अपने स्कूल के बारे में बिल्कुल भी चिन्तित नहीं हूँ, क्योंकि मेरा स्कूल किसी बिल्डिंग में नहीं है या कि किसी फ़र्नीचर या आपूर्तियों में — यह इस बात में निहित है कि मेरे और बच्चों के बीच *क्या होता* है। लोग आकर दरवाज़े या ईंटें तक निकाल ले जा सकते हैं लेकिन वे मेरे स्कूल को नहीं मिटा सकते।

क्यों है ना तगड़ा नज़रिया?

हमें ख़ुद से यह सवाल ज़रूर पूछना चाहिए : स्कूल में ऐसा क्या ख़ास होता है जो इसे एक स्कूल बनाता है? चलिए इसे केवल 'सीखना' नहीं कहते हैं — बल्कि उन सभी क्रियाओं के बारे में सोचते हैं जिनका इस्तेमाल हम कर सकते है : बातचीत करना, खेलना, काम करना, लिखना, सुनना, चित्र बनाना, प्रयोग करना, सम्बन्ध जोड़ना, पढ़ना, व्याख्या करना, पूछना, निर्देश देना, सुनाना, कोशिश करना, बढ़ावा देना, विनिमय करना, मिलना, खोजना, तर्क करना, ख़्याल रखना, बनाना, सृजन करना, निष्कर्ष निकालना, सहमत होना, मदद करना, प्रतिस्पर्धा करना, अन्वेषण करना, चिन्तन करना, सराहना, देना, मार्गदर्शन करना, साझा करना, मज़े करना, नापसन्द करना, रिश्ता बनाना आदि। और यहाँ तक कि वे क्रियाएँ भी, जिनमें दूसरे शामिल होते नहीं दिखाई देते (जैसे 'चिन्तन करना'), दूसरों के साथ की जा सकती हैं या दूसरों द्वारा कुछ कहे या किए जाने के आधार पर उद्दीपित हो सकती हैं।

आप देख सकते हैं कि इनमें से ज़्यादातर 'क्रियाओं' में अन्य लोग शामिल हैं : शिक्षक, सहपाठी, स्कूली कर्मचारी या समुदाय के सदस्य। दरअसल लोगों के बीच जो कुछ होता है — बुनियादी रूप से सम्बन्धों का ऐसा समूह, जिसके भीतर ख़ास तरह की प्रक्रियाएँ होती हैं ताकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सके — वही स्कूल है।

अगर आप अपने बचपन में जाएँ तो आपको याद आएगा अपने दोस्तों का साथ होना, स्कूल जाने में आपके माता-पिता आपकी क्या मदद करते थे, आपके शिक्षक आपसे कैसे बात करते थे, शायद कुछ आयोजन भी जिनमें आप अपने सहपाठियों के साथ शरीक़ हुए हों। दरअसल ये जुड़ाव, ये सम्बन्ध ही हैं जो हमारे साथ रहते हैं।

> इसलिए स्कूलों के दोबारा खुलने के तुरन्त बाद ही अधिगम के मूल्यांकन करने के बारे में सोचना एक भूल होगी। यह ऐसा मान लेना है कि स्कूल मूलत: एक अकादमिक जगह है जहाँ बच्चे मुख्य तौर पर परीक्षाएँ पास करने के लिए जाते हैं। इस बात को समझना, ज़्यादा ज़रूरी नहीं तो कम-से-कम इतना ही ज़रूरी है, कि बच्चों ने इस दौर में अपने सामाजिक सम्बन्धों के मामले में क्या खोया है और उनके भावनात्मक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ा है।

स्कूल के 'सामाजिक दायरे' और 'सामाजिक भूमिका' का महत्त्व

इसमें कोई शक़ नहीं कि ये सामाजिक सम्बन्ध अपने आप में ज़रूरी हैं या यही हैं जो भी हैं। पहली बात तो यह कि अकादमिक अधिगम, जिसे हम सबसे मूल्यवान मानते हैं, बिना सामाजिक पक्ष को ध्यान में रखे नहीं हो सकता। वायगोट्स्की और ब्रूनर जैसे विचारकों ने हमें लगातार यह बताया है कि कैसे ज्ञान का सृजन एक सामाजिक प्रक्रिया है, न केवल शिक्षक और विद्यार्थी के बीच बल्कि विद्यार्थियों के अपने बीच भी। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका कक्षा में ऐसा माहौल बनाने की होती है जहाँ बच्चों को, बीच-बीच में शिक्षक की मदद से साथ, मिल-जुलकर काम करने और सोचने की ज़रूरत होती है। यह एक-दूसरे के साथ अपने विचारों, अनुभवों व नज़रियों को साझा करना और सहपाठियों के साथ सोच-विचार करना ही है जो पहले के मुक़ाबले एक नई और ज़्यादा समृद्ध समझ की ओर ले जाता है।

शिक्षक की 'मददकर्ता' की भूमिका एक सामाजिक भूमिका है। बजाय इसके कि जो आपको आता है केवल उसे बताते जाएँ, आपसे उम्मीद की जाती है कि आप बच्चों का

अवलोकन करेंगे और जहाँ ज़रूरत हो उनके कामों में अपना सहयोग देंगे। मसलन, आप ऐसा कह सकते हैं, 'स्कूल के पास वाली ज़मीन पर बच्चों के लिए पार्क बनाने के लिए एक योजना तैयार करें। इसे जितना हो सके विस्तृत बनाएँ और इसकी लागत का हिसाब लगाने की भी कोशिश करें। इसकी चर्चा अपने समूह में करें और शुरुआत इस बात पर सहमति बनाकर करें कि आप इसको *कैसे* करेंगे।' आप इसके बाद के क़दमों की कल्पना कर सकते हैं। आप बेझिझक अपनी समझ के मुताबिक इसमें समय-समय पर कुछ मदद कर सकते हैं, जैसे परिमाप या क्षेत्रफल मापना; लागत के हिसाब के तरीक़े; ज़रूरी साइन बोर्ड कौन-से होंगे आदि। लेकिन आप यह मदद तभी करें जब बच्चे ऐसी स्थिति में हों कि उन्हें इसकी आवश्यकता हो। यह शिक्षक को एक अवलोकनकर्ता, एक अनियमित प्रतिभागी, एक सजग सहायक बनाता है। दूसरे शब्दों में, एक *सामाजिक* प्राणी जो क़िस्मत से एक अकादमिक भूमिका में भी है। क्या यह सब हमें 'हमारा पाठ्यक्रम पूरा करने' में मदद करेगा? सीधा जवाब : हाँ, इसके बारे में मैंने एक दूसरे लेख में लिखा है।[i]

हालाँकि, इस सबके दरमियान बच्चे भी कुशल सामाजिक प्राणी बनना सीख रहे हैं। खेल के मैदान में; स्कूल जाने के रास्ते में; बस के अन्दर; मध्याह्न भोजन के दौरान या पानी के नल के आसपास होने वाले सभी संवादों व मेल-जोल का योगदान एक बच्चे के विकास में होता है। (आप अपने बचपन पर विचार कर ख़ुद के लिए उन सभी चीज़ों की एक सूची बना सकते हैं जो आपने इन परिस्थितियों में सीखी थीं और कैसे आपके व्यक्तित्व का विकास हुआ)। ज्ञान की वह 'सामाजिक रचना', जिसका ज़िक्र पहले हुआ है और वह मेलजोल, जो बच्चे स्कूलों में अनुभव करते हैं, आने वाली ज़िन्दगी में उन्हें दूसरों के साथ रहने और काम करने के लिए तैयार करने का महत्त्वपूर्ण काम करते हैं। ये बच्चों के भावनात्मक विकास का आधार भी बनाते हैं। गाँधी और टैगोर दोनों ने इस 'दिमाग़, हाथ एवं दिल' ('हाथ' का तात्पर्य बच्चों के एक-दूसरे के साथ काम करने से है) की शिक्षा की बात की। यद्यपि इस तरह से ख़ुद से परे जाकर उस ढंग पर जाना जिसमें बच्चे एक-दूसरे से जुड़ना सीखते हैं, अन्ततः एक सुदृढ़ लोकतांत्रिक समाज के आधार का निर्माण करता है।

पिछले दो सालों में, महामारी ने लगातार यह दिखाया कि हम ज़िन्दा रहने और साथ-ही-साथ आगे बढ़ने के लिए भी एक-दूसरे पर कितने आश्रित हैं। लगातार गहराते जलवायु परिवर्तन के संकट की भी यह माँग है कि हम अपने व्यक्तिगत घेरों से परे जाकर देखें कि कैसे हम एक-दूसरे को नुक़सान पहुँचा रहे हैं और एक सामूहिक वैश्विक समाज के रूप में हमें कौन-से क़दम उठाने की ज़रूरत है। हमारा भविष्य सहयोग और सहकारिता में है, साथ मिलकर संकटों का सामना करने में है और एक-दूसरे संग काम करने में है। दूसरों की क़ीमत पर आगे बढ़ने की कोशिश करते-करते आज हमारे पास एक साथ आगे बढ़ने और सफल होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है — और स्कूल ही वह जगह है जहाँ यह ज़रूरत है कि हम इस तरह के अधिगम को सोच-विचार के ज़रिए और सुव्यवस्थित तौर से होने देने का प्रयास करें, न कि इसे अपने से होने के लिए छोड़ दें।

तो अब हम यहाँ से किस ओर जाएँ? स्कूलों के दोबारा खुलने पर क्या करें, ख़ासकर छोटे बच्चों के लिहाज़ से? कैसे हम नए ढंग के सामाजिक दायरे को बनाने की ओर बढ़ें जो आज के समय में ज़रूरी है।

आने वाले महीनों में हमें क्या करने की ज़रूरत है

आने वाले महीनों में, ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूल खुलेंगें। और ऐसी स्थितियाँ भी आ सकती हैं, जब वे फिर से बन्द कर दिए जाएँ। इसलिए, फिलहाल के लिए या लम्बे समय के लिए भी सामाजिक सम्बन्धों पर ध्यान देने से फ़ायदा मिलेगा। महामारी की वजह से जो एक लम्बा ब्रेक मिला, वह स्कूलों को सामाजिक दायरे के रूप में दोबारा शुरू करने और निर्मित करने का मौक़ा भी लेकर आया है।

स्कूलों के फिर से खुलने की स्थिति में

लॉकडाउन और पाबन्दियों के दौरान, बच्चों तक पहुँचने के लिए हम माँ-बाप, वालंटियरों और समुदायों पर आश्रित हो गए थे। स्कूल के फिर से खुलने के पहले हमारा उन्हें अपने साथ जोड़ना और उनके साथ काम करना उपयोगी होगा। इसके लिए कुछ क़दम जो उठाए जा सकते हैं :

- स्कूल के खुलने से पहले समुदाय के साथ बैठक करके स्कूल के दोबारा खुलने की योजना बनाएँ। इसमें साथ काम करने की परिस्थितियों पर भी बात हो ताकि स्वच्छता और सुरक्षा की ज़रूरतों को सुनिश्चित किया जा सके।
- आने वाले हफ़्तों के लिए अपनी अकादमिक योजना समुदाय के साथ साझा करें और यह भी बताएँ कि उन्हें क्या करने की ज़रूरत पड़ेगी।

इस दौरान इस बात पर ज़ोर देते रहना ज़रूरी है कि भविष्य में समुदाय की भूमिका स्कूलों के ज्ञान सम्बन्धी भागीदार की होगी और महज़ व्यवस्था बनाने या प्रबन्धन तक सीमित नहीं रहेगी।

दोबारा स्कूल खुलने वाले दिन और अगले कुछ दिनों के लिए,

यह ज़रूरी है कि उत्साह और उम्मीद का माहौल बनाया जाए और इसके लिए कुछ क़दम उठाए जा सकते हैं, जैसे :

- अब जब हम फिर से एक साथ आ रहे हैं तो माता-पिता और समुदाय के साथ 'पुनरारम्भ मेले' जैसे किसी उत्सव का आयोजन हो।
- परिवारों को मौक़ा दें कि वे पिछले दो सालों के अपने अनुभवों को बयाँ कर पाएँ।
- स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े प्रोटोकॉल के अनुसरण पर एकमत हों (इसे केवल बच्चों पर ही न थोपें)।
- बच्चों को उनके दोस्तों के साथ रहने और खेलने का समय दें। शुरुआत के कुछ दिन एक तरह से अव्यवस्थित ही रहने दें।
- कुछ समय हर एक बच्चे के अनुभवों को सुनने में बिताएँ, ख़ुद के अनुभव भी साझा करें और चर्चा करें कि इन हालातों से गुज़रते हुए हमने क्या सीखा व अगली बार हमारी प्रतिक्रिया कैसे भिन्न होगी।
- बच्चों को बताएँ कि सीखने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका किस तरह बदल रही है। कैसे हम सब आने वाले साल में एक-दूसरे का सहयोग करेंगे और यह कि उनकी भूमिका पहल को सामने लाने, अपने दोस्तों का सहयोग करने और ख़ुद के और एक-दूसरे के सीखने पर नज़र रखने की होगी।
- उन क्षेत्रों पर चर्चा करें जिनमें वे कमज़ोर महसूस करते हैं। सीखने-सिखाने को लेकर अपनी योजनाओं की चर्चा उनसे करें, शैक्षणिक नियमों/ प्रोटोकॉल का पालन किए जाने को लेकर एकमत हों।
- बच्चों को भरोसे में लें और उन्हें बताएँ कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को दोबारा पूरी क्षमता पर लाने के लिए आपके लिए यह जानना ज़रूरी है कि उन्होंने अब तक कितना सीखा है।
- आख़िरकार, उनकी अनुमति और स्वैच्छिक भागीदारी के मुताबिक मूल्यांकन करें।

'नए आकार में ढले स्कूल' की ओर

अब जब आपको ज़्यादा गहरे और दोतरफ़ा सम्बन्धों को लेकर मज़बूत शुरुआत मिली है, आप इसे आगे कैसे जारी रख सकते हैं? इसे नीचे दिए चरणों के सन्दर्भ में रखकर देखना मददगार साबित हो सकता है।

चरण 1 : इस पुनरारम्भ का उपयोग एक नए सफ़र की शुरुआत के रूप में करें

- पाठ्यपुस्तकों और सामग्रियों का परिचय दिलचस्प तरीक़े से दें। उदाहरण के लिए, इसके लिए क्विज़ कैसा रहेगा जो बच्चों को पाठ्यपुस्तक की छान-बीन करने के लिए प्रोत्साहित करे, जैसे सबसे लम्बा अध्याय कौन-सा है, किस शब्द का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा हुआ है (उदाहरण के लिए 'बल' या 'प्रकाश'), सबसे लम्बा सवाल कौन-सा है, इत्यादि।
- शुरुआत अधिक-से-अधिक ऐसे सवालों के इस्तेमाल से करें जिनके विस्तृत जवाब हों (अगर आप चाहें, तो पता करें कि ऐसे सवाल किस तरह के होते हैं और वे विभिन्न विषयों और कक्षाओं पर कैसे लागू होते हैं)।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को और ज़्यादा 'सामाजिक' रूप देने की ओर सहजता से चरण-दर-चरण बढ़ें : शुरुआत अधिकतर मौखिक कार्य साथ मिलकर करने के प्रोत्साहन से करें। इसके बाद समूहों में ज़्यादा-से-ज़्यादा पढ़ाई-लिखाई के कामों की तरफ़ और अन्त में वस्तुओं या उपकरणों का मिल-जुलकर उपयोग करने की ओर बढ़ें। (मसलन, यही क्रम क्यों? अनुमान लगाइए!)
- बच्चों के साथ कुछ उद्देश्य तय करें — उनके साथ मिलकर 'अध्ययन को दोबारा पटरी' पर लाने की प्रक्रिया की पहल करें। समूहों के साथ विभिन्न स्तरों पर तथा बहुस्तरीय समूहों के साथ मिलकर काम करें।
- बच्चों को उद्देश्य तय करने के लिए एवं ख़ुद की जाँच के लिए विभिन्न गतिविधियों की माँग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- शैक्षिक प्रवीणता के लिए रचनात्मकता, चिन्तन, विश्लेषण, निर्णय लेने की क्षमता, अध्ययन कौशलों और भाषा में सुधार कर, बच्चों को स्वयं सीखने के लिए तैयार करें (आप इन सभी से जुड़ी गतिविधियों को इंटरनेट पर देख सकते हैं)।

चरण 2 : स्वतंत्र मगर सामाजिक रूप से जुड़े शिक्षार्थियों की ओर

- साथ मिलकर पाठ्यपुस्तकें पढ़ने (जी हाँ, विद्यार्थी यह अपने दम पर कर सकते हैं), जानकारियों और विषयवस्तु को इकट्ठा करने, चीज़ों को समझने एवं अन्वेषण करने में एक-दूसरे की मदद करने के लिए विद्यार्थियों के बीच स्वयं सहायता समूह बनाएँ ताकि जितना हो सके वे साथ मिलकर सीखने की कोशिश कर पाएँ। इसके बाद आप उनकी ख़ुद से करने की क्षमता को विस्तृत करने में मदद करने की भूमिका निभा सकते हैं (उदाहरण के लिए, उनसे यह सवाल पूछना : तुम्हारे मुताबिक इसका मूल्य क्या होगा?)।

- विचार करें कि वे कौन-से फ़ैसले, ज़िम्मेदारियाँ और भूमिकाएँ हैं जो आप बच्चों को सौंप सकते हैं। फिर, उनके साथ इन पर चर्चा करें और इस तरह कक्षा/ स्कूल चलाएँ जहाँ विद्यार्थी अहम भूमिका में हों।
- विद्यार्थियों के प्रदर्शन को लेकर ख़ुद उनके साथ एवं उनके माता-पिता और साथी शिक्षकों के साथ चर्चा करें — पता लगाएँ कि उनके प्रदर्शन में सुधार करने के लिए सभी को (आपके समेत) क्या करने की ज़रूरत है। आपका लक्ष्य इस सवाल का जवाब ढूँढ़ना है कि सबकी शिक्षा सबकी ज़िम्मेदारी किस तरह बन सकती है।
- समुदाय को ज्ञान के सहभागी के रूप में शामिल करें — समुदाय के ऐसे बहुत-से सदस्य हैं जिनके पास कक्षा में साझा किए जा सकने वाले अनुभव और ज्ञान के क्षेत्र हैं (एक ट्रक चालक भारत का भूगोल किसी से भी बेहतर जानता है, लुहार धातुओं से अशुद्धियों (मिलावट) को अलग कर सकता है, एक बुनकर को निर्देशांकों की बेहतरीन समझ होती है)। आप समृद्ध संसाधनों से घिरे हुए हैं।

चरण 3 : आपके स्कूल के लिए एक नई दृष्टि

अब जब आपने सभी शुरुआती क़दम उठा लिए हैं, तो सबको साथ लेकर आगे बढ़ना सही रहेगा। इसलिए माता-पिता, स्कूल प्रबन्धन समिति (एसएमसी), समुदाय और स्वयं विद्यार्थियों को शामिल करने की ओर काम करें ताकि आपके स्कूल के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टि बन सके। अपने आपसे कुछ सवाल पूछें, जैसे कि :

- स्कूल में ऐसी कौन-सी मूल समस्याएँ हैं कि जो आपके द्वारा सम्भाली जा सकती हैं? (उदाहरण के लिए, कुछ बच्चे उतना शरीक़ नहीं होते जितना वे हो सकते हैं या उतना नहीं सीखते जितना सीख सकते हैं; कुछ शिक्षक नई पहल करने से कतराते हैं, कुछ माता-पिता उतना सहयोग नहीं करते इत्यादि।) अगर इन समस्याओं का हल निकल आए तो आपके स्कूल में सबसे बड़े बदलाव क्या होंगें?
- नतीजतन, आज से पाँच साल बाद आपके स्कूल में क्या हो रहा होगा जो आज नहीं होता है? (उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालय में, रिपोर्ट की जगह माता-पिता से बातचीत ले लेगी।)
- आप अलग-अलग लोगों को ऐसा क्या कहते सुनेंगे जो वे आज नहीं कहते?
- आपके बच्चों में क्या गुण होंगे? एक समूह के तौर पर वे किस प्रकार भिन्न होंगें?
- शिक्षकों और स्कूल के प्रमुख के पास कौन-से कौशल और क्षमताएँ होंगी? एक समूह के तौर पर वे किस प्रकार भिन्न होंगे?
- समुदाय की भूमिका में क्या बदलाव आएगा? हमें कैसे पता चलेगा कि यह एक उपयोगी नाता है?
- आप किन बाधाओं को दूर करेंगे? किनकी मदद से? कैसे?
- आप (आपके मित्र/ सहयोगी/ समुदाय) कौन-से क़दम उठाएँगे? कौन क्या करेगा और कब तक?

इन सबको एक योजना में तब्दील कर लें — एक दीर्घकालिक योजना जिसका एक हिस्सा आप अगले तीन महीने में लागू कर लेंगे और सब के साथ इस दिशा में काम करेंगें।

निष्कर्ष

शिक्षक अक्सर कहते हैं कि उन्हें ऐसे बदलाव करने की इजाज़त नहीं है। याद रखें, अगर हम बुरी तरह पढ़ाने के लिए स्वतंत्र हैं तो हम सुधार करने के लिए भी स्वतंत्र हैं। हमें कौन रोकता है अधिक मुस्कराने से, देसी सामग्री का उपयोग करने से (क्या आप जानते हैं कि पत्तियाँ 5-5 ,3-3 ,2-2 ,1-1 और 7-7 के समूहों में बढ़ती जाती हैं और गुणन के लिहाज़ से एक शानदार साधन हैं?) या एक कहानी को पढ़ते हुए ऐसी दिलचस्प जगह पर अधूरा छोड़ देने से, ताकि बच्चे बाक़ी की कहानी ख़ुद से पढ़ना चाहें? कुछ अन्य सुझाव हो सकते हैं : हर हफ़्ते ऐसे एक बच्चे/ समूह पर ध्यान आकृष्ट करना जो दूसरों के लिए सबसे अधिक मददगार रहा हो, अत्यधिक रचनात्मक चुनौतियों को सामने रखना जिन्हें एक साथ मिलकर पूरा किया जा सके (उदाहरण के लिए, उनसे पूछना कि अगर उन्हें केवल एक हाथ का उपयोग करने की अनुमति हो तो वे कक्षा के फ़र्नीचर को नए तरीक़े से कैसे जमाएँगे), बच्चों का मूल्यांकन व्यक्तिगत रूप से न करके एक समूह के तौर पर करना इत्यादि। शिक्षक की अपनी भूमिका का आनन्द लेने से और अपनी कक्षा एवं स्कूल में जो रिश्ते हम बना पाते हैं (नतीजतन जिस सीखने को अंजाम दे पाते हैं) उनमें सन्तुष्टि ढूँढ़ने से हमें कोई नहीं रोकता।

बहरहाल, जो कुछ भी ऊपर लिखा गया है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य भी यही है। जैसे ही आप नए रूप में ढले एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी स्कूल की तरफ़ बढ़ रहे होते हैं, तो अच्छी-ख़ासी गुंजाइश है कि आपको एक उदाहरण के तौर पर पेश कर दिया जाए!

Endnotes

i Subir Shukla. Why We Need Responsive Schools. Learning Curve. *Every Child Can Learn Part 2.* April 2020. Issue 7. Pp 92.

ii For example: https://chachi.app and https://mananbooks.in/downloads/ for material containing activities

सुबीर शुक्ला इग्नस समूह के साथ हैं और भारत एवं अन्य एशियाई व अफ़्रीकी देशों के शिक्षा तंत्रों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए काम करते हैं। इसमें मुख्य रूप से उनका ध्यान हाशियाग्रस्त बच्चों की ज़रूरतों पर होता है। इससे पहले वे डीपीईपी के मुख्य सलाहकार तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार सलाहकार थे और उन्होंने आरटीआई-2009 की गुणवत्ता रूपरेखा बनाने के काम का नेतृत्व किया था। वे विशेषज्ञों की उस टीम के सदस्य भी हैं जिसे नीति आयोग ने भारत की स्कूली शिक्षा की दृष्टि-2035 को विकसित करने का काम सौंपा है। वे बच्चों के लिए लिखते हैं और उनकी कृतियाँ मनन बुक्स के ज़रिए प्रकाशित होती हैं। साथ ही, वे बच्चों के लिए *चहक* नामक बुनियादी शिक्षा की एक पत्रिका भी निकालते हैं। हाल ही में उन्होंने *चाइल्ड डेवेलप्मेंट एंड ऐजुकेशन इन द ट्वेंटी-फर्स्ट सेंचुरी* (स्प्रिंगर, सिंगापुर द्वारा प्रकाशित, अक्तूबर 2019) नामक क़िताब का सह-लेखन किया है। उनसे subirshukla@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अभिषेक दुबे

स्कूलों को दोबारा खोलना | पुनरुत्थान का अवसर

टुलटुल बिस्वास

"मैडम जी, स्कूल कब खुलेगा?" ये सवाल बच्चे आए दिन उन सरकारी शिक्षकों से पूछते रहते हैं, जिनके साथ हम मध्य प्रदेश के छह ज़िलों में काम करते हैं। जब भी वे विद्यार्थियों को वर्कशीट्स और डिजिटल पाठ्यक्रम की तरक़्क़ी देखने के लिए बुलाते हैं, तब बार-बार यही गुहार सुनते हैं। ऐसा लगता है कि छोटे बच्चे (कक्षा 3, 4, 5 और 6) स्कूल जाने के लिए सबसे ज़्यादा तड़प रहे हैं। उन्हें शैक्षणिक विकास के साथ-साथ समाजीकरण के लिए उस स्थान और अन्य विद्यार्थियों से बातचीत की भी बहुत ज़रूरत है जो स्कूल उन्हें देता है।

चूँकि भारत के ज़्यादातर राज्यों में *कोविड-19* मरीज़ों की संख्या कम होने लगी है, कई राज्य लगभग डेढ़ साल बाद फिर से स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थाओं को व्यक्तिश: कक्षाओं के लिए खोलने का ऐलान कर रहे हैं। मध्य प्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़ और दिल्ली जैसे कुछ राज्य तो नौवीं व उससे ऊपर की कक्षाओं में ऑफ़लाइन कक्षाओं के साथ प्रयोग करने भी लगे हैं। हरियाणा और छत्तीसगढ़ ने आने वाले हफ़्तों में प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए भी स्कूल खोलने का ऐलान कर दिया है। लेकिन विडम्बना तो ये है कि ज़्यादातर राज्यों में कक्षा नौवीं और ऊपर के विद्यार्थियों को ऑफ़लाइन कक्षाओं के लिए स्कूल बुलाया जा रहा है, जबकि विशेषज्ञों की राय के अनुसार प्राथमिक स्तर के बच्चों को साक्षरता व संख्या-परिचय की मूलभूत ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष, आमने-सामने अन्तर्क्रिया की ज़रूरत है।

होशंगाबाद ज़िले के एक ब्लॉक शैक्षिक समन्वयक (बीएसी) ने हाल ही में छह-सात साल के बच्चों के बारे में चिन्ता व्यक्त की कि, चूँकि अभी औपचारिक स्कूली शिक्षा से उनका परिचय भी नहीं हुआ है, पिछले डेढ़ साल से वो इससे वंचित हैं तो स्कूल आने पर वे इस प्रणाली से कैसे तालमेल बना पाएँगे। एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक ने भी यही बात दोहराई, "ये बच्चे तो घर से दूर जाकर सीखने के बारे में जानते ही नहीं हैं। तो जब ये स्कूल आएँगे, हम इन्हें उठना-बैठना सिखाएँ, पहली के पाठ पढ़ाएँ, दूसरी के या तीसरी के?"

> ये पूरे राष्ट्र के लिए ध्यान देने योग्य और चिन्तनीय विषय बन गया है कि पहली से आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले जिन बच्चों को शिक्षा के अधिकार की सुरक्षा मिलनी चाहिए, उन्हें ही इस अप्रभावी ऑनलाइन शिक्षा की ओर धकेला जा रहा है। इसलिए एक तरफ़ हमें साथ आकर निचली कक्षाओं के लिए स्कूल खोलने की माँग करनी चाहिए और दूसरी तरफ़ रचनात्मक ढंग से यह योजना बनानी चाहिए कि फिर से खुलने और खुलने के बाद सुचारू रूप से चलने के लिए स्कूलों को क्या तैयारी करने की ज़रूरत है।

स्कूल खुलने की इन तैयारियों के मद्देनज़र मैं शिक्षा के कुछ आधारभूत दृष्टिकोणों को टटोलना चाहूँगी जो मौजूदा समय में और बाद में औपचारिक रूप से स्कूल खुलने पर भी हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

मुँह चिढ़ाता भावात्मक ज्ञानक्षेत्र

सीखना एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावनात्मक (मनो-सामाजिक-भावात्मक) क्रिया है और हम उन्हीं लोगों से सबसे बेहतर सीखते हैं, जिनके साथ जुड़ाव और सुरक्षित महसूस करते हैं, यह बात हम सब जानते तो हैं परन्तु अक्सर भूल जाते हैं। मैंने सरकारी और प्राइवेट दोनों तरह के स्कूल शिक्षकों, निर्माणाधीन शिक्षकों और मैदानी स्तर के शिक्षा कार्यकर्ताओं के साथ कार्यशाला सत्रों में बार-बार उन भावनाओं को जानने की कोशिश की है जो बच्चे अपने प्रारम्भिक स्कूली जीवन में महसूस करते हैं। अभी मेरे पास पूरे देश के कई हिस्सों से लगभग 500 प्रतिभागियों का डेटा है और डर पूरे परिदृश्य पर छाया हुआ है — इशारा इस तथ्य की तरफ़ है कि डर वह भावना है जिसे प्रारम्भिक स्कूली जीवन में बच्चे सर्वाधिक महसूस करते हैं। आज समय है कि हम इसे बदलें और अपने विद्यार्थियों को एक ज़्यादा सकारात्मक, बाँधने वाला, भावनात्मक रूप से समर्थ बनाने वाला और शैक्षणिक रूप से चुनौतीपूर्ण वातावरण प्रदान करें।

कोविड-19 ने हमसे हमारे कई क़रीबी लोगों को छीन लिया और हमें झटके से ये भी एहसास करवा दिया कि जीवन में हम जिनसे जुड़ाव महसूस करते हैं, उनके साथ सकारात्मक सम्बन्ध बनाने चाहिए। और शिक्षकों के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता है कि वे यह जुड़ाव विद्यार्थियों के साथ बनाएँ?

सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के आँकड़े देखकर पता चलता है कि इनमें दलित और अनुसूचित जनजाति के बच्चों और

लड़कियों की प्रमुखता है। इसका मतलब है कि सरकारी स्कूलों में वे बच्चे पढ़ रहे हैं जिनके परिवार सबसे कठिन आर्थिक हालात का सामना कर रहे हैं। इसका मतलब यह भी है कि यह बच्चे सबसे अधिक भूखे होंगे, शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से, क्योंकि इनके माता-पिता अपनी दैनिक आजीविका चलाने के संघर्ष में फँसे हुए होंगे। इन बच्चों को कक्षा में किसी भी विषय पर ध्यान लगाने के लिए ज़रूरी होगा कि कक्षा के अधिकारी व्यक्ति यानी शिक्षक की स्वीकृति और मान्यता मिले। शिक्षक होने के नाते, सबसे अच्छा हम यही कर सकते हैं कि अपने विद्यार्थियों की इस ज़रूरत को समझें और उन्हें

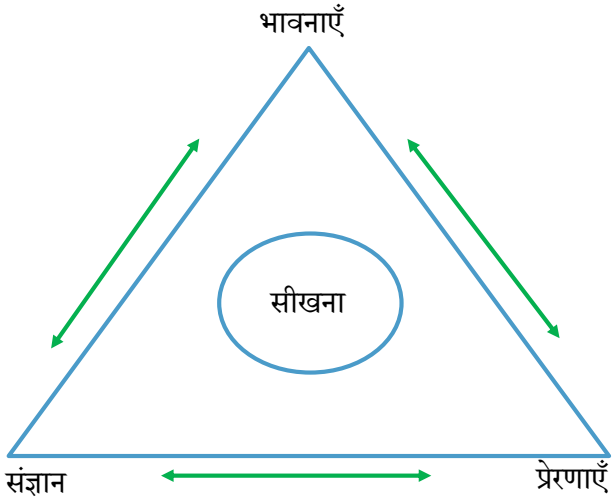

एक स्वीकृतिपूर्ण और गर्मजोशी का माहौल दें। शुरुआत के लिए, हम कम-से-कम अपने पूर्वाग्रहों को पहचानकर, उनका विश्लेषण करके, उनके साथ तालमेल बना सकते हैं। दूसरा रचनात्मक क़दम इन पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाना और अपने अन्दर उनके स्रोत ढूँढ़ने का होगा। इससे हम अपने विद्यार्थियों को और उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को बेहतर ढंग से स्वीकार कर पाएँगे और उनके साथ आपसी लगाव और स्नेह का रिश्ता बना पाएँगे।

भावात्मक ज्ञानक्षेत्र को इस चर्चा में शामिल करने का एक और महत्त्वपूर्ण आयाम यह समझना है कि सीखना कैसे भावनात्मक स्वास्थ्य से जुड़ा है और उस पर निर्भर भी है।

जैसा कि ऊपर दिए गए त्रिकोण से समझ आता है कि भावनाएँ, प्रेरणाएँ और संज्ञान तीनों आपस में जुड़े हुए हैं, एक-दूसरे पर इनका प्रभाव पड़ता है और यह एक साथ मिलकर सीखना सम्भव बनाते हैं। इसलिए सार्थक शिक्षण के लिए आवश्यक है कि हम विद्यार्थी की भावनात्मक स्थिति से जुड़ाव बनाएँ, वे जो भावनात्मक ऊर्जा लेकर आते हैं, अहमियत समझें और उसका इस्तेमाल एक प्रेरणादायक माहौल बनाने में करें जो संज्ञान को बढ़ावा दे।

शुरुआत के लिए, शिक्षक होने के नाते हमें यह समझना होगा कि हमें अपने विद्यार्थियों के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव बनाना ही होगा। हमें ये स्वीकार करना होगा कि उनमें से कुछ को हम पसन्द करते हैं, कुछ को नापसन्द करते हैं और कुछ के तो विरुद्ध होते हैं। क्या हम इन्सान होने के नाते अपनी इन भावनाओं पर अंकुश लगा सकते हैं और उनके मूल कारण तक पहुँच सकते हैं, जो शायद हमारे अन्दर ही हों? क्या हम जो महसूस कर रहे हैं, उसे लेकर हम और सतर्कता और स्वीकृति का भाव ला सकते हैं, ताकि उसे हम अपने अन्दर ही सम्भाल सकें?

विद्यार्थियों के ज्ञान के आधार पर आगे बढ़ना

बीते साल में, 'लर्निंग गैप' और 'लर्निंग लॉस' जैसे शब्दों को लेकर बहुत शोरगुल हुआ है। इस 'लर्निंग गैप/ लॉस' का अध्ययन ज़रूरी है ताकि हम नीति-स्तर के बदलावों में मदद कर सकें और पाठ्यक्रम की छँटाई पर भी काम कर सकें, ताकि डेढ़-दो साल के बाद स्कूल आने पर बच्चे जिस कठिनाई का सामना करेंगे वह कम हो सके। लेकिन, क्या इन लॉकडाउन के महीनों में बच्चों को नए अनुभव नहीं मिले होंगे? क्या यह सम्भव नहीं कि अपनी छोटी उम्र में जीवन के रचनात्मक वर्षों में, जब वे इस महामारी, लॉकडाउन/ स्कूलबन्दी की स्थिति से गुज़र रहे थे, तब उन्होंने कुछ और दूसरी चीज़ें भी सीखी हों? शायद लचीलापन, धैर्य, कोई नया कौशल, कला या फिर इस महामारी की नई भाषा?

होशंगाबाद के हालिया दौरे पर, एक 8-9 साल की बच्ची ने मुझसे पूछा, "मैडम जी, लॉकडाउन और लॉक-अप में क्या फ़र्क़ होता है?" मैं जानती थी कि वह अँग्रेज़ी में इन-आउट, स्माल-बिग, अप-डाउन, थिन-फैट जैसे अवधारणात्मक शब्दों की छानबीन कर रही थी, लेकिन उसका अपनी अँग्रेज़ी शब्दों की छानबीन का इस्तेमाल करके अपने चारों तरफ़ होने वाली गतिविधियों के सिर-पैर समझने की इस कोशिश ने मुझे चकित कर दिया।

इस दौर में बच्चों ने जो अनुभव किया है, कक्षा में उस पर ध्यान देना और उसे समझना सार्थक साबित होगा। कुछ प्रश्न इसमें कारगर हो सकते हैं, जैसे उनके परिवारों को क्या हुआ, उनके माता-पिता के काम को क्या हुआ, उन्होंने खाने और राशन के लिए क्या किया, क्या वे अपने पड़ोसियों और दोस्तों से मिले, उन्होंने किस बारे में बातें कीं, क्या उनके परिवार में किसी को *कोविड-19* हुआ, उन्हें किस तरह की मेडिकल सहायता मिली और किसने इस दौरान उनकी मदद की आदि।

सूची तो अन्तहीन है और शिक्षक इसे अपने और बच्चों के रहन-सहन के अनुसार ढाल सकते हैं। यह शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच, बीते कुछ महीनों को लेकर बच्चों ने

जिन कठिनाइयों का सामना किया है, उनके बारे में संवाद का और बच्चे जिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में रहते हैं उन्हें समझने का एक अच्छा तरीक़ा हो सकता है। शिक्षकों को बच्चों से बात करने, उनकी बात सुनने के लिए संवेदनशील बनाने से, पिछले वर्ष में उन्होंने जो जानकारी और ज्ञान हासिल किया, उसे समझने से (अ) एक सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध स्थापित हो सकेंगे और (ब) बच्चे जो ज्ञान कक्षा में लाते हैं, उससे शिक्षा की एक मज़बूत बुनियाद बन सकेगी। इस सहानुभूतिपूर्ण और रचनात्मक नींव पर बेहतर शिक्षा होगी।

कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था

शारीरिक दूरी हमारे 'नए सामान्य' का हिस्सा बन चुकी है। आने वाले कुछ समय तक, कक्षाओं में भी विद्यार्थियों को आपस में दूरी बनाकर बैठाया जाएगा। यह हमें कक्षा की कठोर संरचना को तोड़ने का और यह भी जाँच करने का मौक़ा देती है कि क्या बच्चों का एक के पीछे एक निष्क्रिय कतारों में बैठना सचमुच सीखने का अच्छा तरीक़ा है। हमें ख़ुद से ये प्रश्न पूछना चाहिए : किस तरह की बैठक व्यवस्था अधिक समावेशी और सहभागी शिक्षा को बढ़ावा देती है?

कोविड-19 की एक और वास्तविकता यह है कि हमें विद्यार्थियों को खेपों में बुलाना होगा। दूरस्थ सरकारी प्राथमिक स्कूलों में, दर्ज संख्या 20-80 के बीच कुछ भी हो सकती है। इसलिए, उन स्कूलों में जहाँ सिर्फ़ दो-तीन कमरे हैं, कुछ खुली जगहें हैं (जैसे बरामदे), बच्चों को उनकी क्षमता अनुसार समूहों में बाँटकर दूर-दूर गोलों में बिठाना कारगर होगा — एक ऐसी व्यवस्था जहाँ बच्चे एक-दूसरे को भी देख सकते हैं और शिक्षक को भी। जिन स्कूलों में दर्ज संख्या अधिक है और छोटी-छोटी टोलियों के लिए कक्षाओं या शिक्षकों की कमी है, उन्हें अलग-अलग खेप में बाँटकर हफ़्ते में अलग-अलग दिन बुलाना कारगर हो सकता है।

दोनों ही मामलों में, ये शिक्षक-केन्द्रित बैठक व्यवस्था को तोड़कर समावेशी गोलाकार बैठक व्यवस्था अपनाने का सही समय है — जहाँ विद्यार्थी हाथ भर की दूरी पर बैठें और फिर भी एक-दूसरे के आमने-सामने हों। यह हमजोली अन्तर्क्रिया को बढ़ावा देगी और शिक्षक-संचालित शिक्षण से ध्यान विद्यार्थियों और शिक्षकों की साझा परस्पर शिक्षा की तरफ़ लाएगी। एक और चीज़ जो सीखने की इस साझा और इंटरएक्टिव प्रक्रिया में मदद कर सकती है, वह है विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षक के निर्देशों के आधार पर उनसे गतिविधियाँ करवाना। जहाँ कमरे छोटे हैं और बड़े घेरों में बैठना सम्भव नहीं है, छोटे समूह बनाना एक तरीक़ा हो सकता है ताकि विद्यार्थियों के बीच परस्पर संवाद की भी सम्भावना हो और उनके बीच आवश्यक दूरी भी बनी रहे।

सीखने में पोषण और स्वास्थ्य की भूमिका

कोविड-19 ने हमें अपने और आसपास रह रहे लोगों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना सिखा दिया है। इस अनुभव से सीखकर स्कूलों में भी पोषण और स्वास्थ्य सहायता की प्रणाली होनी चाहिए। प्रारम्भिक स्कूल पाठ्यचर्या में, अपने शरीर और उसके कार्यों को लेकर जागरूकता और बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल का ज़रूरी स्थान होना चाहिए। इस दिशा में एक और क़दम स्कूल परिसर में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराना हो सकता है।

फिर, बच्चों को संज्ञानात्मक कार्य के लिए तैयार करने में एक वक़्त के गर्मा-गर्म भोजन की अहम भूमिका तो हम जानते ही हैं जो उन्हें मिड-डे मील के रूप में मिलता है। अभी मिड-डे मील सिर्फ़ 6-14 साल के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है (और आँगनवाड़ी में 3-6 साल के बच्चों के लिए)। चूँकि सरकारी स्कूलों में भर्ती होने वाले विद्यार्थी समाज के वंचित तबक़ों से आते हैं, घर में खाना उपलब्ध हो, ये गारंटी भी नहीं होती। मध्य प्रदेश और कुछ अन्य राज्यों में कक्षा आठवीं तक और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में कक्षा 7 तक इस पोषण की कमी को मिड-डे मील द्वारा पूरा किया जाता है। अलबत्ता, छत्तीसगढ़ के शिक्षकों द्वारा किया गया एक अध्ययन साफ़ दर्शाता है कि मिड-डे मील को ऊपरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए भी जारी रखने की ज़रूरत है। लेकिन जैसे ही विद्यार्थी उच्च कक्षा (आठवीं-नौवीं) में पहुँचता है मिड-डे मील सुविधा रुक जाती है, बावजूद इसके कि घर की परिस्थिति अब भी वही है। पोषण में इस कमी के कारण विद्यार्थी की पोषण स्थिति पर फ़र्क़ पड़ता है, जो कइयों को हल्के या मध्यम कुपोषण की तरफ़ धकेल देता है।

कोविड-19 की परिस्थिति और आजीविका ख़त्म हो जाने से यह स्थिति और भी विकट हो गई है। महामारी के चलते कई बच्चों को कई महीनों तक भूख या सामान्य से कम खाने में गुज़र-बसर करनी पड़ी है। इसलिए अब फिर से सारे विद्यार्थियों को गर्म मिड-डे मील मुहैया कराना एक ज़रूरी क़दम है।

शिक्षकों में तनाव पहचानना

महामारी के दौरान शिक्षक ख़ुद भी भारी तनाव में रहे हैं। मध्य प्रदेश व कुछ अन्य राज्यों में उन्हें क्वारेंटाइन और आइसोलेशन केन्द्र चलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई, सर्वे और टीकाकरण अभियान का, मोहल्लों में जाकर बच्चों को पढ़ाने का, घर-घर जाकर पाठ्यपुस्तक वितरण, राशन और वर्कशीट्स वितरण, अनाज मण्डियों में जाकर ख़रीदी का निरीक्षण, जैसे न जाने कितने काम उन्हें सौंपे गए। इन सब कामों की किसी ट्रेनिंग के बग़ैर, बिना पीपीई किट्स और बिना किसी अतिरिक्त इंश्योरेंस समर्थन के, कई शिक्षकों ने अपनी जान जोखिम में डाली है

और कुछ तो *कोविड-19* या फिर दूसरी तनाव-सम्बन्धित बीमारियों का शिकार हो गए और अपनी जान गँवा दी।

अपनी कार्य-क्षमता बढ़ाने के लिए डिजिटल तकनीकें सीखना और वर्चुअल माध्यम से अपने शिक्षण के उत्तरदायित्व पूरे करना इस तनाव को और बढ़ा रहा है। ऐसी स्थिति में ज़रूरी है कि शिक्षकों को बेहतर ढंग से तैयार किया जाए, शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी, ताकि वो ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में बाहर जाकर काम कर सकें। शिक्षकों को ऐसे तैयार किया जाना चाहिए कि वे अपनी भावनाएँ पहचान सकें, उन्हें स्वीकार कर सकें, सम्भाल सकें और तनाव दूर करने की दिशा में काम कर सकें।

होशंगाबाद ज़िले के सारे ब्लॉक्स में 'माइंडफुलनेस' के अभ्यास को लेकर कार्यशालाएँ आयोजित करने के हमारे प्रयास काफ़ी कारगर साबित हुए हैं — इन कार्यशालाओं में शिक्षकों को बस ख़ुद के साथ समय बिताने दिया जाता है और अपने चारों तरफ़ हो रही चीज़ों पर ध्यान देने कहा जाता है — आवाज़ें, दृश्य और स्पर्श से महसूस किए जाने वाले अनुभव। हमारी योजना (अ) ब्लॉक स्तर पर शिक्षकों के साथ और ऐसी कार्यशालाएँ करने की है और (ब) ऐसी गतिविधियाँ करने की है जो शिक्षक अपनी कक्षाओं में भी कर सकें ताकि विद्यार्थी भी अपने तनाव को दूर कर सकें।

टेक्नॉलॉजी का उपयोग

टेक्नॉलॉजी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है और रहने वाली है — स्कूलों में भी और फिर दैनिक जीवन के अन्य पहलुओं में भी। तो चाहे स्कूल के परिवेश में भी हो, ख़ासकर सरकारी प्राथमिक स्कूलों में, हमें ये तथ्य स्वीकार करना होगा कि डिजिटल शिक्षा सामग्री अधिकांश बच्चों की पहुँच से बाहर होती है और बहुत कम बच्चे इसके साथ सार्थक ढंग से जुड़ पाते हैं। तो हम इस 'नए सामान्य' को अनदेखा नहीं कर सकते। एक बच्चे के जीवन को प्रभावित करने वाली सरल प्रक्रियाओं के डिजिटलीकरण में कुछ तो फ़ायदा है — जैसे नवोदय विद्यालय का फॉर्म भरना या फिर छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना।

मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में, एकलव्य फ़ाउण्डेशन के कई प्रयासों में से एक है समुदायों में कम लागत वाले रास्पबेरी-पाई (Raspberry-Pi) सेटअप्स का इस्तेमाल करना, कक्षा 5-8 तक के बच्चों को व्यक्तिगत लॉग-इन अकाउंट्स के साथ। विद्यार्थी इन केन्द्रों पर छोटे-छोटे समूहों में आकर www.teysu.in पर लॉग-इन कर कर सकते हैं। यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जहाँ विद्यार्थी हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित में पहले से तैयार इंटरएक्टिव मॉड्यूल्स पर काम कर सकते हैं। इनको लेकर विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की प्रतिक्रिया काफ़ी उत्साहजनक रही है। बच्चों को मॉड्यूल्स पर काम करने में मदद करने और सीखने के इस अनुभव से बढ़ती जिज्ञासा को सम्बोधित करने तथा खोजबीन में स्थानीय युवाओं और शिक्षकों ने बहुत योगदान दिया है।

संक्षेप में, टेक्नोलॉजी से मुँह मोड़ना या उस पर ध्यान न देना बीते कल की बातें हैं। अब समय है कि हम रचनात्मक ढंग से ये सोचें कि शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका को बरक़रार रखते हुए विद्यार्थियों को टेक्नॉलॉजी-कुशल कैसे किया जा सकता है। जैसे-जैसे स्कूल फिर से खुलने के लिए तैयार हो रहे हैं, तकनीकी उपकरणों को सुधारना व रखरखाव और मिले-जुले रूप से उनका इस्तेमाल करना शिक्षकों के लिए एक रणनीति हो सकती है उनके लिए और विद्यार्थियों के लिए फ़ायदे की होगी।

मूल्यांकन की पुनर्कल्पना

ऑनलाइन शिक्षा ने मूल्यांकन के उद्यम को छलावे में बदल दिया है। चूँकि ऑनलाइन मूल्यांकन के लिए सीधे उत्तर वाले प्रश्न उपयुक्त नहीं हैं, यही वक़्त है कि हम शिक्षकों के साथ काम करें और समझें कि सीखने का मूल्यांकन क्या है और ऐसी प्रणाली तैयार करें जो विद्यार्थियों की असल क्षमता का मूल्यांकन कर सके, ताकि यह देखा जा सके कि क्या विद्यार्थी किसी सिद्धान्त को समझते हैं और उसका इस्तेमाल किसी नई परिस्थिति में कर सकते हैं। इसका एक तरीक़ा है ओपन-बुक परीक्षा का और ऐसे प्रश्नपत्र तैयार करने का जो विद्यार्थी को सोचने पर, अलग-अलग जानकारियों को जोड़ने पर और जो कुछ उन्होंने सीखा है, उसका इस्तेमाल नई परिस्थिति में करने पर मजबूर करे।

लगभग डेढ़ साल बाद पूरे भारत के स्कूल खुलने की तैयारियाँ कर रहे हैं, ये ज़रूरी है कि हम इस अवसर का इस्तेमाल उन बदलावों को बड़े पैमाने पर लाने की कोशिश में करें जिन्हें नीति दस्तावेजों में प्रस्तावित किया गया है और छोटे पैमाने पर आज़माया गया है। अर्थात हमारे पास चुनौती को एक अवसर में बदलने का मौक़ा है। हम इसका पूरा फ़ायदा कैसे उठाते हैं और शिक्षा का पुनर्जागरण करते हैं या नहीं इस बात पर निर्भर करेगा कि हम ग्लास को आधा ख़ाली मानते हैं या आधा भरा।

Endnotes

i More girls enrolled than boys in ages 4-8 years (ASER report). https://www.indiatoday.in/education-today/news/story/number-of-girls-getting-enrolled-in-govt-schools-more-than-boys-in-4-8-years-category-aser-report-1636731-2020-01-14

ii https://www.eklavya.in/pdfs/Sandarbh/Sandarbh_116/01-11_Malnutrition_Among_High_School_Tribal_Children.pdf

टुलटुल बिस्वास एकलव्य भोपाल के टीचर एजुकेशन, आउटरीच एंड एडवोकेसी प्रोग्राम के साथ काम करती हैं। इस टीम का हिस्सा होने के नाते, वे शिक्षकों और ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए नए शिक्षण अवसर, कार्यशालाएँ, छोटे कोर्सेज़ डिज़ाइन करने में लगी रहती हैं ताकि कक्षा की गतिविधियों में बदलाव ला सकें। उन्होंने रसायनशास्त्र और समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। लगभग तीन दशक से एकलव्य के साथ हैं और पहले वे एकलव्य की बाल पत्रिका चकमक के साथ काम कर रही थीं। लोक और शास्त्रीय संगीत में उनकी ख़ास रुचि है। उनसे tutltulbiswas@yahoo.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनमोल जैन

स्कूलों के पुनः खुलने पर शिक्षकों के सामने क्या चुनौतियाँ होंगी

विमला रामचन्द्रन

पृष्ठभूमि

स्कूलों को बन्द हुए लगभग दो साल हो चुके हैं। बच्चों और शिक्षकों पर *कोविड-19* महामारी का विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। राज्य और केन्द्र की सरकारों ने स्कूलों के बन्द होने से हुए भारी नुक़सान पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। हालाँकि ऑनलाइन स्कूली शिक्षा की अन्तर्निहित असमानता पर तो कुछ चर्चा है, लेकिन हमारे शिक्षकों के सामने स्कूलों के वापस खुलने पर क्या चुनौतियाँ आएँगी, इस पर गम्भीर चर्चा नहीं हो रही है। महामारी के बाद स्कूलों को फिर से खोलने पर इसके पहले के मेरे लेख *(लर्निंग कर्व, शाला और समाज, अगस्त 2021)* में, मैंने कुछ चुनौतियों के बारे में बताया था जिसका सामना शिक्षक और शिक्षा अधिकारी करते हैं। अब हमारे पास इन स्थितियों के बारे में बहुत जानकारी है — बच्चों पर स्कूलों के बन्द होने के प्रभाव, संविदा शिक्षकों का अस्थिर अस्तित्व, निजी स्कूलों में नौकरियों का जाना और शिक्षकों पर ऑनलाइन या व्हाट्सएप के माध्यम से पढ़ाने, वर्कशीट बाँटने, मोहल्ला कक्षाएँ चलाने व बच्चों से उनके घर जाकर सम्पर्क करने के लिए बनाया जाने वाला भारी दबाव।

तथ्य और आँकड़े

हाल ही में किए गए एक गुणात्मक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में लिए गए सैम्पल में से बमुश्किल एक चौथाई बच्चे और ग्रामीण इलाक़ों के सैम्पल में महज आठ प्रतिशत बच्चे ऑनलाइन अध्ययन करते हैं जो किसी भी कसौटी पर एक चौंकाने वाला आँकड़ा है। यह हालिया सर्वेक्षण उस बात की पुष्टि करता है जिसे हम पिछले कुछ समय से जानते हैं — ऑनलाइन शिक्षा एक विलासिता है जिसे हमारे देश में बहुत कम लोग ही प्राप्त कर सकते है। समान रूप से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 90 प्रतिशत शहरी और 97 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक चाहते हैं कि स्कूल फिर से खुल जाएँ। हालाँकि यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से वंचित क्षेत्रों/ समुदायों पर केन्द्रित था, लेकिन यह एक अत्यावश्यक ताक़ीद है कि सरकार को प्री-प्राइमरी से लेकर 12वीं कक्षा तक के स्कूलों को फिर से खोलने की ज़रूरत है। असर[ii] द्वारा कर्नाटक के 24 ज़िलों में किए गए अध्ययन से यह बातें पता चलीं कि सरकारी स्कूलों में दाख़िलों की संख्या कुछ बढ़ गई है (क्योंकि कई निजी स्कूल बन्द हो गए या अभिभावक अब उनकी फ़ीस का भुगतान नहीं कर सकते थे), पढ़ने और संख्या ज्ञान के स्तरों में भारी गिरावट आई है व आधारभूत कौशलों में भी स्पष्ट गिरावट दिखती है (एएसईआर, सितम्बर, 2001)। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि अब हम बहुत कुछ जानते हैं, स्कूलों के फिर से खुलने पर हमारे शिक्षकों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है?

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया ऐसे 'लापता बच्चों' की रिपोर्टिंग कर रहा है जो शिक्षा के रडार से छूट गए हैं। उन्होंने ऑनलाइन कक्षाओं में भाग नहीं लिया और न ही स्थानीय तौर पर हुईं व्यक्तिगत कक्षाओं या गतिविधियों में भाग लिया। ऐसे बच्चों में से कई ने या तो रोज़ी-रोटी के लिए काम करना शुरू कर दिया या बाल मज़दूरों के रूप में दासता में भेज दिए गए या उनकी शादी कर दी गई या घर पर छोटे बच्चों/ भाई-बहनों की देखभाल करने लगे या फिर अपने माँ-बाप के कामों में उनका हाथ बँटाने लगे। भारत में इस तरह के बच्चों की संख्या का हमें कोई अनुमान नहीं है। ऐसी स्थिति में 'स्कूलों के बाहर के बच्चे' वाले सर्वेक्षणों की सभी पुरानी रिपोर्टों का *कोविड-19* सम्बन्धित लॉकडाउन वाले दिनों में कोई ख़ास अर्थ नहीं रह जाता।

सैम्पल में शामिल उन बच्चों का अनुपात (%) जो	शहरी	ग्रामीण
नियमित रूप से ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं	24	8
आजकल बिल्कुल नहीं पढ़ रहे हैं	19	37
पिछले 30 दिनों में अपने शिक्षकों से नहीं मिले हैं	51	58
पिछले तीन महीनों में टेस्ट/ परीक्षा से नहीं गुज़रे हैं	52	71
कुछ शब्दों से अधिक पढ़ने में असमर्थ हैं	42	48

स्रोत: *लॉक्ड आउट, सितम्बर 2021*[i]

अब यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार कर लिया गया है कि बच्चों को ढूँढ़ने का दायित्व निरपवाद रूप से शिक्षकों, स्कूल प्रमुखों और बची-खुची स्कूल प्रबन्धन समितियों पर पड़ेगा। हमें समस्या की विशालता का तब तक सही-सही पता नहीं चलेगा जब तक प्रत्येक राज्य सरकार बाल जनगणना शुरू नहीं करती। इसके लिए गाँव-गाँव, एक-एक शहरी वार्ड, स्थानीय मिठाई की दुकानों, ढाबों, ईंट के भट्टों, कालीन बुनाई के कारख़ानों, धातु/ आभूषण/ पत्थर काटने के कारख़ानों सहित तमाम स्थानों पर जाना होगा। ऐसा करने का एक तरीक़ा होगा, अभिभावक-शिक्षक बैठकें आयोजित करना, इस बात पर ध्यान देना कि कौन-से बच्चों के अभिभावक आए हैं और जो नहीं आए हों उन अभिभावकों के घर जाना। दिल्ली सरकार ने दो सप्ताह की कक्षावार अभिभावक-शिक्षक बैठकें कीं और अभिभावकों की उपस्थिति का बारीक़ी से अवलोकन किया। उनके पास लगभग-लगभग 70 प्रतिशत बच्चों के अभिभावक उपस्थित हुए। यह ज़रूरी है कि शिक्षा विभाग और श्रम विभाग बाल अधिकार आयोग के साथ मिलकर तत्काल इन 'लापता बच्चों' की पहचान करें और उन्हें घर वापसी करने में व उसके बाद स्कूल में वापस लाने में मदद करें। यह स्कूलों के खुलने से पहले करने की ज़रूरत है और कम-से-कम एक वर्ष तक इसे जारी रखने की ज़रूरत है, ताकि हम समाज के रूप में यह सुनिश्चित कर सकें कि हर एक बच्चा वापस स्कूल में हो।

शिक्षकों का योगदान

यह कहना आसान है लेकिन करना मुश्किल। कड़वी सच्चाई यह है कि स्कूली शिक्षकों पर दबाव बढ़ने वाला है क्योंकि कई राज्यों ने अपने संविदा शिक्षकों (जो सन 2018 में प्राथमिक स्कूलों में 13.80 प्रतिशत और माध्यमिक स्कूलों में 8.40 प्रतिशत थे[iii]) को या तो निकाल दिया है या उनको भुगतान नहीं किया है। कुछ राज्यों, जैसे झारखण्ड और कई उत्तर-पूर्वी राज्यों में संविदा शिक्षक, कुल शिक्षक कार्यबल का 50 प्रतिशत से भी अधिक हैं। शिक्षकों की उपलब्धता की स्थिति गम्भीर होने की सम्भावना है, ख़ासकर ऐसी स्थिति में जब हम सरकारी स्कूलों में नामांकनों में वृद्धि की उम्मीद करते हैं।

बच्चों को वापस स्कूलों में लाना एक कठिन काम होने वाला है और यह स्थिति विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग होगी। उदाहरण के लिए, हम 14 साल और उससे अधिक उम्र के बच्चों को लेते हैं। उन्हें स्कूलों में वापस जाने के लिए प्रेरित करना हमारी कल्पना से कहीं अधिक कठिन हो सकता है। कामकाजी बच्चे, विशेष रूप से वे जो दो साल से स्कूल नहीं गए हैं और इस रुकावट से पहले उच्च प्राथमिक या माध्यमिक कक्षाओं में थे, हो सकता है कि वह सब न भूले हों जो उन्होंने जो सीखा था। लेकिन यह भी हो सकता है कि उन पर परिवार की आमदनी में योगदान करने का भारी दबाव हो। जिस तरह का आर्थिक संकट ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों के ग़रीब, प्रवासी, दिहाड़ी मज़दूर और अनौपचारिक क्षेत्र के कर्मचारी झेल रहे हैं, उसमें बच्चों को काम से हटाकर वापस स्कूल में लाने के लिए सिर्फ़ मौखिक आश्वासन सम्भवतः काफ़ी न हो। स्कूली शिक्षा पर संवाद शुरू करने से पहले पूरे परिवार को विश्वास में लेना होगा।

जिन लड़कियों की शादी महामारी के दौरान हुई है उनके सामने आने वाली समस्याएँ और अधिक चुनौतीपूर्ण होंगी। यदि हम युवा किशोरियाँ को स्कूलों में वापस लाना चाहते हैं तो आवासीय सेतु पाठ्यक्रम मॉडल (जिसे ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी) या कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) मॉडल या पूर्ववर्ती महिला समाख्या कार्यक्रम के महिला शिक्षण केन्द्र मॉडल के तहत आज़माया गया था) की पुनर्कल्पना और पुनर्रचना करना अत्यावश्यक हो सकता है। दिलचस्प बात यह है कि मैंने कई ग़ैर सरकारी संगठनों से यह सुना है कि लड़कों के लिए भी इसी तरह के आवासीय स्कूलों/ कार्यक्रमों की ज़रूरत है — ख़ासकर अगर हम उन्हें स्कूल में वापस लाना चाहते हैं तो। दो से तीन साल की अवधि वाले त्वरित सीखने के कार्यक्रम उन्हें उच्च प्राथमिक स्तर पर आने और कक्षा दसवीं को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।

केन्द्र और राज्य सरकारों को महामारी के बाद के दौर की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध करानी होगी। ग़ैर सरकारी संगठनों के बीच जिन सुझावों पर चर्चा की गई है उनमें से एक है कि मनरेगा फण्ड का कल्पनाशील उपयोग करके स्कूलों के लिए अतिरिक्त सहायता हासिल करना और चूँकि यह एक वर्ष के लिए या अधिकतम दो वर्ष किया जा सकता है, तो स्थानीय शिक्षित व्यक्तियों को स्कूल में लेकर आना एक विकल्प है, जिसे टटोला जा सकता है। कई कम लागत में चलने वाले, निजी स्कूलों के शिक्षक बेरोज़गार हैं — यह प्रयास ऐसे लोगों को एक अवसर प्रदान कर सकता है, कम-से-कम तब तक जब तक निजी स्कूल फिर से न खुल जाएँ, अगर खुलें तो। इन कुछ बातों पर ग़ौर किया जाना चाहिए — आवासीय सेतु पाठ्यक्रम / त्वरित सीखने के कार्यक्रम पुनः लागू करना; लड़कियों और लड़कों के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में और अधिक कस्तूरबा गाँधी बालिका स्कूलें खोलना; नए स्कूल खोलना या मौजूदा स्कूलों की क्षमता में बढ़ोतरी करना (निजी स्कूल छोड़ चुके बच्चों के लिए स्थान बनाना) और सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि सभी स्तरों पर कहीं ज़्यादा शिक्षकों की भर्ती करना। स्कूल-परिसर को नोडल पॉइंट बनाने का विचार — जैसा कि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में सिफ़ारिश की गई है — वह आधार हो सकता है जिसके चारों ओर योजना और कार्यान्वयन की प्रक्रियाएँ शुरू हो सकती हैं।

कक्षा एक से 12वीं तक सभी स्तरों के शिक्षकों को उन सभी प्रकार की समस्याओं, चुनौतियों और अवसरों से अवगत कराना होगा जो महामारी के बाद के दौर में उनके सामने हैं। इस स्थिति में ब्लॉक संसाधन केन्द्र (बीआरसी) और क्लस्टर संसाधन केन्द्र (सीआरसी) जैसे ज़िला और उप-ज़िला संस्थानों से माँग काफ़ी ज़्यादा बढ़ जाती है जहाँ से अध्यापक-शिक्षकों, एससीईआरटी द्वारा चिन्हित स्रोत व्यक्तियों और बाल-केन्द्रित शिक्षण-अधिगम में अनुभव प्राप्त एनजीओ कार्यकर्ताओं की पहचान की जा सकती है। राज्य सरकारों को तत्परता के साथ कम-से-कम कुछ महीने पहले ही गतिशील और परस्पर संवादात्मक (इंटरैक्टिव) प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार कर लेने चाहिए ताकि बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों द्वारा बनाई जाने वाली योजनाओं में उन्हें सहायता मिल सके। बिना सोचे-समझे पाठ्यचर्या से विषयवस्तुओं को कम करना सही नहीं है। ज़रूरी यह है कि शिक्षक प्रत्येक बच्चे को सीखने की उस स्थिति से शुरू करने में मदद करें जहाँ वह हो और फिर धीरे-धीरे व सावधानीपूर्वक सीखने की सीढ़ी में ऊपर जाने में उनकी मदद करें। बुनियादी सीखने के कार्यक्रम तैयार करने के हाल के प्रयास इस सम्बन्ध में बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं कि शिक्षकों को न केवल कक्षा में बनी स्थिति के हिसाब से अपनी प्रतिक्रिया को तय करने की स्वतंत्रता मिले बल्कि उन्हें कम-से-कम छह महीने की समय सीमा (लीड टाइम) भी मिले ताकि वे अपने विद्यार्थियों को उनके सीखने के नुक़सान की भरपाई करने के लिए सक्षम बना सकें।

सुझाए गए समाधान

हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है शैक्षिक प्रशासकों और शिक्षकों की मानसिकता। बच्चों के साथ एकतरफ़ा संवाद सफल नहीं रहा है और न ही इस तरीक़े से भविष्य में कोई सकारात्मक परिणाम मिलने की सम्भावना है। प्रत्येक बच्चे के साथ जुड़ने के लिए हमें सीखने के हमारे दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन करना ज़रूरी है। कुछ प्रशासक समयबद्ध बुनियादी कौशल मॉड्यूल की बात कर रहे हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर काम कर रहे ग़ैर सरकारी संगठनों के अनुभव यह दिखाते हैं कि पहले से तैयार किया गया कोई मॉड्यूल उपयोगी नहीं होता। बच्चों को कई तरह की कहानियाँ पढ़कर सुनाने, बच्चों द्वारा एक-दूसरे को पढ़कर सुनाने और विभिन्न विचारों व गतिविधियों के साथ जुड़ने से वे पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया का आनन्द लेने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। लॉकडाउन के दौरान गणित, विज्ञान, स्थानीय इतिहास और पर्यावरण में भी इसी तरह की गतिविधियाँ बच्चों को एक-दूसरे से और सीखने की प्रक्रिया से जुड़ने में मदद कर सकती हैं।

एक बार यह प्रक्रिया शुरू हो जाने के बाद, सभी स्कूली शिक्षकों को पहले दो सप्ताह या उससे अधिक समय इन बातों के लिए निर्धारित करके रखना होगा — बच्चों से बातें करना, उनके अनुभव सुनना, विभिन्न विषयों में उनकी स्थिति क्या है इसका आकलन करना, हर विषय के लिए समान स्तरों पर स्थित बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाना और उन्हें सीखने में आगे बढ़ने हेतु मदद करने के लिए एक योजना तैयार करना। यह निश्चित है कि बच्चे विभिन्न विषयों में विभिन्न स्तरों पर होंगे बल्कि यह भी हो सकता है कि कुछ बच्चों को दूसरे बच्चों की तुलना में अधिक आघात लगा हो। यह बात उन बच्चों के बारे में यह विशेष रूप से सच है जिनके स्कूल बदले हों — निजी से सरकारी में, शहर/ क़स्बे से गाँव की ओर या एक शहर से दूसरे शहर में। बच्चों से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे पहले दिन से ही 'सामान्य' रहेंगे। इसका मतलब है कि शिक्षकों को स्कूल खुलने के दस से 15 दिन पहले मिलकर गतिविधियों की योजना सावधानीपूर्वक बनानी होगी।

ज़रूरी नहीं कि सभी शिक्षकों के पास ऐसी ज़रूरी क्षमताएँ/ कौशल हों कि उनका पूरा ध्यान बच्चों की ज़रूरतों, उनके सामने आने वाली समस्याओं, प्रत्येक बच्चे के साथ संवेदनशीलता से व्यवहार करने और सबसे ज़रूरी बात, उन्हें स्कूल में उनकी उपस्थिति को प्रसन्नतापूर्वक लेने में मदद करने पर केन्द्रित रहे। लघु और मध्यम अवधि के लिए सम्भव है कि राज्य सरकारें प्रत्येक कक्षा में कम-से-कम दो शिक्षक नियुक्त करे — भले ही इसका अर्थ अधिक शिक्षकों की नियुक्ति करना हो या कक्षा को पढ़ाने के लिए स्थानीय संसाधनों की मदद लेना। हमें 25 बच्चों के समूह के लिए कम-से-कम दो शिक्षकों की आवश्यकता हो सकती है, यदि हम प्रत्येक बच्चे के साथ उस स्थिति से काम शुरू करने के प्रति गम्भीर हैं जहाँ वे हैं। इसी प्रकार बच्चों को उनके डर और आशंकाओं को व्यक्त करने में मदद करने के लिए, उनके अनुभवों के बारे में खुलकर बात करने के लिए और धीरे-धीरे इस बात को समझने के लिए कि उनके अनुभव कई अन्य बच्चे भी साझा करते हैं, नियमित गतिविधियों की आवश्यकता हो सकती है। हालाँकि 'मिशन मोड' शब्दों की काफ़ी आलोचना हुई है, पर हमें दरअसल गतिविधियों का एक गहन दौर चाहिए ताकि शिक्षक और बच्चे स्कूलों में वापस आने, अपने साथियों और मित्रों के साथ फिर से जुड़ने, शिक्षकों व शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ जुड़ने के कठिन दौर से गुज़रकर आगे बढ़ सकें। वाक़ई ऐसा बहुत कुछ है जिसके साथ बच्चों को समायोजन करने की आवश्यकता है।

कई अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ ऐसे 'हाइब्रिड' मॉडल के बारे में बात करते रहे हैं जहाँ व्यक्ति-दर-व्यक्ति होने वाली परस्पर क्रिया को ऑनलाइन या इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का सहयोग मिले। यहाँ भी, बच्चों की उम्र को ध्यान में रखना ज़रूरी है। जहाँ माध्यमिक/ उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर ऐसी व्यवस्था काफ़ी उपयोगी हो सकती है, वहीं यह सम्भव है कि देश भर के प्राथमिक स्कूलों के लिए यह कोई विकल्प न हो। ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों में तो पहले से ही ख़राब बुनियादी ढाँचे, अनियमित बिजली आपूर्ति, स्कूल में उपयोग के लिए कम्प्यूटरों/ प्रोजेक्टरों की कमी जैसी अतिरिक्त चुनौतियाँ मौजूद हैं। जो बात शहरी क्षेत्रों में की जा सकने योग्य लगती है, हो सकता है ग्रामीण क्षेत्रों में उसने करना सम्भव न हो, क्योंकि जो बात एक जगह सफल हो जाए ज़रूरी नहीं कि वह दूसरी जगह भी सफल हो।

तत्काल क़दम उठाना

बुनियादी रूप से इस सबका तात्पर्य यह है कि शिक्षकों द्वारा इन विचारों को स्वीकार करने के लिए और उन्हें नियोजन प्रक्रिया का एक हिस्सा बनाने के लिए हमें तत्काल शुरुआत करनी होगी। शिक्षकों के साथ इन मुद्दों पर बातचीत करना शुरू करें, उन्हें प्रेरित करें कि वे उन चुनौतियों को स्पष्टतः व्यक्त करें जिनकी उन्हें अपेक्षा है और उन्हें विद्यार्थियों के घरों में जाकर वास्तविकता को समझने के लिए प्रोत्साहित करें। यह वाक़ई परेशान करने वाली बात है कि सरकारें स्कूलों के फिर से खुलने की तिथियों की घोषणा कर देती हैं और शिक्षकों से अपेक्षा करती हैं कि वे बिल्कुल सामान्य ढंग से हमेशा की तरह चीज़ों को आगे ले जाएँगे। कई राज्यों में माध्यमिक स्कूल खोल दिए गए है और शहरी क्षेत्रों के बच्चों की यह प्रतिक्रिया मिली है कि उनमें से कई ऑनलाइन माध्यम से या वर्कशीटों और होमवर्क के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से नहीं सीख सके। बच्चों के स्तरों में कक्षा 10-12 में भी काफ़ी भिन्नताएँ हैं। यदि यह स्थिति शहरी क्षेत्रों में है, तो हम ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों की स्थिति की अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं।

शिक्षकों की आवाज़ों की अवहेलना करने से कभी कोई सकारात्मक परिणाम हासिल नहीं हुए हैं। आगे के लिए यह ज़रूरी है कि चुनौतियों की पहचान करने, उनके समाधान खोजने, चुनौतियों को कैसे दूर किया जा सकता है इसकी योजना बनाने, विस्तृत सन्दर्भ-विशिष्ट योजनाएँ बनाने और मानवीय एवं वित्तीय संसाधनों के पर्याप्त आवंटन को सुनिश्चित करने जैसे तमाम मसलों में उन्हें सहभागी बनाया जाए। यहाँ कोई आसान 'शॉर्टकट' या 'जादुई गोलियाँ' नहीं हैं; हमें शिक्षकों, स्कूल प्रमुखों और प्रशासकों के साथ सहभागियों के रूप में प्रत्येक स्कूल परिसर के लिए व्यवस्थित रूप से योजना बनाने की ज़रूरत है; और सरकारी स्कूलों को नई ऊर्जा देने के काम में अभिभावकों के लिए सहभागियों के रूप में नई भूमिकाएँ परिभाषित करने की ज़रूरत है।

Endnotes

i Nirali Bakhla, Reetika Khera, Jean Dreze, Vipul Paikra. 2021. Locked Out: Emergency Report on School Education, 6 September 2021.

ii ASER: Annual Status of Education Report.

iii Vimala Ramachandran, Deepa Das, Ganesh Nigam and Anjali Shandilya. 2020. Contract Teachers in India: Recent Trends and Current Status. Azim Premji University, Bengaluru.

References

Azim Premji University, Loss of Learning During the Pandemic, February 2021

ASER survey 2020 Wave 1 and ASER Karnataka, September 2021

Locked Out: Emergency Report on School Education, September 2021

Several initiatives by state governments and NGOs in 2020 and 2021

विमला रामचन्द्रन पूर्व में राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (NIEPA), नई दिल्ली में शिक्षक प्रबन्धन की राष्ट्रीय फ़ेलो व प्राध्यापक थीं। वे ईआरयू कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड की निदेशक भी रही हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद जयपुर में रह रही हैं। उनसे vimalar.ramchandran@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुरेन्द्र विश्वकर्मा

स्कूल दुबारा खुलने के बाद शिक्षण-अधिगम | एक नैदानिक दृष्टिकोण

आँचल चोमल व शिल्पी बनर्जी

मार्च 2020 के बाद से स्कूल व शिक्षा की दशा

भारत में स्कूल मार्च 2020 से बन्द हैं। इस समय से अब तक बच्चों को शिक्षकों व स्कूल के दोस्तों से आमने-सामने संवाद करने का मौक़ा नहीं मिला है। इस डेढ़ साल में ऑनलाइन शिक्षा के कई मॉडल उपयोग करके देखे गए हैं। इन तमाम मॉडलों की प्रभावोत्पादकता का अनुमान लगाने के लिए किए गए अध्ययनों से पता चला कि सूचना तकनीक और इंटरनेट तक पहुँच में भारी असमानताएँ और विभाजन हैं। साथ ही सही मायने में सीखना सम्भव बनाने में ऑनलाइन माध्यम सर्वथा अपर्याप्त हैं (यूनिसेफ 2020; अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, *मिथ्स ऑफ़ ऑनलाइन एजुकेशन, 2020*)। पूरे देश में शिक्षा से जुड़े लोगों और अभिभावकों ने इस बात को लेकर चिन्ता ज़ाहिर की कि ऑनलाइन माध्यम बच्चों की उन अकादमिक व सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों को व्यक्तिगत स्तर पर पूरी करने में उतने कारगर नहीं हैं जो सार्थक अधिगम की बुनियाद होते हैं। ऐसे में, इस बात से हमें कोई आश्चर्य नहीं होता कि स्कूल जाने वाले ज़्यादातर बच्चों ने इस दौर में कुछ भी ख़ास नहीं सीखा। यही नहीं, वे 'अधिगम हानि' (learning loss) या 'अकादमिक प्रतिगमन' (academic regression) की स्थिति में फँसे दिखाई देते हैं। यानी पहले से सीखी गई अवधारणाओं को भूल जाने की स्थिति।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा पूरे देश में 16,067 विद्यार्थियों पर किए गए एक अध्ययन *लॉस ऑफ़ लर्निंग ड्यूरिंग द पेंडेमिक* में यह पाया गया कि, 'सभी कक्षाओं में 92 प्रतिशत बच्चों ने औसतन पिछले साल सीखे किसी एक ख़ास भाषाई कौशल को खो दिया है। मिसाल के तौर पर, ऐसे कुछ कौशल हैं किसी चित्र या अपने किसी अनुभव का मौखिक विवरण देना; परिचित शब्दों को पढ़ना; समझ के साथ पढ़ना; किसी चित्र के आधार पर सरल वाक्य लिखना। इसी तरह, सभी कक्षाओं में 82 प्रतिशत बच्चों ने औसतन पिछले साल सीखे किसी एक ख़ास गणितीय कौशल को खो दिया है। मिसाल के तौर पर, इन कुशलताओं में एक या दो अंकों वाली संख्या को पहचान पाना; संख्या गणित की क्रियाएँ कर पाना; बुनियादी संख्या गणितीय क्रियाओं का इस्तेमाल कर समस्या समाधान कर पाना; दो या तीन आयामी आकारों का विवरण दे पाना; दिए गए आँकड़ों को पढ़ कर उनसे नतीजे निकाल पाना।' (पेज 4, *लॉस ऑफ़ लर्निंग ड्यूरिंग द पेंडेमिक*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2020)

ऐसी स्थिति में एजुकेटरों के लिए विद्यार्थियों के वर्तमान अधिगम स्तर को ध्यान में रखना ज़रूरी हो जाता है। यह काफ़ी हद तक सम्भव है कि जो विद्यार्थी इस समय पाँचवीं कक्षा में हैं उनका अधिगम स्तर उनकी कक्षा के समकक्ष न हो और इसकी वजह वही अधिगम हानि है जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है। अब जबकि स्कूल दुबारा खुलने की तैयारी कर रहे हैं, हमारे सामने कई ज़रूरी सवाल खड़े हैं। जैसे कि, हम यह फ़ैसला कैसे करें कि क्या पढ़ाना है? हम अपनी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं को विद्यार्थियों के सीखने के मौजूदा स्तर के अनुरूप कैसे बनाएँ? विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को समझने के लिए हमें किस तरह की नैदानिक मूल्यांकन पद्धतियाँ अपनानी चाहिए? एक बहुस्तरीय कक्षा में जहाँ शिक्षार्थियों की विविध ज़रूरतें हों वहाँ पाठ्यक्रम का पुनर्गठन और कक्षा में उसका संचालन किस तरह से किया जाना चाहिए? ऐसे जिन महत्त्वपूर्ण सवालों से आज समूचा शिक्षा समुदाय जूझ रहा है उनका जवाब हम नैदानिक मूल्यांकन पद्धति का इस्तेमाल करके देने की कोशिश करेंगे।

शिक्षण-अधिगम का नैदानिक मूल्यांकन मॉडल

इस मॉडल में स्कूलों व एजुकेटरों के सामने खड़े इन सवालों को सुलझाने के लिए तीन स्पष्ट चरणों का सुझाव दिया गया है।

नैदानिक मूल्यांकन मॉडल

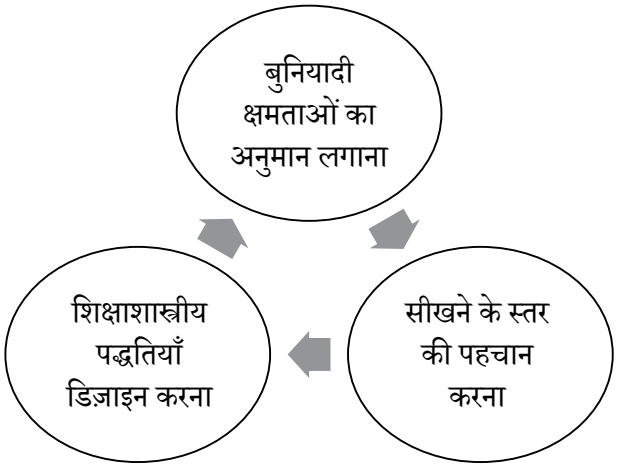

चरण-1 : हर चरण की बुनियादी योग्यताओं का अनुमान लगाना। इन योग्यताओं को सीखने की सीढ़ी पर बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करना होगा ताकि शिक्षक कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को पूरी करने में मदद कर सकें।

चरण-2 : सीखने की सीढ़ी पर विद्यार्थियों की बुनियादी योग्यताओं की पहचान या निदान करना। इस तरह का नैदानिक मूल्यांकन विविध प्रकार की पद्धतियों और सन्दर्भों का इस्तेमाल कर किया जा सकता है।

चरण-3 : नैदानिक मूल्यांकन के नतीजों के अनुरूप शिक्षा शास्त्रीय पद्धतियाँ डिज़ाइन करना। यह पद्धतियाँ कक्षा में मौजूद विद्यार्थियों/ उनके समूहों को उनके अनुरूप अलग-अलग निर्देश देने का आधार बननी चाहिए।

चरण-1 : बुनियादी योग्यताओं का अनुमान

अगर हम यह सोचें कि स्कूलों के दुबारा खुलने के बाद सबसे बड़ा सवाल कौन-सा होगा तो वह यह है : कक्षा में आख़िर क्या किया जाए? मान लीजिए कि आप पाँचवीं कक्षा की शिक्षक हैं जो सभी विषयों को पढ़ाती थीं। पिछली बार आपने अपने विद्यार्थियों को तब देखा था जब वे तीसरी कक्षा में थे। आपने पिछले 18 महीने उनको ज़्यादातर ऑनलाइन और थोड़ा-सा ऑफ़लाइन मोड में पढ़ाया है। जब वे स्कूल आएँगे तब आप शुरुआत कहाँ से करेंगी? एक दूसरा उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए आप किसी सरकारी स्कूल में प्राइमरी के शिक्षक हैं और आपकी कक्षा में पहली से पाँचवीं तक के बच्चे हैं। आपने पिछले 18 महीने उनके साथ कुछ सामुदायिक/ मोहल्ला क्लास चलाए हैं और अब वे बच्चे स्कूल वापस आ गए हैं। इस बहु-कक्षाई स्थिति से जूझने की शुरुआत कहाँ से करेंगे? पिछली बार आपने अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद तब किया था जब वे दूसरी कक्षा में थे और आपने उनको दो अंकों की संख्याएँ गिनना या जोड़ना सिखाया था। अब आपको उन्हें क्या सिखाना चाहिए — गुणा करना या कुछ और?

शुरुआत कहाँ से करें?

क्या सिखाना है इसका फ़ैसला करने से पहले अधिगम परिणामों (learning outcomes) या योग्यताओं की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी होगा। सीखने में हुए नुक़सान की वजह से शिक्षक के लिए यह निश्चित करना बहुत मुश्किल होगा कि किस स्तर या कक्षा की पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम और अधिगम परिणामों को सन्दर्भ बिन्दु की तरह इस्तेमाल करें। ऐसी स्थिति में शिक्षक को स्कूल के सभी विषयों की ज़रूरी व बुनियादी योग्यताओं के सुव्यवस्थित सेट की ज़रूरत होगी। इन योग्यताओं का इस्तेमाल शिक्षण की शुरुआत के लिए किया जा सकता है।

बुनियादी योग्यताओं की पहचान के लिए कुछ सिद्धान्त :

यह उस विषय के सबसे बुनियादी तत्व होने चाहिए। मिसाल के लिए, गणित में गिनती करना, भाषा में पठन करना आदि।

यह ऊँची कक्षाओं में दूसरी योग्यताओं को हासिल करने का ज़रिया होने चाहिए। मिसाल के लिए, जब तक कोई बच्ची गिनती करना नहीं सीख पाती है तब तक उसमें संख्याओं की समझ नहीं बनेगी। इसी तरह, जब तक बच्ची शब्दों की पहचान करना नहीं जानती है पूरे वाक्य नहीं पढ़ सकेगी।

बुनियादी योग्यताओं का नमूना

क्षेत्र	स्तर-1 की योग्यताएँ – पहली व दूसरी कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप	स्तर-2 की योग्यताएँ – तीसरी व चौथी कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप	स्तर-3 की योग्यताएँ – पाँचवीं कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप
पठन योग्यताएँ	1.1 हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति व ध्वनि को पहचानते हैं। 1.2 पाठ्यपुस्तकों में आमतौर पर पाई जाने वाली जानी-पहचानी वस्तुओं के नाम पहचान कर पढ़ पाते हैं (जैसे कि आम, अनार, ख़रगोश आदि)	2.1 छोटे वाक्य, कहानियाँ व कविताएँ पढ़ पाते हैं। 2.2 अपने स्तर व पसन्द के अनुसार तरह-तरह की पाठ्य सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ते हैं (जैसे कि कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि)।	3.1 अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (जैसे कि अख़बार, बाल पत्रिकाएँ, होर्डिंग आदि) को पढ़ कर समझ सकते हैं।

चूँकि हम बुनियादी योग्यताओं को सीखने की सीढ़ी की बात कर रहे हैं इसलिए इन योग्यताओं को श्रेणीबद्ध करना भी ज़रूरी है। इसके पायदान अलग-अलग दर्जे की कक्षा में अपेक्षित अधिगम परिणामों के अनुसार हो सकते हैं। मिसाल के लिए, स्तर-1 को पहली व दूसरी कक्षा के स्तर की योग्यताओं के अनुरूप रखा जा सकता है और इसी तरह स्तर-2 को तीसरी व चौथी कक्षा की योग्यताओं के अनुरूप।

अलग-अलग कक्षाओं की योग्यताओं को एक साथ रखना ज़रूरी है क्योंकि यह सम्भव है कि विद्यार्थियों में अधिगम किसी एक निश्चित कक्षा के समकक्ष की योग्यताओं के अनुसार न हो। मिसाल के लिए, यह सम्भव है कि चौथी कक्षा का कोई विद्यार्थी किसी विषय के एक क्षेत्र में योग्यता के पहले स्तर पर हो और दूसरे क्षेत्र में दूसरे स्तर पर।

इन योग्यताओं की जटिलता बढ़ते क्रम में होनी चाहिए। इससे शिक्षक को कक्षा में मौजूद बहु-स्तरीय शिक्षार्थियों की ज़रूरतें पूरी करने में मदद मिलेगी।

ऊपर जो नमूना दिया गया है उसमें पहली से पाँचवीं कक्षा तक पठन के कौशल से जुड़ी बुनियादी योग्यताएँ बढ़ते क्रम में दी गई हैं। स्कूल के दूसरे विषयों के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए ऐसी सूचियाँ बनाई जा सकती हैं।

चरण-2 : सीखने के स्तर का निदान

जैसा कि पहले ज़िक्र किया गया है, जब बच्चे स्कूल लौटेंगे तब एक ही कक्षा के बच्चों के सीखने के स्तर में बहुत अन्तर देखने को मिल सकता है। साथ ही, यह उनकी कक्षा के अनुसार अपेक्षित स्तर से कम भी होगा। बच्चों को वापस पटरी पर लाने के लिए शिक्षक को अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का पता होना चाहिए। इस स्थिति में सीखने में हुई कमियों की पहचान के लिए बुनियादी योग्यताओं से जुड़े नैदानिक मूल्यांकनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार के लिए कक्षा में उपयुक्त तौर-तरीक़े अपनाने में मदद मिलेगी।

नैदानिक मूल्यांकन आमतौर पर सीखने की प्रक्रिया की शुरुआत में किए जाते हैं ताकि इसका अन्दाज़ा लगाया जा सके कि विद्यार्थी क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं। इससे शिक्षकों को किसी भी विषय के लिए दिए जाने वाले निर्देशों की योजना बनाने में मदद मिलती है। इस समय स्थितियाँ बेहद जटिल हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे पिछली कक्षाओं में सीखी गई ढेरों योग्यताओं में बच्चों के सीखने के स्तर का निदान करेंगे। इस परिस्थिति में पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने के लिए ज़रूरी योग्यताओं में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए सीखने की सीढ़ी एक उपयोगी उपकरण हो सकती है। इस पद्धति से पिछली कक्षाओं के समूचे ज्ञान व कुशलताओं को कक्षा में दोहराने की बजाय शिक्षक को सीखने में आई कमियों को पूरा करने में और मौजूदा पाठ्यक्रम के लिए ज़रूरी सहायक इन्तज़ाम करने में मदद मिल सकेगी।

हर विद्यार्थी और हर कक्षा अलग हैं और अलग-अलग राज्यों, ज़िलों और गाँवों में इनकी स्थिति भी अलग-अलग होगी क्योंकि स्कूलों के बन्द होने के दौरान जिस तरह के हस्तक्षेप इनको मिले हैं उनकी गुणवत्ता में बहुत अन्तर रहा है। कुछ राज्य सरकारों ने लॉकडाउन और स्कूलों के बन्द होते ही सीखने के समुदाय-आधारित कार्यक्रम शुरु कर दिए और कुछ स्कूलों में ऑनलाइन कक्षाएँ भी शुरू कर दी गईं। हालाँकि ऐसे शिक्षण कार्यक्रमों और ऑनलाइन शिक्षा की कारगरता काफ़ी सन्देहास्पद है लेकिन शिक्षक को इस बात की ठीक-ठाक समझ होगी कि स्कूल बन्द होने के दौरान उनके विद्यार्थियों को किस तरह हस्तक्षेप मिला। इस समझ के आधार पर शिक्षक उचित नैदानिक उपकरण डिज़ाइन कर सकेंगे और अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्देशन की योजना बना सकेंगे। शिक्षण-अधिगम का ऐसा माहौल बनाने के लिए जो बच्चों की विविध ज़रूरतों को पूरी कर सके यह ज़रूरी है कि मूल्यांकन के डिज़ाइन और इस्तेमाल में शिक्षक को स्वायत्तता हो।

अलग-अलग विषयों के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए नैदानिक मूल्यांकनों की योजना व डिज़ाइन बनाई जानी चाहिए। मिसाल के लिए, भाषाओं में मौखिक अभिव्यक्ति, पठन कौशल, बोध के साथ पढ़ना व लेखन कौशल; और गणित में संख्याएँ, मापन, पैटर्न व आँकड़ों का उपयोग। वर्कशीट में विविध क़िस्म की मूल्यांकन पद्धतियाँ शामिल होनी चाहिए। इनमें मौखिक सवाल, बहु-वैकल्पिक सवाल, निबन्धात्मक सवाल, प्रोजेक्ट और गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए जिनमें प्रदर्शन के आधार पर विषय के अलग-अलग क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के स्तर का मापन सम्भव होगा। यह भी ज़रूरी है कि मूल्यांकन में हर बच्चे के लिए अलग नोट शीट हो ताकि प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम हानि और ग़लतफ़हमियों को दर्ज किया जा सके। विद्यार्थियों के सीखने के बारे में शिक्षक वैध अवलोकन तभी कर सकते हैं जब मूल्यांकन के आइटम सम्बन्धित विषय क्षेत्र की अपेक्षित संज्ञानात्मक कुशलताओं से जुड़ी बुनियादी योग्यताओं से ठीक प्रकार सम्बद्ध हों। साथ ही, मूल्यांकन आइटमों को बढ़ते क्रम में भी होना चाहिए ताकि विद्यार्थी के सीखने के स्तर का निदान हो सके।

यहाँ हम हिन्दी में पठन कौशल की जाँच के लिए एक नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट का नमूना दे रहे हैं जो चौथी व पाँचवीं कक्षा में इस्तेमाल की जा सकती है। इसमें अगर विद्यार्थी समान शब्दों पर गोल घेरा बना पाता/ पाती है तो वह स्तर-1 पर है;

और अगर शब्दों को चित्रों से जोड़ पाता/ पाती है व परिचित अथवा अपरिचित पाठ को पढ़ने में दिलचस्पी दिखाता/ दिखाती है तो वह स्तर-2 पर है। अगर विद्यार्थी विभिन्न क़िस्म के पाठ पढ़ सकता/ सकती है (जैसे कि अख़बार, बाल पत्रिकाएँ, होर्डिंग वग़ैरह) तो वह स्तर-3 पर है। दूसरे विषयों के लिए भी ऐसी वर्कशीट बनाई जा सकती हैं।

चरण-3 : शिक्षा शास्त्रीय पद्धतियाँ डिज़ाइन करना

महामारी के असर के चलते कक्षा स्तर की सीमाएँ धूमिल पड़ गई हैं। किसी कक्षा में जिस स्तर की योग्यताओं की अपेक्षा की जाती है, सम्भव है कि उस कक्षा के विद्यार्थियों ने वह योग्यताएँ न हासिल की हों। ऐसी स्थिति में, कक्षा में शिक्षण पद्धति की योजना व संचालन पर गम्भीरता से सोचना होगा। शिक्षण को

स्तर-1

1.1 हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

शिक्षक बच्चों को एक कविता लय में पढ़कर सुनाएँगे और फिर कविता में **म** और **ल** पर गोला लगाने को कहेंगे।

मुर्ग़ी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
चूज़े बोले चें चें चें
माँ हम भी क्या साथ चलें?

1.2 जानी-पहचानी वस्तुओं के नाम पहचान और पढ़ पाते हैं (जो आमतौर पर किताबों में होते हैं, जैसे कि आम, अनार, ख़रगोश, कबूतर)

यह किसका चित्र है?

सही उत्तर पर गोला बनाइए :
(क) घण्टा (ख) घर (ग) घड़ी (घ) घड़ा

स्तर-2

2.1 छोटे वाक्य, कहानियाँ व कविताएँ पढ़ पाते हैं।
2.2 अपने स्तर और पसन्द के अनुसार तरह-तरह की रचनाएँ/ सामग्री – कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि – आनन्द के साथ पढ़ते हैं।

नीचे दी गई कविता को उचित हाव-भाव के साथ पढ़िए :

बहुत जुकाम हुआ नन्दू को,
एक रोज़ वह इतना छींका।
इतना छींका, इतना छींका,
इतना छींका, इतना छींका।
सब पत्ते झड़ गए पेड़ के,
धोखा हुआ उन्हें आँधी का।

स्तर-3

3.1 अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री को समझ कर पढ़ते हैं।

नीचे दिए अख़बार के अंश को पढ़ कर सुनाइए।

यूपी में शीतलहर का प्रकोप जारी, कई इलाक़ों में आज व कल बारिश के आसार, बढ़ेगी ठण्ड

उत्तर प्रदेश में जारी शीतलहर का प्रकोप और गहरा सकता है। मौसम विभाग ने अगले 24 घण्टों के दौरान पूरे उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर बारिश होने या गरज चमक के साथ बौछारें पड़ने की चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग ने आम जन से निवेदन किया है कि वे बहुत ज़रूरी काम होने पर ही अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए घर से बाहर जाने का निर्णय लें।

कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के अनुरूप बनाना विभेदन का बेहद अहम हिस्सा है। कक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें शिक्षक अलग-अलग स्तर की योग्यताओं, संसाधनों, विषय-वस्तुओं, शिक्षण प्रक्रियाओं और सीखने के माहौल में विभेद कर पाते हों।

सीखने की सीढ़ी के अनुसार तैयार की गई नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट में विद्यार्थी द्वारा हासिल की गई योग्यताओं के बारे में मिली जानकारी ही विभेदन का आधार होती है। सीखने के स्तर के आधार पर शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों में रख सकते हैं। विद्यार्थियों को उस कक्षा में अपेक्षित योग्यता के स्तर तक लाने के लिए हर समूह में अलग-अलग पद्धतियाँ अपनाई जा सकती हैं। यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि बच्चों ने स्कूल बन्द होने से पहले अपेक्षित योग्यताएँ हासिल की थीं लेकिन बहुत लम्बे समय तक स्कूल से दूर रहने के कारण सम्भव है कि वे उन हुनरों को भूल गए होंगे। नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट से शिक्षक को यह जानने में मदद मिलेगी कि किस तरह की योग्यताओं को हासिल करने में बच्चों को मदद की ज़रूरत है और किस तरह की योग्यता वे ख़ुद से ही हासिल कर सकते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यचर्या और शिक्षण-अधिगम के माहौल के बदले होने की सम्भावना है और ऐसे में विद्यार्थियों को समूहों में बाँट कर उसके आधार पर पाठ्यचर्या का परिवर्तनशील पुनर्गठन वक़्त की माँग है। हर बच्चे के सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हर कक्षा में बहु-कक्षाई और बहु-स्तरीय शिक्षण पद्धति को अपनाने की भी ज़रूरत है।

नीचे प्राइमरी स्तर में पठन कौशल के सन्दर्भ में बनाए गए समूहों का एक नमूना दिया गया है। शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह हर समूह के विद्यार्थियों के लिए उचित शिक्षण पद्धति की योजना व डिज़ाइन बना कर उसे अमल में लाए।

समूह-1

वे बच्चे जो अक्षरों व ध्वनियों की पहचान नहीं कर पा रहे हैं।

समूह-2

वे बच्चे जो अक्षरों को उनकी ध्वनि से तो जोड़ पा रहे हैं लेकिन शब्दों को सम्बन्धित चित्रों से नहीं जोड़ पा रहे हैं।

समूह-3

वे बच्चे जो अक्षरों व शब्दों के साथ मोटे तौर पर सहज हैं लेकिन छोटी कविताओं व कहानियों को पढ़ने में परेशानी का सामना कर रहे हैं।

समूह-4

वे बच्चे जो परिचित पाठों को तो आसानी से पढ़ सकते हैं लेकिन अपरिचित पाठों को पढ़ने में सक्षम नहीं हैं।

सार-संक्षेप

किसी भी कक्षा में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में जिस तरह के अन्तर मौजूद हैं उसके मद्देनज़र राष्ट्रीय या राज्य-स्तर पर बनाए गए मानकीकृत व केन्द्रीकृत मूल्यांकन वर्तमान परिदृश्य में कारगर नहीं होंगे। केन्द्रीय, राज्य व ज़िला स्तर के संगठनों के लिए ज़रूरी है कि वे बुनियादी योग्यताओं की पहचान करने और उनको सीखने की सीढ़ी पर चरणबद्ध करने, नैदानिक मूल्यांकनों के निर्माण के लिए शिक्षकों का पेशेवर विकास करने, मूल्यांकन से मिली जानकारी को कक्षा के अनुरूप निर्देशों में ढालने और सीखने में हुए नुक़सान को मौजूदा कक्षा की पाठ्यचर्या से समेकित करने के तरीक़ों की खोज के हर सम्भव प्रयास करें।

आँचल चोमल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के मूल्यांकन कार्य की प्रमुख हैं। उनके काम में विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक एजुकेटरों और शैक्षणिक संस्थानों को मूल्यांकन सम्बन्धी सेवाएँ (मूल्यांकन के ख़ाके, उपकरण, कोर्स, सलाह) देना शामिल है। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता से भूगोल में स्नातक और इसी विषय में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ इन रीजनल डेवेलपमेंट से स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की है। उनसे aanchal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

शिल्पी बनर्जी अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन में संकाय सदस्य हैं। कक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप व्यावहारिक गुणवत्ता के मूल्यांकन प्रोटोटाइपों का विकास, मूल्यांकन डिज़ाइन और बड़े पैमाने के मूल्यांकन डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण उनके शोध के पसन्दीदा विषय हैं। वे शिक्षक एजुकेटरों, शिक्षा कर्मियों, शिक्षा कार्यकर्ताओं और शिक्षा के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को मूल्यांकन से जुड़े विभिन्न आयामों पर कोर्स भी करवाती हैं। उन्होंने इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इनफॉरमेशन टेक्नॉलाजी, बेंगलूरु से शैक्षणिक मूल्यांकन में पीएचडी की है। उनसे shilpi.banerjee@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : लोकेश मालती प्रकाश

सामुदायिक कक्षाओं के ज़रिए प्रभावी प्रक्रियाओं को क़ायम रखना

दुर्गेश कुमार मानेराव

पिछले दो वर्षों के दौरान स्कूल बन्द रहने पर हममें से अधिकांश शिक्षकों ने किसी-न-किसी रूप में अपने विद्यार्थियों से सम्पर्क बनाए रखने की कोशिश की है। विशेषकर, समुदाय में छोटे समूहों की कक्षाओं के माध्यम से। इससे जो दो महत्त्वपूर्ण सीख मिलीं, वह थीं— पहली, बच्चे कला के ज़रिए ख़ुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं। और ऐसा बच्चों ने उन विविध गतिविधियों के माध्यम से किया जो मैंने उनके लिए तैयार की थीं। इससे उनके कुछ-न-कुछ नया सीखने का सिलसिला चलता रहा। दूसरी, हमने महसूस किया कि स्कूल के आम दिनों में भी हमें कुछ इसी तरह से काम करना चाहिए। साथ ही स्थानीय संसाधनों को अपने शिक्षण में शामिल करना चाहिए ताकि बच्चे सहजता से काम कर सकें।

मैंने बच्चों से लोकगीतों पर बात की। उनसे कहा कि वे अपने मम्मी-पापा से पूछें कि उन्हें शादी और अन्य त्योहारों पर गाए जाने वाले कौन-कौन से गीत आते हैं। उनसे कहा कि उनकी कुछ पंक्तियाँ याद करके आएँ और समूह में सुनाएँ। यह गतिविधि बच्चों को सहज और ख़ुश करने में काफ़ी हद तक मददगार रही। हमने एक-दूसरे के गीत सुने और सुनाए भी। मैंने एक मराठी और एक बुन्देलखण्डी गीत सुनाया। बच्चों ने सुनाना शुरू किया तो मारवाड़ी और स्थानीय गीतों की जैसे झड़ी लगा दी। पर हम इसे लिखित रूप नहीं दे पाए। आगे स्कूल के सामान्य दिनों में इस गतिविधि को अच्छे-से करने की योजना है।

> कला में मानवीय गतिविधियों और क्षमताओं की अत्यधिक विविध श्रेणी शामिल होती है। यही कारण है कि इसने महामारी की चिन्ता और प्रभावों को कम करने में बच्चों की मदद की। बच्चों के कला-कार्य में जुड़े रहने से सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न हुई। अभिभावकों ने भी यह समझा कि कला हमारे शिक्षण और शिक्षा का एक हिस्सा है।

हमने मुख्य रूप से गीत लिखने, धुन बनाने और गीत गाने पर काम किया। एक-दो जागरूकता गीत बच्चों ने कम्पोज़ किए। इनका उपयोग हमने कोरोना फेरी[1] में किया। इससे बच्चों की क्रिएटिविटी को एक नई दिशा मिली जो स्कूल के सामान्य दिनों से अलग थी। शुरुआत में गीत की धुन किस तरह बनाएँ इसको लेकर काफ़ी बात की। ख़ूब गीत सुने। अतिरिक्त ध्यान देकर गीत सुनाने और क्या समझ में आया इस पर ग्रुप के सभी बच्चों ने अपने अनुभव घर पर साझा किए। कक्षा पाँचवीं से आठवीं तक के बच्चों ने कुछ धुन बनाईं। धुन बनाना, गीत लिखना, स्थानीय रूप से उपलब्ध साधनों का उपयोग कर वाद्य यन्त्रों को बनाना आदि पर काम हुआ। बच्चों को बस ज़रा-सा हिंट देने की ज़रूरत पड़ी। बतौर शिक्षक इससे एक सबक़ यह मिला कि इस तरह का काम, जो बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ाता है, आम दिनों में भी जारी रखना चाहिए। उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में संगीत की संक्षिप्त थ्योरी पर काम किया जाना चाहिए। स्थानीय संसाधनों का प्रयोग कर संगीत सिखाने सम्बन्धी नए विचार के साथ आगे काम करने की ज़रूरत है।

विगत समय में कक्षा में ताल और सुर पर बहुत कम काम हुआ है। इन दोनों पक्षों पर ज़्यादा काम करना पड़ेगा। अच्छे साउंड सिस्टम के साथ लोक संगीत, लाइट म्यूजिक सुनने से मदद मिलेगी। इस दौरान हमने देखने-सुनने के ज़्यादा अवसर बच्चों को मुहैया कराए। इससे उनके अनुभव में वृद्धि हुई है और उनकी यह सीख प्रस्तुति के समय भी दिखाई देती है।

संगीत की कक्षा में संगीत-यंत्रों के साथ काम की एक अलग भूमिका होती है। बच्चे संगीत-यंत्र से सहज होते हैं और उनका कौशल भी बढ़ता है। समुदाय में काम का जो अनुभव रहा है उससे यह सबक़ मिला कि हम यंत्र बनाने को लेकर एक रचनात्मक काम भी कर सकते हैं। हम देख सकते थे कि बच्चे अपने सुने हुए गाने को एक नए कलेवर में अपने बनाए वाद्य के साथ कितनी अच्छी तरह प्रस्तुत करते हैं। इस काम को कक्षा में एक सुनियोजित तरीक़े से करने और इस पर नज़र रखे जाने की ज़रूरत है कि एक उचित अन्तराल तक संगीत सुनने, सीखने के बाद बच्चे किस तरह की प्रतिक्रिया करते हैं। क्या सभी बच्चों में ताल का पैटर्न बनाने की क़ाबिलियत होती है? क्या जिन बच्चों के साथ हमने संगीत पर काम किया है उनका पैटर्न उन बच्चों से कुछ अलग है जिनके साथ हमने काम नहीं किया? कोई नया बच्चा हमारे साथ काम करे तो उसमें किस तरह के अलग पैटर्न दिखते हैं? क्या बच्चा एक तय समय तक संगीत में वक़्त गुज़ारने के बाद प्रकृति में संगीत के पैटर्न को समझकर अपनी प्रस्तुति में उसका प्रयोग करता है? यह कुछ सवाल हैं जिनके जवाब बच्चों के साथ काम करते हुए एक सुनियोजित तरीक़े से खोजे जाने चाहिए। इसे दस्तावेज़ के रूप में भी लिखकर रखना चाहिए जिससे आगे कोई और भी काम

करना चाहे तो उसे मदद मिले। आगामी दिनों में बच्चों के साथ काम करने की हमारी कुछ इस तरह की रणनीति रहेगी।

आगामी कार्य-रणनीति

हमने समुदाय स्कूल में कुछ अच्छे अभ्यास किए थे। यह अभ्यास स्कूल वापिस जाने पर बच्चों को सहज महसूस करने में मदद करेंगे। ऐसा एक अभ्यास अनुभव-लेखन का था। इस काम को बच्चों ने बहुत मन लगाकर किया और कक्षा में एक-दूसरे के साथ चर्चा भी ख़ूब की। उदाहरण के लिए, एक बच्चे ने सफ़ाई को लेकर अपना अनुभव साझा किया। उस पर कक्षा के अन्य बच्चों ने भी अपनी-अपनी बात रखी।

संगीत में भी मैं यह सम्भावना देखता हूँ। हम संगीत सुनाने के उपरान्त अपने अनुभव बच्चों को लिखकर लाने के लिए कह सकते हैं। इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि वह किसी ख़ास तरह का संगीत सुनते समय क्या महसूस करते हैं। बच्चे किसी ख़ास उम्र में संगीत को लेकर क्या सोचते हैं यह भी हमारे पास लिखित रूप में रह सकता है, इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। किसी गतिविधि के बारे में लिखना और स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखना भी भाषा का उद्देश्य है, इसलिए दोनों साथ–साथ चल सकते हैं। एक सवाल यह भी है कि इस तरह के काम की अवधि क्या हो? स्वतंत्र रूप से यदि कोई बच्चा संगीत की कक्षा में अपने अनुभव इस तरह से सुनाता है तो उसे आगे अकादमिक विषयों, जैसे कि भाषा से किस तरह जोड़कर देखा जाए।

स्थानीय संसाधन का उपयोग

यह बात तो हम सभी जानते हैं कि स्थानीय भाषा या सन्दर्भ का प्रयोग करने से बच्चों को किसी विषय की बेहतर समझ बनाने में मदद मिलती है। अपने आसपास के उदाहरण से सिखाने के कई सारे तरीक़े उपयोग में लिए जा सकते हैं। इसी क्रम में संगीत की बात करूँ तो हमें स्थानीय गीतों को कक्षा में गाना चाहिए और लोकगीतों का अच्छा संकलन तैयार करने के लिए इन्हें लिखना चाहिए। कौन-से लोकगीत कब गाए और बजाए जाते हैं, इन गीतों में किस तरह के वाद्य इस्तेमाल होते हैं इस पर भी बात की जा सकती है। और इस पर भी कि हमारे शास्त्रीय संगीत में गीतों का वर्गीकरण किस तरह से हुआ है आदि। इसे हम एक प्रोजेक्ट कार्य के रूप में भी देख सकते हैं। यह गतिविधि कक्षा पाँचवीं से सातवीं के बच्चों के साथ की जा सकती है। आगे की कक्षाओं में इसे अन्य विषयों के साथ अधिक एकीकृत तरीक़े से किए जाने की सम्भावना दिखती है। जैसे कि सामाजिक अध्ययन में किसी स्थानीय प्राचीन इमारत/मन्दिर/बावड़ी/घुमन्तू समुदाय और उनकी संस्कृति आदि की खोजबीन करना।

संगीत में आवाज़ को समझने, यंत्रों की आन्तरिक व बाहरी संरचना और उनके आवाज़ उत्पन्न करने की विधियों आदि की पड़ताल की जा सकती है। जैसे कि बच्चों को घरों में ख़ाली पड़े कनस्तर, टिन के डिब्बे, गत्ते, रबर, प्लास्टिक की बोतल, कोई धातु का टुकड़ा या पत्थर के टुकड़े आदि बजाने के लिए देना ताकि बच्चे बोर नहीं हों और एक नए पन के साथ सक्रिय सहभागिता करें ।

और भी कई तरह के संसाधनों की श्रेणियाँ हो सकती हैं:

श्रेणी 1 : विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, जैसे कि कला और शिल्प और संगीत शिक्षक।

श्रेणी 2 : विद्यालय के बाहर उपलब्ध संसाधन, जैसे कि स्थानीय कलाकार, कुम्हार, कृषि, बम्बू का काम करने वाले, समुदाय में मौजूद कोई कला का जानकार व्यक्ति, घरों में पड़े अनुपयोगी सामान।

श्रेणी 3 : प्राकृतिक वातावरण में संसाधन, जैसे कि नदी, पेड़ों, पत्तों आदि की आवाज़ सुनना और संगीत में इनका किस तरह उपयोग करें, इसके तरीक़े खोजना।

अकादमिक विषयों के साथ जोड़कर काम करना

जहाँ भी संगीत को अन्य विषयों के साथ जोड़कर काम करने की सम्भावना हो, वहाँ साथी शिक्षकों के साथ मिलकर इस सम्भावना को तलाशना चाहिए। उदाहरण के लिए बेकार या अनुपयोगी सामान से संगीत वाद्य यंत्र बनाना। एक सत्र विज्ञान के शिक्षक के साथ लिया जा सकता है यह समझने के लिए कि ध्वनि किस तरह उत्पन्न होती है। यंत्र की बनावट किस तरह की होनी चाहिए? क्या सभी ध्वनियाँ संगीत में उपयोग की जा सकती हैं? एक संगीत शिक्षक भी इस बारे में बहुत-सा काम बच्चों के साथ कर सकता है कि संगीत के लिए किस प्रकार की ध्वनि उपयोगी है और इसकी योजना कक्षा के स्तर के अनुसार बनाई जा सकती है।

वर्तमान में हम पहली से तीसरी कक्षा में काम कर रहे हैं और लगभग एक से डेढ़ घण्टे अन्य विषय के शिक्षकों के साथ रहते हैं। शिक्षक विभिन्न विषयों के बेहतर इंटीग्रेशन के अवसर का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे मुझे भी उनके काम को समझने में मदद मिल रही है।

ज़मीनी गतिविधियाँ

मैं सत्र की शुरुआत ध्यान से करता हूँ। हम मोबाइल पर सॉफ्ट तानपुरे की ध्वनि बजाते हैं और कुछ मिनटों तक उसे सुनते हैं और बच्चे मेरे निर्देशों का पालन करते हैं कि संगीत सुनते समय साँस किस तरह लें। इसके बाद हम गीतों से शुरुआत करते हैं। बच्चे अभिनय करते हुए गाते हैं। इसमें शिक्षक भी शामिल होते हैं। बच्चे बड़े और छोटे समूहों में गाते हैं।

फिर शिक्षक बच्चों से गीत में आए कोई पाँच शब्द पूछती

हैं, जिसे वह एक छोटे कार्ड पर लिखती हैं। इस गतिविधि में अब बच्चों की बारी आती है। वह बच्चों को दो समूहों में बाँटती हैं और कार्ड को दिखाकर उन्हें शब्द पढ़ने के लिए कहती हैं। बच्चे पढ़ने की कोशिश भी करते हैं और एक-दूसरे की मदद भी। दूसरा समूह पहले समूह के बच्चों को देखता है और अपनी बारी आने पर वह ग़लती नहीं करता जो शब्दों के उच्च्चारण में पहले समूह ने की थी। इसके बाद बच्चों से बात की जाती है कि उन्हें शब्द पहचानने में क्या दिक़्क़त हुई। दूसरे समूह ने क्या रणनीति अपनाई। दूसरी गतिविधि में गीत में आए किसी पात्र को चयनित कर, उसके आधार पर होमवर्क दे दिया जाता है। तो इस प्रकार सहज तरीक़े से संगीत और भाषा का शिक्षण हो रहा है। मैंने बच्चों की प्रस्तुति, गीत की धुन, अभिनय, आत्मविश्वास, एकल और युगल गायन भी देखा। इसमें भाषा-शिक्षण के तमाम पहलू जैसे कि सुनना, याद करना, भाव से गाना और लेखन भी शामिल किए जा सकते हैं। इस गतिविधि को हम अँग्रेज़ी राइम के अभ्यास के समय भी काम में ले सकते हैं।

कुछ बच्चे हैं जो कक्षा में शान्त रहते हैं। किसी भी गतिविधि में ज़्यादा सहभागिता नहीं करते। हम संगीत के माध्यम से उनकी सहभागिता को बढ़ाने के लिए अधिक अवसर प्रदान कर सकते हैं और उन्हें उन तरीक़ों से ख़ुद को अभिव्यक्त करने में मदद कर सकते हैं, जिनमें वे सहज महसूस करते हैं। संगीत और कला खुशी-ख़ुशी सीखने के लिए ज़्यादा अवसर प्रदान कर सकते हैं शिक्षक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए व इसका आकलन करना चाहिए कि हमारे प्रयास एक शर्मीले बच्चे की किस तरह से मदद कर रहे हैं या कि हमें रणनीतियाँ बदलने की ज़रूरत है।

समय बनाम असर

यह सभी गतिविधियाँ समय की माँग करती हैं। व्यक्ति का स्कूल या स्कूल के समूह में किस तरह से समायोजन हो जिससे संगीत में रिसर्च की जा सके? इसमें नए तरह से सोचने और काम करने की बहुत सम्भावना है। एक तरीक़ा है कि शुरू से ही बहुत अभ्यास के साथ संगीत सिखाएँ। हम स्कूल में संगीत-शिक्षण को किस रूप में देखते हैं और वहाँ पर किस तरह से काम किया जाना चाहिए इस पर भी काम करने की ज़रूरत मालूम पड़ती है।

"संगीत की धुन और संगीत के स्वरों का सौन्दर्य मनुष्य के बौद्धिक और नैतिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन है" (*बाल हृदय की गहराइयाँ*, वसीली सुखोम्लीन्सकी)। यहाँ संगीत सिखाने का मतलब यह नहीं कि बच्चों को कलाकार बनाना है। जिस तरह अकादमिक विषयों से बच्चों का मानसिक विकास होता है उसी तरह संगीत की शिक्षा से आत्मशिक्षा का विकास होता है। संगीत शिक्षण भी उन्हें आगे बेहतर इन्सान बनाने और दुनिया को सुन्दर बनाए रखने में मदद करेगा जो कि शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य भी है। सभी विद्यालयों में संगीत पर एक पूर्ण विषय की तरह नहीं तो कम-से-कम सुनियोजित तरीक़े से काम अवश्य सुनिश्चित होना चाहिए।

Endnotes

i Similar to the *Prabhat Pheri* (literally, morning round), which is a procession of people singing religious hymns, the Corona *Pheri* is meant to spread awareness messages on COVID-19 within a locality.

दुर्गेश कुमार मानेराव, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में संगीत के शिक्षक हैं। मूलत: मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा ज़िले के रहने वाले दुर्गेश अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ 2016 से काम कर रहे हैं। इससे पहले उन्होंने बोध शिक्षा समिति, जयपुर में काम किया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय से वाद्य संगीत में एमफिल किया है। उनसे durgesh.manerao@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

पुस्तकों से बहाली | एक पुस्तकालय परियोजना

लक्ष्मी करुणाकरण

फिर से स्कूल खुलने पर, हमारी सार्वजनिक स्कूली शिक्षा व्यवस्था, पलायन, बाल श्रम, बाल विवाह आदि के चलते कक्षाओं से ग़ायब बच्चों की समस्या से जूझेगी। एक ओर जहाँ यह एक कड़ी चुनौती बनी रहेगी, एक और गूढ़ चुनौती रहेगी — स्कूल वापसी कर रहे बच्चे। इन बच्चों को न सिर्फ़ अपने पीछे रह जाने से निपटने के लिए शैक्षणिक समर्थन दरकार होगा, बल्कि महामारी के दौरान बीते अपने जीवन को समझने, उससे उबरने और फिर से सीखने के लिए तैयार होने में मनो-सामाजिक सहारा भी चाहिए होगा। हालाँकि शिक्षा प्रणाली, इस शैक्षिक पिछड़ने की भरपाई करने के लिए तैयार हो रही है, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि शिक्षक व शिक्षाविद महामारी के दौरान हुई सामाजिक व भावनात्मक अवनति पर भी पूरा ध्यान दें।

तनाव के चलते शुरू हुआ पिछड़ना

कोविड-19 महामारी के दौरान बच्चे ज़बरदस्त तनाव से गुज़रे हैं। संक्रमण हो जाने का, घर के लोगों को खोने का लगातार मंडराता डर, अपने दोस्तों व शिक्षकों से न मिल पाना, जबरिया पलायन, घरेलू व बाल हिंसा आदि। लॉकडाउन के दौरान चाइल्डलाइन इंडिया की टेलीफ़ोन हेल्पलाइन लगातार बजती ही रही, जो कि बच्चों द्वारा महसूस गई पीड़ा की सूचक है। साल 2020 के लॉकडाउन के पहले 11 दिनों में इस हेल्पलाइन ने 92,000 से ज़्यादा ऐसे एसओएस कॉल्स प्राप्त किए जो कि दुर्व्यवहार और हिंसा से सुरक्षा की गुहार लगा रहे थे।

पीएचडी, 'येल स्कूल ऑफ़ मेडिसिन' के 'चाइल्ड स्टडी सेंटर' में सहायक प्राध्यापक और 'येल प्रोग्राम इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन' में सह-निदेशक, नैन्सी क्लोज़ कहती हैं[i], "मैं बड़े पैमाने पर और सामान्य समय में विकासात्मक रूप से उपयुक्त स्थिति से कहीं ज़्यादा प्रतिगमन देख रही हूँ। मैंने बच्चों को तुतला-तुतला कर पिछड़ते देखा है, अपने दैनिक कार्य निपटाने में वे मदद माँगते हैं, सोने और शौच आदि में उन्हें मदद लगती है — आम तौर से कहीं ज़्यादा मदद। प्रबल भावनाओं से निपटना और उन्हें व्यक्त करना सच में चुनौती भरा हो सकता है। नतीजतन, छोटे-बड़े बच्चों और यहाँ तक कि कॉलेज के विद्यार्थियों में भी हम ग़ुस्सा और तुनक-मिज़ाजी देख रहे हैं। यही नहीं, व्यवहार सम्बन्धी तमाम तरह की मुश्किलें भी हमें दिख रही हैं। हम देख रहे हैं कि अपने दोस्तों या अपने शिक्षकों के साथ न हो पाने के चलते बच्चे वाक़ई उदास रहने लगे हैं तथा स्कूल के कामकाज में बदलाव के कारण अतिरंजित भावनाएँ और व्यवहार दिखाने लगे हैं। अब चूँकि हम सब सामान्य और प्रत्याशित स्थिति में पहुँचने का यत्न कर रहे हैं सो यह सारी अनिश्चितताएँ और भी ज़्यादा व्यापक और खिजाऊ हो चली हैं। हमें यह पता चल रहा है कि *कोविड-19* के दौर में स्थिरता और निश्चितता साधना और भी कठिन हो गया। नतीजतन, बच्चे हैरान-परेशान हो सकते हैं और इस कारण उनका बर्ताव अनियंत्रित हो सकता है।"

अब जब बच्चे स्कूल वापसी कर रहे हैं तो उनकी वापस जुड़ने की तैयारी सुनिश्चित करने और स्कूली वातावरण में फिर से सीखने का मानस बनाने के उद्यम में व्यक्तिगत व सामूहिक बेहतरी के लिए अवकाश सृजित करना महत्त्वपूर्ण होगा।

कहानी से बहाली

सो, सामने जो महती काम आन पड़ा है, उसके लिए शिक्षक और शिक्षाविद कैसे अपनी तैयारी करें? क्या बाल साहित्य और कहानियाँ इस प्रक्रिया में मदद कर सकती हैं?

इसके लिए हमें पढ़ने को एकदम नई नज़र से देखना होगा। पढ़ना सिर्फ़ पढ़ने की क्रिया नहीं है, यह हमारे आसपास की दुनिया को समझने, समझाने और उसे ग्रहण करने का एक तरीक़ा है। डेनिस वॉन स्टॉकर[ii] लिखते हैं, "वैश्विक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पढ़ना एक बहुत जटिल क्रिया है जिसमें न सिर्फ़ एक पाठ के अर्थ को समझा जाता है, बल्कि इसमें बच्चे से यह भी अपेक्षा रहती है कि उसके द्वारा अभी-अभी पढ़े गए पाठ को समझने में वह सक्षम होगा, अपने सन्दर्भ और निजी अनुभवों के साथ उसे जोड़ सकेगा और एक सोचे-समझे तरीक़े से उसे गुनते हुए उस पाठ पर अपनी बात रख सकेगा। सिर्फ़ इसी तरह की पूर्ण व गहन पठन शिक्षा ही बच्चों को एक असल, अविकल साक्षरता की ओर ले जाएगी।"

तो, कहानियाँ पढ़ना व सुनना, बच्चों के लिए अपनी नित बदलती दुनिया की अन्दरूनी व बाहरी समझ बना पाने के काम में एक महती भूमिका निभाता है। इसके लिए ज़रूरी संरचना में कहानियों को सामाजिक व भावनात्मक ज्ञानार्जन के माध्यम के रूप में उपयोग करना और इस प्रक्रिया को दुरुस्त महसूस करने का मौक़ा बनाना है।

मैं *बगुरी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट* और एक अ-लाभकारी संगठन, *हसीरु दाला* के साथ काम करती हूँ, जो दक्षिण भारत में अनौपचारिक कचरा बीनने वालों के लिए काम करता है। यह उपक्रम उन बस्तियों में सामुदायिक पुस्तकालय चलाता है जहाँ कचरा बीनने वाले रहते हैं और समुदाय के सभी बच्चों को क़िताबें उपलब्ध करवाता है। ये बच्चे सबसे हाशियाई और जोखिम-ग्रस्त बच्चों में शुमार हैं और इसीलिए पुस्तकालय परियोजना के लिए उनकी सामाजिक व भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा करना महत्त्वपूर्ण था। पुस्तकालय में, बच्चों की इन ज़रूरतों को हमारे काम में शामिल करने पर ध्यान दिया जाता है और प्रयास किया जाता है।

भावनाओं के लिए शब्दावली

सामाजिक-भावनात्मक ज्ञानार्जन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम अपनी स्वयं की भावनाओं को पहचानना और उन्हें व्यक्त करना होता है। कई बार, बच्चों के लिए अपनी अनुभूत भावनाएँ समझ पाना या अपनी ज़रूरतों को व्यक्त कर पाना मुश्किल होता है। तिस पर, हमारी प्रचलित परम्परा के चलते हम बच्चों को कुछ ख़ास भावनाओं को अभिव्यक्त करने से रोकते हैं, ख़ासकर, ग़ुस्से और उदासी जैसी दुर्बोध अनुभूतियाँ को।

कोई तीन साल पहले, जब मैंने ऐसे बच्चों के साथ सोशल एंड इमोशनल लर्निंग (एसईएल) के मॉड्यूल पर काम करना शुरू किया, जो अब तक अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाए थे, तो मैंने उन्हें ऐसी कठपुतलियाँ दिखानी शुरू की जिनके चेहरे नाना प्रकार के भाव प्रदर्शित करते थे। जब मैंने उन बच्चों को एक मुस्कराते चेहरे वाली कठपुतली दिखाई और उनसे उसके भाव को नाम देने के लिए कहा तो उनमें से ज़्यादातर बच्चों ने जवाब दिया — *मुस्कान* । इस प्रकार पहले कुछ सत्र बुनियादी भावनाओं को समझने और उन्हें नाम देने में बीते। यह नामकरण, अभिव्यक्ति का एक महत्त्वपूर्ण अंग था, मिसाल के लिए, यह कहने में, "मैं तुमसे बात नहीं कर रहा क्योंकि मैं उदास हूँ।" किसी भाव के प्रति उनकी प्रतिक्रिया व उसके कारण के बीच के फ़र्क़ को समझने में बच्चों को कुछ समय लगा, उदाहरण के लिए, मुस्कराहट या हँसी ख़ुश होने पर आती है या आँसू (प्रायः) दुखी होने पर निकलते हैं। ज्यों ही यह समूह बुनियादी भावों को नाम देने और उनकी कहानियाँ साझा करने में मंजता गया, हमने हौले-हौले मिश्रित अनुभूतियों को लेकर होने वाली बातचीत के पट खोल दिए। उदाहरण के लिए, एक बच्ची को जब यह अभिव्यक्त करना था कि माँ के डाँटने पर वह कैसा महसूस करती है तो वह बोली कि उसे तब ग़ुस्सा आता है, लेकिन साथ ही साथ वह रोने भी लगी। मैंने उससे पूछा कि क्या ऐसा इसलिए कि वह कुछ और भी महसूस कर रही है? फिर जब मैंने उदास कठपुतली ऊपर उठाई तो उसने हाँ में गर्दन हिलाई। इससे मिली-जुली भावनाओं पर बातचीत शुरू हो गई। मैं सोचती हूँ कि चेतन-मन के विकास का यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण चरण है जिसमें विचारों और भावनाओं का नाता प्रतिक्रियाओं और व्यवहारों से जुड़ता है।

अनुभूत भावना के साथ उससे सम्बद्ध प्रतिक्रिया की परस्परता बनाने के लिहाज़ से शब्दावली का निर्माण एसईएल के साथ काम करने का एक निर्णायक प्रस्थान बिन्दु बन गया। टॉड व पेगी स्नो की फीलिंग्स *टु शेअर फ्रॉम ए टु ज़ेड*, जेनान केन की *द वे आइ फील*, डॉ सोइस की *माइ मैनी कलर्ड डेज़* जैसी क़िताबें बच्चों को अपनी भावनाओं को नाम देने, उन्हें सबल कहने और साझा करने के लिए आमंत्रित करती हैं।

सामाजिक-भावनात्मक सीख के लिए चित्र-पुस्तकें

अपने लेख *यूज़िंग चिल्ड्रन'स लिटरेचर टु बिल्ड सोशल-इमोश्नल स्किल* [iii] में बच्चों की पैरोकार व लेखक टूडी लुड्विग कहती हैं, "सुलिखित व आयु-अनुकूल साहित्य में ऐसे अद्भुत शिक्षणीय क्षण मिलते हैं जिनमें बच्चे ये काम कर सकते हैं —

- कहानी के प्रमुख पात्र से एक पहचान बनाना
- किसी ख़ास मुद्दे को लेकर पात्रों के विचारों, मनोभावों और उनकी गतिविधियों के सन्दर्भ में सहज बोध अर्जित करना
- यह अहसास होने पर कि वे ही अकेले नहीं हैं जो इस समस्या से जूझ रहे हैं उन्हें विरेचन (दबी हुई भावनाओं का मोचन) अनुभव होता है
- यह देखकर कि पात्र अपनी समस्याओं से कैसे ख़ुद ही निपटते हैं और उनके कृत्य या बातों का क्या नतीजा रहा, वे भी अपनी समस्याओं को निपटाने के नए-नए रास्ते ढूँढ़ते हैं
- चर्चा के सहज क्रम के बतौर अपने निजी अनुभवों की साझेदारी करना।"

> विकास के लिहाज़ से उपयुक्त चर्चाओं में विस्तार लेने वाली एक अच्छी कहानी बच्चों को वह अवसर प्रदान कर सकती है जिसमें वे उन भावनाओं को टटोलते-परखते हैं जो ऐसे द्वन्द्वों व/या प्रसंगों को उकसाती हैं जो ख़ुद उनकी व/या उनके मित्रों द्वारा आमतौर पर महसूस की जाने वाली भावनाओं के सदृश होते हैं। ऐसा सदृश अनुभव बच्चे को उसके एकाकीपन के खोल से बाहर निकलने में मदद करता है ताकि वे अपनी भावनाओं से दो-चार होने के नए रास्ते खोज सकें।

एक पुस्तकालय सत्र में जहाँ क्रोध की भावना को समझने की

कोशिश की जा रही थी, मैंने विनायक वर्मा की *एन्ग्री अक्कू* (प्रथम बुक्स) क़िताब का उपयोग किया और एक हद तक लुड्विग के सिद्धान्त को साकार होते देखा। क़िताब को ऊँची आवाज़ में पढ़ने के अभ्यास के दौरान, मैं उस बिन्दु पर ठहर गई जहाँ स्कूल में घटी एक शर्मिन्दा करने वाली घटना को लेकर अक्कू दुखी है। मैंने बच्चों से पूछा कि उनके हिसाब से अक्कू को क्या करना चाहिए। ज़्यादातर बच्चों की प्रतिक्रिया थी कि उसे उस बदमाश लड़के की पिटाई करनी चाहिए। लेकिन कहानी आगे बढ़ने के साथ ही, बच्चों को पता चला कि कहानी की नायिका, अक्कू, ने ऐसा नहीं किया। तब मैंने उनसे पूछा कि अक्कू द्वारा ऐसा न करने के बारे में उनके क्या विचार हैं। एक बच्चे का जवाब था, "उसमें आत्मनियंत्रण था।" इसके चलते यह चर्चा शुरू हुई कि कौन-सी बातें हमें गुस्सा दिलाती हैं और फिर हम इन भावनाओं पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। जहाँ तक दोस्तों व शिक्षकों से व्यक्तिगत विवाद जैसे अन्य प्रसंगों की बात है तो बच्चों ने बताया कि कैसे उनके घरों में घरेलू हिंसा के कारण उन्हें ग़ुस्सा आता है।

अबोध्य भावनाओं को समझना

ऐसे ही एक प्रसंग में, नीना सबनानी की कहानी *मुकुन्द एंड रियाज़* (तूलिका बुक्स) ने चर्चा का मुख इस बात की ओर मोड़ दिया कि कैसे उन बदलती परिस्थितियों के चलते दोस्तियाँ टूट जाती हैं, जिन परिस्थितियों पर हमारा नियंत्रण नहीं होता और फिर उनकी यादें, हमें उदास और दुखी कर देती हैं। यह पुस्तक, 1947 में हुए भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में दो लड़कों की दोस्ती की पड़ताल करती है। इस क़िताब के लिए एक विस्तार गतिविधि की गई जिसमें बच्चों को, उन्हें सबसे ज़्यादा याद आने वाले व्यक्ति का या फिर किसी ख़ास स्मृति का चित्र बनाना था। इस गतिविधि के दौरान आठ साल की शरण्या ने अपने पिता का एक चित्र बनाया। उसके पिता ने पिछले बरस आत्महत्या कर ली थी। चित्र बनाने के उसने अनेक प्रयास किए, पर हर बार वह चेहरा बनाती, और उसे मिटा देती। अन्ततः उसने दो आकृतियाँ बनाईं। शुरू में मुझे लगा कि इस चित्र में वह पिता के साथ होगी। उस दिन उसके सत्र छोड़ने के बाद, मैंने कोमलता से उससे उस चित्र के बारे में पूछा। उसने बताया कि चित्र में दाहिनी आकृति उसके पिता की थी और बाईं ओर उसकी माँ थी। मैंने देखा कि उसकी माँ की आकृति बड़ी थी; शायद, आज शरण्या के जीवन में उसकी माँ की बड़ी उपस्थिति का चित्रण था वह।

सोच-समझ कर तैयार की गईं चित्र-पुस्तकें, साझा गतिविधियाँ व बातचीत, बच्चों के विकास के सिलसिले में उनकी सामाजिक व भावनात्मक ज़रूरतों पर सोचने के दौरान हमें बहुत समृद्ध वैचारिक आदान-प्रदान की ओर ले जा सकती हैं। आज जब बच्चे स्कूलों की ओर लौट रहे हैं, तो हो सकता है उनमें से कई बच्चे उत्साह और राहत का अनुभव करें, लेकिन उनके भीतर ऐसा बहुत कुछ बदल भी गया होगा जिसे समझने और सुलझाने की ज़रूरत है। इसलिए, इस वक़्त, स्कूल में एसईएल पाठ्यचर्या का सृजन कर साहित्य व कहानियों के जादू का इस्तेमाल करना एक अहम और बेहद ज़रूरी काम होगा।

Endnotes

i Is my child regressing due to the COVID 19 pandemic?

ii Stocker, Dennis Von (2009): The Importance of Literacy and Books in Children's Development - Intellectual, Affective and Social Dimensions

iii Ludwig, Trudy. 'Using Children's Literature to Build Social-Emotional Skills. Sept 24, 2018

लक्ष्मी करुणाकरण एक शिक्षाविद और पेशेवर सम्प्रेषक हैं। बेंगलूरु में रहती हैं। उन्होंने एक टेलीकॉम इंजीनियर, संचार विशेषज्ञ और एक शिक्षाविद के बतौर काम किया है। एक दशक से भी ज़्यादा समय तक उन्होंने सरकारी, स्पेशल *नीड्स* व रेमीडिअल स्कूलों तथा वंचित समुदायों में सामाजिक बहिष्कार अनुभव कर रहे बच्चों के साथ काम किया है। कूड़ा बीनने वाले लोगों के साथ काम कर रहे संगठन *हसीरु दाला* में वे कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश के कचरा बीनने वालों के कोई 700 से ज़्यादा बच्चों के लिए चलाए जा रहे स्कूल-बाद पुस्तकालय व कला-केन्द्र *बगुरी चिल्ड्रन्स प्रोग्राम* और *बगुरी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट* की प्रमुख हैं। वे वॉरसा के सेंटर फ़ॉर कॉण्टेम्परारी आर्ट्स की आर्टिस्ट इन रेसिडंस, और आर्ट्स फ़ॉर गुड फ़ेलोशिप, 2019 सिंगापुर इंटरनैशनल फ़ाउण्डेशन की फ़ेलो भी रही हैं। वे 'टीचर प्लस' के लिए नियमित लिखती हैं। उनसे lakshmikarunakaran@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : मनोहर नोतानी

वायरस के संग जीना

डॉ मधुमिता दोबे

परिचय

हमें वायरसों (विषाणु) के साथ रहते हुए अब तक लाखों साल हो चुके हैं। इतिहास महामारियों और वैश्विक महामारियों का हिसाब रखता है जिसकी वजह से हमें यह पता है कि विषाणुजनित महामारियों (वायरसों के कारण पैदा हुई संक्रामक बीमारियों के प्रकोप, जो तेज़ी से फैले और जिनके कारण एक ही वक़्त में किसी समुदाय में कई लोग प्रभावित हुए) की शुरुआत लगभग 12 हज़ार वर्ष पहले नवपाषाण युग के दौरान हुई, जब मनुष्यों ने खेतिहर समुदायों की घनी आबादियाँ विकसित कर ली थीं जिनकी वजह से वायरसों को तेज़ी से फैलने का मौक़ा मिला। कई मर्तबा यह वायरस कई देशों या महाद्वीपों में फैल गए और इन्हें वैश्विक महामारी (pandemic) के रूप में जाना गया। इस तरह का सबसे हालिया उदाहरण सार्स-कोवी-2 महामारी है जिसने पिछले दो सालों में दुनिया को तहस-नहस कर दिया है।

जैसे-जैसे इन वायरसों के बारे में जानकारी बढ़ी (ख़ासतौर पर हाल के समय में इबोला, सार्स, मर्स और निपाह जैसे वायरसों के कारण हुई वैश्विक महामारियों के पनपने और फैलने के साथ) वैसे-वैसे हाथ की स्वच्छता, भोजन की स्वच्छता, मास्क पहनने और दूरी बनाए रखने जैसे एहतियाती व्यवहारों की महत्ता पर भी ज़ोर दिया गया। हालाँकि, जब चीन के वूहान शहर से एक नए कोरोना वायरस की ख़बरें आनी शुरू हुईं तो पूरी दुनिया को एक झटका लगा था और वह इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। इस नए वायरस को समझने के लिए दुनिया जब तक जाग कर उठती, वह तेज़ी से फैलते हुए बहुत कुछ बरबाद कर चुका था।

स्कूलबन्दी और उसका प्रभाव

जैसे-जैसे महामारी के दिन आगे बढ़ते गए, *कोविड-19* के फैलाव के रोकथाम के लिए प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे और ऐसे ही एक क़दम के तहत स्कूल बन्द कर दिए गए। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि साल 2020 में कोरोना वायरस महामारी और उसके परिणामस्वरूप लगने वाले लॉकडाउन के कारण भारत में 15 लाख स्कूलों के बन्द होने से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में नामांकित 24.7 करोड़ बच्चे प्रभावित हुए। हालाँकि अभी हमारे पास ऐसे पर्याप्त सबूत नहीं हैं जिनसे यह आँका जा सके कि स्कूलबन्दी से बीमारी के संक्रमण के ख़तरे में कितना फ़र्क़ आया है, लेकिन स्कूलबन्दी के कारण बच्चों की सुरक्षा, सेहत और पढ़ाई पर पड़ रहे विपरीत प्रभावों के प्रमाण लिखित रूप में भलीभाँति मौजूद हैं।

भारत दुनिया के उन चार या पाँच देशों में से एक है जहाँ स्कूल सबसे लम्बे समय के लिए बन्द कर दिए गए। इसके परिणामस्वरूप आने वाले व्यवधानों ने शिक्षा प्रणाली के भीतर ही नहीं, बल्कि बच्चों के जीवन के अन्य पहलुओं में भी पहले से मौजूद असमानताओं को बढ़ावा दिया है। स्कूलबन्दी की बहुत भारी सामाजिक और आर्थिक क़ीमत भी अदा करनी पड़ी और इसका सबसे गम्भीर असर सबसे असुरक्षित व वंचित लड़के-लड़कियों और उनके परिवारों पर नीचे उल्लिखित तरीक़ों से पड़ा :

बाधित होती शिक्षा

कक्षा में होने वाली पढ़ाई में रुकावट आने से बच्चे की सीखने की क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब स्कूल बन्द होते हैं तब बच्चे और किशोर इन अवसरों को खो बैठते हैं, विशेषकर सुविधाओं से वंचित विद्यार्थी जिनके पास स्कूल से बाहर शिक्षा के कम ही अवसर होते हैं।

स्कूलों में मिलने वाली पोषण जैसी अनिवार्य सेवाओं में रुकावटें

कई बच्चे और किशोर पूरी तरह से स्कूलों में दिए जाने वाले ख़ाने पर आश्रित होते हैं। स्कूलों के बन्द हो जाने पर उनके पोषण के साथ भी समझौता होता है। ऐसा देखा गया है कि स्कूल में भोजन की व्यवस्था से बच्चों की संज्ञानात्मक और सीखने की क्षमताओं को बढ़ावा मिलता है। एक बच्चा अपने जीवन के जो साल स्कूल में बिताता है ठीक उसी अवधि में ख़राब पोषण के कुप्रभावों का उस पर सबसे अधिक ख़तरा रहता है। विश्व भर में लगभग 37 करोड़ बच्चों को सुविधा प्रदान करने वाले स्कूलों में इन भोजन कार्यक्रमों के रुकने से ठीक यही हुआ। इस सुविधा से लाभान्वित होने वालों बच्चों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है (लगभग 10 करोड़)। इस आपदा के दौरान पोषण से जुड़ी आवश्यक सेवाओं जैसे स्कूल के भोजन कार्यक्रम, आयरन और फ़ोलिक एसिड की अनुपूर्ति (supplementation), कृमिहरण (deworming) और पोषण शिक्षा में 30 प्रतिशत की कमी आई है।

स्कूलबन्दी से वितरण के उन सामान्य माध्यमों में भी बाधा आई है जिनके द्वारा स्कूल में भोजन कार्यक्रम संचालित होते हैं। हालाँकि घर-घर पहुँचाए जाने वाले राशन का उपयोग करने, नक़द हस्तान्तरण या खाने के वाउचरों के टॉप-अप करने के प्रयास किए गए हैं। लेकिन ये समाधान लम्बे समय तक काम आने वाले नहीं हैं। साल 2020 में, विश्व स्तर पर लगभग 37 करोड़ बच्चे स्कूलबन्दी के दौरान स्कूलों में लगभग 39 अरब बार भोजन नहीं कर पाए। ये वे बच्चे हैं जो इस आपदा के पहले स्कूलों के इन भोजन कार्यक्रमों का लाभ उठा रहे थे। भारत में, मध्याह्न भोजन मिलने से बच्चों में कैलोरी के अभाव की स्थिति में 30 प्रतिशत तक कमी देखी गई है।

शिक्षकों के लिए भ्रम और तनाव का विषय

लम्बे समय तक स्कूल बन्द रहने के कारण, सबसे उपयुक्त परिस्थितियों में भी शिक्षकों के लिए अपने विद्यार्थियों से जुड़कर उनके सीखने में सहयोग देना मुश्किल काम रहा है।

माता-पिता पर दबाव

माता-पिता को अक्सर घर पर अपने बच्चों के सीखने में उनकी मदद करने के लिए कहा जाता रहा है। उनमें से अधिकांश को यह कार्य करने में समस्याएँ आती हैं, ख़ास कर वे माता-पिता जिनके पास सीमित शिक्षा और संसाधन हैं। कोई और चारा न होने पर, अक्सर कामकाजी माता-पिता को बच्चों को अकेले छोड़ना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बच्चों में नशीली चीज़ों के सेवन जैसी ख़तरनाक आदतों का चलन बढ़ता जा रहा है। वित्तीय रूप से संकटग्रस्त परिवारों में, आर्थिक झटकों ने बच्चों को काम करने और पैसे कमाने के लिए मजबूर कर दिया है। लड़कियों एवं युवा महिलाओं के साथ यौन शोषण और दुराचार जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है। कम उम्र में विवाह और किशोरावस्था में गर्भधारण के क़िस्से बहुत आम हो गए हैं। कुछ कामकाजी माता-पिता को अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए काम छोड़ना पड़ जाता है जिससे उनकी आमदनी में कमी होती है और परिवार पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

समाज से अलगाव

स्कूल, सामाजिक गतिविधि और लोगों के मेल-मिलाप व संवाद करने के स्थान होते हैं। स्कूल बन्द होने से कई बच्चे और किशोर वह सामाजिक सम्पर्क खो बैठे, जो उन्हें केवल स्कूल में मिल पाता था। दुनिया भर के अध्ययनों से पता चला है कि लम्बे समय तक समाज से अलग रहने वाले बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। सामान्य दिनचर्या में रुकावटें आने और दोस्तों से सम्पर्क टूट जाने से बच्चों में तनाव और बेचैनी की शिकायत हो सकती है।

स्कूलों का फिर से खुलना

वायरस के साथ इस लम्बे वक़्त तक रहे आने ने हमें यह एहसास कराया है कि स्कूलों को, सुरक्षित ढंग से और *कोविड-19* को लेकर देश की व्यापक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया के अनुरूप रहते हुए फिर से खोलने की ज़रूरत है। इसके लिए विद्यार्थियों, कर्मचारियों, शिक्षकों और उनके परिवारों को सुरक्षित रखने के सभी उचित उपाय अपनाने होंगे। माता-पिता की कुछ वाज़िब चिन्ताएँ हैं और इन पर ध्यान देने के लिए ज़रूरत है कि ग़लतफ़हमियों को दूर किया जाए और विज्ञान को सार्वजनिक विमर्शों का हिस्सा बनाया जाए ताकि लोगों के लिए तथ्यों पर आधारित निर्णय लेना आसान हो सके। लोक स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े तमाम हिस्सेदारों व विशेषज्ञों तथा बच्चों के माता-पिता को साथ आना ज़रूरी है ताकि स्कूलों को सुरक्षित रूप से दोबारा खोला जा सके।

यूनिसेफ, यूनेस्को, यूएनएचसीआर, वर्ल्ड बैंक और विश्व खाद्य कार्यक्रम ने मिलकर स्कूलों को फिर से खोलने के लिए एक वैश्विक रूपरेखा (Global Framework for Reopening Schools) तैयार की है, जिसे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय सन्दर्भ में अपनाया गया है। स्कूलों को पुनः खोलने की रूपरेखा (जून 2020) हमें इस निर्णय प्रक्रिया के बाबत जानकारी प्रदान करती है कि स्कूलों को फिर से कब खोला जा सकता है और यह भी बताती है कि इसकी क्या-क्या तैयारियाँ होनी चाहिए। साथ ही इसकी क्रियान्यवन प्रक्रिया के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। यह ज़रूरी है कि प्रत्येक स्कूल इस रूपरेखा को उसकी अपनी परिस्थितियों (विशेषकर सामुदायिक संक्रमण दरों) के अनुसार लागू करे और बदलती स्थानीय दशाओं के मुताबिक़ ढलने के लिए इसमें निरन्तर रूपान्तरण होते रहने चाहिए। निश्चित रूप से, पहले उन्हीं क्षेत्रों में स्कूलों को फिर से खोला जाना चाहिए जहाँ संक्रमण की दर सबसे कम हो और स्थानीय संक्रमण का भी सबसे कम ख़तरा हो। स्कूलों का खुलना कुछ चरणों में हो सकता है। उदाहरण के लिए, शुरूआत में कक्षाएँ सप्ताह के कुछ दिनों तक सीमित हों या स्कूल केवल कुछ कक्षाओं या स्तरों के लिए ही खुलें।

यह आवश्यक है कि गतिविधियों की योजना बनाने, उनको अमल में लाने और उनकी निगरानी करने के लिए माता-पिता, शिक्षक और स्कूल एक-दूसरे के साथ समन्वित, एकजुट और पूरक ढंग से काम करें और सहयोग करें। इससे यह सुनिश्चित हो पाएगा कि बच्चे स्कूल के अन्दर एवं बाहर, दोनों ही जगहों में सुरक्षित रहें। इस सम्मिलित प्रयास की सबसे पहली शर्त होती है संचार और तालमेल की ऐसी प्रक्रियाओं को मज़बूती देना जिनसे समुदायों और अभिभावकों के साथ स्थानीय स्तर पर बातचीत और जुड़ाव को प्रोत्साहन मिलता है।

स्कूलों को खोलने से पहले की सामूहिक तैयारी

- स्वच्छता से जुड़े कड़े उपायों को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा के सारे प्रोटोकॉल लागू करना जैसे हाथ धोना, श्वसन सम्बन्धी तहज़ीबें (खाँसते/ छींकते समय नाक या मुँह को ढँकना), मास्क व अन्य सुरक्षा उपकरणों का उपयोग, सफ़ाई से जुड़ी प्रक्रियाएँ और जहाँ भी ख़ाना तैयार किया जाए तो उससे जुड़े सुरक्षित तरीक़े अपनाना। सबसे ज़रूरी एहतियाती व्यवहारों में से एक है हाथ धोना। इसलिए स्कूल खुलने की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप यह ज़रूरी है कि वहाँ पर्याप्त मात्रा में साफ़ और सुरक्षित पानी, साबुन और हाथ धोने के स्थानों की सुलभता को सुनिश्चित किया जाए।
- ऐसे कर्मचारी, शिक्षक और विद्यार्थी जो उम्र या किसी ख़ास चिकित्सीय बीमारी के कारण जोखिम में हों, उनकी सुरक्षा के लिए नीतियों में संशोधन किया जाए। इस प्रक्रिया को और शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों के टीकाकरण को प्राथमिकता देने व उसे सुलभ बनाने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश तैयार किए जाने चाहिए।
- शारीरिक दूरी रखने के उपायों से जुड़े स्पष्ट और समझने में आसान नियम बनाएँ। इन उपायों में बड़े जमाव वाली गतिविधियों पर रोक लगाना, स्कूली दिन की क्रमबद्ध ढंग से शुरुआत व अन्त होना, भोजन के समय का क्रमबद्ध होना, कक्षाओं को कुछ समय के लिए कहीं बाहर या खुले स्थानों में चलाना, कक्षा में संख्या कम करने के लिए स्कूल को पारियों में चलाना आदि शामिल हैं।

  चूँकि छोटे बच्चे कम-से-कम ख़तरे में होते हैं, प्राथमिक विद्यालय सम्भवतः पहले खुलने चाहिए और इसके बाद कक्षा 12-9। हाथ धोने और शारीरिक दूरी रखने का ध्यानपूर्वक पालन कराना ज़रूरी होगा, इसलिए प्रशासनिक कर्मचारियों और शिक्षकों का सतर्क रहना ज़रूरी है। इसके अलावा, सफ़ाई कर्मचारियों को जहाँ तक हो सके, कीटाणुशोधन पर प्रशिक्षित किया जाना और जहाँ तक सम्भव हों, उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- यदि कोई विद्यार्थी या कर्मचारी विद्यालय में उपस्थित होते हुए अस्वस्थ हो जाते हैं तो ऐसी स्थिति में पालन की जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में बिल्कुल स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाएँ। इन प्रक्रियाओं में, विद्यार्थी और कर्मचारी के स्वास्थ्य की निगरानी करना, स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ नियमित सम्पर्क करते रहना, आपातकालीन स्थिति में सम्पर्क किए जाने वालों की सूची को अपडेट करना और सभी बीमार विद्यार्थियों और कर्मचारियों का घर पर रहना अनिवार्य करना शामिल हैं।
- उन बच्चों और परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी और मनोसामाजिक मदद प्रदान करना है जो महामारी की निरन्तर बनी अनिश्चितताओं और इससे जुड़े दोषारोपण/ भेदभाव का मुक़ाबला कर रहे हैं।
- स्कूल में मिलने वाले भोजन जैसी आवश्यक सुविधाओं को नियमित और सुरक्षित रूप से पुनः शुरू करना। स्कूल के भोजन कार्यक्रम को सुरक्षित रूप से फिर से शुरू करने के लिए सारे सम्भव उपाय किए जाने चाहिए। इस कार्यक्रम में सुरक्षित रूप से ख़ाना खिलाने के लिए इन बातों की ज़रूरत है — पूरी प्रक्रिया (ख़ाना तैयार करने से लेकर परोसने तक) के दौरान स्वच्छता में सुधार लाना, मानक संचालन प्रक्रियाएँ तय करना, ख़ाना परोसते हुए शारीरिक दूरी रखने को सुनिश्चित करना, इस पूरी प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों की क्षमता-निर्माण और प्रशिक्षण में संलग्न होना।

यह अवसर कुछ उपेक्षित मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने में भी मदद कर सकता है जैसे कि भोजन में सूक्ष्म पोषक तत्वों वाली सामग्री [लौह युक्त सब्जियाँ, अण्डे और सुदृढ़ीकृत खाद्य पदार्थ (fortified food)] शामिल करना एवं उन समाधानों में निवेश करना जो न केवल स्कूली बच्चों की मौजूदा पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ी की भी मदद करेंगे।

स्कूलों के दोबारा खुलने के बाद की सामूहिक कार्रवाई

- सामुदायिक संक्रमण की सम्भावना फिर उठ खड़ी होने की स्थिति में स्कूलों को पुन: बन्द करने और खोलने के निर्णय को लेकर स्पष्ट कलन विधियाँ तैयार की जानी चाहिए।
- व्यवहार में बदलाव को लेकर लगातार हस्तक्षेप बनाए रखना ताकि मास्क के उचित उपयोग, सफाई एवं कीटाणुशोधन क्रियाकलापों की प्रबलता और बारम्बारता में वृद्धि एवं कूड़े के प्रबन्धन की पद्धतियों में सुधार जैसी बातों को प्रोत्साहन मिल सके।
- *कोविड-19* के बारे में स्पष्ट, संक्षिप्त और सटीक जानकारियों के लिए बच्चों के साथ उनके अनुकूल प्रारूप का उपयोग करते हुए बातचीत करना और इस बीमारी को लेकर उनके अन्दर के डर और चिन्ता को दूर करना।

बच्चों का टीकाकरण

बच्चों के *कोविड-19* के टीकाकरण और ख़ासतौर से इसे स्कूलों को फिर से खोलने की एक शर्त बनाने के बारे में बहुत तर्क-वितर्क हुआ है। यदि हम दुनिया के हालात देखें तो पाएँगें कि जून 2021 के अन्त तक लगभग 170 देशों में स्कूल किसी

न किसी स्तर पर चल रहे थे। हालाँकि, दुनिया के किसी भी हिस्से में 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का टीकाकरण शुरू नहीं किया गया है। वर्तमान में विश्व भर के सबूतों से पता चलता है कि स्कूलों के खोलने के लिए बच्चों के टीकाकरण जैसी कोई शर्त नहीं होनी चाहिए।

भारत में, अब तक की कुछ अप्रमाणित धारणाओं के आधार पर बच्चों के टीकाकरण पर ज़ोर दिया जा रहा है। ऐसी ही एक धारणा है कि चूँकि वयस्कों को तो टीका लगाया जा रहा है इसलिए केवल टीकारहित बच्चों पर इस बीमारी के गम्भीर रूप से ग्रसित होने का जोखिम रह जाता है। भारत के राज्यों से प्राप्त आँकड़े, जिनमें नवीनतम राष्ट्रीय सीरो-सर्वेक्षण के आँकड़े भी शामिल हैं, यह दिखाते हैं कि बच्चों में *कोविड-19* का संक्रमण वयस्कों जितना ही या उससे भी अधिक रफ़्तार से हुआ है। लेकिन अधिकांशतः बच्चों में कोई लक्षण दिखाई नहीं दिए और बड़ों की तुलना में उनमें बीमारी के गम्भीर स्थिति में पहुँचने की दर भी बहुत कम रही। बच्चों में बीमारी के गम्भीर होने का ख़तरा सबसे कम है और उनमें से 60 से 80 प्रतिशत (भारत में) ने पहले ही अपने शरीर में एंटीबॉडी विकसित कर ली हैं।

वयस्कों के टीकाकरण का उद्देश्य गम्भीर मामलों के अस्पतालों में पहुँचने की स्थिति को और मौतों को कम करना है। इससे अलग बच्चों के टीकाकरण का उद्देश्य बीमारी के संचरण को कम करना है। माता-पिता और परिवारों की आम चिन्ताओं को दूर करने, अफ़वाहों को दूर करने एवं बच्चों के *कोविड-19* टीकाकरण को लेकर वैज्ञानिक जानकारी सामने रखने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। और ज़्यादा प्रमाणों के सामने आने पर यह हो सकता है कि छह महीने से लेकर 17 साल की आयु वर्ग में आने वाले ऐसे बच्चों के लिए, जिनकी ज़्यादा ख़तरे में आने की आशंका हो, उनकी उपलब्धता के हिसाब से, संचरण को कम करने के लिए प्रमाणित हो चुके किसी टीके या फिर एक ख़ुराक वाले किसी टीके की अनुशंसा की जाएगी। हालाँकि सभी बच्चों के लिए ऐसी अनुशंसा नहीं की जाएगी।

बच्चों के स्वस्थ भविष्य की ओर

कोविड-19 वायरस के संचरण को रोकने और धीमा करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि इस वायरस, इसके कारण होने वाली बीमारी और इसके संक्रमण के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी प्राप्त करना। इन वायरसों की प्रकृति और विस्तार को खोलकर रखना आसान काम नहीं था। लेकिन, अब हम जानते हैं कि अन्य वायरसों की तरह यह वायरस भी मुख्य रूप से किसी संक्रमित व्यक्ति के खाँसते या छींकते वक़्त बाहर निकली लार की बूँदों या नाक से होने वाले बहाव के माध्यम से फैलता है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थी, शिक्षक और कर्मचारी उचित एहतियाती व्यवहारों का पालन करें जैसे ठीक ढंग से मास्क पहनना, हाथ धोने का अभ्यास करना और स्कूल परिसर के अन्दर और बाहर दोनों जगह शारीरिक दूरी बनाए रखना।

काफ़ी प्रमाणों से पता चलता है कि स्कूलों के खुलने से हमारे बच्चों के लिए अलग से कोई जोखिम खड़ा नहीं होता है। अपने बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा की हमारी कोशिश में यह न हो कि हम उन्हें गुणवत्तापूर्ण ज्ञानार्जन से वंचित कर दें, क्योंकि ऐसा सीखना उनके स्कूल में उपस्थित होने पर ही सम्भव हो सकता है। इसलिए, वायरस के साथ रहना सीखते हुए, हमें समझ, विश्वास और सभी हितधारकों की भागीदारी के तीन सिद्धान्तों के आधार पर एवं उपयुक्त एहतियाती उपायों के साथ स्कूलों को फिर से खोलने का काम प्राथमिकता के साथ करना चाहिए। इन हितधारकों में माता-पिता, शिक्षक, स्कूल के कर्ता-धर्ता, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता और अन्य सम्बन्धित निर्णयकर्ता शामिल हैं। यह आवश्यक है कि स्कूल ऐसे सुरक्षित स्थान हों जहाँ बच्चे एक स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ने की ख़ातिर अपना बेहतरीन विकास करने के लिए लौट सकें।

References

IASC. *Guidance on COVID-19 Prevention and Control in Schools*; https://www.unicef.org/reports/key-messages-and-actions-coronavirus-disease-covid-19-prevention-and-control-schools. Accessed on 2.8.21

Jones, Kate E et al., February 2008. *Global trends in emerging infectious diseases.* Nature. 451 (7181): 990–993. Accessed on 1.8.21

Lahariya C. August 2021. *To reopen schools, we don't have to wait for kids to get vaccinated*. Voices, India, TOI https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices. Accessed on 2.8.21

McMichael AJ. 2004. *Environmental and social influences on emerging infectious diseases: past, present and future.* Philosophical Transactions of the Royal Society B. 359 (1447): 1049–1058. Accessed on 2.8.21

United Nations. April 2020. *Policy Brief: The Impact of COVID-19 on children*. UNSDG. https://unsdg.un.org › resources › policy-brief-impact. Accessed on 1.8.21

UNESCO. *Adverse consequences of school closures*. https://en.unesco.org/covid19/educationresponse/consequences

UNESCO, UNICEF, WB, WFP. April 2020. *Framework for re-opening schools*. https://www.sdg4education2030.org/framework-reopening-schools-unesco-unicef-wb-wfp-april-2020. Accessed on 2.8.21

UNICEF. Jan 2021. *COVID-19: Missing More Than a Classroom. The impact of school closures on children's nutrition.* Office of Research - Innocenti Working Paper WP-2021-01. Accessed on 4.8.21

World Bank. 7 May 2020. *The COVID-10 Pandemic: Shocks to Education and Policy Responses.* https://www.worldbank.org/en/topic/education/publication/the-covid19-pandemic-shocks-to-education-and-policy-responses. Accessed on 2.8.21

World Health Organization. *Reducing transmission of pandemic (H1N1) 2009 in school settings.* https://www.who.int/csr/resources/publications/reducing_transmission_h1n1_2009.pdf, Accessed on 2.8.21

डॉ मधुमिता दोबे, एमबीबीएस, डीसीएच, एमडी, एमसीएच, वर्तमान में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के कोलकाता स्थित अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (एआईआई एंड पीएच) के स्वास्थ्य सम्वर्धन और शिक्षा विभाग में बतौर निदेशक-प्राध्यापक (सार्वजनिक स्वास्थ्य) कार्यरत हैं। वे वर्तमान में, एआईआईएच एंड पीएच, भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद (आईसीएमआर) और विभिन्न अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा चलाए जाने वाले स्नातकोत्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए शिक्षण व अनुसन्धान गतिविधियों में शामिल हैं। वे कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठनों की बोर्ड सदस्य हैं। चिकित्सा पत्रिकाओं व पुस्तकों में उनके 100 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। उनसे madhumitadobe@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** प्रज्ञा चौधरी

बुनियादी संख्या ज्ञान | चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

अर्धेन्दु शेखर दास

बुनियादी संख्या ज्ञान (Foundational Numeracy) गणित का एक महत्त्वपूर्ण कौशल है और स्कूली शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत इसका शिक्षण हमेशा से ही चुनौतीपूर्ण रहा है। बुनियादी संख्या ज्ञान का आशय संख्याओं की कम-से-कम दो इकाइयों तक की समझ, दो अंकों की संख्याओं से चार बुनियादी संक्रियाओं और इन अवधारणाओं को अलग-अलग परिस्थितियों में लागू कर पाने से है। इसके बिना किसी भी बच्चे को न सिर्फ़ स्कूल में बल्कि अन्ततः जीवन में भी आगे बढ़ने में मुश्किल होगी। इस कौशल का न होना गणित के डर और पढ़ाई छोड़ देने के प्रमुख कारणों में से एक है। विभिन्न राष्ट्र-स्तरीय अध्ययन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस ओर इशारा करते हैं कि प्राथमिक स्कूलों के विद्यार्थियों से शुरू कर, विद्यार्थियों के एक बड़े हिस्से ने बुनियादी संख्या ज्ञान हासिल नहीं किया है। शिक्षा की यह खाई *कोविड-19* के कारण और भी चौड़ी हो गई है क्योंकि पिछले 16 महीनों से स्कूल बन्द रहे। कुछ स्कूल, ऑनलाइन साधनों और सामुदायिक कक्षाओं के ज़रिए, विद्यार्थियों के साथ किसी हद तक काम कर पाए, लेकिन सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थियों का एक बड़ा हिस्सा स्कूलों के बन्द होने के दौरान किसी भी सार्थक तरीक़े से नहीं जुड़ पाया। तो मुद्दा यह है : बुनियादी संख्या ज्ञान के कौशलों और कक्षा-स्तरीय क्षमताओं को कैसे हासिल किया जाए। यह लेख कक्षाओं में हो रही सीखने की क्षति और बुनियादी संख्या ज्ञान पर काम करने की योजनाओं व विद्यार्थियों के सीखने पर हो रहे उनके असर के बीच सम्बन्ध जोड़ता है। हमारा अनुभव सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के शिक्षकों को कक्षा-स्तरीय शिक्षण के लिए बुनियादी संख्या ज्ञान के कौशल और अवधारणाएँ हासिल करने से जुड़े उनके काम की योजना बनाने में मदद कर सकता है।

पीछे मुड़कर देखते हुए

पिछले साल, हमारे स्कूल के शिक्षकों ने सामुदायिक कक्षाओं में तीसरी से आठवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान पर काम किया। विद्यार्थियों की शिक्षा में यह प्रयास इतनी बख़ूबी झलका कि इस साल भी हम इसी योजना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। पिछले लगभग दो सालों से अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा ठीक तरीक़े से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाने के कारण जो प्रमुख मसले देखे गए हैं वे हैं — सीखने में क्षति और बर्ताव में बदलाव।

इस परिस्थिति को एक उदाहरण के साथ समझते हैं। मान लीजिए एक छात्रा अभी पाँचवीं कक्षा में है यानी लॉकडाउन से पहले वह तीसरी कक्षा में थी। इसका मतलब हुआ कि विद्यार्थी तीसरी से पाँचवीं कक्षा में, बिना चौथी कक्षा की क्षमताओं से वास्ता रखे, कक्षा उन्नत कर दिए गए हैं। साथ ही, तीसरी कक्षा की शिक्षा की क्षति की सम्भावना भी काफ़ी ज़्यादा है। तो कुछ विद्यार्थी, जो अब पाँचवीं कक्षा में हैं, संख्याएँ नहीं लिख सकते, कुछ पुनर्समूहीकरण या रीग्रुपिंग (जोड़ और घटाव में दस-दस के समूह बनाना) के साथ संख्याएँ नहीं घटा सकते और कुछ ठीक से विभाजन नहीं कर सकते।

अब इसका एक अन्य पहलू है बर्ताव। विद्यार्थी कक्षा में पाठ के दौरान पूरे समय बैठने में या ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थ हैं। इसलिए यह चुनौती दोहरी थी : विद्यार्थियों को कक्षा की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए तैयार करना, जिससे कि वे बुनियादी संख्या ज्ञान और उच्चतर अवधारणाएँ हासिल कर पाएँ; और उनका ध्यान लगाए रखना। इसके लिए स्कूल में बहुत धैर्य, योजना बनाकर चलने और टीमवर्क की ज़रूरत पड़ती है।

कार्यप्रणाली

नीचे दिए गए उदाहरण कक्षा तीसरी से पाँचवीं के विद्यार्थियों के साथ किए गए काम पर केन्द्रित हैं। हमारे हस्तक्षेप के कारगर होने के लिए कुछ प्रमुख आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं :

विद्यार्थियों को तैयार करना

चूँकि 18 महीनों से विद्यार्थी स्कूल से नहीं जुड़ पाए हैं और सम्भवतः एक बन्द वातावरण में सीमित रहे हैं, तो उनमें से कुछ की स्कूल आने की, कक्षा में ध्यान लगाने की या अपने दोस्तों और शिक्षकों से मेलजोल करने की आदतें छूट गई हैं। हमें एक ऐसा वातावरण निर्मित करना होगा जो विद्यार्थियों को आकर्षित करे। इसके लिए हमें ड्रॉइंग, पेंटिंग, खेल, क़िस्सागोई आदि गतिविधियों पर अधिक ध्यान देना होगा। इससे उन्हें कक्षा के वातावरण से जुड़ने में मदद मिलेगी।

विद्यार्थियों की ज़रूरतों को पहचानना

हमने कक्षा तीसरी से पाँचवीं के विद्यार्थियों के लिए संख्या बोध, चार बुनियादी संक्रियाओं और उनके अनुप्रयोगों पर एक आधारभूत मूल्यांकन परीक्षण (बेसलाइन असेसमेंट टेस्ट) तैयार किया, ताकि उनकी समझ और ज़रूरतों के स्तर का आकलन किया जा सके। साथ ही, उनके गिनने और लिखने के कौशलों के आकलन के लिए एक-एक बच्चे से संवाद किए। इस परीक्षण में जटिलता पर आधारित अवधारणाओं से जुड़े प्रश्न शामिल थे। उदाहरण के लिए, पुनर्समूहीकरण के साथ पूर्ण संख्याओं को घटाने के लिए, हमारे पास कुछ ऐसे सवाल थे : 152-29 और 1002-127. 152-29 वाले मामले में, संख्या '152' को 1 सैकड़े, 4 दहाइयों और 12 इकाइयों के समूहों में बाँटा जाता है। पर अब 1002-127 के मामले में होने वाले पुनर्समूहीकरण पर ग़ौर कीजिए। पहले संख्या '1002' को 10 सैकड़ों व 2 इकाइयों के, फिर 9 सैकड़ों के समूहों में बाँटा जाएगा। फिर 10 दहाइयों और 2 इकाइयों के, फिर 9 सैकड़ों के, 9 दहाइयों के और 12 इकाइयों के समूहों

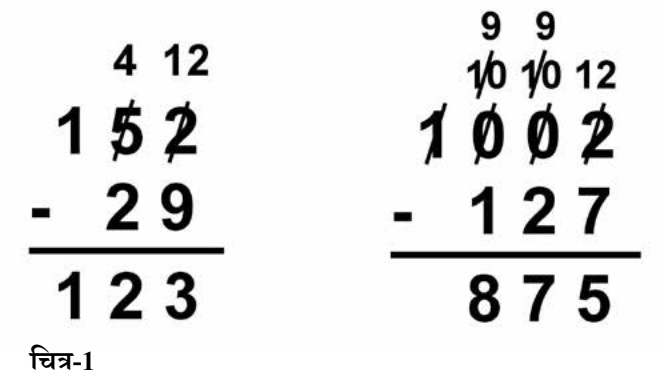

चित्र-1

में। हालाँकि, विद्यार्थियों को वे सवाल मुश्किल लगे जिनमें अलग-अलग तरीक़ों से पुनर्समूहीकरण करने की आवश्यकता होती है। (**चित्र-1**)

तीसरी से पाँचवीं कक्षा के बच्चों का समूहीकरण उनकी ज़रूरतों के आधार पर किया गया था। इसके साथ ही, संख्या बोध व चार संक्रियाओं की उनकी समझ और उनकी कक्षा-स्तरीय तैयारी के आधार पर उनके लिए उपयुक्त लर्निंग स्टेशन (सीखने के ठिकाने) तय किए गए थे (**चित्र-**2)। प्रत्येक लर्निंग स्टेशन पर एक शिक्षक को नियुक्त किया गया था। हमने हर लर्निंग स्टेशन में, कक्षा पहली से पाँचवीं तक की अवधारणाओं पर चर्चा की। उदाहरण के लिए, संख्या बोध वाले लर्निंग स्टेशन में, हमने एक अंक की संख्याओं से चर्चा शुरू की, फिर स्थानीय मान को प्रस्तुत करते हुए दो अंकों वाली संख्याओं से उनका परिचय कराया। यह तब तक जारी रहा जब तक हम छह अंकों वाली संख्याओं तक नहीं पहुँच गए। इस प्रक्रिया

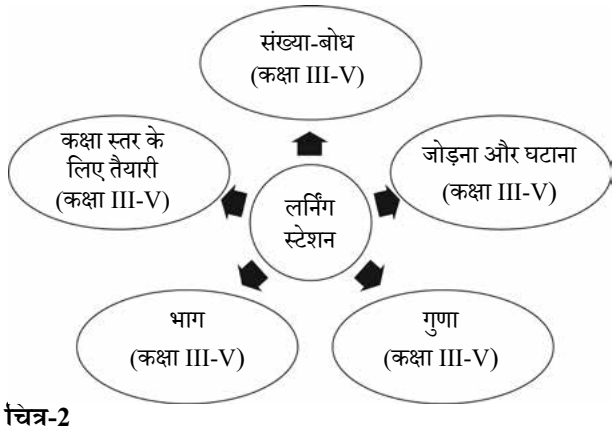

चित्र-2

में पहचान करना, लिखना, तुलना करना आदि शामिल थे। इसमें अवधारणाओं की समझ और अभ्यास, दोनों पर ही ज़ोर दिया गया।

हमने पाया कि 90 में से 27 विद्यार्थियों को बुनियादी संख्या ज्ञान में परेशानी थी, लेकिन समस्याओं की श्रेणियाँ अलग-अलग थीं। उदाहरण के लिए, कुछ विद्यार्थी 79 जैसी संख्याएँ नहीं लिख पा रहे थे, 32-19 को पुनर्समूहीकरण के साथ नहीं घटा पा रहे थे, पहाड़ों के अभ्यास की कमी के कारण गुणन और विभाजन में ग़लतियाँ कर रहे थे। कक्षा के अन्य बच्चे अलग-अलग स्तर पर थे।

टाइमटेबल बनाना

चूँकि बुनियादी संख्या ज्ञान के बिना उच्चतर अवधारणाओं को नहीं सीखा जा सकता, हमने सभी विद्यार्थियों के लिए बुनियादी संख्या ज्ञान और उससे सम्बन्धित उच्चतर अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करने का फ़ैसला किया था, ताकि उन्हें कक्षा के स्तर तक लाया जा सके। हमारा ध्यान तीन विषयों पर केन्द्रित था — गणित, हिन्दी और अँग्रेज़ी। हर हफ़्ते क़रीब 9 घण्टे गणित की अतिरिक्त कक्षाओं के लिए तय किए गए ताकि विद्यार्थियों को पर्याप्त समय और निरन्तर साथ मिल सके।

वर्तमान परिदृश्य में सभी सरकारी स्कूलों को स्कूल खुलने के पहले महीने के टाइमटेबल में प्रतिदिन कम-से-कम 1.5 घण्टा गणित को देना होगा। पहली और दूसरी कक्षा के शिक्षकों को छोड़कर सभी शिक्षकों को साथ मिलकर बुनियादी संख्या ज्ञान पर काम करना होगा। उदाहरण के लिए, कोई स्कूल कक्षा तीसरी से पाँचवीं की गणित के लिए एक घण्टा (10:30 पूर्वाह्न – 11:30 पूर्वाह्न) तय कर सकता है। बच्चों को स्कूल में शिक्षकों की संख्या के आधार पर तीन से चार दलों में बाँटा जाएगा।

टीमवर्क और केन्द्रित कार्य

एक आम स्कूल में अमूमन एक ही शिक्षक सभी विषय पढ़ाते हैं। पर अब, जब स्कूल फिर से खुलेंगे, तो सोचिए विद्यार्थियों

के सीखने की क्षति कितने विस्तृत दायरे में होगी। समय का प्रभावी इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए विद्यार्थियों को समूहों में बाँटा जाएगा। उदाहरण के लिए, पाँचवीं कक्षा में संख्या बोध और चार बुनियादी संक्रियाओं की अवधारणाओं की समझ के अलग-अलग स्तरों के आधार पर विद्यार्थियों के चार से पाँच समूह हो सकते हैं। ऐसा ही तीसरी और चौथी कक्षाओं

चित्र-3

क्योंकि हमें काफ़ी कम समय में काफ़ी ज़्यादा हासिल करना है। हमें निर्धारित करना है कि *क्या* पढ़ाया जाए और *कैसे* पढ़ाया जाए। मान लीजिए, एक बच्ची 32-14 को हल करने में ग़लतियाँ करती है **(चित्र-3)** तो उसे पुनर्समूहीकरण की अवधारणाएँ कैसे समझाई जाएँ? इस मामले में, हम देख सकते हैं कि बच्ची ने पुनर्समूहीकरण में एक ग़लती की है। वह इकाई के स्थान पर 2 का ध्यान नहीं रख पाई। तो उसे पुनर्समूहीकरण समझने में मदद करने के लिए हमें डीन्स ब्लॉकों **(चित्र-4)** या नकली मुद्रा की ज़रूरत होगी।

यहाँ डीन्स ब्लॉकों का इस्तेमाल करते हुए, संख्या '32' का 2 दहाइयों और 12 इकाइयों में पुनर्समूहन किया गया है। अब बच्ची इसमें से 1 दहाई और 4 इकाइयों को घटा सकती है जिससे उसे उत्तर के रूप में 1 दहाई और 8 इकाइयाँ यानी 18 मिल जाएगा।

चित्र-4

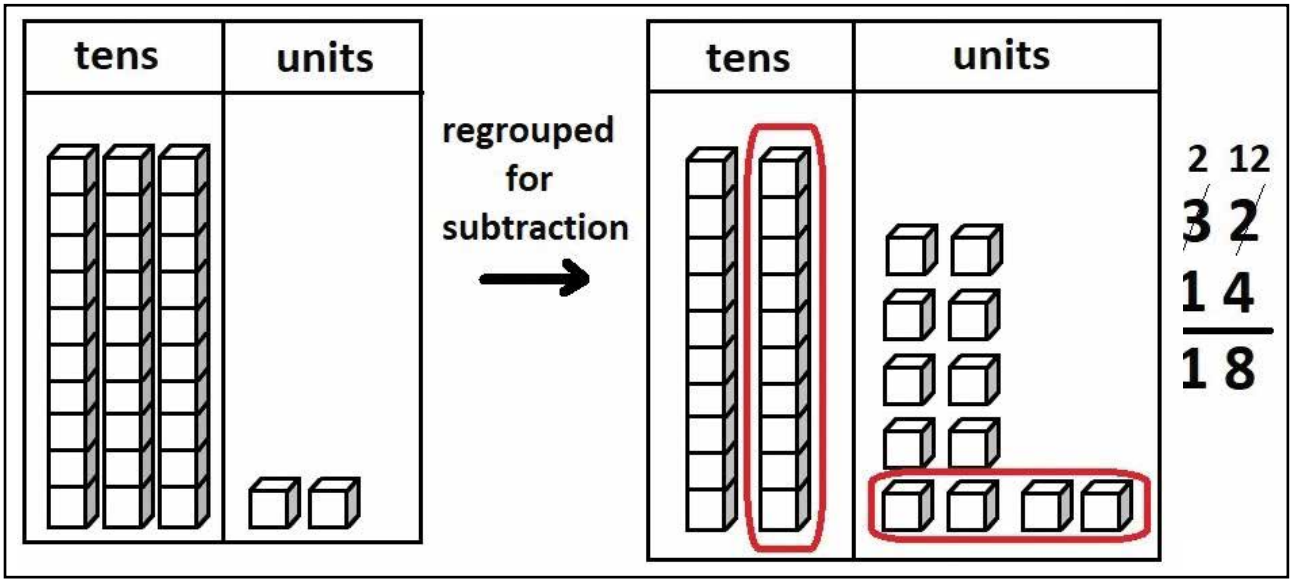

के साथ भी हो सकता है। इसका मतलब हुआ कि हर कक्षा-शिक्षक को इन पाँचों समूहों के साथ काम करना होगा, जो कि शिक्षण और समय प्रबन्धन के नज़रिए से बहुत मुश्किल है। यदि बच्चे समूहों में हैं तो हर शिक्षक एक अवधारणा पर अलग-अलग स्तरों पर ध्यान केन्द्रित करेगा। सुकेन्द्रित शिक्षण और अच्छा समय प्रबन्धन तभी मुमकिन है जब स्कूल के सभी शिक्षक मिलकर काम करें। एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि समूहों की संख्या उस स्कूल के शिक्षकों की संख्या पर आधारित होगी।

तैयारी और संसाधन

प्राथमिक कक्षाओं में, सभी शिक्षक सभी विषय पढ़ाया करते हैं, इसलिए उनके लिए गणित से जूझना कठिन नहीं होता। पर जब स्कूल फिर से खुलेंगे, तब नियोजन महत्त्वपूर्ण रहेगा

यह समझाने के बाद, हमें इसी प्रकार के सवालों के एक सेट के साथ तैयार रहना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की समझ का आकलन किया जा सके और एक जैसे अन्य सवालों को हल करने के लिए उनका आत्मविश्वास बढ़ाया जा सके। इसके बाद और भी अधिक जटिल सवाल हल करने और चर्चा करने के लिए पेश किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, जब कोई बच्चा 32-14 के प्रकार वाले सवाल हल करने को लेकर आश्वस्त हो तो हम अधिक जटिल अवधारणाओं की ओर बढ़ सकते हैं, जैसे : 302-25 = ?, 1002-127 = ? आदि। तो हमारे पास किसी अवधारणा की जटिलताओं के अलग-अलग स्तरों का एक संग्रह होना चाहिए। उस अवधारणा से जुड़ी तैयारी और चर्चा की ज़रुरत होगी। इसमें उससे जुड़ी जोड़-तोड़ वाली वस्तुओं (manipulatives), वर्कशीटों और

अलग-अलग प्रकार के सवालों के संग्रह को भी शामिल किया जा सकता है।

प्रगति को दर्ज करना

एक ही लर्निंग स्टेशन के विद्यार्थी भी अलग-अलग स्तरों पर हो सकते हैं। कुछ विद्यार्थी दूसरों से पहले नियत कार्य पूरा कर लेंगे, इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी की प्रगति को दर्ज करने की ज़रूरत है ताकि उन्हें उचित सहयोग प्रदान किया जा सके।

हमने विद्यार्थियों के सीखने की स्थिति को दर्ज करने के लिए दो प्रकार के प्रारूप तैयार किए हैं। एक है व्यक्तिगत अधिगम प्रगति (Individual Learning Progress या आईएलपी, **चित्र-5**), जो कि व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों के पूरे कर लिए गए व जारी कार्य को दर्शाता है। आईएलपी रिकॉर्ड में किसी विशिष्ट अवधारणा या लर्निंग स्टेशन पर काम कर रहे शिक्षक प्रत्येक बच्चे की प्रगति का लिखित रिकॉर्ड रखते हैं, ताकि बच्चे द्वारा उस विशिष्ट अवधारणा को समझ लेने की स्थिति को दर्शाया जा सके। उसके बाद, विद्यार्थी की ज़रूरत के आधार पर यह रिकॉर्ड अगले लर्निंग स्टेशन के शिक्षक के पास जाएगा।

दूसरा प्रारूप है संघटित अधिगम प्रगति (Consolidated Learning Progress या सीएलपी, **चित्र-**6), जिसमें सभी विद्यार्थियों के नाम हैं और प्रत्येक विद्यार्थी के समक्ष उनके अधिगम सूचक हैं। इस पर साप्ताहिक तौर पर काम किया जाता है, जब शिक्षक मिलते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की प्रगति पर चर्चा करते हैं और प्रारूप को अपडेट करते हैं। इससे पूरी कक्षा की प्रगति की एक स्पष्ट तस्वीर सामने रखने में मदद मिलती है।

अन्त में

अपने स्कूल में हमने जनवरी 2021 में विद्यार्थियों के साथ काम करना शुरू किया था। स्कूलों के फिर से बन्द होने तक हमने ऊपर बताए गए तरीक़े का इस्तेमाल तीसरी से पाँचवीं कक्षा में तीन हफ़्तों तक हर दिन डेढ़ घण्टे के लिए किया। हमने पाया कि 27 में से क़रीब 11 बच्चों ने बुनियादी संख्या ज्ञान हासिल कर लिया था और उन्होंने संख्या बोध व चार बुनियादी संक्रियाओं से जुड़ीं कक्षा-स्तरीय क्षमताएँ हासिल कर ली थीं। उदाहरण के तौर पर, बुनियादी संख्या ज्ञान के साथ कुछ बच्चों ने पाँच अंकों तक संख्या बोध की समझ विकसित कर ली थी। साथ ही, वे किसी भी जटिल स्तर पर पाँच अंकों की संख्याओं को घटा पा रहे थे और पाँच अंकों की संख्याओं का दो अंकों की संख्याओं से विभाजन कर पा रहे थे (जिसमें पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी के लिए दशमलव वाले भागफल के सवाल भी थे)। शेष 63 विद्यार्थी संख्या बोध और चार बुनियादी संक्रियाओं से जुड़ी कक्षा-स्तरीय क्षमताओं में सहज पाए गए (जैसा कि ऊपर समझाया गया है)। इस साल हम इस उम्मीद के साथ इस योजना को जारी रख रहे हैं कि सभी विद्यार्थी बुनियादी संख्या ज्ञान हासिल कर पाएँगे और हम तैयारी कर रहे हैं कि पूरी कक्षा पाठ्यचर्या के आधार पर कक्षा-स्तरीय क्षमताओं को हासिल कर पाएगी।

व्यक्तिगत अधिगम प्रगति	
विद्यार्थी का नाम	**कक्षा**
संख्या बोध	पहाड़े
जोड़	गुणन
घटाव	विभाजन

चित्र-5

संख्या बोध (कक्षा 1-5) उभरता हुआ (Emerging) विकासशील (Developing) कुशल (Proficient)																						
			पूर्व-संख्या (Pre-Number)				संख्या बोध (Number Sense)															
क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	कक्षा	20 के अनुक्रम में संख्या का नाम	50 के अनुक्रम में संख्या का नाम	100 के अनुक्रम में संख्या का नाम	वस्तुओं को गिनें	एक अंक वाली संख्याओं का मान समझें	एक अंक वाली संख्याओं की पहचान करना	एक अंक वाली संख्याओं को लिखना	एक अंक वाली संख्याओं की तुलना करना	स्थानिक मान (2 अंक)	दो अंकों वाली संख्याओं की पहचान करना	दो अंकों वाली संख्याओं को लिखना	दो अंकों वाली संख्याओं की तुलना करना	स्थानिक मान (3 अंक)	तीन अंकों वाली संख्याओं की पहचान करना	तीन अंकों वाली संख्याओं को लिखना	तीन अंकों वाली संख्याओं की तुलना करना	स्थानिक मान (4 अंक)	चार अंकों वाली संख्याओं की पहचान करना	चार अंकों वाली संख्याओं को लिखना	चार अंकों वाली संख्याओं की तुलना करना
1.	मीनाक्षी	3																				
2.	ओजस्वी	3																				
3.	चंचल	3																				

चित्र-6

अर्धेन्दु शेखर दास ने गणित में एमएससी किया है और वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में काम कर रहे हैं। वे गणित-सम्बन्धित अवधारणाओं पर शिक्षकों के साथ गहराई से काम करते हैं और साथ ही अवधारणात्मक समझ व गणित के शिक्षण में इस्तेमाल की जाने वाली शैक्षणिक योजनाओं पर वर्कशॉप भी संचालित करते हैं। क़रीब एक दशक से वे गणित को लेकर बच्चों के साथ काम कर रहे हैं और तकनीकी संसाधनों की खोजबीन करने व उनकी रचना करने में गहरी रुचि रखते हैं। वे मुक्त, दूरस्थ शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या तैयार करने और पाठ्यपुस्तकें लिखने की प्रक्रिया से भी जुड़े हुए हैं। उनसे arddhendu@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : अतुल वाधवानी

लॉकडाउन से अनलॉक तक | असरदार वर्कशीट

लोविस साइमन

"दीदी, केन्द्र कब खुलेगा?" बैरसिया ब्लॉक, भोपाल के गुनगा गाँव के तीन-चार बच्चों ने मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (एम-एलएसी)* के एक संचालक (समुदाय से चुने गए सहयोगकर्ता) से पूछा। यह एकलव्य के *शिक्षा की उड़ान* प्रोजेक्ट का हिस्सा था जिसमें हमने संचालकों के ज़रिए घर-घर जाकर बच्चों को वर्कशीट पहुँचाईं। हमने इससे पहले यह कभी नहीं किया था। यह जून की बात है, लॉकडाउन हुए दो महीने हो चुके थे पर राज्य शिक्षा केन्द्र की तरफ़ से कोई सर्कुलर नहीं भेजा गया था और इस कारण हमारी टीम के सभी सदस्य चिन्तित थे। हम बच्चों को अपने एम-एलएसी में इकट्ठा नहीं करना चाह रहे थे, इसलिए हमने इन संचालकों के ज़रिए उनके साथ काम करना शुरू किया। ये संचालक घर-घर जाकर हर बच्चे से बातचीत करते। हमने इन वर्कशीटों को सीखने के तीन स्तरों के लिए तैयार किया था — अंकुर (शुरुआती), तरुण (मध्यम स्तरीय) और उमंग (उच्च स्तरीय)।

कोविड–19 महामारी का दौर वाक़ई ऐसा समय था जब हमारी ज़िन्दगी की चहल-पहल थम गई और हम अपने सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं में बदलाव करने को मजबूर हो गए। स्कूल का एक और अकादमिक साल ख़त्म होने के साथ हम सभी को यह समझ आया कि व्यावहारिक गतिविधियों के साथ रूबरू किए जाने वाले संवाद का कोई विकल्प नहीं है, ख़ासकर उन बच्चों के लिए जिनके पास तकनीकी पहुँच नहीं है। सामान्य रूप से और ख़ासकर शिक्षा के क्षेत्र में, दूसरे व्यक्तियों के साथ रूबरू होने वाले मेलजोल व संवाद के अभाव में बच्चों को न सिर्फ़ पढ़ाई-लिखाई बल्कि सामाजिक और भावनात्मक तौर पर भी नुक़सान हुआ है। बच्चों को अपने 'सामाजिक संवाद के केन्द्र' (उनके स्कूल) से वंचित कर दिया गया है, जहाँ वे दोस्त बनाते थे, आपस में लड़ते-झगड़ते और बहस करते थे, साथ मिलकर खेलते थे और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ करते थे। और शिक्षकों को, जिन्हें स्कूल में हर बच्चे की ख़ूबियाँ और कमज़ोरियाँ जानने का मौक़ा मिल सकता था, उन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिए अलग कार्य पद्धतियाँ सोचनी पड़ीं।

एक तरीक़ा जो आज़माया गया वह वर्कशीट का था। यह मॉडल शिक्षकों के लिए बच्चों के सीखने के स्तरों को समझने का एक तरीक़ा बन गया है।

अब हम इस प्रयास को इसलिए भी देख रहे हैं कि इससे हमें बच्चों के सीखने के फ़ासलों को समझने में और स्कूल फिर से खुलने की स्थिति के लिए उनकी तैयारी कराने में मदद मिले। भले ही *कोविड-19* ने हम सभी को बहुत गम्भीर तरीक़ों से प्रभावित किया है पर हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में फिर से सोचने का मौक़ा भी दिया है। लॉकडाउन के वक़्त ऐसे बहुत सारे माता-पिता को अपने बच्चों के साथ काफ़ी वक़्त बिताने को मिला जो इससे पहले अपने कामकाज में पूरी तरह व्यस्त रहते थे। शिक्षकों को भी बच्चों के साथ काम के दौरान इस्तेमाल की जा सकने वाली कार्य योजनाओं पर सोचने का कुछ समय मिला। यह प्रक्रिया शायद तब न हो पाती अगर वे निरन्तर पाठ्यपुस्तक के पाठों को पूरा करने की चिन्ता में डूबे रहते। यह मौक़ा था कि वे कुछ नया और अलग करने की कोशिश कर सकें।

चूँकि हम सभी जानते है कि *कोविड-19* अभी जल्दी तो कही नहीं जाने वाला तो इस 'वर्कशीट मॉडल' को स्कूलों और घरों में भी समन्वित किया जा सकता है। यह बहुत ज़रूरी है कि शिक्षकों से इस प्रयास के बारे में बात की जाए ताकि स्कूलों के फिर से खुलने के लिए हमारी तैयारियों में इसे भी जोड़ा जा सके। स्कूलों के पुनः खुलने पर यह ज़रूरी होगा कि हम लचीले तरीक़ों से काम करें।

एक अन्य दृष्टिकोण जिसको *कोविड-19* ने उभारा है, वह यह है कि बच्चे अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। उदाहरण के लिए, एक शहरी मध्यम वर्गीय घर के बच्चे को अपने परिवार और समुदाय से तकनीक तक पहुँच के साथ-साथ अन्तर्वैयक्तिक व अन्तःवैयक्तिक सम्बन्ध निर्माण, समस्या-समाधान, रचनात्मक सोच जैसे कौशलों से समबद्ध सहयोग मिलने की काफ़ी सम्भावना रहती है। वहीं दिहाड़ी पर काम करने वाले या किसान परिवार के बच्चे (जैसे कि बैरसिया ब्लॉक) में जीवन के कौशल तो होंगे पर हो सकता है उसके पास उस तरह का सामाजिक-सांस्कृतिक सहयोग न हो। एम-एलएसी में किया जा रहा वर्कशीटों का प्रयोग बच्चों को इनमें से कुछ कौशल सीखने में मदद करने के लिए एक पूरक भूमिका निभा सकता है।

अनलॉक की तैयारी

लॉकडाउन के दौरान वर्कशीटों के इस्तेमाल से हमें यह

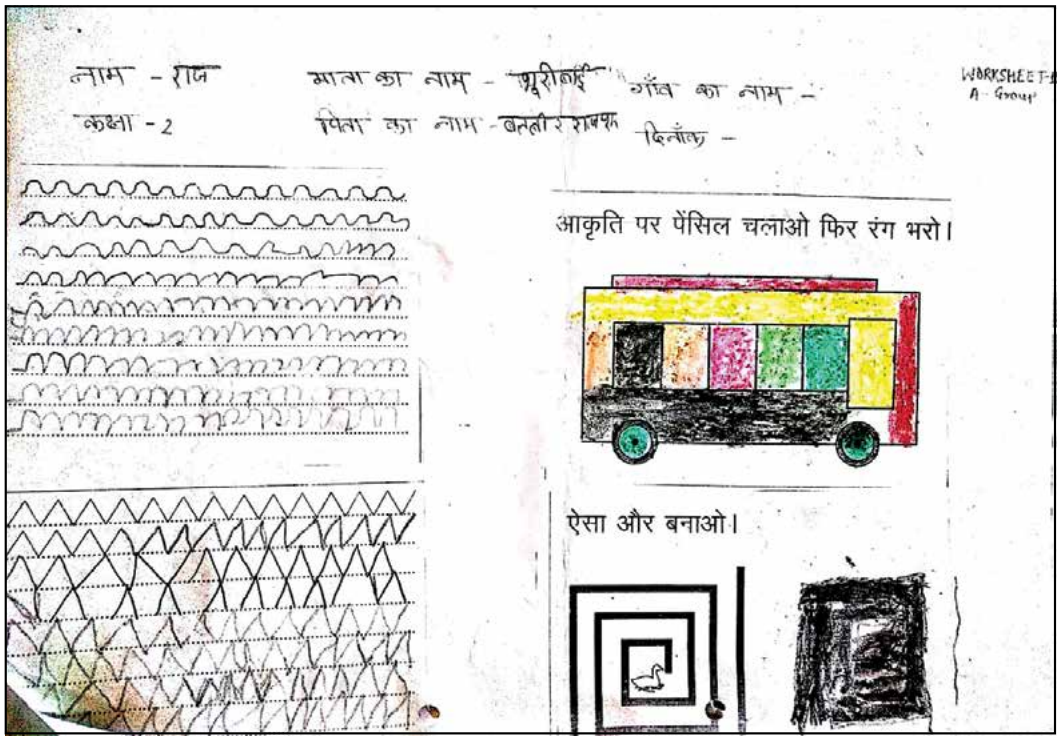

यह वर्कशीट अंकुर समूह के लिए बनाई गई थी जो पेशीय कौशलों के निर्माण पर केन्द्रित थी।

अहसास हुआ कि बच्चों के सीखने के लिए यह एक असरदार तरीक़ा है जो उनके सीखने की प्रक्रिया को सहारा देता है। वर्कशीट मॉडल के हस्तक्षेप ने माता-पिता को भी अपने बच्चों की पढ़ाई में शामिल होने का दबाव बनाया। जैसा कि पहले बताया गया है, बच्चों ने पढ़ाई का बेहद ज़रूरी वक़्त गँवाया है और शिक्षक यह नहीं जानते हैं कि बच्चों के सीखने के स्तरों में क्या बदलाव आए हैं। बच्चों को इस तरह की अलग-अलग स्तरों की वर्कशीटों से मदद मिल सकती है। वे छोटे समूहों में और एक-दूसरे की सहायता से इन पर काम कर सकते हैं। शिक्षक इन वर्कशीटों के ज़रिए बच्चों को उनकी पिछली कक्षाओं में सीखी गई बातों को धीरे-धीरे याद कराने में मदद कर सकते हैं।

मध्य प्रदेश में 1 सितम्बर को फिर से स्कूल खुलने पर शिक्षक बच्चों के साथ समूहों में काम कर पाए और वर्कशीटों की मदद से पिछली कक्षाओं की ऐसी बातों को याद कराने में उनकी मदद कर पाए जिन्हें वे भूल गए थे। ऐसा करते हुए बच्चों को अगले स्तर की चीज़ें सीखने में असहजता महसूस नहीं हुई। इसलिए वर्कशीट सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मूल्यांकन का एक साधन देने के साथ-साथ यह बच्चों को अभ्यास के अनेक मौक़े देती है और उन्हें नई चीज़ें सीखने में आसानी होती है। यहाँ पर ज़ोर इस बात पर है कि स्कूल लौटने पर बच्चे सीखने में सहजता महसूस करें।

कुछ अनुभव

शासकीय माध्यमिक स्कूल, हिरणखेड़ी (बैरसिया, भोपाल) में बच्चों से बातें करते हुए मैंने पूछा कि उन्हें डेढ़ साल बाद स्कूल आकर कैसा लगा और इस लम्बे दौर में उन्होंने क्या किया। कुछ बच्चों ने बताया कि वे तो घर पर ही थे, कुछ अपने दादा-दादी, नाना-नानी के घर गए तो कुछ रिश्तेदारों के घर। एक बच्चे ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ भोपाल स्थित वन विहार और भीमबेटका घूमने गया था। चूँकि इस कक्षा के सारे बच्चों से मैं पहली बार मिल रही थी तो अपनी बातचीत को हमने इस बात से आगे बढ़ाया कि अँग्रेज़ी में अपना परिचय कैसे देते हैं। मैंने उन्हें अपना-अपना नाम एक काग़ज़ के टुकड़े पर लिखने को कहा और उन्हें ख़ुद का उदाहरण दिया : My name is Lovis, I come from Bhopal. बच्चों ने इसी तरह अपना-अपना परिचय दिया : My name is ... I come from Hirankhedi village. इसके साथ ही, उन्होंने अपनी पसन्द की एक चीज़ भी बताई। मैंने इसके साथ एक और अभ्यास भी करवाया जिसमें बच्चों को पहला अक्षर और उसकी ध्वनि पहचाननी थी। हमने एक-दूसरे का नाम लेकर इस अभ्यास को आगे बढ़ाया। जैसे-जैसे बच्चों ने अपनी पसन्दीदा चीज़ें बताईं मैं उन शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिखती गई।

शासकीय माध्यमिक स्कूल, हर्राखेड़ा (बैरसिया, भोपाल) में मैंने बच्चों से बातचीत की शुरुआत यह पूछ कर की कि वे इतने महीनों तक क्या कर रहे थे। बच्चों ने बताया कि वे मोबाइल फ़ोन पर गेम खेलते थे, घर के कामकाज में मदद करवाते थे और अपने दोस्तों के साथ साइकिल चलाने जाते थे। फिर मैंने कक्षा को समूहों में बाँटकर उनके साथ चित्रों को पढ़ने की

गतिविधि की। मैंने हर समूह को एक चित्र कथा की क़िताब के साथ एक चार्ट पेपर दिया और उनसे एक चित्र चुनकर उसके बारे में ये बातें लिखने को कहा — चित्र में कौन-कौन हैं? उसमें जो भी हो रहा है वह क्यों और कहाँ हो रहा है? प्रत्येक समूह से दो सदस्यों को कक्षा के सामने इसे प्रस्तुत करना था।

ये दोनों ही सुनने, बोलने और लिखने वाली वर्कशीट गतिविधियाँ थी जिनमें बच्चों को बिना डरे और बिना यह सोचे बोलने का मौक़ा दिया गया कि कोई उनके बारे में क्या राय बनाएगा। इसी से जुड़ी हुई एक गतिविधि यह भी हो सकती है कि बच्चे उस जगह से जुड़े चित्र बनाएँ या एक पैराग्राफ़ लिखें जहाँ वे घूमने गए हों। दूसरा विकल्प हो सकता है कि वे अपनी कॉपियों में हमारी चर्चा के दौरान सामने आए ऐसे पाँच-दस शब्द लिखें जो उन्हें पसन्द आए हों। बच्चों की यह रचनाएँ कक्षा की दीवारों पर चिपकाई जा सकती हैं। स्कूल वापस खुलने पर शिक्षकों को ऐसी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों से बातचीत करनी होगी और सुनिश्चित करना होगा कि वे मस्ती और मज़े करते हुए सीख रहे हों। फिर धीरे-धीरे समय के साथ सीखने की चुनौती को बढ़ाना चाहिए। बाद में वर्कशीट की गतिविधियाँ पाठ्यपुस्तक से सीखने-सिखाने के दायरे तक भी जा सकती हैं।

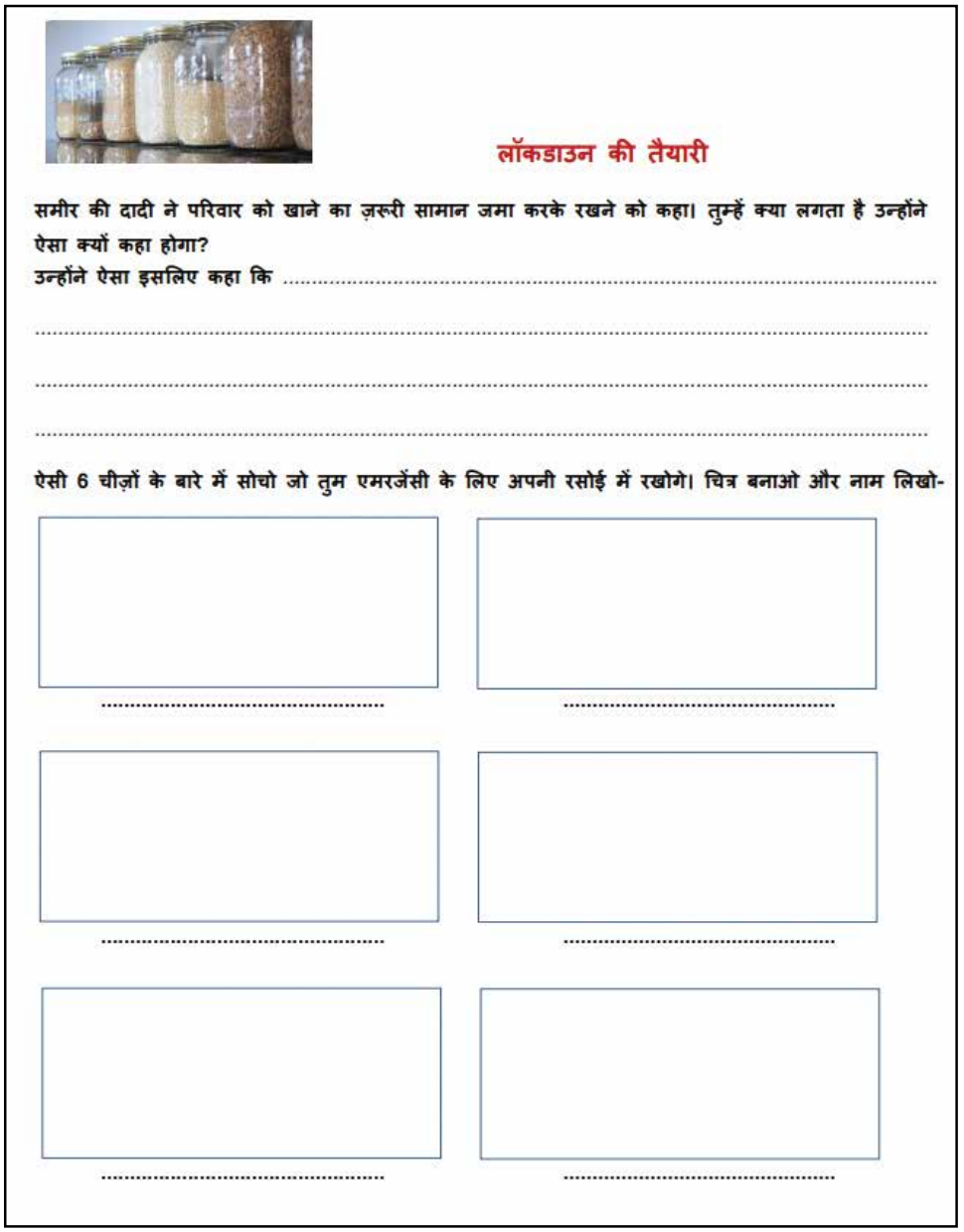

लॉकडाउन की तैयारी

समीर की दादी ने परिवार को खाने का ज़रूरी सामान जमा करके रखने को कहा। तुम्हें क्या लगता है उन्होंने ऐसा क्यों कहा होगा?

उन्होंने ऐसा इसलिए कहा कि ....

....

....

....

ऐसी 6 चीज़ों के बारे में सोचो जो तुम एमरजेंसी के लिए अपनी रसोई में रखोगे। चित्र बनाओ और नाम लिखो-

....	....
....	....
....	....

यह वर्कशीट पर्यावरण अध्ययन और हिन्दी को मिलाकर बनाई गई थी ताकि बच्चे महामारी की परिस्थितियों के बारे में सोचें। उन्हें ऐसी छह चीज़ों के चित्र बनाने के लिए कहा गया है जिनकी ज़रूरत उन्हें आपातकालीन समय में पड़ेगी। यह वर्कशीट तरुण समूह के लिए इस्तेमाल की गई थी।

नाम ..... कक्षा ..... दिनाँक .....

माता..... पिता ..... गाँव.....

प्रश्न 1) क्या आपको घड़ी देखना आता है? हाँ या नहीं।

_____

प्रश्न 2) आज हिना सुबह 6 बजकर 20 मिनट पर सो कर उठी। नीचे दी गई घड़ी में उसके उठने के समय को दर्शाइए।

प्रश्न 3) आप रोज सुबह कितने बजे उठते हो और रात को कितने बजे सोते हो? इस घड़ी में समय दर्शाओ और खाली जगह में लिखो।

सुबह उठने का समय.....

रात को सोने का समय.....

रोज़मर्रा के जीवन में एक ज़रूरी कौशल है समय की समझ। समय की अवधारणा पर केन्द्रित यह वर्कशीट उमंग समूह के लिए बनाई गई थी।

आभार

लेखिका, वर्कशीट प्रयास का हिस्सा रहे बैरसिया के सभी साथी संचालकों के कामों के लिए धन्यवाद देते हुए उनका आभार व्यक्त करना चाहती हैं। साथ ही, इस लेख को लिखने में मदद करने के लिए वे अरविन्द सरदाना, हृदय कान्त दीवान और टुलटुल बिस्वास की भी आभारी हैं।

Endnotes

i मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (एम-एलएसी) ऐसी किसी खुली और हवादार जगहों पर चलाए जाते हैं जहाँ उस मोहल्ले और आसपास के बच्चे संचालकों (स्थानीय युवा) से अँग्रेज़ी, हिन्दी और गणित सीखने आ सकते हैं। यहाँ पर सभी सुरक्षा नियमों का पालन किया जाता है। *कोविड-19* से पहले ये सेंटर स्कूल के प्रांगण में लगते थे और इन्हें *लर्निंग एक्टिविटी सेंटर* कहा जाता था।

लोविस साइमन एकलव्य फ़ाउण्डेशन के कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड एजुकेशन एवं टीचर एजुकेशन, आउटरीच, एडवोकेसी (CE&E एवं TEOA) कार्यक्रमों में बतौर रिसर्च एसोसिएट काम कर रहीं हैं। वे अँग्रेज़ी भाषा की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र पर काम करती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में एमए किया है। उनसे lovis.simon17_mae@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अपूर्वा राजे

स्कूलों को दोबारा खोलने में समुदाय को संलग्न करना

मोहम्मद अली रिज़वी

परिदृश्य

कोविड-19 महामारी को आए अब क़रीब दो वर्ष हो चुके हैं। हमारे देश ने देशव्यापी तालाबन्दी, दो भयावह लहरें, लाखों लोगों की मृत्यु, स्कूलों का बन्द होना, नौकरियों का जाना, व्यापार अस्त-व्यस्त होना देखा है और हम अभी भी अपने भविष्य के विषय में कुछ नहीं कह सकते; हम तीसरी लहर का इन्तज़ार कर रहे हैं जो विशेषज्ञों के अनुसार बिलकुल नज़दीक है।

अब दूसरी लहर के सन्नाटे के बाद जीवन पूरी गति पकड़ चुका है। दुकानों, बाज़ारों ने अपना व्यापार पुनः शुरू कर दिया है, नौकरियाँ शुरू हो गई हैं और स्कूलों के अलावा बाक़ी जीवन सामान्य हो चुका है। विद्यार्थियों के अभाव में प्राथमिक स्कूल अभी भी उजाड़ लगते हैं क्योंकि बस थोड़े-से स्कूलों में शिक्षक और ज़रा-से विद्यार्थी आ रहे हैं। शिक्षक, सोशल मीडिया इंटरफ़ेस फ़ॉर लर्निंग एंगेजमेंट (स्माइल) प्रोग्राम के ज़रिए ऑनलाइन शिक्षण को जारी रखने के दबाव में हैं। अक्सर, वे नई भेजी गईं वर्कशीट प्राप्त करने के लिए नेटवर्कों में उलझे पाए जाते हैं। उन्हें वर्कशीट के विषय में वीडियो भी मिलते हैं, लेकिन ज़्यादातर स्थितियों में विद्यार्थियों को बिना इन सहायक वीडियो को देखे ही वर्कशीट पूरी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में, जब शिक्षक आधिकारिक रूप से विद्यार्थियों को स्कूल में नहीं बुला सकता तो उसके लिए यह एक चुनौती है कि वह पाठ पढ़ाए या वीडियो दिखाए, और एक-एक विद्यार्थी के घर जाकर उन्हें वर्कशीट देना तो अव्यावहारिक है। हालाँकि, शिक्षक वीडियो लिंक और वर्कशीट अभिभावकों को भेज देते हैं, लेकिन ज़्यादातर विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं होते। परिवार में फ़ोन सिर्फ़ पिता के पास होता है, जो अपने काम पर उसे ले जाते हैं। जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन होते हैं उन्हें डाटा पैक और नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध नहीं हो पाती है। यह भी हक़ीक़त है कि, किसी भी विद्यार्थी को मोबाइल गेम खेलने या अपनी पसन्द के वीडियो देखने की बजाय अपने शिक्षक द्वारा भेजे गए पूरे वीडियो देखने और वर्कशीट पूरा करने के लिए काफ़ी प्रेरणा की ज़रूरत होगी। निष्कर्ष के तौर पर, बाड़मेर जैसी ग्रामीण जगहों में ऑनलाइन शिक्षण शिक्षकों को यह भ्रान्ति देता है कि वे पढ़ा रहे हैं और अभिभावकों को यह भ्रान्ति देता है कि उनके बच्चे सीख रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा पर कई संस्थाओं द्वारा सर्वेक्षण और अध्ययन किए गए हैं, जिनमें अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भी शामिल है, और इनके परिणाम इस तरह की शिक्षा की प्रभावहीनता और सीमाओं को जाहिर करते हैं, ख़ासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में।

ऐसे परिदृश्य में, जहाँ हमने शिक्षा में लगभग दो वर्षों का नुक़सान देखा है, बस यह मान लेने की बजाय कि ऑनलाइन शिक्षण में सीखने का क्रम जारी है, हमें स्कूलों को दोबारा खोलने के ठोस, सम्भव और सुरक्षित तरीक़े सोचने की ज़रूरत है। बहुत से देशों ने और कुछ भारतीय राज्यों ने भी स्कूलों को खोल दिया है, हालाँकि स्कूलों को खोलने और उन्हें पूरी क्षमता से चलाने से *कोविड-19* के फैलने का डर और भी बढ़ जाता है। बस शायद इसी कारण ज़्यादातर राज्यों ने प्राथमिक कक्षाओं को खोलने के बारे में अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है।

यह डर तब तक बरकरार रहेगा जब तक हमें अपने विद्यार्थियों के लिए वैक्सीन नहीं मिल जाती और उन सब को वैक्सीन लग नहीं जाती जो कि अपने आप में एक लम्बी और थकाऊ प्रक्रिया है। तो हमें प्राथमिक कक्षाओं के लिए क्या करना होगा? क्या हमें ऑनलाइन कक्षाएँ ही जारी रखनी चाहिए या हमें विद्यार्थियों से रूबरू होने के तरीक़े सोचने चाहिए और इसके लिए कुछ स्कूलों के शिक्षकों ने छोटे समूहों में कार्य करने के तरीक़े निकाले हैं। बाड़मेर की एक पंचायत के पंचायत प्राथमिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) ने सुरक्षित और संरक्षित वातावरण में सामान्य कक्षाएँ लगाने का तरीक़ा ढूँढ़ने का निर्णय लिया क्योंकि हम सरकार द्वारा स्कूल खोले जाने का इन्तज़ार नहीं कर सकते। हमें विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उपस्थिति में कक्षाएँ लगाने का तरीक़ा ढूँढ़ने की ज़रूरत थी और हमने स्थानीय लोगों की सहायता से यह कार्य कर दिखाया।

स्थानीय लोगों की भागीदारी

शिक्षकों ने कुछ ऐसे बच्चों को ढूँढ़ा जिनके घर एक-दूसरे से काफ़ी नज़दीक हैं, वे एक साथ समय बिताते हैं और साथ खेलते हैं। विद्यार्थियों के लिए नियमित कक्षाओं के विषय में स्थानीय लोगों से चर्चा हुई और वे सभी कक्षाओं की योजना तैयार करने में योगदान देने लगे। प्रत्येक प्राथमिक स्कूल द्वारा दो से तीन ऐसे स्थान ढूँढ़े जा सकते थे जहाँ विद्यार्थी समूह में

रहते हैं। फिर, कक्षाएँ लगाने के लिए एक जगह तय की गई जो या तो खुली जगह थी या फिर कोई बड़ा हॉल जहाँ विद्यार्थी *कोविड-19* के नियमों का पालन करते हुए बैठ सकें। ऐसा करना छोटे समूहों में आसानी से सम्भव था। स्थानीय लोगों को भी इस बारे में चिन्ता नहीं हुई क्योंकि सभी विद्यार्थी या तो आपस में रिश्तेदार थे या एक-दूसरे के परिचित थे।

ग्रामीण बाड़मेर में ढाणी भरी पड़ी हैं जहाँ आमतौर पर, एक कुनबे या परिवार या ऐसे लोगों के घरों के समूह होते हैं, जो एक जाति या एक-सी जीवनशैली की वजह से एक-दूसरे के काफ़ी नज़दीक होते हैं। हमारे सहयोगियों ने, जो शिक्षण का अभ्यास और पंचायत के शिक्षकों की सहायता कर रहे थे, इन कक्षाओं को ढाणी कक्षाएँ कहा। इन कक्षाओं का समय बाड़मेर के उच्च तापमान को ध्यान में रखकर सुबह 7:30 से 11:00 रखा गया। कक्षाओं के लिए विद्यार्थी समय से इकट्ठे होते थे। असामान्य व्यवस्था और इतने लम्बे समय के बाद कक्षा में भाग लेने के कारण विद्यार्थी बहुत रोमांचित थे। यह कक्षाएँ विद्यार्थियों के लिए पिछले 18 महीनों की उबाऊ घरेलू ज़िन्दगी से निकलने के लिए शरण स्थली की तरह थीं। खेता राम जैसे पहली पीढ़ी के विद्यार्थी के लिए, जो अपने स्कूली जीवन के दो सालों के नुक़सान को लेकर बहुत निराश था, यह ख़ुशी का मौका था क्योंकि वह अपने पसन्दीदा विषय अपने शिक्षकों से पढ़ पा रहा था।

कक्षा में वापसी

ये कक्षाएँ शिक्षकों के लिए कई चुनौतियाँ लेकर आईं। पहली बड़ी चुनौती थी बहु-श्रेणीय और बहुस्तरीय (एमजीएमएल) कक्षाओं से दो-चार होना। भले ही यह चुनौती बड़ी दिख सकती है लेकिन एक तरह से यह पूर्व तैयारियों को कम करने में सहायक थी क्योंकि एमजीएमएल की एक पाठ योजना को (कुछ विविधता के साथ) लगभग सभी ढाणी कक्षाओं में काम में लाया जा सकता था। दूसरी कठिनाई समय प्रबन्धन की रही। इन कक्षाओं के स्थानों के बीच की दूरी 2 से 5 किमी के बीच थी और कुछ जगहों पर पहुँचने के लिए रेतीले रास्तों या रेत के टीलों को पार करना पड़ता था। इससे निपटने के लिए शिक्षकों ने अपने स्कूलों में शिक्षकों की संख्या के हिसाब से टाइमटेबल बनाया। उदाहरण के लिए, अगर एक स्कूल में दो शिक्षक थे और उन्हें हमारी ढाणियों में आना होता था तो वे हफ़्ते में दो या तीन कक्षाएँ लेते थे। यह देखने में भले ही कम लगे, लेकिन जिन विद्यार्थियों का औपचारिक शिक्षा से लम्बे समय से सम्पर्क न हो, उनके लिए यह अपने नुक़सान की भरपाई और स्कूलों के नियमित रूप से खुलने के समय की तैयारी का अच्छा अवसर है।

कोविड-19 के नियमों का पालन करना भी काफ़ी कठिन काम है जैसे विद्यार्थियों को हमेशा उचित दूरी बनाकर रखने और मास्क लगाए रखने के लिए प्रेरित करना। लेकिन अभिभावकों और स्थानीय लोगों की भागीदारी से ये चिन्ताएँ कम हुईं। पानी, शौचालयों की कमी, कक्षा एक और दो के उन बच्चों को सम्भालना जो कभी औपचारिक कक्षा में शामिल नहीं हुए थे - ये कुछ चुनौतियाँ थीं जो सामने आईं। लेकिन इन सभी समस्याओं को स्वीकार करके इनके समाधान खोजने के लिए उठाई गई ज़हमत अंततः सफल रही क्योंकि इन प्रयासों की वजह से बच्चों को सीखता देखकर बहुत राहत और सन्तोष मिलता है। भले ही शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं में बहुत मेहनत की लेकिन उनका वह प्रयास विद्यार्थियों के लिए ज़्यादा हितकारी साबित नहीं हुआ।

हमारी सीख

इस विचार को सफल बनाने के लिए ज़रूरी है कि स्कूलों को पुनः खोलने और आमने-सामने बैठाकर कक्षाएँ फिर से शुरू करने की योजनाओं में स्थानीय लोगों को शामिल किया जाए। बाड़मेर में, शिक्षकों के थोड़े-से साहस और स्थानीय लोगों के सहयोग ने, आधिकारिक रूप से स्कूलों के दोबारा खुलने तक, विद्यार्थियों के लिए अस्थायी कक्षाएँ बनाने का काम कर दिखाया। जब स्कूल खुलेंगे तब ये सबक़ अमूल्य साबित होंगे।

*बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

मोहम्मद अली रिज़वी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में पिछले पाँच वर्षों से टीचर-एजुकेटर हैं। उनकी रुचि का विषय है बच्चों का भाषा सीखना। उन्होंने अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर किया है। घुड़सवारी, फ़ोटोग्राफ़ी और भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण में उनकी गहरी रुचि है। उनसे ali.rizvi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनुज उपाध्याय

योजना बनाने का समय अब है

नवलेश कुमार

पिछले कई दिनों से फील्ड में भ्रमण करने और स्कूल के शिक्षकों से लगातार संवाद करने के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि शिक्षक भी स्कूल खोलने के पक्ष में हैं। उनका भी यही मानना है कि बच्चे जो चीज़ फेस-टू-फेस और संवाद से सीखते हैं, उसका कोई दूसरा विकल्प न था, और न है।

पहली कक्षा के एक बच्चे से आप क्या उम्मीद रखते हैं? जो बच्चा पिछले डेढ़ साल से स्कूल नहीं गया हो, जिसने अपने शिक्षक को न के बराबर देखा हो, जिसे यह भी पता न हो कि आख़िर यह *कोविड-19* है क्या? जिसका बचपन मिट्टी में खेलते-कूदते बीत रहा हो, जो अपना थोड़ा-बहुत पढ़ा हुआ लगभग भूल चुका हो, क्या आप उससे यह उम्मीद रखते हैं कि वह एकाएक बिना किसी सपोर्ट के पढ़ना-लिखना फिर से शुरू कर दे? क्या उससे यह उम्मीद रखते हैं कि आप उसको एक वर्कशीट हाथ में थमा देंगे और वह उसे ख़ुद से करना शुरू कर देगा? या फिर आप उससे यह उम्मीद रखते हैं कि फ़ोन में वीडिओ चलाकर उसके सामने रख देंगे और वह अपने आप चीज़ों को समझने लगेगा?

यह सब इतना आसान नहीं है

जो क्षति बच्चों को इस महामारी में हुई है, उसकी पूर्ति के बाद ही अगर हम आगे के पठन-पाठन की योजना बनाते हैं तभी सही मायने में बच्चों की सहायता कर पाएँगे। शिक्षकों को अपने स्तर से बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना होगा। बच्चों की सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक और शारीरिक स्थिति क्या है, उसको ध्यान में रखकर ही आगे की सभी योजनाएँ बनानी होंगी। यह भी हो सकता है कि शिक्षक को हरेक बच्चे के लिए अलग-अलग योजना बनानी पड़े। क्यूँकि इन डेढ़ सालों में बच्चे अलग-अलग तरीक़े से प्रभावित हुए हैं और उनकी शैक्षणिक क्षति भी अलग-अलग है। शिक्षकों को बच्चों के अलावा उनके माता-पिता से भी लगातार सम्पर्क में रहकर उनके साथ संवाद स्थापित करना होगा। गाँव के जो शिक्षित लोग हैं, वे शिक्षकों के साथ मिलकर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। *कोविड-19* के लिए ज़रूरी सारे सुरक्षा-निर्देशों का पालन करते हुए शिक्षकों को बच्चों के साथ फेस-टू-फेस एन्गैज्मन्ट शुरू करना होगा। पूरे काम को एक प्लान के तहत करना होगा।

सीखने की क्षति

शुरूआत में थोड़ी दिक़्क़त आ सकती है। यह लाज़िमी भी है क्यूँकि लगभग दो सालों से पढ़ाई-लिखाई का काम सुचारू रूप से नहीं हुआ है। बच्चों को स्कूल की नियमित समय-सारिणी और तौर-तरीक़ों को अपनाने में समय लग सकता है। शुरुआती समय में शिक्षकों को तरह-तरह की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ना होगा। उन्हें ऐसी गतिविधियाँ ढूँढ़नी होंगी, जिनसे बच्चों को सीखने में जो क्षति हुई है उसको बहाल करने में मदद मिले और आगे के शिक्षण-कार्य को गति मिल सके। विद्यालय खुलने के बाद शिक्षकों को अपने पढ़ाने के तौर-तरीक़े में भी काफ़ी बदलाव करने होंगे।

फील्ड विज़िट के दौरान शिक्षक शिव कुमार (राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माइलागोड) से इस बारे में बात हो रही थी कि स्कूल खुलने के बाद बच्चों के साथ किस प्रकार काम होगा। वे बताते हैं कि जितना आसान सरकार और लोग सोच रहे हैं कि स्कूल खुल जाएगा और बच्चे फिर से स्कूल जाने लगेंगे, सीखने और सिखाने का काम पहले की तरह चलने लगेगा, तो ऐसा बिलकुल नहीं है। वे बताते हैं कि इतने दिन से स्कूलबन्दी ने बच्चों के मानसिक स्तर के साथ उनके शारीरिक और भावनात्मक स्तर को भी प्रभावित किया है। बच्चों की एक जगह पर देर तक बैठने और ध्यान केन्द्रित करने की आदत छूट गई है। यह उनके लिए और शिक्षकों के लिए भी एक चुनौती के समान होगा कि वे कक्षा में ध्यान दें।

अन्य क्षतियों का प्रभाव

जिन बच्चों का डेढ़ साल से किसी भी प्रकार का कोई सामाजिक इंटरेक्शन नहीं हुआ है, उनको शुरुआत में शिक्षकों से बातचीत करने में भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यह भी हो सकता कि बच्चे अपने इमोशन को पहले की तरह सबके सामने उजागर नहीं कर पाएँ।

यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है कि आर्थिक रूप से कमज़ोर ऐसे कई सारे परिवार हैं जो अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में सिर्फ़ इसलिए भेजते हैं ताकि उनके बच्चों को कम-से-कम एक समय का पौष्टिक भोजन मिल सके। स्कूलबन्दी के कारण इस तरह के परिवार के बच्चों को शारीरिक तौर पर भी अच्छा-ख़ासा नुकसान हुआ है। स्कूल खुलने के बाद सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मिड-डे-मील की पौष्टिकता को

बढ़ाया जाए और बच्चों को एक अच्छा आहार परोसा जाए। कुल-मिलाकर एक जटिल तस्वीर है हमारे सामने। हमें अभी से इन सब चीज़ों पर काम करना शुरू कर देना होगा ताकि स्कूल खुलने के बाद हमारे इन कामों को गति मिल सके और एक तय योजना के तहत बच्चों के साथ काम किया जा सके।

यह सिर्फ़ एक शिक्षक की चिन्ता नहीं है। मैं ऐसे अनेक शिक्षकों से मिला हूँ जिनकी राय कमोबेश समान ही है। बच्चों से मिलने पर भी वह क्षति साफ़-साफ़ नज़र आती है, जो उन्हें हुई है। अगर बात सिर्फ़ बच्चों की शैक्षणिक क्षति तक सीमित होती तो शिक्षकों के लिए काम करना आसान हो जाता। शैक्षणिक क्षति के साथ-साथ ऐसी कई महत्त्वपूर्ण क्षतियाँ हुई हैं, जो बच्चे के सम्पूर्ण विकास में बाधा पहुँचा सकती हैं और जिनसे उनके आगे के शैक्षणिक स्तर पर भी काफ़ी असर पड़ सकता है।

आगे का रास्ता : कुछ विचार

तो यह बात तो हो गई कि आख़िर किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन जब मैं शिक्षकों से साथ बात करता हूँ तो मैं इन सारी चुनौतियों का समाधान ढूँढ़ने की भी कोशिश करता हूँ। साथ में यह भी जानने की कोशिश करता हूँ कि स्कूल खुलने के बाद बच्चों को एन्गैज रखने के लिए वे अपने स्तर से क्या-क्या तैयारियाँ कर रहे हैं? जहाँ ज़्यादातर शिक्षकों को स्कूलों को दोबारा खोलने की तैयारी का काम मुश्किल लग रहा है, वहीं कुछेक शिक्षक ऐसे भी हैं जो अपने स्तर से कुछ करने की सोच रहे हैं। मैं यहाँ इनमें से कुछ पर चर्चा करता हूँ :

व्यक्तिगत समस्याओं को समझना

एक तरीक़ा तो यह हो सकता है कि स्कूल खुलने से पहले ही शिक्षक घर-घर जाकर बच्चों से मिलना शुरू कर दें। यह मिलना सिर्फ़ होमवर्क देने और वर्कशीट लेने तक सीमित नहीं होना चाहिए। शिक्षक को बच्चे और उनके माता-पिता के साथ एक संवाद करने की आवश्यकता है। एक ऐसा संवाद जिसमें बच्चे और उनके अभिभावक खुलकर हरेक मुद्दे पर बात कर सकें। वे बता सकें कि *कोविड-19* ने उनको और उनके बच्चे को किस तरीक़े से प्रभावित किया है, उनके बच्चे को स्कूलबन्दी के कारण क्या-क्या चीज़ें झेलनी पड़ीं उनकी ज़िन्दगी में पहले से क्या परिवर्तन आए हैं और अब वे स्कूल को किस नज़रिए से देख रहे हैं। एक शिक्षक जब उस बच्चे से बात करता है जिसे वह पढ़ाया करता था तो उसे ख़ुद-ब-ख़ुद समझ आ जाता है कि उस बच्चे में पहले की तुलना में क्या बदलाव आया है। हो सकता है, बच्चे को बात करने में भी झिझक महसूस हो। इसलिए शिक्षक को अपने बच्चों से बार-बार मिलना चाहिए ताकि वे आसानी-से खुलकर बात कर सकें।

बच्चों के छोटे समूहों के साथ जुड़ना

दूसरी चीज़ यह है कि शिक्षक अपने स्तर पर बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर अभी से ही स्कूल बुलाएँ और खेलकूद सहित तरह-तरह की गतिविधियों के माध्यम से उनको एन्गैज करना शुरू कर दें। ऐसा बिलकुल न हो कि बच्चों को स्कूल में बुलाया जाए और उनको बस एक वर्कशीट हाथ में थमाकर उसे सॉल्व करने को बोल दिया जाए। शिक्षक बच्चों के साथ बैठकर मूवी देखें, उनकी कहानियों को सुनें, उनको कहानियाँ सुनाएँ। उन पर बात करें। उनके साथ बगीचे में घूमें, पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं के बारे में बात करें। अभी भी बच्चों को यह समझ नहीं है कि यह *कोविड-19* क्या बीमारी है या उनके स्कूल इतनों दिनों से बन्द क्यों हैं, वैक्सीनैशन किस तरह काम करता है। शिक्षक इन सब चीज़ों को बच्चों को सरल भाषा में, एनिमेशन के माध्यम से, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से, कुछ मॉडल के माध्यम से समझाने का काम करें। यह बेहद ज़रूरी है क्यूँकि वैक्सीनैशन को लेकर जो भी भ्रान्तियाँ हमारे समाज में फैली हुई हैं, वे बच्चों को भी प्रभावित कर रही हैं। अगर इस समय उनकी भ्रान्तियों को दूर नहीं किया गया तो जब उनको टीका लगवाने की बारी आएगी तो वे इसके लिए तैयार नहीं होंगे।

बच्चे क्या चाहते हैं?

हम अक्सर बच्चों की राय और उनके सोचने के नज़रिए को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। एक तरफ़ हम बात करते हैं कि शिक्षण के दौरान हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे लोकतांत्रिक मूल्यों को भी सीख और समझ सकें। दूसरी तरफ़ हम उन्हीं के लिए किए जा रहे कार्यों में उनकी राय लेना ज़रूरी तक नहीं समझते। स्कूल खोलने को लेकर हमें बच्चों की राय को भी जानना और समझना चाहिए। आख़िर बच्चे क्या चाहते हैं? क्या वे चाहते हैं कि स्कूल खुलें और वे पहले की तरह वहाँ जाएँ? कुछ लोगों को यह लग सकता है कि बच्चों की राय उतनी ज़रूरी नहीं है, क्यूँकि उनमें इतनी समझ नहीं है कि वे इस तरह के मामले में अपना पक्ष रख सकें। हो सकता है कि बच्चे के पास स्कूल खुलने या न खुलने को लेकर कोई ठोस उत्तर नहीं हो, लेकिन वे अपने स्तर से तो बता ही सकते हैं कि वे क्या सोचते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने कई बच्चों से बातचीत की और स्कूल खुलने के बारे में उनकी राय जानने की कोशिश की। वे सब यही चाहते हैं कि सब कुछ ठीक हो जाए ताकि वे पहले की तरह स्कूल में मस्ती कर सकें।

सर,कोरोना काल में हम सब भूल गए। स्कूल बन्द था तो हम दिन भर घर पर रहते थे। मन नहीं लगता था। स्कूल रहता था, तब दोस्तों के साथ ख़ूब खेलते थे और मस्ती करते थे। आते-

जाते पूरे रास्ते में दोस्तों के साथ मस्ती करते थे। स्कूल के सर भी हमें तरह-तरह के खेल खिलाते थे। जल्दी से स्कूल खुल जाए और हम दोस्तों के साथ फिर से मस्ती कर पाएँ।

—विमला, कक्षा-5

जब से स्कूल बन्द हुए हैं, मुझे घर का बहुत सारा काम करना पड़ता है। मैं घर में ही रहती हूँ और बाहर जाने पर मम्मी-पापा डाँटते हैं। दोस्तों के साथ दौड़ना, उनके साथ स्कूल से लौटते समय दुकान से बिस्किट लेकर खाना बहुत पसन्द था। स्कूल के शिक्षक भी मुझे बहुत कुछ खिलाते थे, लेकिन स्कूल बन्द हो जाने से अब वह भी नहीं मिलता है। स्कूल खुल जाने के बाद मैं फिर से सर से बोलूँगी कि वे मुझे तरह-तरह की चीज़ें खिलाएँ।

—वन्दना, कक्षा-4

सर,स्कूल में हमें बहुत मज़ा आता था। टीचर के साथ भी हम बहुत मस्ती करते थे। स्कूल में हम पढ़ते थे, खेलते थे। स्कूल में हम खाना खाते थे और बाँटते भी थे। स्कूल में हम भगवान की पूजा करते थे। स्कूल जल्दी से खुल जाए, तो हम फिर से यह सारी चीज़ें कर पाएँगे।

—उम्मेद, कक्षा-4

नवलेश कुमार ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। शिक्षा के ज़रिए सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक कार्य के लिए अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए वह 2020 में एसोसिएट के रूप में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में शामिल हुए। उन्हें विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर पढ़ना व लिखना पसन्द है और वह एक नियमित स्वैच्छिक रक्तदाता हैं। उनसे nawlesh.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय शिक्षण आगे बढ़ने का तरीक़ा है

निकेत सागर

कोविड-19 ने हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों, संस्थाओं की कार्य पद्धतियों और पूरे देश तथा विश्व में सेवा-वितरण की प्रक्रियाओं के हर पहलू को प्रभावित किया है। वर्तमान में बच्चों के लिए स्कूल बन्द हैं, हालाँकि कुछ राज्य पुनः स्कूल खोलने की तरफ़ बढ़ रहे हैं, भले ही *कोविड-19* की दूसरी लहर के बाद अभी भी कुछ अनिश्चितता है। इन 18 महीनों में, राज्य सरकारों ने विभिन्न ऑनलाइन और मास-मीडिया मंचों का अधिक-से-अधिक उपयोग करके शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं को सुगम बनाने के लिए स्थिति-अनुकूल तरीक़े आज़माए। हालाँकि शिक्षकों ने ग्रामीण भारत के उन इलाक़ों के सरकारी स्कूलों में भी शिक्षण के इन तरीक़ों को लागू करने की पूरी कोशिश की, जहाँ क्षेत्रीय व भौगोलिक असमानताएँ हैं, संसाधनों तक पहुँच नहीं है व उनकी अनुपलब्धता है और एक बड़ा डिजिटल विभाजन है, फिर भी इसमें कई समस्याएँ रहीं। वर्चुअल (आभासी) और ऑनलाइन सीखने की सीमाओं के इस मुद्दे को दुनिया भर के कई अध्ययनों द्वारा अच्छी तरह दर्ज किया गया है।

हमने कुछ ऐसे प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की है, जिनके बारे में स्कूलों के दोबारा खुलने पर अपने आगामी कार्यों में गहराई से सोचने की ज़रूरत है। निर्धारित सत्रों और कार्यशालाओं के माध्यम से, सभी भागीदारों के साथ इनके बारे में चर्चा की गई है। इन भागीदारों में शिक्षक, प्रधान शिक्षक और माता-पिता शामिल हैं। शिक्षकों ने आगामी चुनौतियों के बारे में अपनी प्रारम्भिक समझ, उन्हें कम करने की योजनाओं और कार्यनीतियों को साझा किया है। उनके शब्दों में, बच्चों के स्कूली जीवन में आई यह रिक्तता बच्चों के समग्र सीखने पर दीर्घकालिक प्रभाव डालेगी। स्कूल बन्द होने से कक्षा में शिक्षकों और बच्चों के बीच होने वाली पारस्परिक क्रिया तो सीमित हुई ही है, इसने शिक्षकों को प्रभावी अभ्यास से भी दूर कर दिया है।

आगे इन समस्याओं पर चर्चा की गई है। मैं यहाँ इस बात पर प्रकाश डाल रहा हूँ कि कैसे हम सभी स्कूलों को फिर से खोलने की कल्पना और बेहतर शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं की तैयारी कर रहे हैं। हम विचार-विमर्श कर रहे हैं कि क्या किया जा सकता है, वर्तमान सन्दर्भ में हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं और सीखने की खाई को पाटने एवं दोबारा सामान्य तरीक़े से स्कूलों को चलाने के अपने लक्ष्य को पाने के लिए क्या योजना बना सकते हैं।

बच्चे और बर्बाद हुआ वक़्त

एक बच्चे के लिए, इस तथाकथित 'नए सामान्य' (न्यू नॉर्मल) ने उसके जीवन के हर पहलू पर आक्रमण किया है — स्कूल नहीं, परीक्षा नहीं और अब स्कूलों के खुलने का लम्बा इन्तज़ार। इन डेढ़ वर्षों में, मुख्य रूप से समाजीकरण के सीमित अवसरों के कारण बच्चों ने कई स्तरों पर (मनोवैज्ञानिक स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक) भुगता है। उनकी दैनिक जीवनशैली, दिनचर्या और समग्र सामाजिक व्यवहार में बड़े बदलाव हुए हैं। हमारे ज़िले (बाँसवाड़ा) में, अधिकांश निवासी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। सामान्य ग्रामीण जीवन में स्वास्थ्य और स्वच्छता सम्बन्धी पहलुओं पर अचानक ज़ोर दिए जाने के कारण भय और चिन्ता पैदा हो गई है।

शिक्षकों ने समुदाय में बच्चों के साथ अपनी दिन-प्रतिदिन की बातचीत में इन सभी कारकों को दर्ज किया है। शिक्षकों में से एक धर्मिष्ठा पण्ड्या कहती हैं, "जब स्कूल खुलेंगे, तो शिक्षकों को सबसे पहला क़दम अपने बच्चों की ज़रूरतों को समझने की दिशा में उठाना चाहिए। ये ज़रूरतें केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें जीवन के अनुभवों, भावनाओं और असुरक्षा से जुड़ी ज़रूरतें शामिल हैं।" वे आगे बताती हैं कि सबसे पहले, उन्होंने बच्चों के साथ उनके दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के बारे में बातचीत करना शुरू कर दिया है। स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा बताई हुई बातों पर ध्यान देना शुरू किया है जैसे कि वे क्या पसन्द करते हैं या नापसन्द करते हैं, किस तरह से किसी चीज़ से जुड़ते हैं और कितने समय तक किसी उद्देश्यपूर्ण जुड़ाव पर ध्यान देने में सक्षम हैं। जब बच्चे शिक्षक द्वारा दिखाए गए निरन्तर अपनत्व और जुड़ाव के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं, तो वे धीरे-धीरे खुलते जाते हैं, स्कूल की गतिविधियों और शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रियाओं में भाग लेने लगते हैं। इस तरीक़े ने बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को भी समझने में मदद की। सुविचारित खेलों, गतिविधियों

और अभ्यासों के माध्यम से सुश्री पण्ड्या प्रारम्भिक गणित और भाषा में बच्चों के सीखने के स्तरों पर ध्यान दे रही हैं। समझ का यह स्तर और प्रत्येक बच्चे के विवरण को व्यवस्थित रूप से रखना उनके कक्षा के कार्यों और शिक्षण में सहायक होगा और उसे पूरा करेगा। इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि उनकी कक्षा के बच्चे अधिक प्रभावी ढंग से सीखेंगे।

शिक्षकों का अभ्यास और क्षमता निर्माण

वास्तविकता में कक्षा में आमने-सामने बैठकर होने वाले संवाद व शिक्षण-शिक्षार्जन के अभ्यासों से हटकर वर्चुअल मोड (आभासी रूप) में विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव, मोहल्ला/सामुदायिक कक्षाएँ, घर-घर जाकर शिक्षण और कई अन्य प्रासंगिक और अनुकूलित तरीक़ों पर जाना सीखने का एक अनुभव रहा है। शिक्षकों ने अपने स्वयं के या राज्य द्वारा संचालित कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ने के लिए विभिन्न तरीक़े और कार्यनीतियाँ आज़माई हैं। उनके लिए, सामान्य कक्षा शिक्षण में वापस आने के लिए अधिक सुनियोजित तरीक़ों के साथ ही कार्यपद्धतियों को बदलने की भी आवश्यकता होगी। इस पर प्रकाश डालते हुए गवर्नमेंट अपर प्राइमरी स्कूल (जीयूपीएस), मेडिया, ढिंढोरे के एक शिक्षक विजय प्रकाश जैन कहते हैं, "शिक्षकों के रूप में, हमारे लिए विभिन्न अकादमिक और शैक्षणिक तरीक़ों के हिसाब से ढलने के लिए ख़ुद को तैयार करना आवश्यक है।" वे प्रारम्भिक कक्षाओं को भाषा पढ़ाते हैं। तालाबन्दी के दौरान वे अपने स्कूल के 50 बच्चों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उनके अनुभव के अनुसार, कोई अपने आप को अपने विषयों तक ही सीमित नहीं रख सकता। वास्तविक कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में अधिक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। भाषा पर काम करते हुए उन्होंने अपने बच्चों के संख्या ज्ञान सम्बन्धी योग्यताओं और कौशलों को भी समझा है और उसी के अनुसार वे दैनिक शिक्षण की योजना बनाते हैं। इसके अलावा, चूँकि बच्चों को कक्षा उन्नत किया गया है, तो दोबारा स्कूल खुलने पर कक्षा में बड़ी चुनौतियाँ इन्तज़ार कर रही हैं। वे पाँचवीं कक्षा की छात्रा सोनिया का उदाहरण देते हैं, "जब यह महामारी फैली थी तब वह तीसरी कक्षा में थी और अब पाँचवीं में है। मैं दोनों विषयों में उसके सीखने का स्तर जानता हूँ। मुझे उसके आवश्यक कौशलों पर काम करना होगा और सीखने के कक्षा-उपयुक्त प्रतिफलों को प्राप्त करने में उसकी मदद करनी होगी।"

ऐसा करने के लिए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर की गहन समझ की ज़रूरत होगी। अधिक एकीकृत दृष्टिकोण के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं को तैयार करने और उनकी योजना बनाने की आवश्यकता होगी, ताकि प्रभावी कार्य हो सके, उदाहरण के लिए, सोनिया के सीखने के नुक़सान पर। कक्षाओं में अब ऐसे समूह होंगे जो सीखने के विभिन्न स्तरों पर होंगे, इसलिए एक शिक्षक के रूप में उन्हें बहु-कक्षा बहु-स्तरीय (मल्टी-ग्रेड मल्टी-लेवल/ एमजीएमएल) शिक्षण को अपनाना होगा। हममें से कई लोगों के पास एमजीएमएल शिक्षण की समझ होने के लिए ज़रूरी अभ्यास में कमी है, इसलिए इस मोर्चे पर शिक्षकों के क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। इस तरह के प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ हमें अपने पिछले अभ्यास और अनुभवों से सीख लेकर नई क्षमताओं का निर्माण करने में मदद करेंगी जो आने वाले समय में हमारे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त होंगी।

सामान्य जीवन की ओर वापसी

भले ही बच्चों के लिए स्कूल बन्द हैं, लेकिन हमारे शिक्षक हमेशा की तरह अपने-अपने स्कूलों में आ रहे हैं। यह स्थिति तालाबन्दी से पहले की स्थिति से बिल्कुल अलग है, जब उत्साह का माहौल था, कक्षाओं में नियमित होने वाला मेलजोल व संवाद था और बच्चों के साथ जुड़कर काम होता था। अब वापस सामान्य तरीक़े से काम करने में स्वास्थ्य और स्वच्छता सम्बन्धी जागरूकता व अभ्यास को स्कूल के अन्दर और बाहर, दोनों जगह सुनिश्चित करने के नए तत्व होंगे। *कोविड-19* की इस पूरी स्थिति के दौरान पूरा समुदाय, स्कूल प्रशासन और शिक्षकों के साथ मिलकर काम करता रहा है, जिन्होंने विभिन्न भूमिकाएँ निभाईं और राज्य सरकारों द्वारा सौंपे गए अपने कर्तव्यों को पूरा किया। एक बार जब स्कूल फिर से खुल जाएँगे, तो कक्षा शिक्षण, प्रबन्धन और शिक्षकों व प्रशासन की कार्यपद्धति में बदलाव आएगा। बाँसवाड़ा, तलवाड़ा, अरथुना, गढ़ी, छोटी सरवन और बागीदौरा ब्लॉक के 80 प्रधान शिक्षकों के साथ हमने तीन दिवसीय योजनाबद्ध कार्यशालाएँ कीं। इनमें से दो कार्यशालाओं में हमने वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा की और उनको समझने की कोशिश की। साथ ही इस बारे में योजना बनाने की भी कोशिश की, कि किस प्रकार प्रधान शिक्षक पहचानी गई ज़रूरतों और लक्ष्यों पर काम करेंगे ताकि बच्चों के बेहतर ढंग से सीखने और शिक्षकों द्वारा शिक्षण के बेहतर तरीक़े अपनाने को सुनिश्चित किया जा सके। प्रतिभागियों ने समुदाय के स्तर पर वर्तमान स्थिति को समझने की तात्कालिक आवश्यकता पर प्रकाश डाला और समुदाय की ज़रूरतों और चुनौतियों के प्रति व्यवस्थित कार्य के महत्त्व पर ज़ोर दिया। समुदाय के प्रति समझ और संवेदनशीलता बच्चों की स्कूल में नियमितता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और बच्चों का स्कूल छोड़ना (ड्रॉपआउट) रोकेगी। सीधे शैक्षिक प्रक्रियाओं के साथ आगे बढ़ने की बजाय, स्कूलों को ऐसे सहानुभूतिपूर्ण वातावरण बनाने पर काम करना होगा जो प्रत्येक बच्चे का स्वागत करे व उसे स्थान दे। जो इस वास्तविकता को समझे कि बच्चे

स्कूल की दैनिक दिनचर्या से दूर रहे हैं और सम्भव है कि कई बच्चों ने भावनात्मक और वित्तीय आघातों का सामना किया होगा। इसलिए, सीखने के नुक़सान की भरपाई करने के लिए सबसे पहले बच्चों का आकलन करके उनके सीखने में आई दरारों की पहचान करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें विभिन्न विषयों में उनके बुनियादी कौशलों को समझने के बारे में बारीक़ी से सोचने की ज़रूरत है। प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों और सीखने के स्तरों को समझना महत्त्वपूर्ण है ताकि उन्हें सर्वोत्तम समर्थन और मार्गदर्शन (उपचारात्मक कार्य/ सेतु पाठ्यक्रम) प्रदान किया जा सके। इसलिए हमारी योजना है इन दो महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों की पहचान कर उन्हें हासिल करने की दिशा में काम करना — पहला, बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करना और दूसरा, प्रभावी शिक्षण पद्धतियों को सुगम बनाना।

* सुरक्षा की दृष्टि से बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

निकेत सागर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में फ़ेलो के रूप में शामिल हुए और अब वे बाँसवाड़ा, राजस्थान में एक स्रोत व्यक्ति के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क, दिल्ली विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। इससे पहले उन्होंने एआईएफ के लर्निंग एंड माइग्रेशन प्रोग्राम (एलएएमपी) के तहत पश्चिमी ओडिशा के ज़िलों की व्यथित प्रवासी आबादी के साथ काम करने वाले संगठन, लोकदृष्टि के साथ एआईएफ-क्लिंटन फ़ेलो के रूप में कार्य किया। उनकी रूचि के क्षेत्र हैं जातीय और लैंगिक विमर्श, आदिवासी समुदायों में शिक्षा का सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ, हाशियाकृत समुदायों की पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ। उनसे niket.sagar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : अनुज उपाध्याय

सीखे गए सबक़ | अज़ीम प्रेमजी स्कूलों से

पल्लवी चतुर्वेदी

पिछले डेढ़ साल के अभूतपूर्व अनुभवों में, जब दुनिया ने विभिन्न प्रकार की अनिश्चितताओं के लिए अभ्यस्त होना सीख लिया है, हमारे देश में स्कूली शिक्षा की निराशाजनक सच्चाई और भी संकटग्रस्त हो गई है। बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के लिए मौजूदा शैक्षणिक संस्थानों के विस्तार में आने वाले अधिकांश स्कूलों द्वारा चलाई गईं ऑनलाइन कक्षाओं या अपनाए अन्य उपायों के बावजूद बच्चों के लिए सीखने के वास्तविक अवसर बहुत कम हो गए हैं। यह महामारी की स्थिति के कारण हुआ है जिसने मानव जाति के सामने कई सारी नई चुनौतियाँ पेश कर दीं, जिनमें से कई पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी क्योंकि उनका सम्बन्ध जीवन बचाने से था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई परिवारों, ख़ासकर समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर तबक़े के अधिकांश लोगों, के लिए बच्चों की शिक्षा प्राथमिकताओं की सूची में बहुत नीचे खिसक गई है।

अब जब टीकों के तेज़ी से हुए विकास और संकेन्द्रित टीकाकरण अभियान की बदौलत दुनिया *कोविड-19* महामारी के कारण उपजी अतिरिक्त विवशता और अव्यवस्था से उबर रही है, तो बच्चों की शिक्षा की उपेक्षा का हमें धीरे-धीरे एहसास हो रहा है। नतीजतन, शिक्षकों और शिक्षाविदों के बीच समान रूप से आगे की चुनौतियों के बारे में व्यापक चिन्ता है। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि इतने लम्बे अन्तराल के बाद स्कूलों के फिर से खुलने पर बच्चों के सीखने में आई सम्भावित दरारों के सन्दर्भ में उन्हें किन-किन बातों से निपटना होगा।

सौभाग्य से, कुछ स्कूलों जैसे अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में हर कोई स्कूलों के फिर से खुलने की घोषणा का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा है। महामारी के समय के अनुभव, जो भले ही कठोर और बेहद तकलीफ़देह थे, एक अप्रत्याशित समस्या का समाधान लेकर आए हैं, जो हमारी अगली कार्रवाइयाँ हैं। इनमें से कुछ कार्रवाइयों को आशा और विश्वास के साथ आज़माया गया है और ये छोटी भले ही हों लेकिन इनसे, प्रतिकूल परिस्थितियों और बाधाओं का सामना करने के बावजूद, शिक्षकों की शिक्षण देने की इच्छाशक्ति की आकर्षक कहानियाँ का पता चला है। बच्चों और उनके परिवारों की तत्काल ज़रूरतों की जानकारी से दिशा पाकर, साथ ही पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को भी ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों ने नए तरीक़े खोजे उन पर लगातार विचार किया और स्कूल फिर से खुलने के लिए पाठ्यचर्या की योजना बनाई।

फ़ाउण्डेशन के प्रयास

राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक और उत्तराखण्ड के हमारे स्कूलों ने पिछले साल अप्रैल में लगे पहले लॉकडाउन के ठीक बाद अकादमिक और मानवीय, दोनों तरह के सहयोग के लिए अपने प्रयास शुरू कर दिए थे। लगातार तीन लॉकडाउन के दौरान भोजन और पोषण की सख़्त ज़रूरत सबसे तात्कालिक और अत्यावश्यक ज़रूरत के तौर पर उभरी, जिसकी तरफ़ न केवल सरकारों को, बल्कि हर उस इन्सान को ध्यान देना ज़रूरी था, जिसके पास दूसरों से अधिक साधन थे। एक महत्त्वपूर्ण नागरिक समाज संगठन के रूप में हमारी प्रतिक्रिया त्वरित और प्रभावी थी। विभिन्न राज्यों में हमारे ज़िला संस्थानों की टीमों के साथ-साथ हमारे स्कूल के शिक्षकों ने भी अपने विद्यार्थियों के परिवारों तक राशन और आवश्यक वस्तुएँ पहुँचाने के लिए तत्पर सहयोगियों की तरह काम किया।

इसके बाद ऑनलाइन मोड और वर्कशीटों के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ निरन्तर शैक्षिक जुड़ाव स्थापित किया गया। पर घर से मदद न मिल पाने के कारण ये दोनों ही तरीक़े हमारे ग्रामीण और झुग्गियों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए अप्रभावी साबित हुए। इन बच्चों को कुछ घण्टों के लिए भी स्मार्टफ़ोन उपलब्ध नहीं था (लेकिन जिन माता-पिता के पास स्मार्टफ़ोन था भी तो वे उसे अपने काम पर ले जाते थे और देर से घर वापस आते थे)। इसके अलावा, हमारे कई विद्यार्थियों के माता-पिता, दोनों काम पर जाते हैं और जहाँ माँ घर पर रुकती है वहाँ वह अपनी शिक्षा की कमी या कई घरेलू ज़िम्मेदारियों के कारण अपने बच्चे की मदद करने में असमर्थ थी। इसलिए, जैसे-जैसे जीवन थोड़ा सामान्य होने लगा गाँवों और क़स्बों के समुदायों में नियमित कक्षाएँ शुरू करने की योजना बनाई गई और उसे क्रियान्वित किया गया।

इन दौरों से यह स्पष्ट हो गया कि नियमित कक्षाएँ उन बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण थीं जिनका जीवन महामारी के कारण बदल गया था। कुछ उदाहरण अभी भी मेरी स्मृति में अंकित हैं, जिनका उल्लेख हमारे आस-पास की वास्तविकता की मिश्रित तस्वीर को देखने के लिए यहाँ प्रासंगिक है।

मेरे ज़ेहन में तीसरी कक्षा के लड़के बण्टू की छवि उभरती है, जब वह छोटे से क़स्बे के अपने एक कमरे के झोंपड़ीनुमा घर की रसोई में खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा है और फिर अपनी रोटी ख़ुद बनाने का फ़ैसला करता है क्योंकि उसकी माँ काम करने जल्दी घर से निकल गई थी। उसकी इस छवि ने मेरी स्मृति के मेहराब में एक मोड़ बना दिया। इसके बाद मेरे दिमाग़ में आठवीं कक्षा की उत्साही छात्रा गायत्री की छवि उभरती है, जो घर के कामों के साथ-साथ स्कूल का काम भी कर रही है। उसके माता-पिता सुबह जल्दी ही अपने छोटे-से खेत में काम करने के लिए चले जाते हैं इसलिए वह अपने तीन छोटे भाई-बहनों की देखभाल कर रही है, जिनमें से एक तो अभी शैशवावस्था में है, और फिर भी पढ़ाई के लिए समय निकालने की कोशिश कर रही है। इसके अलावा इसी कक्षा में पढ़ने वाली जोशना की छवि उभरती है जो हमारी मोहल्ला कक्षाओं में नियमित रूप से आने के लिए जद्दोजहद कर रही है क्योंकि जानवरों की देखभाल और घरेलू काम करने की ज़िम्मेदारियों के कारण उसके पास अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए समय और मानसिक ऊर्जा नहीं बचती। इसके बाद ज़ेहन में बच्चों के उन छोटे-छोटे समूहों की तस्वीर उभरती है जो किसी एक के घर के बड़े कमरों और बरामदों में आराम से बैठकर पढ़ाई कर रहे हैं। ऐसा समुदाय के सदस्यों की उदारता की बदौलत सम्भव था। फिर उन बच्चों की छवियाँ भी दिमाग़ में आती हैं जो कठोर गर्मी और उमस में छोटे, तंग कमरों में बैठे हुए अँग्रेज़ी की कविताएँ और गीत गा रहे हैं। और इन सबसे ऊपर है, दुबले-पतले और पीले-से दिखने वाले बच्चों की छवियाँ, जो उनके स्कूल लगने के समय से बहुत पहले ही गाँव की गलियों में घूम रहे हैं। मेरे दिमाग़ में स्कूलों से दूर हुए बच्चों की ये मुख्य छवियाँ हैं। इन सभी स्मृतियों में उल्लेख के बिना भी जो प्रमुख हैं वे हैं हमारे शिक्षक, जो तमाम बाधाओं के बावजूद बच्चों के साथ शैक्षिक जुड़ाव बनाने और उसे जारी रखने के काम का सबसे बड़ा सहारा और प्रेरक शक्ति रहे हैं।

यदि यह यात्रा हमारे बच्चों के लिए आसान नहीं रही है, तो यह हमारे शिक्षकों के लिए उससे कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण रही है। उनके सामने आई कठिनाइयाँ केवल भावनात्मक और शारीरिक नहीं थीं, जिसमें संक्रमित होने के अपने डर से मुक़ाबला और उसका जोखिम उठाना शामिल था। उन्हें मोहल्ला कक्षाओं के लिए उपयुक्त स्थानों को ढूँढ़ने या बच्चों के घरों में नियमित रूप से आने-जाने में आई शारीरिक असुविधा का सामना करना पड़ता था। उनकी ज़िम्मेदारियों में अन्य चुनौतियाँ और बढ़ गईं थीं जैसे असुविधाजनक स्थान, योजनाओं और स्थानों में बार-बार बदलाव और मौसम का प्रकोप। लेकिन इन सबसे अधिक बढ़कर था सीखने को सम्भव बनाने और बेहद प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसे जारी रखने के लिए सर्वोत्तम तरीक़ों व कार्यनीतियों का पता लगाने का संघर्ष। कहने की ज़रूरत नहीं है कि इसमें योजना बनाने, चर्चाओं, संशोधनों और योजनाओं के क्रियान्वयन के कई दौर शामिल थे, जैसे ऑडियो-विज़ुअल साधनों का उपयोग, वर्कशीट देना, विद्यार्थियों को फ़ोन पर उनके कार्यों को करने में मदद करना, एक-एक बच्चे को रूबरू होकर जोड़ना या छोटे बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) समूहों में जोड़ना, विभिन्न प्रकार के संसाधनों, कार्यों और विधियों (बातचीत, चर्चा और स्पष्टीकरण) का उपयोग सहयोग के रूप में करना और फिर कक्षा-वार समूहों का रूप देना।

भविष्य की योजनाएँ

अब जब हम इस यात्रा को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो सबसे पहले हमें एहसास होता है कि कठिन समय में हमारे प्रयासों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। उदाहरण के लिए, पहले हमारे स्कूलों में वर्कशीट का उपयोग आम नहीं था, लेकिन अब हम कार्य-आधारित सीखने के अवसर पैदा करने के लिए नियमित रूप से वर्कशीटों का उपयोग कर रहे हैं। दूसरा, ऑनलाइन मोड, जो शुरू में हमारे सभी स्कूलों की सभी कक्षाओं के लिए उपयोग किया गया था, अब कुछ सफलता के साथ सिर्फ़ यादगीर (कर्नाटक) और धमतरी (छत्तीसगढ़) में प्री-प्राइमरी कक्षाओं के लिए उपयोग किया जा रहा है। इसी तरह, एमजीएमएल समूहों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने की कार्यनीतियों के बारे में सोचने के लिए हमने कभी इतना मजबूर महसूस नहीं किया। लेकिन अब, हमारे शिक्षक बच्चों को जोड़ियों और छोटे समूहों में प्रभावी ढंग से काम कराने में ज़्यादा सक्षम हो गए हैं।

पाठ्यचर्या व सह-पाठ्यचर्या सम्बन्धी विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने और स्कूलों से बच्चों की लम्बी अनुपस्थिति के दौरान उन्हें सार्थक ढंग से व्यस्त रखने के लिए बाल साहित्य का उपयोग करने के शैक्षणिक लाभों के बारे में हम हमेशा से जानते थे लेकिन हम इसे इतने खुलकर और सार्थक तरीक़े से कभी भी उपयोग नहीं कर सके थे, जैसा हमने लॉकडाउन के दौरान किया। कुछ स्कूलों ने नवाचार भी किए, जैसे डायरी लेखन और चित्रकला कराना। इसके साथ ही, दिन की शुरुआत में नियमित रूप से बच्चों की पहली भाषा में और अँग्रेज़ी में कविता और गीतों का सामूहिक पाठ छोटे और बड़े, दोनों तरह के विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी अभ्यास था।

संक्षेप में, ग़ैर-स्कूली शिक्षण अवधियों में हमारे शिक्षकों द्वारा प्रयोग के तौर पर किए गए विभिन्न प्रयासों की बदौलत अब उन्हें भाषाएँ और अन्य विषय पढ़ाने के विभिन्न तरीक़ों और विधियों के बारे में अधिक जानकारी और समझ हासिल हो गई है। उम्मीद है कि हमारे स्कूलों में बहुविध शिक्षण बना रहेगा और सीखने के विभिन्न तरीक़ों के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाएगा।

आगे की राह

उम्मीद है कि इन कठिन हालात में प्राप्त हुई अन्तर्दृष्टियाँ सीखने को सुनिश्चित करने के शिक्षकों के साधनों का भण्डार बन जाएँगी। अब, चूँकि हमारे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ अधिक प्रभावी अकादमिक जुड़ाव रखने की बेहतर समझ और कार्यनीतियों से लैस हैं, इसलिए वे स्कूलों के फिर से खुलने और उनके पहले की तरह चलने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं। कुछ स्कूलों में माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थी बारी-बारी से कक्षा की आधी क्षमता में स्कूल आने लगे हैं। शिक्षक ऐसे अवसरों का अधिक-से-अधिक लाभ उठाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कुछ मामलों में, वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी घबराहट भरी जल्दबाज़ी भी महसूस कर रहे हैं। इसके अलावा, उन विद्यार्थियों की चिन्ता, जिन्हें नियमित रूप से नहीं जोड़ा जा सका था, शिक्षकों को अत्यधिक ढाँचागत तरीक़ों पर वापस ले जा रही है — जिनकी ख़ासियत है सीमित सिखाना और विद्यार्थियों से त्वरित सीखने की अपेक्षा रखना।

बाक़ी स्कूलों में पाठ योजनाओं, समय सारणियों और कार्यनीतियों का लगातार पुनरीक्षण जारी है जो उनकी तात्कालिक वास्तविकता पर अधिक केन्द्रित है। स्कूलों को फिर से खोलने की योजना किसी बड़े पैमाने पर नहीं हो पा रही है, शायद इसलिए कि इस सम्बन्ध में राज्यों में काफ़ी अनिश्चितता बनी हुई है। हालाँकि, वर्तमान स्थिति के बावजूद जब हम पीछे देखेंगे तो महसूस करेंगे कि इस कठिन हालात ने अप्रत्याशित चुनौतियों के समाधान निकालने, उन्हें आज़माकर देखने और अपने शिक्षण व व्यवस्था-प्रबन्धन सम्बन्धी योजनाओं पर सोच-विचार कर उन्हें संशोधित करने के अभ्यासों को अपनाने में हमारी मदद की है। इन अभ्यासों की निरन्तरता को बनाए रखने और उन्हें मज़बूती देने के लिए ज़रूरी है कि स्कूली जीवन की सुविधाजनक एवं यांत्रिक रूप से निर्धारित दिनचर्या और प्रक्रियाओं, त्वरित परिणामों की उम्मीद और संकुचित व सीमित दायरों में काम करने के जाल से बचा जाए। इस स्थिति में स्कूल का नेतृत्व करने वालों की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हम आशा करते हैं कि मुश्किल हालात में हासिल की गई इन सीखों को भुलाया नहीं जाएगा और वे सचेत स्कूली प्रक्रियाओं के एक भाग के रूप में और अधिक मज़बूती से स्थापित होंगी।

नोट : बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।

पल्लवी चतुर्वेदी 2012 से शिक्षकों के लिए अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण और अँग्रेज़ी के शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में कार्यशालाओं और पाठ्यक्रमों की रूपरेखा बनाने और उनका संचालन करने में लगी हुई हैं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ अपने नौ वर्षों के दौरान उन्होंने भोपाल, मध्य प्रदेश में सरकारी स्कूल के शिक्षकों और अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के शिक्षकों के साथ काम किया है। भोपाल में रहते हुए, उन्होंने भाषा शिक्षकों और डीएलएड पाठ्यक्रम पढ़ाने वाले शिक्षक-अध्यापकों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करने में भी योगदान दिया। इससे पहले, वे केन्द्रीय विद्यालय संगठन के साथ अँग्रेज़ी के स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में काम करती थीं। वर्तमान में वे सिरोही, राजस्थान में रहती हैं। उनसे pallavi.chaturvedi@azimpremjifoundatio.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनुज उपाध्याय

सामुदायिक अधिगम समूहों का जारी रहना ज़रूरी है

राघवेन्द्र बी टी

जैसा कई रिपोर्टों से हमें पता चला है, भारत में डिजिटल सेवाओं और संसाधनों के सामर्थ्य और पहुँच के लिए वह ज़रूरी आधार नहीं है जिसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर बच्चे को बाधारहित इंटरनेट सेवा के साथ स्मार्टफ़ोन/ डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए सीखने का समान अवसर मिले। कर्नाटक के सन्दर्भ में, शुरुआती समय में, जहाँ हो सका, शिक्षकों ने विद्यार्थियों को आभासी (virtual) कक्षाओं और व्हाट्सएप समूहों के ज़रिए जोड़ने का प्रयास किया। केवल प्राइवेट और पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले सुविधा-सम्पन्न परिवारों के बच्चे, जिनके पास इंटरनेट सेवाओं और स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता थी, उनके शिक्षकों द्वारा संचालित की जा रही ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले सके। जीती-जागती कक्षाओं से हटकर ऑनलाइन ढंग से सीखने की तरफ़ हुआ परिवर्तन आसान नहीं था और ज़्यादातर जगह यह तरीक़ा आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के बच्चों के लिए नामुमकिन था। हालाँकि अभिभावकों और शिक्षकों ने पूरी कोशिश की, लेकिन चन्द बच्चों की ही मदद की जा सकी।

शिक्षक इस विषय पर चिन्तित थे। होसपेट ब्लॉक (कर्नाटक) के एक प्रधान शिक्षक ने हमें बताया, 'कुछ दिन पहले, कक्षा पाँचवी का एक विद्यार्थी मेरे कार्यालय में था। वह राशन सामग्री लेने आया था। उसके सामग्री लेने के बाद, मैंने उसे रजिस्टर में दस्तख़त करने को बोला। लड़के ने कहा कि वह दस्तख़त करना भूल गया है और पूछा कि क्या वह उसके बदले अँगूठा लगा सकता है। मुझे हमारे तंत्र पर शर्म महसूस हुई। हमें बच्चों के साथ लगना पड़ेगा।'

विद्यागमा कार्यक्रम

शुरुआती समय में जब स्कूलों के फिर से खुलने पर अनिश्चितता बनी हुई थी, तब डिपार्टमेंट ऑफ़ पब्लिक इंस्ट्रक्शन (डीपीआई) ने निरन्तर शिक्षा का एक कार्यक्रम *विद्यागमा* के नाम से लाने का आदेश जारी किया। इस कार्यक्रम में शिक्षकों से कहा गया कि वे स्कूल को गाँवों में बच्चों के घरों तक ले जाएँ। शिक्षकों ने समुदायों में जाकर मन्दिर परिसरों, सामुदायिक भवनों व पेड़ों के नीचे कक्षाएँ लगाना शुरू कीं। कुछ महीने सफलतापूर्ण चलने के बाद, *कोविड-19* के बढ़ते मामलों की रिपोर्ट मिलने पर राज्य सरकार ने विद्यागमा कार्यक्रम बन्द कर दिया। शिक्षकों ने व्हाट्सएप के ज़रिए बच्चों को शिक्षा सामग्री भेजना जारी रखी और उन्हें डीडी चन्दना टीवी पर पाठों के देखने के लिए प्रेरित किया।

लेकिन कर्नाटक में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विद्यागमा फिर से प्रारम्भ करने की माँग करनी शुरू की और चूँकि ज़्यादातर परिवार इंटरनेट सेवाएँ पाने में असमर्थ थे, इसलिए राज्य सरकार ने कार्यक्रम फिर से शुरू किया और शिक्षकों को *कोविड-19* के सभी प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन करते हुए बच्चों के साथ स्कूल परिसर में कक्षा लगाने के लिए कहा। डिजिटल और आमने–सामने बैठकर होने वाली पढ़ाई के मिश्रण से कुछ हद तक डिजिटल फ़ासले को पाटा लेकिन फिर इस कार्यक्रम को भी देश में आई *कोविड-19* की दूसरी लहर के कारण बन्द करना पड़ा।

सामुदायिक अधिगम समूहों का बनना

विद्यागमा के बन्द होने पर शिक्षकों ने फिर से आभासी कक्षाओं के ज़रिए विद्यार्थियों से जुड़ना शुरू किया। परन्तु बाक़ी भारत की तरह ही हमारे होसपेट ब्लॉक में भी कुछ ही अभिभावक स्मार्टफ़ोन/ टैबलेट व इंटरनेट सेवाओं की व्यवस्था कर पाने में समर्थ थे और इस पर किए जाने वाले ख़र्च की भी उनकी एक सीमा थी। ऑनलाइन कक्षाएँ और एक कारण से भी अभिभावकों के लिए तक़लीफ़ का विषय थीं — वे अपने बच्चों को घर पर अकेला छोड़कर काम पर नहीं जा सकते थे। इस स्थिति के समाधान के रूप में सामुदायिक अधिगम समूहों (सीएलजी) का विचार उभरा और इसे शिक्षकों व पदाधिकारियों के साथ साझा किया गया।

जनवरी 2021 में, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों में सीखने का नुक़सान हुआ है। हमने इस रिपोर्ट को साझा करने और साथ ही भाषा एवं गणित में हुए सीखने के नुक़सानों की भरपाई करने वाले दूसरे विकल्पों की पहचान करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया। फ़ाउण्डेशन की टीमों ने सीखने के कक्षावार प्रतिफलों व अपेक्षित क्षमताओं पर आधारित वर्कशीट बनाईं। इस समय तक, कर्नाटक सरकार ने भी यह सुझाव दे दिया कि शिक्षक विशिष्ट योजनाओं के साथ बच्चों से जुड़ें और इसमें सामुदायिक संगठनों, स्वयंसेवियों और अभिभावकों का सहयोग लें।

हमने ब्लॉक के शिक्षा विभाग पदाधिकारियों, प्रधान शिक्षकों और शिक्षकों के साथ कक्षाओं का आयोजन किया। उन्हें फ़ाउण्डेशन के अध्ययन के परिणामों से यह विश्वास हो गया कि ऑनलाइन कक्षाओं और विद्यागमा से भी विद्यार्थियों के सीखने पर सकारात्मक प्रभाव नहीं हुआ है। अध्ययन का निष्कर्ष था कि ऑनलाइन कक्षाओं में जो सिखाने की प्रक्रियाएँ इस्तेमाल की गईं, वे बच्चों के सीखने के तरीक़े में सहायक नहीं थीं, क्योंकि बच्चे दरअसल अपने साथियों और शिक्षकों के साथ मिलकर गतिविधियों में मानसिक व शारीरिक रूप से भाग लेते हुए सीखते हैं। इस बात ने शिक्षकों और विद्यालय विकास एवं प्रबन्धक समितियों (एसडीएमसी) को सीएलजी लगाने के लिए प्रेरित किया। इन सीएलजी में समुदाय के स्वयंसेवी, जो आदर्श स्थिति में उस स्कूल में पढ़े हुए उसी इलाक़े के पुराने विद्यार्थी हो सकते थे, अपने ख़ाली समय में शिक्षकों और फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की मदद और सहयोग से इन बच्चों के साथ काम कर सकते थे।

जब हम यह प्रस्ताव शिक्षकों के पास ले गए, तब उनमें से ज़्यादातर ख़ुद से ही अपने विद्यार्थियों के साथ काम कर रहे थे क्योंकि नियमित स्कूल खुलने की कोई आशा न होने के हालात में बच्चों की सीखने की स्थिति और बिगड़ती जा रही थी।

इस समय तक, बच्चों ने बिना मास्क लगाए अपने दोस्तों के साथ बाहर जाना, मिलना शुरू कर दिया था और अपने हाथ साफ़ रखने के लिए साबुन/ सैनिटाइज़र का इस्तेमाल भी बन्द कर दिया था। उनके माता-पिता भी *कोविड-19* से डर कर बच्चों को इन सीएलजी में भेजने के लिए चिन्तित नहीं थे। बल्कि अधिकांश गाँवों में तो वे इसके प्रति उत्साहित थे। शिक्षकों ने भी इसके लिए स्वाभाविक रूप से प्रोत्साहित होने की वजह से अपने प्रयासों को बनाए रखा। इन कोशिशों के ज़रिए तमाम समस्याओं का निराकरण हुआ जैसे डिजिटल उपकरण और इंटरनेट सेवाएँ हासिल न कर पाना या उनकी उपलब्धता सुनिश्चित न कर पाना, किसी बड़े का अनिवार्य रूप से बच्चों के साथ होना और इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या।

ये समूह काम कैसे करते थे

हर स्कूल में विद्यार्थियों की कुल संख्या का ध्यान रखते हुए शिक्षकों ने आनुपातिक संख्या में, विद्यार्थियों के समुदाय से ही आने वाले स्वयंसेवी चुनने का फ़ैसला किया। इन स्वयंसेवियों के साथ 15-20 विद्यार्थियों की सूची साझा की गई, जिनके साथ उन्हें अपने ख़ाली समय में रोज़ 60 से 90 मिनट के लिए सीएलजी शुरू करनी थीं। इन स्वयंसेवियों को आवश्यक सहायता देने के लिए, शिक्षक हर सप्ताह हर सीएलजी में दो-तीन बार जाते थे।

शुरुआत में इन स्वयंसेवियों से कहा गया कि वे बच्चों को गाने, कहानी सुनाने, चित्र बनाने, चित्रकथाएँ /पिक्चर कार्ड देखने की गतिविधियों में शामिल करें ताकि वे और उनके विद्यार्थी, दोनों ही स्कूली शिक्षा में आई दरार से उपजी ज़रूरतों से वाक़िफ़ हो जाएँ। वर्कशीटों का एक सेट, जिस पर पहले एक कार्यशाला में चर्चा हुई थी, शिक्षकों को दिया गया और प्रधान शिक्षकों ने टीएलएम (शिक्षण अधिगम सामग्री), गणित की किट और अन्य संसाधन सभी स्वयंसेवियों को उपलब्ध कराए ताकि वे इनका इस्तेमाल बच्चों के साथ करते हुए उन्हें वाँछनीय क्षमताएँ पाने में मदद कर सकें।

हर हफ़्ते ये स्वयंसेवी स्कूल में इकट्ठे होकर बच्चों के साथ अगले हफ़्ते की जाने वाली अकादमिक गतिविधियों की योजनाएँ बनाते थे। साथ ही वे पिछले हफ़्ते किए गए अपने प्रयासों की समीक्षा करते थे और सामने आई चुनौतियों का निराकरण करने की कोशिश करते थे। इन प्रयासों ने डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट सेवाओं पर निर्भरता कम कर दी।

इस वैश्विक महामारी की परिस्थिति में, इन सीएलजी ने इच्छुक स्वयंसेवियों को अपने ख़ाली समय में, अनौपचारिक रूप से अपने ही इलाक़े के बच्चों का ध्यान रखने का मौक़ा दिया। अभिभावकों ने सीएलजी में अपने बच्चों की हाज़िरी सुनिश्चित कर और कक्षाओं के लिए जगह प्रदान कर इन स्वयंसेवियों का साथ दिया।

शिक्षकों को अपने पेशेवर और सामाजिक कर्तव्य निभाने का एक नया रास्ता मिला। वे सभी मुमकिन रणनीतियों को काम में लाकर बच्चों में हो रही सीख की कमी को कम करने की कोशिश कर रहे थे। हमने जिन शिक्षकों के साथ सम्पर्क कर उनका सहयोग किया, उनमें से अधिकांश का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चों के पास भाषा और गणित के बुनियादी कौशल हों जो मौजूदा कक्षाओं में अपना सफ़र जारी रखने में उनकी मदद करें और उन्हें पिछली कक्षाओं की सीखों की कमियों को न ढोना पड़े।

स्कूल फिर खुलने पर

हमारे वर्तमान प्रयासों का इरादा यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे सीखने की प्रक्रिया में लगातार लगे रहें और जब फिर से स्कूल खुलें, तब वे अपनी पढ़ाई, कक्षावार क्षमताएँ पाते हुए बिना किसी कठिनाई के जारी रख सकें। सामुदायिक स्वयंसेवियों व ग्राम पंचायत पुस्तकालय प्रभारी का सहयोग स्कूल खुलने के बाद भी मिलता रहेगा। चूँकि ज़्यादातर माता–पिता ख़ुद अपने बच्चों के पढ़ने–सीखने पर ध्यान देने व उन्हें सहयोग करने में सक्षम नहीं हैं, अतः सीएलजी स्वयंसेवी एक साझा योजना के ज़रिए अभिभावकों और बच्चों के साथ मिलकर काम करेंगे और शिक्षक, ग्राम पंचायत पुस्तकालय

प्रभारी व फ़ाउण्डेशन के सदस्य भी इस योजना का अहम हिस्सा रहेंगे। इन सभी के सामूहिक प्रयासों से और शिक्षण सहायक सामग्री (टीएलएम जैसे फ़्लैश कार्ड, कहानियाँ, चित्र, चार्ट पेपर, रंग, वर्कशीट, ऑडियो–विडियो क्लिप व नियम पुस्तिकाएँ) के ज़रिए उन बच्चों के साथ सार्थक व दिलचस्प गतिविधियाँ आयोजित की जा रहीं हैं, जो पिछले 18 माह या उससे ज़्यादा समय से स्कूल से दूर हैं। ये टीएलएम नियमित तौर से ग्राम पंचायत पुस्तकालय, सीएलजी और स्कूलों में इस्तेमाल की जा सकती हैं। चूँकि हमने पुस्तकालय अध्यक्षों (लाइब्रेरियन) से सम्पर्क कर उन्हें शिक्षकों की मदद से पुस्तकालय में बच्चों को संलग्न करने हेतु क्षमता वर्धन में शामिल किया, गाँवों में कुछ ग्राम पंचायत पुस्तकालयों में बहुत बदलाव आया है और वे बच्चों के ज़्यादा अनुकूल बन गए हैं।

हर बच्चे के सीखने के स्तर के आधार पर, शिक्षक हर बच्चे के साथ जुड़ने वाली प्रक्रियाएँ व गतिविधियाँ रचेंगे और स्वयंसेवियों व फ़ाउण्डेशन सदस्यों का सहयोग माँगेंगे ताकि बच्चों के सीखने में आई दरारों को पाटा जा सके और उन्हें उनकी मौजूदा कक्षा-स्तर की सीखने की अपेक्षाओं तक लाया जा सके। योजनाएँ बनाने और सामने आई चुनौतियों को पूरा करने के लिए साप्ताहिक समीक्षाएँ व बैठकें आयोजित की जाएँगी। चूँकि अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों का सहयोग नहीं कर सकते, अतः वे शिक्षकों व स्वयंसेवियों के सम्पर्क में रहेंगे ताकि उनके बच्चों के सीखने के स्तरों में सुधार हो सके।

हमने उपलब्धियों के साथ जुड़ी हुई वर्कशीटों के इस्तेमाल पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिनके ज़रिए शिक्षक और स्वयंसेवी, बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान को बढ़ावा देते हुए, वियोजित स्कूली शिक्षा से उभरी सीखने की कठिनाइयों को कम कर सकते हैं। *चन्दना* टी वी पर *सामवेद* टेली-कक्षाएँ और उनके बाद होने वाली चर्चाओं को देखने का मौक़ा देकर शिक्षक बच्चों का सहयोग करेंगे। जहाँ सम्भव होगा, दो स्कूलों के बीच अन्तर-विद्यालय वीडियो वार्तालापों का आयोजन किया जाएगा। इससे दोनों ही स्कूलों के बच्चे उनके द्वारा पढ़ी-देखी गई कहानियों, चित्रों और कविताओं पर परस्पर बात कर पाएँगे।

हमने ठान लिया है कि होसपेट ब्लॉक में कोई भी बच्चा, शिक्षण-अधिगम प्रकिया को अंजाम देने वाले तंत्र की कमी की वजह से वंचित नहीं रहेगा। उन्हें अपनी उम्र और कक्षा के अनुरूप कौशलों को फिर से हासिल करने के वही अवसर दिए जाएँगे जो उनके इलाक़े के किन्हीं सुविधा-सम्पन्न बच्चों को मिलेंगे।

राघवेन्द्र बी टी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से 2016 में फ़ेलो के तौर पर जुड़े। आजकल वे कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के होसपेट, बेल्लारी स्थित ज़िला संस्थान में प्रारम्भिक भाषा, प्रारम्भिक गणित एवं अँग्रेज़ी के स्रोत व्यक्ति हैं। इससे पहले, वे एक निजी प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज में पढ़ाते थे। उनसे raghavendra.bt@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनिका कुकरेजा

कला : विद्यार्थियों को स्कूल से फिर से जोड़ने के लिए

रुचि कोटनाला

कई महीनों से चली आ रहीं परेशानियों और ठहराव के बाद आख़िरकार अब हमारा जीवन सामान्य हो रहा है। रोज़मर्रा की गतिविधियों को पुनः शुरू करने की प्रक्रिया में, सरकार अब स्कूलों को फिर से खोलने की पूरी तैयारी कर चुकी है। हालाँकि, स्कूल प्रशासन, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए यह काफ़ी चुनौतीपूर्ण होने वाला है। ख़ासतौर पर विद्यार्थियों के लिए, इतने लम्बे अन्तराल के बाद स्कूल में आश्वस्त और सहज महसूस करना काफ़ी ज़्यादा मुश्किल होगा। इसलिए यह काफ़ी महत्त्वपूर्ण हो गया है कि कुछ ऐसी रणनीतियाँ बनाई जाएँ जो विद्यार्थियों को स्कूल में पूरे आत्मविश्वास और रुचि के साथ फिर से ढलने में मदद करें।

मेरा मानना है कि कला, विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ फिर से जोड़ने का प्रभावी साधन बन सकती है। एक कला शिक्षक होने के नाते मैंने एक कार्य योजना बनाई है। मेरी रणनीतियों के केन्द्र में होंगे : कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल, समूह-आधारित गतिविधियाँ और विषय का समावेश।

कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल

लॉकडाउन के दौरान, अधिकांश विद्यार्थी सामान्य कला सामग्री जैसे काग़ज़, रंग आदि प्राप्त करने में असमर्थ थे। इसलिए, मैंने उन्हें कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उनके घरों में और आसपास आसानी से उपलब्ध थीं। इन महीनों के दौरान विद्यार्थियों ने इस सामग्री से कई कलाकृतियाँ बनाईं। इसे स्कूल में भी जारी रखकर वे कक्षाओं में सहज हो सकेंगे।

कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल करने के कई फ़ायदे हैं। कभी-कभी विद्यार्थी, ख़ासतौर पर वे जो स्केचिंग में कुशल नहीं होते, काग़ज़, स्केच पेन, वॉटरकलर जैसी सामान्य सामग्री के साथ चित्रकला करते हुए ऊब जाते हैं, लेकिन उन्हें अपनी ऊब को व्यक्त करना मुश्किल लगता है। ऐसी स्थितियों में, कबाड़ और प्राकृतिक सामग्री का इस्तेमाल, सीखने की प्रक्रिया में आनन्द भरकर उनकी रुचि को फिर से विकसित करने और उनके संवेदी कौशलों को बढ़ाने में बहुत उपयोगी हो सकता है। चूँकि कबाड़ के इस्तेमाल के लिए कोई तयशुदा तकनीक नहीं है, इसलिए उनसे कोई कलाकृति बनाने के लिए काफ़ी रचनात्मकता, नवाचार और खोजबीन की ज़रूरत होती है। भले ही स्कूलों द्वारा विद्यार्थियों को स्कूल में कला की सारी सम्भव सामग्री मुहैया कराई जाती है, लेकिन घर में ज़्यादातर माता-पिता अपने बच्चों के लिए नियमित रूप से ऐसे संसाधन नहीं ख़रीद पाते। इस वजह से कई विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं कर पाते।

लेकिन, कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ें उनके घरों और परिवेश में आसानी से और काफ़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं। इसलिए, उनका इस्तेमाल करके विद्यार्थी ज़्यादा ख़र्च किए बिना, अपनी कलात्मक यात्रा को आराम से जारी रख सकते हैं। इसके अलावा, कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों के साथ काम करने से उन्हें पुनर्चक्रण का महत्त्व समझ आता है और उनके बाल मन में प्रकृति के प्रति सम्मान भी पैदा होता है।

कुछ सुझाव

विद्यार्थी आमतौर पर कला की कक्षा में काग़ज़ पर लैंडस्केप और चित्र बनाते हैं। इसी तरह की गतिविधि कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों के साथ भी की जा सकती है। विद्यार्थियों को अपने परिवेश की छानबीन करने और कई तरह के पत्थर, डण्डियाँ, पत्तियाँ, कार्डबोर्ड, अख़बार, सुतली आदि इकट्ठा करने के लिए कहें। विद्यार्थी या तो इन्हें कार्डबोर्ड पर चिपकाकर कोई लैंडस्केप बना सकते हैं या चाहें तो कोई मॉडल बना सकते हैं।

कहानी सुनाने की गतिविधियों के लिए, विद्यार्थी पुराने मोज़े, कपड़े, अख़बार और डण्डियों आदि की मदद से कठपुतलियाँ और मुखौटे बना सकते हैं।

समूह गतिविधियाँ

बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए उनका समूहों में काम करना ज़रूरी है। कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो समूह में काम करते हुए बेहतर प्रदर्शन करते हैं। लेकिन लॉकडाउन के दौरान विद्यार्थियों ने व्यक्तिगत रूप से काम किया, जिससे न केवल उनकी सीखने की क्षमता प्रभावित हुई, बल्कि कई मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी पैदा हुईं। मैंने ऐसी स्थितियाँ भी देखीं कि बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं से बचने की कोशिश कर रहे हैं, अपने काम में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं या अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में झिझक रहे हैं। विद्यार्थियों के स्कूल लौटने पर इन मुद्दों को हल करना

बहुत ज़रूरी है। इसके लिए मेरी योजना कुछ समूह आधारित गतिविधियाँ करने की है, जिससे बच्चों को आपस में खुलकर बातचीत करने, अपने सहपाठियों के साथ पुनः रिश्ते बनाने और आत्मविश्वास हासिल करने का मौक़ा मिलेगा। इसके अलावा, यह उनके लिए सीखने की प्रक्रिया को और ज़्यादा मनोरंजक बना देगा।

कुछ सुझाव

विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों की मदद से स्कूल के बग़ीचे को सजाएँ। इसके लिए शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग टीमों में बाँट सकते हैं और हर टीम को एक ख़ास जगह देकर उसे किसी ख़ास थीम पर सजाने के लिए कह सकते हैं, जैसे कि पक्षी, कीड़े, फूल आदि। योजना बनाने और चीज़ें इकट्ठी करने, सजावट करने, दस्तावेज़ीकरण और प्रस्तुति में टीम के सभी सदस्यों को शामिल होना चाहिए। काम पूरा करने के बाद, हरेक टीम को न केवल अपने साथियों का बल्कि अन्य टीमों के सदस्यों का भी समकक्ष मूल्यांकन करना होगा। इसी तरह, हम कहानी सुनाने के सत्रों के लिए भी समूह-आधारित गतिविधियों का आयोजन कर सकते हैं। यहाँ हर टीम स्टोरीबुक, मॉडल और कठपुतलियाँ आदि बनाकर अपनी कहानी को रच सकती है और प्रस्तुत कर सकती है।

अन्य विषयों के साथ कला का समावेश

हम सभी जानते हैं कि स्कूल का वातावरण सीखने की प्रक्रिया में बहुत अहम भूमिका निभाता है और स्कूल अपने विद्यार्थियों के लिए एक उपयुक्त वातावरण बनाने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, कई महीनों से बच्चे अपने घरों तक ही सीमित हैं और अब उनके लिए फिर से स्कूल के माहौल में ढलना मुश्किल होने वाला है। इससे न केवल उनकी पढ़ाई में दिलचस्पी घट सकती है बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी प्रभावित हो सकती है। तो सीखने को रोचक और मनोरंजक बनाना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने के लिए कला को सामाजिक विज्ञान, गणित, भाषा आदि जैसे विषयों के साथ जोड़ना एक प्रभावी रणनीति होगी।

कुछ सुझाव

उदाहरण के लिए, गणित में 'बड़ा और छोटा' की अवधारणा सिखाने के लिए विद्यार्थियों को हाथी, शेर, कुत्ते और चूहे जैसे जानवरों के चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसी तरह विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी और उनकी मातृभाषा, दोनों में

एपीएस मातली के विद्यार्थियों द्वारा बेकार सामग्री से बनाई गई कलाकृतियाँ और रचनाएँ

कविताओं और कहानियों के लिए स्टोरीबोर्ड और मॉडल बनाने के लिए कहा जा सकता है। सामाजिक विज्ञान में भी प्रागैतिहासिक युग के बारे में समझाने के लिए विद्यार्थियों को लकड़ी और पत्थरों से हथियार और उपकरण बनाने के लिए कहा जा सकता है। हम उन्हें फूलों, सब्ज़ियों, फलों, चूना पत्थर आदि से बनाए गए प्राकृतिक रंगों की मदद से पत्थरों को रंगने के लिए भी कह सकते हैं। इसके अलावा विद्यार्थी पेड़ की छाल, कपड़े या मिट्टी पर चित्रलिपि लिख सकते हैं या चित्र बना सकते हैं।

नमूना पाठ योजना : कक्षा 1

विषय : दृश्य कला (हिन्दी के साथ समावेश)

टॉपिक : अध्याय 4 : पत्ते ही पत्ते

उद्देश्य :

1. सीखने की प्रक्रिया को मनोरंजक और दिलचस्प बनाना
2. विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता, नवाचार और कल्पना को खुलकर प्रदर्शित करने का मौक़ा देना
3. विद्यार्थियों को कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों से कलात्मक चीज़ें बनाने के लिए प्रोत्साहित करना
4. टीम वर्क, अन्वेषण, योजना बनाना, विचारों का आदान-प्रदान और प्रस्तुतीकरण जैसे गुणों का विकास करना

साधन :

1. एनसीईआरटी कक्षा 1 हिन्दी पाठ्यपुस्तक (रिमझिम)
2. इंटरनेट से नमूना चित्र/ तस्वीरें
3. यूट्यूब से नमूना वीडियो

शिक्षण योजना :

1. गतिविधि शुरू करने से पहले, शिक्षक विद्यार्थियों को अपने आसपास से अलग-अलग तरह की पत्तियों को इकट्ठा करने के लिए कहेंगे। विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे नीचे गिरी हुई पत्तियों को ही इकट्ठा करें, उन्हें पौधों से न तोड़ें।
2. इसके बाद, शिक्षक विद्यार्थियों से कहेंगे कि वे स्वयं के द्वारा और अन्य विद्यार्थियों द्वारा इकट्ठी की गईं पत्तियों का बारीक़ी से निरीक्षण करें। इसके बाद, पत्तियों के आकार, आकृति, रंग और बनावट के आधार पर उनके बीच के अन्तरों पर कक्षा में चर्चा की जाएगी।
3. शिक्षक कुछ प्रश्न भी पूछेंगे, जैसे पौधों के लिए पत्तियों का क्या महत्त्व है? नीचे गिरी हुईं पत्तियों और पौधे पर लगी हुई पत्तियों में क्या फ़र्क़ है? अलग-अलग पौधों में अलग-अलग तरह की पत्तियाँ क्यों होती हैं?
4. इसके बाद शिक्षक पत्तियों से बनी कलाकृतियों के कुछ वीडियो और फ़ोटो दिखाएँगे।
5. फिर, शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों में बाँटेंगे और प्रत्येक समूह को पत्तियों और फूलों से एक बन्दनवार (दरवाज़े पर लटकने वाली सजावट) बनाने के लिए कहेंगे। विद्यार्थी अपने घर और कक्षाओं को सजाने के लिए काग़ज़ या कपड़े के फूल और पैटर्न बना सकते हैं।
6. अगली गतिविधि होगी, 'लीफ़ प्रिंटिंग'। इसमें समूह का हर सदस्य एक अलग प्रकार की पत्ती लाकर एक ख़ास रंग का चयन करेगा, फिर पूरा समूह साथ मिलकर एक बड़े आकार के काग़ज़ पर पत्तियों के निशान बनाएगा। रंगों और पत्तियों के आकार का संयोजन कई दिलचस्प पैटर्न तैयार करेगा।
7. इसके बाद विद्यार्थी 'पत्तियों के प्राणी/ आकृतियाँ' गतिविधि करेंगे। इसमें विद्यार्थियों को पत्तियों का उपयोग करके कुछ प्राणी या आकृतियाँ (बिल्ली, मछली, कुत्ता, पक्षी, इन्सान, घर, नाव आदि) बनानी होंगी।
8. अन्त में, शिक्षक अध्याय 4 : 'पत्ते-ही-पत्ते' को ज़ोर से पढ़ेंगे। शिक्षक विद्यार्थियों को कठिन और नए शब्दों को समझने और उनका उच्चारण करने में भी मदद करेंगे।
9. इन गतिविधियों के दौरान, शिक्षक विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ध्यान से देखेंगे और उनका दस्तावेज़ीकरण करेंगे।

मूल्यांकन :

बिन्दु 1-4 : 1-3 के पैमाने पर मूल्यांकन करें

बिन्दु 5-8 एक पंक्ति में उत्तर दें

1. कला में सहकारी भागीदारी दिखाता है और अपने साथियों की सराहना करता है।
2. रंगों, आकृतियों, बनावटों, ध्वनियों और पैटर्नों को वर्गीकृत करता/ पहचानता है।

3. कलाकृतियों को बनाने और अभिनय करने के लिए विभिन्न सामग्रियों को ढूँढ़ने में आनन्द लेता है।
4. उन चीज़ों के बारे में बात करता है जो उसे सुन्दर लगती हैं या नहीं लगती हैं; प्रकृति की सुन्दरता को पसन्द करता है।
5. आपने इस गतिविधि में क्या अच्छा किया?
6. इसे आगे और बेहतर करने के लिए आप क्या सुधार करेंगे?
7. वे बच्चे जो इस गतिविधि में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।
8. वे बच्चे जिन्हें ज़्यादा मार्गदर्शन की ज़रूरत है।

Endnotes

i https://www.youtube.com/watch?v=eBEPR7wziDM
https://www.youtube.com/watch?v=7kIYABvcvCo
https://www.youtube.com/watch?v=h8mkkC9fs1k

रूचि कोटनाला उत्तरकाशी के मातली स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कला और शिल्प विषय पढ़ाती हैं। वे एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड से ड्राइंग और पेंटिंग में स्नातकोत्तर हैं। कला और शिल्प के अलावा उन्हें यात्राएँ करने, नृत्य और संगीत में भी रुचि है। जीवन के लिए उनका दर्शन है — छोटी चीज़ों का आनन्द लें, भौतिकवादी बोझ को कम रखें और जो कुछ भी आपके पास है उसके लिए आभारी रहें। उनसे ruchi.kotnala@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमेय कान्त

ख़ुद से सीखने को प्रोत्साहन देना | सरकार, स्कूल और परिवार की भूमिका

सज्जन कुमार चौधरी

'सीखना' एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है; हालाँकि सीखने के लिए शुरुआती कुछ वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। कोविड-19 महामारी बच्चों की शिक्षा पर एक आपदा के रूप में आई है और इस नुक़सान के परिणामों को कम करना एवं सीखने की खाई को पाटना बहुत चुनौतीपूर्ण होने वाला है। इसके लिए सरकार द्वारा उठाए गए क़दम प्राथमिक स्कूलों के विद्यार्थियों द्वारा पिछली कक्षाओं में सीखी गई बातों को बनाए रखने तक में प्रभावकारी नहीं हैं। राजस्थान सरकार ने विद्यार्थियों को वर्कशीट, वीडियो, क्विज़ और होमवर्क साझा करने के लिए व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म पर स्माइल (Social Media Interface for Learning Engagements/ SMILE) कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन में कई कारणों से बाधाएँ आईं, जैसे — डिजिटल उपकरणों का अभाव, कमज़ोर इंटरनेट बैंडविड्थ, स्कूलों व विद्यार्थियों की भौगोलिक स्थिति, स्तर-उपयुक्त विषयवस्तु/ सामग्री से सम्बन्धित मुद्दे, शिक्षकों से निरन्तर मार्गदर्शन की आवश्यकता और अपने बच्चों के सीखने के प्रति अभिभावकों की जागरूकता व चिन्ता आदि। बहुत ही कम शिक्षक लॉकडाउन के दौरान अपनी पूरी क्षमता के मुताबिक़ 'मोहल्ला (सामुदायिक) कक्षाएँ' संचालित कर सके।

विद्यार्थियों को उनके सीखने के स्तर का आकलन किए बिना ही अगली कक्षा में पदोन्नत किया जा रहा है। मार्च 2020 से ही विद्यार्थी स्कूल से बाहर हैं और उन्होंने नई कक्षा के स्तर की क्षमताओं को नहीं सीखा है। बल्कि वे अपनी पिछली कक्षा में सीखी गई बहुत-सी बातें भी भूल गए हैं। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी जो मार्च 2020 में कक्षा 3 में था और अब कक्षा 5 में है, हक़ीक़त में शायद वह अब भी कक्षा 3 के स्तर पर ही हो और कुछ मामलों में तो हो सकता है कि वह कक्षा 2 के स्तर तक फिसल गया हो। क्योंकि सम्भव है कि वह किसी विषय की मूलभूत अवधारणाओं को भूल गया हो। स्कूलों के बन्द होने के कारण, बच्चों में प्रतिगमन (regression) अब एक लक्षण के रूप में स्पष्ट देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2005 'विद्यार्थी-केन्द्रित' शिक्षण विधियों की अनुशंसा करती है। यह एक व्यापक शब्द है, जिसमें कक्षा की गतिविधियों से लेकर अध्ययन सामग्री और अभिभावकों की भागीदारी तक कई आयाम शामिल हैं। यदि हमारी सभी प्रक्रियाएँ 'विद्यार्थी-केन्द्रित' रहीं होतीं तो सम्भवतः आज विद्यार्थियों के सीखने का स्तर बेहतर होता। यहाँ मैं विद्यार्थियों में ख़ुद से सीखने की स्थिति को प्रोत्साहन देने के लिए तीन स्तरों की योजनाओं का सुझाव दे रहा हूँ।

राज्य सरकार के स्तर पर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की अनुशंसा है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए, इसलिए राज्य स्तर पर विकसित होने वाली शिक्षण सामग्री में स्थानीय सन्दर्भ को शामिल किया जाना चाहिए। राज्य सरकार को उच्च गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री के विकास और अनुसन्धान के लिए प्रेरित, उत्साही और अनुभवी शिक्षाविदों का एक समूह बनाना चाहिए। यह अध्ययन सामग्री अपने आप स्पष्ट होने वाली होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी शिक्षकों और अभिभावकों के कुछ मार्गदर्शन के साथ स्वयं ही सीख सकें। दरअसल, सरकार को विद्यार्थियों के लिए ख़ुद से सीख पाने की ऐसी कार्यपुस्तिकाएँ विकसित करनी चाहिए जिनसे वे घर पर अपना सीखना जारी रख सकें।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चों में *कोविड-19* संक्रमण का जोखिम कम होता है क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली मज़बूत होती है। ऐसे में लॉकडाउन के दौरान भी आधी या एक तिहाई क्षमता के साथ स्कूल चलाए जा सकते हैं। चूँकि *कोविड-19* का प्रसार पूरे राज्य में एक समान नहीं होता, इसलिए सभी स्कूलों को एक साथ बन्द करने की आवश्यकता नहीं है। ज़िला या उपखण्ड स्तर पर *कोविड-19* के प्रसार को रोकने के लिए स्कूलों को खोलने और बन्द करने के निर्णय को विकेन्द्रीकृत करने में कोई हानि नहीं है।

स्कूल स्तर पर

हमने पहले कभी इस तरह की चुनौती का सामना नहीं किया है, इसलिए ऐसी स्थिति से निपटने के कोई पूर्व अनुभव भी नहीं हैं। इस कठिन समय में भी कई शिक्षकों ने हालातों पर विजय प्राप्त की और उदाहरण प्रस्तुत किया कि बदली हुई परिस्थितियों में भी किसी-न-किसी रूप में अपना काम जारी रखा जा सकता है। ऐसे शिक्षकों के साथ संवाद से स्थिति बेहतर करने के प्रयासों को कुछ दिशा मिल सकती है।

1. कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों की उपस्थिति के साथ होने वाले शिक्षण का कोई विकल्प नहीं है, विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में, जहाँ बच्चों को शिक्षकों के सहयोग की आवश्यकता होती है। इसलिए, कुछ असाधारण शिक्षकों ने अभिभावकों से बात की और उनके साथ मिलकर एक ऐसा स्थान खोजा जहाँ वे आसपास के घरों या समुदायों के विद्यार्थियों को पढ़ा सकते थे। इन व्यवस्थाओं में, कई कक्षाओं और स्तरों के विद्यार्थियों ने एक साथ पढ़ाई की। लेकिन शिक्षकों ने इस स्थिति के लिए भी अच्छी तैयारी की और प्रत्येक विद्यार्थी की मदद करने की पूरी कोशिश की।
2. विद्यार्थी-केन्द्रित शिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षकों को शुरू से ही इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि किस तरह विद्यार्थी अपने सीखने की प्रक्रिया की ज़िम्मेदारी ख़ुद लें। ये शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी करने का अवसर देकर, उन्हें स्वयं अवधारणाओं को गढ़ने में मदद कर सकते हैं। इसके लिए शिक्षकों को प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने की स्थिति का आकलन करके और उनकी ज़रूरतों एवं सहयोग की आवश्यकता का विश्लेषण करके एक सहयोग योजना तैयार करनी होगी।
3. कई शोधकर्ताओं के साथ ही साथ हमारे अनुभव भी यह बताते हैं कि हर विद्यार्थी दूसरे से अलग होता है और हरेक अलग तरह से सीखता है। इसके अतिरिक्त, आप एक ही कक्षा में विद्यार्थियों को सीखने के विभिन्न स्तरों पर भी पाएँगे। यही कारण है कि हम केवल निर्धारित पाठ्यपुस्तक और कार्यपुस्तिका पर निर्भर नहीं रह सकते, जो सभी विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो सकतीं। ऐसे मामले में शिक्षकों ने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उसकी अवधारणाओं/ पाठों की मौजूदा समझ एवं सीखने के लक्षित परिणाम हासिल करने के लिए किए जाने कार्य को जोड़ने के लिए पूरक वर्कशीट तैयार की हैं।

परिवार के स्तर पर

यह एक ज्ञात तथ्य है कि पारिवारिक वातावरण भी सीखने को प्रभावित करता है। हम देख सकते हैं कि जिन विद्यार्थियों के अभिभावक उनकी शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं उनके सीखने में आया फ़ासला उन विद्यार्थियों की तुलना में कम है जिनके अभिभावक प्रतिबद्ध नहीं हैं। स्कूल जाने वाले कई विद्यार्थी पहली पीढ़ी के हैं, जिन्हें घर पर कोई शैक्षिक सहयोग नहीं मिलता। इस परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

इन शिक्षकों ने शिक्षा के महत्त्व और निरन्तर सीखने के अभ्यासों की भूमिका पर अभिभावकों को जागरूक किया। परामर्श के बाद कुछ अभिभावकों ने घर पर अपने बच्चे के अध्ययन के लिए एक सहयोगी वातावरण प्रदान करना शुरू कर दिया। शिक्षकों ने अभिभावकों के साथ मिलकर समुदाय के कुछ स्वयंसेवी सीनियर विद्यार्थियों की भी पहचान की और उन्हें आसपास रहने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया। जब शिक्षकों ने समुदाय का दौरा किया तो उन्होंने इन स्वयंसेवी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और शिक्षण योजना तैयार करने में इनकी मदद की।

सारांश

लॉकडाउन और महामारी (जिसका संकट अभी भी हमारे ऊपर मण्डरा रहा है) के पूरे दौर में स्कूली विद्यार्थियों की शिक्षा को जो झटका लगा है, वह हम सभी के लिए एक सीख रहा है कि हमें किसी भी विपरीत परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। एक बच्चे की शिक्षा के उपरोक्त तीनों स्तम्भों (सरकार, स्कूल और परिवार) को इस शिक्षा पर आने वाले सभी ख़तरों से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। भविष्य में, हमें पूरी तरह से तैयार रहना होगा और किसी भी परिस्थिति में विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रियाओं को बाधित या बन्द नहीं किया जाना चाहिए।

सज्जन कुमार चौधरी ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय खनन विद्यालय, धनबाद से गणित और कंप्यूटिंग में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्य के रूप में, वे शिक्षकों और शिक्षा-अधिकारियों के शैक्षणिक और पेशेवर विकास के लिए राजस्थान के बाड़मेर ज़िले के एक सरकारी स्कूल के साथ मिलकर काम करते हैं। उन्होंने गणित के परिप्रेक्ष्य, शिक्षणशास्त्र और अवधारणात्मक समझ के लिए कई प्रशिक्षण मॉड्यूल और सामग्रियाँ विकसित की हैं। साथ ही वे सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए गणित के शिक्षण पर कार्यशालाएँ संचालित करते रहे हैं। उनसे sajjan.choudhary@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : जितेन्द्र

कोविड के बाद स्कूलों में सामाजिक मेलजोल और संवाद

सारिया अली

स्कूल मेरे लिए सहज सम्बन्धों को विकसित करने के लिए सबसे अधिक आश्वस्त करने वाला सक्रिय स्थान था। यह वह जगह थी जहाँ किसी सख़्त शिक्षक को चकमा देते हुए, एक साथ प्रोजेक्ट वर्क करते हुए, दोपहर का खाना खाते हुए और अपने विचित्र, कल्पनाशील विचारों को साझा करते हुए दोस्तियाँ बनती हैं। बहुत-से लोगों के लिए ये दोस्तियाँ जीवन भर बनी रहती हैं। लेकिन *कोविड-19* महामारी के कारण स्कूल जाने वाले बच्चे आज अप्रत्याशित अलगाव का अनुभव कर रहे हैं। यह लेख इस एकाकी समय, इसके द्वारा पैदा किए गए फ़ासलों को ध्यान में रखने के साथ ही इस बात को भी मद्देनज़र रखते हुए लिखा गया है कि कोविड के बाद या जब भी स्कूल फिर से खुलेंगे तो इतने लम्बे अन्तराल के बाद संवाद और सीखने के एक सक्रिय स्थान के रूप में स्कूलों की क्या अहमियत होगी।

एक स्कूली ढाँचे के साथ मेरा क़रीबी जुड़ाव, मेरी स्कूली शिक्षा के पाँच साल बाद, राजस्थान के बाड़मेर में एक छोटे-से सरकारी प्राथमिक स्कूल में हुआ। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के एसोसिएट प्रोग्राम के तहत अनिवार्य स्कूली अभ्यास के हिस्से के रूप में मैंने लगभग चार महीने तक स्कूल में बच्चों की एक सीमित संख्या के साथ काम किया। इस काम के ज़रिए, मैं एक स्कूल में काम करने वाले सामाजिक आयामों की एक पुख़्ता समझ विकसित कर पाई। बाड़मेर ऐसा ज़िला है जहाँ आपकी जातीय पहचान बहुत अहमियत रखती है यानी लोग जाति को लेकर काफ़ी सचेत रहते हैं और स्थानीय लोगों की पूरी कोशिश रहती है कि आपसे पहली मुलाक़ात में ही वे आपकी जाति जान लें।

इसके साथ यह सच्चाई भी है कि बाड़मेर एक छितरी आबादी वाला ज़िला है, ख़ासतौर पर इसके ग्रामीण इलाकों में और लोग ढाणी नामक छोटे समूहों में रहते हैं, जो एक-दूसरे से काफ़ी दूरी पर स्थित होती हैं। जाति और ढाणी जैसे ढाँचे अस्तित्व में कैसे आए यह तब और स्पष्ट हो जाता है जब कोई यहाँ के सामाजिक आयामों को और क़रीब से देखता है — हर ढाणी में सिर्फ़ एक ही जाति के लोग रहते हैं। ऐसे सामाजिक ढाँचे में, सामुदायिक गौरव की भावना और समुदाय में फल-फूल रहे विचारों व संस्कृति को बच्चे कट्टरपन से ग्रहण करते हैं। वे जो भी देखते या सुनते हैं, वही आख़िरकार समाज के बारे में सीखते हैं।

स्कूल सामुदायिक ढाँचे के नियंत्रण को तोड़ने वाला वह पहला स्थान है जहाँ एक बच्चा ढाणी के बाहर क़दम रखता है। स्कूल एक ऐसा मंच बन जाता है जो बच्चों को वृहत समाज में मौजूद विविधताओं से परिचित होने और ऐसी जगह में ख़ुद को कैसे बनाए रखना है, इसे सीखने का मौक़ा देता है। साथ ही, स्कूल वह जगह भी हैं जहाँ एक बच्चे का व्यवहार दूसरी जातियों या धर्मों के लोगों के बारे में सीखी रूढ़ियों को दर्शाता है। इसलिए, बच्चों के बीच किसी भी तरह के अलगाववाद/ भेदभाव को ख़त्म करने के लिए स्कूल को सचेत रूप से दख़ल देना ही होगा।

कोविड के बाद यह कैसा रहने वाला है?

एक स्कूल के अन्दर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं को तोड़ना मुश्किल काम तो है पर अनिवार्य है। उदाहरण के लिए, मध्याह्न भोजन के लिए उच्च जाति के बच्चों द्वारा अपने ख़ुद के बर्तन लाने की प्रथा को तभी तोड़ा जा सकता है जब स्कूल इस पर प्रतिबन्ध लगाता है और इस तरह से बच्चों को नई सीख मिलती है। बदक़िस्मती से एक साल से भी ज़्यादा लम्बे अन्तराल ने बच्चों को न सिर्फ़ उनके घरों के अन्दर बन्द किया है, बल्कि घरों के भीतर हुई हर बातचीत को उन्होंने आत्मसात भी किया। अफ़सोसजनक बात यह है कि इस महामारी की संक्रामक प्रकृति ने कई रूढ़िवादी तरीक़ों से कुछ समुदायों के ख़िलाफ़ लोगों के नज़रियों में भी घुसपैठ की है। ऐसी स्थिति में जब नियमित स्कूल शुरू होंगे, तो बच्चों की आपस में होने वाली बातचीत के दौरान उनका बर्ताव कैसा रहेगा उसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। इतने लम्बे समय के बाद अपने दोस्तों से मिलने के उत्साह को देखते हुए और खेल, लंच व एक-दूसरे की कॉपियों से नक़ल करते हुए एक साथ स्कूल की यादों का आनन्द लेने के सन्दर्भ में यह सकारात्मक हो सकता है। दूसरी ओर, बच्चे जिस डर के साथ स्कूल आएँगे उस नज़रिए से देखें तो यह नकारात्मक भी हो सकता है। यह डर वायरस की चपेट में आने या किसी ख़ास समुदाय के लोगों से सामाजिक दूरी बनाए रखने के बारे में हो सकता है।

बाद वाली आशंका, सामुदायिक कक्षाओं के दौरान हुए मेरे फ़ील्ड अनुभवों में से आई है, जहाँ एक बच्ची (जिसे कक्षा के अन्दर मास्क लगाने के लिए कई बार याद दिलाने की ज़रूरत पड़ती है) ने एक ख़ास समुदाय के व्यक्ति के गुज़रने पर अपने सहपाठियों को मास्क पहनने के लिए चेताया था।

मैंने इस बच्ची के पूर्वाग्रह को समझने के लिए उसके साथ लम्बी चर्चा की। उसने बताया कि हमारे देश में कोरोनावायरस के फैलने के लिए एक ख़ास समुदाय ज़िम्मेदार था और हमें उनसे सावधान रहना चाहिए। उसने अपने माता-पिता को इस बारे में चर्चा करते सुना था। यह उन समस्याओं में से एक है जो कोविड के बाद पैदा हो सकती हैं। यह सिर्फ़ बीमारी फैलने के डर से एक समुदाय से दूरी बनाए रखने तक ही सीमित नहीं होने वाला है बल्कि समुदायों के भीतर एक जाति या धर्म के ख़िलाफ़ भेदभावपूर्ण व्यवहार को और भी गहरा कर सकता है।

इस मुद्दे का एक उजला पहलू भी है। जहाँ प्राइमरी स्कूलों में बच्चों में जाति और धर्म की उतनी विविधता देखने को नहीं मिलती, जितनी मिडिल और हाई स्कूलों में मिलती है। अब महामारी के दौरान, क्लास प्रमोशन (कक्षोन्नति) करने से बच्चे दो क्लास आगे हो गए हैं यानी एक बच्चा जो चौथी कक्षा में था, अब छठी कक्षा में होगा। इसका मतलब है कि जब भी स्कूल फिर से शुरू होंगे, यह बच्चा ऊँचे दर्जे में और एक अधिक विविध स्कूल में पढ़ेगा। ऐसे परिदृश्य में, स्कूल की तैयारी पर सक्रिय तरीक़े से विचार करने की ज़रूरत है। सबसे पहले तो, स्कूल के लिए ज़िम्मेदार हितधारकों को एक संवेदनशील, धैर्यवान समझ के साथ शुरुआत करनी होगी कि बच्चे अप्रत्याशित तरीक़े से व्यवहार कर सकते हैं, ख़ासतौर पर छोटे बच्चे, क्योंकि वे लम्बे समय से डर से भरे हुए और भ्रमित करने वाले दौर में रह रहे हैं।

दूसरा, कुछ बच्चे ज़बानी तौर पर या अपने व्यवहार में किसी भी प्रकार का सामाजिक भेदभावपूर्ण रवैया दिखा सकते हैं। ऐसे में स्कूल को सक्रिय रूप से दख़ल करके यह सुनिश्चित करना होगा कि अनिवार्य शारीरिक दूरी वास्तविक सामाजिक दूरी में न बदल जाए। ऐसे मामलों में दख़ल करने का मतलब डाँटने-फटकारने जैसा कुछ नहीं हो सकता, बल्कि नैतिक रूप से बाध्य संवाद या फिर गतिविधियों, कहानियों, नाटक और चर्चाओं से निकाले गए निष्कर्ष हो सकते हैं जो बच्चों में एक नया नज़रिया और सीख लाएँगे।

आख़िर में, यह ज़रूरी है कि समुदाय के सदस्यों के साथ स्कूल के मेलजोल, संवाद को बढ़ाया जाए। यह संवाद इस लक्ष्य के साथ किया जाना चाहिए कि उन्होंने महामारी के दौरान अगर किसी अन्य समुदाय या प्रथा के ख़िलाफ़ किसी भी प्रकार के अवैज्ञानिक मिथक विकसित कर लिए हों तो उन्हें तोड़ा जाए। ये काम चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं क्योंकि लगभग दो सालों के वक़्त में विकसित हुई सभी रूढ़ियों को तोड़ना आसान नहीं होगा, लेकिन आने वाली पीढ़ियों में जाति व धार्मिक भेदभाव अपनी पैठ न जमा पाएँ, इसे सुनिश्चित करने में स्कूल एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

यहाँ उजागर की गई समस्या और उसका समाधान एक स्थितिपरक चिन्ता की तरह लग सकते हैं, लेकिन इसी तरह से किसी के ख़िलाफ़ और किसी के पक्ष में अफ़साने गढ़े जाते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचाए जाते हैं। किसी भी प्रकार की नफ़रत फैलाने वाले और ग़लतफ़हमी पैदा करने वाले विचारों से निपटा ही जाना चाहिए। ख़ासतौर से उन बच्चों के लिए जो कि महामारी फैलने के बाद पहले सार्वजनिक स्थान के रूप में स्कूल में दाख़िल होंगे। यह वह जगह है जहाँ दो साल में हासिल हुईं उनकी सभी सीखें व्यवहारिक रूप ले सकती हैं, इसलिए उनके उचित मार्गदर्शन की ज़िम्मेदारी शिक्षकों पर है। दरअसल, इस तरह के सामाजिक मेलजोल का इस्तेमाल किसी के भी प्रति बच्चों में आई ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिए एक वरदान की तरह किया जा सकता है।

अन्त में, स्कूलों के फिर से खोले जाने को बच्चों और समुदायों, दोनों को सही सन्देश देकर सामाजिक रूप से सामंजस्यपूर्ण व्यवहारों को बहाल करने के एक आशावादी अवसर के रूप में देखा जा सकता है।

सारिया अली अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में एसोसिएट हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए (विकास) और दिल्ली विश्वविद्यालय के मिराण्डा हाउस कॉलेज से दर्शनशास्त्र में बीए की उपाधि प्राप्त की है। वे सीखने और शिक्षा को साक्षरता के परे देखने के विचार में बड़े जोश के साथ यक़ीन रखती हैं। उनके अनुसार यह सीखना या शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को ऐसा व्यक्ति बनाए जो ख़ुद अपनी सोच बना सकें। उनसे sariya.ali@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सीमा

प्रत्याशित चुनौतियाँ और कुछ समाधान

विपिन कुमार

कुछ दिनों पहले टीकाकरण से सम्बन्धित कार्य के लिए मेरा बस्सी आड़ा पंचायत (बाँसवाड़ा, राजस्थान) में जाना हुआ। वहाँ एक चाय-नाश्ते की दुकान पर मैंने एक छोटी लड़की को काम करते देखा। उसकी उम्र 9-10 वर्ष रही होगी। मैंने पूछा तो उसने अपना नाम ऋतु बताया। मैंने पूछा कि तुम स्कूल जाती हो। तो उसने स्थानीय भाषा में बताया कि पहले जाती थी, अब नहीं। मैंने उससे पूछा कि वह कौन-सी कक्षा में पढ़ती है। ऋतु ने जवाब दिया कि उसे नहीं पता। मैंने सोचा कि वह जब स्कूल जाती थी, शायद उस समय की कक्षा बता पाएगी। लेकिन ऋतु को यह भी याद नहीं था। इस समय के दौरान अधिकांश बच्चे या तो बचपन की मस्ती में रमे हैं या रोज़मर्रा के कामों में लगे हुए हैं, कारण चाहे जो भी हो सच्चाई यह है कि बच्चे स्कूल से दूर हो गए हैं। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर शिक्षकों की जो चिन्ताएँ हैं वे ग़लत तो नहीं हैं। ऋतु से मैंने थोड़ी बात गिनती और जोड़-बाक़ी को लेकर भी की। उसे ठीक से गिनती भी नहीं आती। उसकी उम्र के हिसाब से स्कूल में कक्षा 4 या 5 में उसका नाम रहा होगा।

प्रमुख चुनौतियाँ

मैं इस महामारी के दौर में दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा ज़िले में शिक्षकों और बच्चों के लगातार सम्पर्क में रहा हूँ। यहाँ अरावली की पहाड़ी शृंखला का अन्त होता है, जिसके कारण यहाँ पर छोटी पहाड़ियाँ और टापूनुमा धरातल देखने को मिलता है। ज़िले की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है। भौगोलिक स्थिति और संसाधनों के आधार पर वर्तमान में इस क्षेत्र में बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर चार मुख्य चुनौतियाँ नज़र आ रही हैं।

ऑनलाइन सीखने के लिए संसाधनों की अनुपलब्धता

ज़िले की ज़्यादातर जनसंख्या गाँव में निवास करती है। लोगों के पास ऑनलाइन शिक्षण के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। 80 प्रतिशत अभिभावकों के पास एंड्रॉयड मोबाइल नहीं हैं। जिनके पास हैं भी उनमें से भी ज़्यादातर लोग बहुत आवश्यकता पड़ने पर इंटरनेट वाला रिचार्ज करवाते हैं। ऐसी परिस्थिति में बच्चों को ऑनलाइन माध्यमों से जोड़ने का भी रास्ता दिखाई नहीं देता। सरकार ने टीवी और रेडियो के माध्यम से कुछ शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किए, लेकिन यह माध्यम भी गाँवों में शायद ही इस्तेमाल किए जाते हैं। किसी शिक्षक को ऑनलाइन केवल सुनकर या देखकर सीखना अपने आप में चुनौतीपूर्ण है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षकों ने प्रयास नहीं किए हैं। यहाँ स्कूल में आने वाले ज़्यादातर बच्चे स्कूल आने वाली पहली पीढ़ी के हैं। ऐसे में ऑनलाइन अगर कुछ भेज भी दिया जाए तो उसे समझने में बच्चों को मदद करने वाला घर में कोई नहीं है। कुल मिलाकर सरकारी कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूल के स्तर पर जो ऑनलाइन शिक्षण-प्रक्रियाएँ चल रही हैं वे काफ़ी हद तक असफल रही हैं।

छितरे हुए घर

यहाँ गाँव में मोहल्ले जैसे नहीं होते हैं, घर दूर-दूर होते हैं। हो सकता है कोई घर आपको पहले घर से 50 मीटर की दूरी पर मिल जाए, लेकिन उससे अगला घर 500 मीटर या 1 किलोमीटर की दूरी पर हो। इस कारण से बच्चों को किसी स्थान विशेष पर छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा करके पढ़ाना भी एक चुनौती है। इस कारण ज़्यादातर स्कूलों के ज़्यादातर बच्चे शिक्षकों के साथ बहुत कम समय के लिए अन्त:क्रिया कर पा रहे हैं। शिक्षकों का अनुभव रहा है कि इस तरह के प्रयासों में एक समूहों के बच्चों के साथ 1-2 घण्टे ही काम हो पाता है। अगले दिन दूसरी जगह पर जाकर दूसरे समूह के साथ काम करना होता है। कुल मिलाकर देखें तो बच्चों के साथ अन्त:क्रिया का समय और अन्त:क्रिया की निरन्तरता दोनों ही अपर्याप्त हैं।

मौजूदा अन्तराल और कक्षा-स्तर के अनुरूप शिक्षण

कक्षा के जिस स्तर पर बच्चे गुणा, भाग, भिन्न और दशमलव सीख रहे होते हैं, उस स्तर पर शिक्षकों को उन्हें गिनती और जोड़-बाक़ी सिखाना होगा। यह वास्तव में शिक्षकों के लिए चिन्ता का एक वाजिब कारण है। अगर एनएएस[I] और असर[II] की रिपोर्ट को देखें तो हम पाते हैं कि नियमित रूप से चलते स्कूलों में भी 50 प्रतिशत से ज़्यादा बच्चे भाषा और गणित में स्तरानुसार नहीं सीख पाते हैं। ऐसे में 18 महीने के गैप ने प्राथमिक शिक्षा को गहरे अँधेरे में धकेल दिया है।

विज्ञान के शिक्षकों की सबसे बड़ी चिन्ता है कि वे बच्चों को कुछ प्रयोगों और गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान को सिखा पाते थे जो अभी सम्भव नहीं है। विज्ञान में नए शब्दों की

अवधारणात्मक समझ को लेकर बच्चों के साथ निरन्तर संवाद की आवश्यकता होती है जिसे मोहल्ला क्लास जैसे माध्यमों में निरन्तर कर पाना मुश्किल होता है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षकों की एक और चिन्ता यह है कि इस स्तर पर पूर्व कक्षा में सीखी गई अवधारणाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं और उनको सीखने में पर्याप्त समय चाहिए होता है। ऐसे में जब बच्चे दो कक्षाएँ प्रमोट हो चुके हैं तो उनको सामान्य स्तर पर लाना भी बड़ी चुनौती है। कुछ अनुभव शिक्षकों ने ऐसे भी बताए हैं कि इस स्तर पर विषयवस्तु प्राथमिक स्तर की तुलना में बढ़ जाती है जिसके कारण बच्चों का पठन और लेखन-कौशल महत्त्वपूर्ण हो जाता है। जिन बच्चों को पढ़ना और लिखना ठीक से नहीं आ पाया है उनको दिया गया गृहकार्य भी अपूर्ण ही रहता है। जिसके कारण यह बच्चे और पिछड़ रहे हैं। इन सब परिस्थितियों में भी शिक्षक बच्चों के साथ काम करने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं।

स्कूल की दिनचर्या में लौटना

स्कूल खुलने के बाद बच्चे जब विद्यालय में आएँगे तो शिक्षकों की चिन्ता है कि लगभग 2 साल तक स्वच्छन्दता से रहने के बाद बच्चों को पूरे दिन विद्यालय में शिक्षण-गतिविधियों में व्यस्त रखना भी एक चुनौती होगी। क्योंकि बच्चों की लगातार 6 घण्टे तक विद्यालय में रहने की आदत छूट चुकी है। अभी मोहल्ला कक्षाओं में बच्चे केवल 1 से 2 घण्टे ही बैठते हैं, क्योंकि इस समय तक बच्चों को भूख लग आती है और मोहल्ला कक्षाओं में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था नहीं होती है।

शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव

सबसे पहले सभी अभिभावकों से बात करके बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना। दूसरा बच्चों के लिए विद्यालय में एक ख़ुशनुमा और सुखद माहौल बनाना ताकि बच्चे नियमित रूप से और उत्साहपूर्वक स्कूल आएँ। उनका विद्यालय और शिक्षकों से जो भावनात्मक जुड़ाव है वह बन पाए, यह बच्चों के सीखने और सीखने की तत्परता के लिए महत्त्वपूर्ण है। बच्चों का स्तरानुसार आकलन करना बहुत ज़रूरी होगा और इस आकलन को जितना परस्पर संवादात्मक बना पाएँगे उतना अच्छा होगा। केवल पेपर-पेंसिल टैस्ट से काम नहीं बनेगा। शायद बहुत सारे बच्चों को यह चुनौतीपूर्ण भी लगे, जो उनके विद्यालय आने के उत्साह को तोड़ सकता है।

शुरुआत में हमें बच्चों के मौजूदा स्तर के अनुसार कुछ समूह बनाकर सभी को उनकी वर्तमान कक्षा-स्तर तक लाने के लिए प्रयास करने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर में परिवर्तन के साथ यह समूह निरन्तर बदलते रहने चाहिए। अभी जो काम नज़र आता है वह प्राथमिक स्तर पर भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में आधारभूत कौशलों के इर्द-गिर्द ही रहेगा और उच्च प्राथमिक स्तर पर विषयवार मूलभूत अवधारणाओं और कौशलों पर। कम-से-कम दो माह इस प्रकार के काम पर ध्यान देने की ज़रूरत है। निरन्तर समीक्षा से पता चलेगा कि इसे और कितना बढ़ाने की ज़रूरत होगी। इसके बाद हम कक्षावार बच्चों की ज़रूरतें पहचानकर आगे बढ़ सकते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रमोट हुए जिन बच्चों को उपचारात्मक सहयोग की ज़रूरत है, उनके लिए 2 या 3 कक्षाओं को मिलाकर यानी बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय शिक्षण का तरीका मदद कर सकता है। स्कूल की दीवारों को बच्चों के सीखने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री से सजाया जा सकता है। इससे बच्चों का एक्सपोज़र बढ़ेगा और उनके सीखने की गति में वृद्धि होगी।

इन सम्भावित समाधानों पर विषयवार व्यवस्थित कार्य करने के अतिरिक्त प्रयासों की महती आवश्यकता है। यदि विद्यालय खुलने से पहले तैयारी कर लें तो रास्ते शायद और आसान हो जाएँगे। महत्त्वपूर्ण यह है कि शिक्षक इस बारे में चिन्तित हैं और वे अपने प्रयासों से महामारी के बाद शिक्षा की तस्वीर को ज़रूर बदलेंगे।

*बच्चों की पहचान छुपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

Endnotes

i National Achievement Survey

ii शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिर्पोट)

विपिन कुमार ने सनातन धर्म कॉलेज, मुज़्ज़फरनगर (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध) से रसायन शास्त्र में एमएससी की पढ़ाई की है। वह पिछले सात वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हुए हैं। इसके पहले वे पीजी कॉलेज भैला, सहारनपुर में रसायन शास्त्र पढ़ाया करते थे। उनसे vipin.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अभिव्यक्ति को सुलभ बनाने के लिए कला-एकीकृत पाठ

विश्वनाथ

जब हम महामारी के प्रभावों से उभरना शुरू करेंगे, तब ज़रूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदनशील रहें। इस अनुभव ने हमें अपनी अनेक ख़राब आदतों व जीवन जीने के तरीक़ों को बदलने का मौक़ा दिया है और स्वच्छता व प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण पर अधिक ध्यान देकर हम यह कर सकते हैं। हमारी सीखने-सिखाने की रणनीति का उद्देश्य स्कूलों में बच्चों को सहज और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना होना चाहिए।

स्कूलों को बन्द हुए एक साल से अधिक हो गया है और अधिकांश बच्चे स्कूल में सीखी गई बातों को भूल गए हैं। यह उनके पढ़ने और लिखने के कौशलों के पुनर्निर्माण का समय है। लेकिन यह प्रक्रिया बच्चों की भावनात्मक तैयारी का आकलन करने के बाद ही शुरू की जानी चाहिए। आज, शिक्षक और पूरी शिक्षा व्यवस्था पशोपेश में है और वे यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि किस तरह पाठों की योजनाएँ बनाई जाएँ, कहाँ से शुरुआत हो और बच्चों के अब तक के सीखे हुए का आकलन कैसे करें।

कला गतिविधियों के माध्यम से सीखना

यह अत्यावश्यक है कि बच्चों को सीखने के आनन्दपूर्ण अनुभव हासिल हों। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि सभी बच्चे स्कूल परिसर में अपना व दूसरों का ख़याल रखने के लिए ज़रूरी सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करें। इसके साथ ही शिक्षकों को निपुण तरीक़ों से बच्चों को याद दिलाते रहना होगा कि इस दौरान वे जो भी महसूस कर रहे हों उसे खुलकर व्यक्त करें। यह कुछ तरीक़े हैं जिन्हें शिक्षक अपना सकते हैं :

- प्रत्येक बच्चे के प्रति संवेदनशील और सम्मानपूर्ण रवैया अपनाएँ।
- बच्चों को अपनी भावनाओं को साझा करने और व्यक्त करने के लिए स्कूल के भीतर एक भयमुक्त वातावरण को सुनिश्चित करें।
- ऐसी समूह गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों को *कोविड-19* से जुड़ी सावधानियों का पालन करते हुए एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने में मदद करें।
- स्थानीय स्रोत व्यक्तियों और बच्चों के माता-पिता को अपनी स्थानीय परम्पराओं, लोककथाओं और गीतों से परिचित कराने के लिए आमंत्रित करें।
- ऐसी गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा दें, जैसे कला को सभी कक्षाओं और सभी विषयों की पाठ-योजनाओं के साथ एकीकृत करना।
- माता-पिता और भाई-बहनों की मदद लेते हुए स्थानीय संसाधनों और कबाड़ का उपयोग करके कलाकृतियों के निर्माण को बढ़ावा दें।

स्कूल का पहला दिन

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में स्कूल फिर से खुलने के पहले दिन हम पेंटिंग, क्ले मॉडलिंग और खेल खेलने जैसी कुछ कला गतिविधियाँ करने की योजना बना रहे हैं। हम उम्मीद कर रहे हैं कि ये गतिविधियाँ बच्चों के स्कूल लौटने के अनुभव को आनन्दपूर्ण बनाएँगी। यह योजना नए बच्चों को हमारी स्कूली संस्कृति से परिचित होने में मदद करेगी और इससे बच्चों के बीच का मेल-जोल बढ़ेगा। हम कलाकृतियों का एक प्रदर्शन भी आयोजित करेंगे जहाँ बच्चे अपनी कृतियों के बारे में बात करेंगे, अपनी कविताओं और गीतों को साझा करेंगे, अपनी धुनें बनाएँगे। साथ ही वे रसोई के बर्तनों, प्लास्टिक की बोतलों और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ों का भी पता लगाएँगे। कुछ शारीरिक खेल भी खेलेंगे जो उनमें नई ऊर्जा भर दे। सारे विषयों में विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जाएगा।

महामारी के दौरान, हमें सीखने-सिखाने की सामग्री (टीएलएम) को अलग-अलग सामुदायिक शिक्षण केन्द्रों तक ले जाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा हमें बच्चों के साथ ऑनलाइन वीडियो साझा करने और गाने सुनने के दौरान इंटरनेट कनेक्टिविटी में परेशानी हुई। सामुदायिक कक्षाओं में जगह की कमी थी जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों तक हमारी पहुँच के उद्देश्य को सीमित कर दिया। समूहों में इकट्ठा होने पर प्रतिबन्ध के कारण, स्थानीय कलाकारों व स्रोत व्यक्तियों को आमंत्रित करने और बच्चों को स्थानीय कलाओं से परिचित कराने की हमारी योजनाओं को भी स्थगित करना

पड़ा। सबसे अहम बात यह रही कि हम हर एक बच्चे के सीखने के परिणामों पर ध्यान नहीं दे पाए।

लेकिन इन सभी चुनौतियों के बावजूद, बच्चों ने सामुदायिक कक्षाओं में कराई गई कला-आधारित गतिविधियों को बहुत पसन्द किया। इसके माध्यम से, उन्होंने ख़ुद से कई चीज़ों की खोज की और अपनी रचनात्मक क्षमताओं पर विश्वास करना सीखा। स्कूल के फिर से खुलने के बाद भी हम इसी तरह के अभ्यास जारी रखने की योजना बना रहे हैं।

वर्तमान में, हम आशा करते हैं कि स्कूल जल्द ही खुलेंगे और हम नियमित रूप से काम कर पाएँगे। अभी हमें बच्चों को पढ़ाने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, स्कूल में कक्षाओं के शुरू होने के बाद वे ख़त्म हो जाएँगी। जब हम प्रत्येक बच्चे के साथ आमने-सामने होकर काम करेंगे तब हम अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकेंगे। हम बच्चों को ऐसी शारीरिक और कला आधारित गतिविधियाँ भी करा पाएँगे जिनमें समूह में काम करना और एक-दूसरे से सीखना काफ़ी महत्त्वपूर्ण होता है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम बच्चों के नियमित पोषण को सुनिश्चित कर पाएँगे जो बच्चों के सीखने और उनके समग्र विकास को सीधे प्रभावित करता है।

गतिविधियों का हमारा अनुभव

मैं यहाँ कुछ गतिविधियों के बारे में बता रहा हूँ जो हमने कोविड के कारण स्कूलों के बन्द होने के दौरान बच्चों के साथ कीं। जब हमने बच्चों को बात करने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सहयोग देने के लिए कुछ अभ्यास शुरू किए तो हमने पाया कि बच्चों की तरफ़ से सबसे ज़्यादा प्रतिक्रियाएँ कला से जुड़ी गतिविधियों और संगीत के दौरान आ रही थीं। हमने कुछ मज़ेदार गतिविधियों को भी शामिल किया ताकि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी सीख सकें।

महामारी के दौरान बच्चे स्वच्छता और सुरक्षा सावधानियों के बारे में सीख सकें इसके लिए, हमने उन्हें यह गीत सिखाए

: कन्नड़ में 'बायी बायी कोरोना निनु होगाले बेकिदे' और अँग्रेज़ी में 'Wash, wash, wash your hands, wash

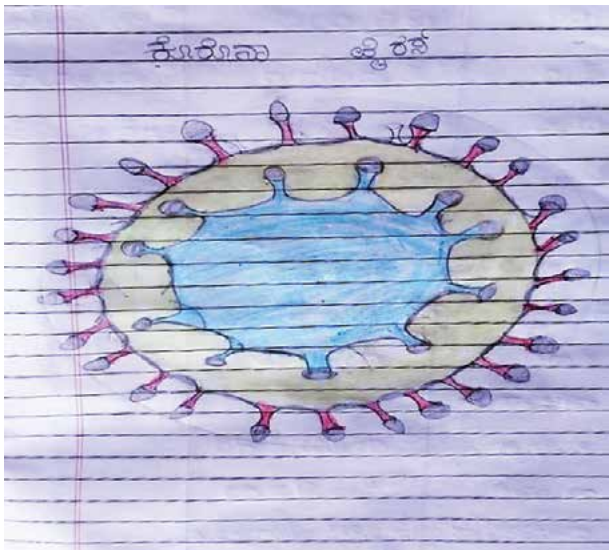

your hands together'। हमने इन गीतों को एक सैनिटाइज़र का उपयोग करते हुए सिखाया। इसमें हमने उन्हें सैनिटाइज़र से हाथों को रगड़कर साफ़ करने का सबसे अच्छा तरीक़ा दिखाया। शुरुआत में, जब बच्चे गाने में झिझक रहे थे तो हम शिक्षकों ने उनके साथ हाव-भाव और भंगिमाओं के साथ गाने गाए। जब हम सबने खड़े होकर भाव-भंगिमाओं के साथ धुनों

को गाया तो यह बात बच्चों को बहुत अच्छी लगी। हमने धीरे-धीरे mask, sanitizer, virus, social-distance, lockdown, unlock और seal-down जैसे शब्दों के अँग्रेज़ी अक्षरों और उनके अर्थों से बच्चों का परिचय कराया। धीरे-धीरे बच्चे सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करते हुए ऊपर बताए गए गीत गाने लगे। वे इन शब्दों के अर्थों से भी वाक़िफ़ हो गए और नियमित बातचीत में उनका उपयोग भी करने लगे। कुछ बच्चों ने कन्नड़ में अपने गीत भी लिखे, उन्हें अपनी ही बनाई धुनों पर गाया और फिर यूट्यूब पर अपलोड भी किया।

बच्चे तब विशेष रूप से ख़ुश दिखे जब हमने उन्हें अनुपयोगी काग़ज़ से मास्क बनाना सिखाया। अपने बनाए हुए मास्क बच्चों ने अपने भाई-बहनों और माता-पिता को भी दिए। बच्चों ने उपलब्ध जानकारी और अपनी कल्पना के आधार पर कोरोना वायरस के चित्र बनाए। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में चर्चा भी की।

कुछ बच्चे डाण्डिया स्टिक बनाकर डाण्डिया की ताल पर नाचे। इस गतिविधि का उद्देश्य था, बच्चों को लोक गीतों से परिचित कराकर उन्हें अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में मदद करना। फिर भी कुछ बच्चे ऐसा करने में झिझक रहे थे, इसलिए हमने उन्हें एक डायरी बनाने को कहा जिसमें वे अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर लिख सकते थे।

बच्चों ने कई आकृतियों (वृत्त, वर्ग, आयत और अनियमित आकारों की भी, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है) की डायरियाँ बनाईं। डायरियों में बच्चों ने अँग्रेज़ी में लिखा और इमोजी का इस्तेमाल करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

एक अन्य गतिविधि में बच्चों ने काग़ज़ पर एक-दूसरे की हथेलियों को छापा। इस गतिविधि ने उन्हें अपने साथियों के साथ बातचीत करने का मौक़ा दिया जिससे वे धीरे-धीरे स्कूल में संवाद करने के लिए तैयार महसूस करने लगे। उन्होंने क्ले मॉडलिंग और सीप व मोतियों जैसी अनुपयोगी वस्तुओं से हार बनाने में भी आनन्द लिया।

बच्चों ने सिलाई जैसे व्यावहारिक कौशल भी सीखे। उन्होंने अपने नाम कपड़े पर सिलाई से उकेरे। उन्होंने चाय के कपों को पेंट करने में भी आनन्द लिया। इन कपों में वे बीज बोते थे और पौधों को बढ़ते हुए देखते थे। वे उन्हें नियमित रूप से पानी देते थे और पौधों में हो रही वृद्धि को प्रतिदिन रिकॉर्ड करते थे। उन्होंने घर पर खेलने के लिए लूडो, साँप-सीढ़ी और शतरंज जैसे खेलों के बोर्ड बनाए। इससे उन्हें आकृतियाँ, रेखाएँ और 1-100 तक की संख्याएँ सीखने में मदद मिली।

विश्वनाथ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में संगीत पढ़ाते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) में एमए किया है। उन्होंने शास्त्रीय संगीत (गायन) और हारमोनियम बजाना अपने पिता गुरु पण्डित तेवैय्या वस्त्रदमथ से सीखा है। उनसे vishwanath@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** संदीप दुबे

विद्यार्थियों से जुड़ाव के अर्थपूर्ण तरीक़ों को बनाए रखना

मालविका राजनारायण और जितेन्द्र शर्मा

अज़ीम प्रेमजी स्कूलों का फोकस

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, फ़ील्ड में किए जाने वाले स्कूली शिक्षा के हमारे समूचे काम का अविभाज्य हिस्सा हैं। इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि अच्छी और निष्पक्ष शिक्षा उस तरह की परिस्थितियों और सीमाओं में काम करते हुए भी सम्भव है जिनमें सरकारी ग्रामीण स्कूल (अथवा पब्लिक स्कूल) काम करते हैं। यह न सिर्फ़, आमतौर पर स्वीकृत इस धारणा का खण्डन करने के लिए किया जा रहा है कि वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे सीख नहीं सकते, बल्कि उन विशेष व्यवहारों को प्रस्तुत करने के लिए भी किया जा रहा है जिन्हें पब्लिक स्कूल निष्पक्षता और गुणवत्ता को बेहतर बनाने की लिए अपना सकते हैं। हमारा लगातार यह प्रयास होता है कि हमारे अधिकांश विद्यार्थी कक्षा अनुरूप योग्यताओं को हासिल करें। साथ ही यह प्रयास भी होता है कि वे अन्य प्रासंगिक व आयु-उपयुक्त कौशल/ क्षमताएँ हासिल करें जैसे कि संप्रेषण, क्राफ़्ट व टीमों के साथ काम करना और दूसरों के प्रति लचीलापन व संवेदनशीलता रखने जैसे रुझान/ प्रवृत्तियाँ भी हासिल करें।

इस लेख में छत्तीसगढ़, कर्नाटक, राजस्थान और उत्तराखण्ड में काम कर रहे 8 अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के अनुभवों पर विचार किया गया है। इन स्कूलों ने *कोविड19-* महामारी के दौरान आसपास के गाँव और क़स्बों के बच्चों की शिक्षागत ज़रूरतों पर ध्यान दिया। यह सारे स्कूल देश के सर्वाधिक दूरदराज की वंचित जगहों पर स्थित हैं जहाँ पर डिजिटल माध्यम से सीखना सम्भव नहीं है। शुरुआती दौर में जब ऑनलाइन तरीक़े को अपनाया गया तो हम अपने सिर्फ़ 40 प्रतिशत विद्यार्थियों तक पहुँच सके और हमने देखा कि उनके साथ भी यह तरीक़ा प्रभावी साबित नहीं हो रहा था। इस स्थिति में स्कूल टीम ने शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रिया के बहुत से ब्योरों पर पुनर्विचार किया और विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के विभिन्न तरीक़ों को विकसित किया। हमने इस मुख्य उद्देश्य के साथ विद्यार्थियों को जोड़ने के सार्थक तरीक़े तलाशने शुरू किए कि उन्होंने अब तक अपनी परिस्थितियों के कारण जो कुछ सीखा था उसे भूले बग़ैर वे अपने सीखने को जारी रखें। अतः हमारे समस्त प्रयास इन बिन्दुओं के इर्द-गिर्द संयोजित थे — **क)** इस बात को सुनिश्चित करना कि सभी कक्षाओं के हमारे सारे विद्यार्थियों के पास बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में एक समुचित योग्यता का स्तर मौजूद हो और **ख)** अधिकतम सीखने के लिए सारे सम्भव उपायों और उपलब्ध संसाधनों का सबसे प्रभावी इस्तेमाल करना।

विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव के विभिन्न माध्यम

ऑनलाइन माध्यम

साल 2020 में हमारे बहुत-से शिक्षकों के पास निजी लैपटॉप नहीं थे। इसलिए शोध के या सामग्री तैयार करने के ऑनलाइन तरीक़ों के साथ सामंजस्य स्थापित करना उनके लिए एक दुष्कर कार्य हो गया था। ऐसे में शिक्षकों ने एक-दूसरे से सहयोग करने और सीखने का तरीक़ा अपनाया। विद्यार्थियों से जुड़ाव के पहले चरण में ऑनलाइन माध्यम के एक आकलन से पता चला कि स्मार्ट फ़ोन की सुलभता, नेटवर्क कनेक्टिविटी, डेटा रिचार्ज के लिए संसाधन, उपकरणों को भाई-बहनों के साथ साझा करना, इन सभी कारणों ने ऑनलाइन शिक्षा को कम व्यावहारिक बना दिया था और बहुत से बच्चों को इससे बाहर कर दिया था।

वर्कशीट आधारित जुड़ाव

सामान्यतौर पर वर्कशीट शिक्षार्थियों को तब दी जाती है जब उन्हें किसी अवधारणा से अवगत करा दिया जाता है। ख़ुद से सीखने की सोच पर आधारित ऐसी वर्कशीट तैयार करने का विचार शिक्षकों के लिए पूरी तरह से नया था, जिसमें शिक्षक का सहयोग न्यूनतम हो। इस चुनौती के साथ एक और मुद्दा

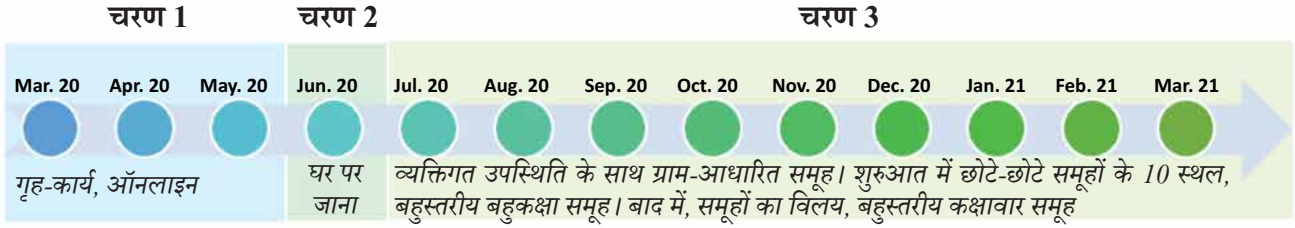

टोंक, राजस्थान में विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव की टाइम लाइन

यह था कि विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के अनुरूप इसे कैसा रूप दिया जाए। और उन विद्यार्थियों के साथ क्या किया जाए जो अभी बुनियादी साक्षरता कौशलों से ही जूझ रहे थे या संगीत, कला और शारीरिक शिक्षा जैसे विषयों के लिए क्या किया जाए? लगभग आठ सप्ताह तक इसे तैयार करने, वितरित करने और वर्कशीट पर बच्चों के जवाबों का आकलन करने के बाद शिक्षकों ने इस माध्यम में अनेक दिक्क़तें पाईं। इनकी विषयवस्तु को पढ़ने और समझने में बच्चों की असमर्थता से लेकर शिक्षकों के पास वर्कशीटों को समझाने के लिए समय के अभाव और बच्चों के लिए अभिभावकों और भाई-बहनों द्वारा वर्कशीट भरने तक — शिक्षकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि वर्कशीट को तैयार करने में जितना प्रयास किया जा रहा था वह विद्यार्थियों के सीखने में परिणित नहीं हो रहा था।

बहुकक्षा समूहों के साथ समुदाय स्थलों में काम

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उपस्थिति में उनके साथ जुड़ाव का काम केवल 12-10 विद्यार्थियों के एक छोटे-से बहुकक्षा समूह के साथ शुरू हुआ था। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई शिक्षक किस विषय को पढ़ाने के विशेषज्ञ हैं, बुनियादी साक्षरता और गणितीय कौशलों के विकास और उन्हें आगे बढ़ाने पर ज़ोर दिया गया। इसलिए सभी शिक्षकों ने बच्चों के सीखने की योजना ऐसी विशिष्ट विषयवस्तुओं के इर्द-गिर्द तैयार की जो विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को समाहित करने के साथ-साथ, मुख्य रूप से, समझ के साथ पढ़ने और तेज़ी से लिखने पर ध्यान केन्द्रित करती थीं। पुस्तकालय की क़िताबों का भी इस्तेमाल बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाने के लिए किया गया।

सामान्यतः स्कूलों को सभी विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए विविध तरीक़े अपनाने पड़े। सब के साथ सामुदायिक कक्षाएँ लगाने की परिस्थितियाँ नहीं होने पर कई तरह के तरीक़ों का इस्तेमाल किया गया। उदाहरण के लिए, उधमसिंह नगर के स्कूल में शिक्षकों ने 5 अलग-अलग तरीक़े इस्तेमाल किए, जो थे — वीडियो कॉल, व्हाट्सऐप पर सामग्री साझा करना, वर्कशीट, व्यक्तिगत रूप से घर-घर जाना और कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए सामुदायिक कक्षाएँ लगाना। कुछ विद्यार्थी दो से तीन तरीक़ों के साथ जुड़ने में समर्थ थे। लेकिन जिन विद्यार्थियों तक नहीं पहुँचा जा सका उनके लिए एक बहुत छोटे समूह में सामुदायिक कक्षाएँ लगाने के लिए घर-घर जाना ही एकमात्र विकल्प था। इन सब कामों का मतलब था हमारे शिक्षकों के लिए बहुत भागमभाग और थकाने वाले दिन, लेकिन इससे विद्यार्थियों के सीखने के अर्थ में कोई ख़ास लाभ भी नहीं मिल रहा था।

पिछले वर्ष हमारे जीवन का एक आम दिन

टोंक में जब हमने व्यक्तिगत उपस्थिति में गाँव-आधारित समूह अध्ययन शुरू किया तो हमें 10 जगहों को कवर करना था। विद्यार्थी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक के छोटे समूहों में रोज़ाना लगभग डेढ़ घण्टे के लिए इकट्ठे होते थे। यहाँ ये गतिविधियाँ होती थीं :

- प्रतिदिन, सबके समक्ष डायरी पढ़ना, दूसरी स्थानीय जानकारियों और दिन की योजनाओं को साझा करना।
- बड़े समूह की सामान्य गतिविधियाँ – पुस्तकालय की क़िताबों का उपयोग, चुनी हुई विषयवस्तु या विषय पर चर्चा।
- छोटे समूह-कार्य या तो साझी गतिविधि पर आधारित होते थे या विद्यार्थियों की क्षमताओं के स्तर पर।
- कुछ कला गतिविधियों के साथ समापन होता था जैसे चित्र बनाना, क्राफ़्ट, गाना, ड्रम बजाना आदि।

कक्षा 2 के विद्यार्थियों के लिए एक सत्र

कोविड-19 की शुरुआती सुरक्षा प्रोटोकोल प्रक्रियाओं के बाद आमतौर से सत्र हल्के व्यायाम और एक जगह पर कूदना, योग और शरीर को तानने जैसी शारीरिक गतिविधियों या फिर किसी सरल खेल के साथ शुरू होता था। इसके बाद कुछ समय के लिए ध्यान लगाना और पिछली कक्षा की बातों को याद करना होता था। इसके बाद सभी विद्यार्थी हिन्दी/ अँग्रेज़ी कविताएँ गाते थे (एक दिन छोड़कर कहानी सुनाई जाती थी)। तत्पश्चात उस कहानी, कविता, उनके अनुभवों या किसी चित्र के बारे में द्विभाषीय संवाद/ बातचीत की जाती थी। कभी-कभी शिक्षक किसी विषय से सम्बन्धित श्रव्य/ दृश्य संसाधनों का इस्तेमाल करते थे ताकि सीखने में बच्चों की रुचि को जगाया जा सके। बच्चों को हिन्दी और अँग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में कहानी की क़िताबें और बच्चों का साहित्य पढ़ने के लिए कुछ समय भी दिया जाता था। सत्र को रुचिकर बनाने के लिए कुछ खेलों का भी प्रयोग किया जाता था जैसे भाषा और गणित के कार्ड या चित्रात्मक खेल जिसमें बच्चे चित्र के बारे में छोटे वाक्य लिखते थे।

महामारी के दौरान सीखना

शिक्षकों द्वारा इन विविध तरीक़ों को इस्तेमाल करने के प्रयासों के बावजूद प्रत्येक स्कूल में यह पाया गया कि कक्षा के लगभग 20 प्रतिशत विद्यार्थियों को बाक़ियों की तुलना में सीखने से

जुड़ी पर्याप्त सामग्री नहीं मिल रही थी। इसके कई कारण थे : बच्चों का अपने गाँवों को चले जाना, अभिभावकों के पास फ़ोन या दूसरे उपकरण न होना जिनसे ऑनलाइन सामग्री तक पहुँचा जा सके, घरों का ऐसी दूरदराज़ की जगहों में होना जहाँ इंटरनेट का नेटवर्क बहुत ख़राब था और कठिन पारिवारिक परिस्थितियाँ आदि। अगर परिवार में अभिभावक या दूसरे बड़े पढ़े-लिखे नहीं थे या बच्चों को पढ़ाई में सहायता देने के लिए उपलब्ध नहीं थे तो बच्चों के लिए यह बहुत चुनौतीपूर्ण था कि वे अर्थपूर्ण तरीक़े से अपनी पढ़ाई को जारी रख सकें।

हमने पाया है कि महामारी ने कक्षा-अनुरूप क्षमताओं के साथ पहले से ही संघर्ष कर रहे बच्चों और उन बच्चों के बीच फ़ासला बढ़ा दिया है जिनका प्रदर्शन पहले से ही अच्छा था। वे सब बच्चे, जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान हासिल नहीं कर पाए थे और भी ख़राब स्थिति में आ गए क्योंकि उन्हें ऐसी सामग्री के साथ जोड़ना मुश्किल था जिसके लिए पढ़ने लिखने के बुनियादी कौशल होना ज़रूरी हों। इसी तरह पूर्व-प्राथमिक और कक्षा 1 व 2 के बच्चों को जोड़ना भी बहुत चुनौतीपूर्ण था। यदि हम सीखने में हुई हानि को ठोस अर्थ में बताएँ तो हमने यह देखा कि बहुत-से बच्चे अपनी कक्षा-स्तर के पाठ को ठीक से नहीं पढ़ पा रहे थे जबकि पहले वे ऐसा कर लेते थे और कुछ बच्चे वर्णमाला को न तो पहचान पा रहे थे न ही उसका ठीक से उच्चारण कर पा रहे थे। यदि पहले वे अपने ख़ुद के वाक्य और कहानियाँ गढ़ पाते थे तो अब वे यह करने में भी जूझ रहे थे। गणित में बहुत से बच्चे संख्याबोध और स्थानीय मान, हासिल, उधार, दशमलव जैसी अवधारणाओं के साथ संघर्ष कर रहे थे और चिह्नित विद्यार्थियों के लिए इन सबकी पुनरावृत्ति ज़रूरी थी।

हमने अपने विद्यार्थियों के मार्च 2020 के सीखने के स्तरों को सन्दर्भ के रूप में रखते हुए उनके सीखने के स्तरों की तुलना की। नीचे दी गई तालिकाओं में दिखाए गए आँकड़ों से यह पता चलता है कि हम स्तर-1 (कक्षा स्तर के नीचे) में विद्यार्थियों की संख्या को कम करने में सफल हुए हैं और दूसरे स्तरों को या तो यथावत रख पाए हैं या उनमें थोड़ा सुधार हुआ है। ऐसा होने के पीछे इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि हमने अपने अधिकांश विद्यार्थियों के साथ एक स्तर तक अकादमिक सम्पर्क बनाए रखा था। उन विद्यार्थियों के लिए सीखने की हानि की कल्पना की जा सकती है जिनकी पढ़ाई पिछले 18 महीनों से बाधित है। हमने विभिन्न स्तरों को इस तरह से श्रेणीबद्ध किया है :

स्तर-3 — वे विद्यार्थी जो कक्षा-स्तर का काम कर रहे हैं।

स्तर-2 — वे विद्यार्थी जिन्हें कक्षा-स्तर का काम करने के लिए शिक्षकों के मार्गदर्शन और सहयोग की ज़रूरत है।

स्तर-1 — वे विद्यार्थी जो अपने कक्षा-स्तर से नीचे हैं और इसलिए पहले उन्हें पिछली कक्षा की क्षमताओं पर काम करना होगा।

संज्ञानात्मक ज्ञानार्जन में हुई हानि के अलावा स्कूल की टीमों ने यह भी ग़ौर किया है कि कुछ बच्चों में व्यवहारगत बदलाव भी आए हैं क्योंकि वे एक नियमित स्वस्थ दिनचर्या और सुरक्षित स्कूली परिवेश से दूर हुए हैं। इन बदलावों में शामिल हैं, व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई की आदतों में कमी जैसे नाखून काटना, बाल काढ़ना, अपनी घावों और चोटों की साफ़ सफ़ाई करना, एकाग्रता में कमी, आक्रामक और भेदभावपूर्ण व्यवहार में बढ़ोतरी, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण न रख पाना इत्यादि। कुछ विद्यार्थी गाली-गलौज की भाषा और ऐसी आदतें भी सीख गए थे जो उनके स्वास्थ्य और कल्याण के लिए हानिकारक हैं। तो यह एक और क्षेत्र था जिस पर स्कूलों को ध्यान देने की ज़रूरत थी।

शिक्षकों के लिए सीख और अन्तर्दृष्टि

विद्यार्थियों के साथ विभिन्न तरीक़ों से जुड़ने के कारण शिक्षकों को सीखने के अनेक अवसर मिले। साथ ही स्कूल टीमें ऐसी शिक्षणविधियों के बारे में अच्छी तरह से जान पाईं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों का सीखना अधिकतम प्रभावी रहा। इन अनुभवों से जो कई अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त हुई हैं जिनसे हमें न सिर्फ़ वर्तमान बाधित परिदृश्य में मदद मिली है बल्कि जब नियमित तौर से स्कूल खुलेंगे तब भी ये उपयोगी होंगी। अन्ततोगत्वा ये हमें ज़्यादा लचीली और टिकाऊ शिक्षणविधियों की ओर ले जा सकती हैं। कुछ अन्तर्दृष्टियों का ज़िक्र संक्षेप में नीचे किया गया है।

बहुस्तरीय बहुकक्षीय शिक्षण के लिए सत्रों की योजना बनाना

विभिन्न भाषा सम्बन्धी क्षमताओं पर ध्यान देते हुए, शिक्षक किसी समान विषय या फिर पुस्तकालय की कुछ चुनिन्दा क़िताबों के माध्यम से और श्रेणीकृत वर्कशीटों का इस्तेमाल करते हुए कक्षा को आगे लेकर चलते हैं। हालाँकि यह हो सकता है कि शिक्षक के पास पूरी कक्षा के लिए एक समान योजना हो लेकिन वर्कशीटों का इस्तेमाल प्रत्येक सीखने वाले की क्षमता के स्तर का आकलन करने हेतु किया जाता है ताकि बाद की वर्कशीटों में विशिष्ट कार्यों को जोड़ा जा सके, विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें अतिरिक्त सहयोग की ज़रूरत होती है।

बुनियादी साक्षरता/ संख्या ज्ञान के शिक्षण के लिए एकीकृत पद्धति अपनाना

सभी विषयों के शिक्षक अपने-अपने सम्बन्धित विषयों के लिए अपनी नियमित पाठ योजनाओं में बुनियादी साक्षरता से जुड़े सीखने के परिणामों को समाहित करते हैं। उदाहरण के लिए कक्षा 5 के ईवीएस शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना होता

कक्षा 5 (जो मार्च 2020 में कक्षा 3 में थे)					
विषय	आकलन महीना, साल	कुल विद्यार्थी	स्तर- 1	स्तर- 2	स्तर- 3
हिन्दी व कन्नड़	मार्च 2020	214	50	41	93
	अगस्त 2021	213	30	64	89
गणित	मार्च 2020	214	49	48	86
	अगस्त 2021	213	36	59	88
अँग्रेज़ी	मार्च 2020	214	72	53	58
	अगस्त 2021	213	62	61	60

कक्षा 8 (जो मार्च 2020 में कक्षा 6 में थे)					
विषय	आकलन महीना, साल	कुल विद्यार्थी	स्तर - 1	स्तर - 2	स्तर - 3
हिन्दी व कन्नड़	मार्च 2020	194	44	93	57
	अगस्त 2021	192	42	94	56
गणित	मार्च 2020	194	69	73	51
	अगस्त 2021	192	44	86	62
अँग्रेज़ी	मार्च 2020	194	104	63	31
	अगस्त 2021	192	99	56	37

है कि उसके विद्यार्थी ईवीएस से सम्बन्धित पाठ को समझ सकें, उसका सार अपने शब्दों में लिख सकें और योजनाबद्ध तरीक़े से उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें — ये सब भाषा की सीख के परिणाम हैं। इस तरह विद्यार्थी सभी विषयों में अपने भाषा कौशलों का उपयोग कर सकते हैं और उनका अभ्यास कर सकते हैं।

पत्थरों से इतिहास सीखना

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी ज़िले के मातली गाँव में स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में शिक्षक सभी स्तरों पर विषयों को समेकित कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने पत्थर कला का इस्तेमाल करते हुए कक्षा 6 के विद्यार्थियों को इतिहास का एक पाठ पढ़ाया। इतिहास के बारे में तथ्यों को सीखते हुए विद्यार्थियों ने अपने आसपास की प्राकृतिक सामग्री और वस्तुओं का इस्तेमाल करके उत्सुकता के साथ रचनात्मक प्रयोग किए और अपनी इन प्रक्रियाओं को उन्होंने बेहद ख़ुशी के साथ मौखिक और लिखित, दोनों रूपों में साझा किया।

अन्य योजनाएँ

उद्देश्यपूर्ण ढंग से पढ़ने और लिखने के लिए एक पूरा सत्र पुस्तकालय में रखा जाता है, जहाँ विद्यार्थी पढ़ने के लिए किसी भी क़िताब का चुनाव कर सकते हैं और फिर वे उसके हिसाब से नियत कार्य करते हैं।

इससे उन्हें अपने पढ़ने की सामग्री चुनने की, उस पर काम करने की स्वतंत्रता मिलती है और यह बच्चों की विविध रुचियों को भी पूरा करता है।

लचीले नियत कार्यों के ज़रिए लेखन का अभ्यास और उसका विकास बच्चों की पुस्तकालय कक्षा/ सत्रों के साथ जोड़ा जा सकता है और ये उनके जीवन की परिस्थितियों में निहित होने चाहिए। विद्यार्थी अपनी पढ़ी गई किसी भी क़िताब के बारे में या अपने प्रोजेक्ट के दौरान किए गए किसी भी अवलोकन के बारे में लिख सकते हैं, एक जर्नल बनाकर उसे अपने साथियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि वे अपने द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर (न कि व्याकरण पर) उनका फ़ीडबैक पा सकें।

पाठों को विद्यार्थियों के स्थानीय सन्दर्भों में निहित करना और स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करके उन पाठों को विद्यार्थियों के जीवन से जोड़ना बहुत प्रभावी होता है। उदाहरण के लिए लाभ और हानि को उनके पसन्द के किसी स्थानीय व्यापार से समझाया जा सकता है जैसे कि चाट बेचने वाले के व्यापार का उदाहरण देकर।

यादगीर,कर्नाटक में विद्यार्थियों को गीत और कहानियों समेत उनकी तमाम स्थानीय लोक परम्पराओं को लेख रूप में दर्ज करने का कार्य दिया गया। बच्चों ने अपने परिवार और समुदाय के कलाकारों का साक्षात्कार लेकर इन जीवन्त परम्पराओं के इतिहासों को उजागर किया कि कैसे उनके बड़ों ने अपने बचपन में इन परम्पराओं को सीखा और आज बड़े होकर भी वे कैसे इन्हें सँजो रहे हैं। इससे अपने माता-पिता और समुदाय के बड़ों के प्रति बच्चों का सम्मान और गहरा हो गया।

बाड़मेर, राजस्थान में विद्यार्थियों को वहाँ के संक्षिप्त मानसून काल के दौरान स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस गतिविधि के बाद उन्हें जल चक्र के अवलोकन और वर्षा की प्रक्रिया को समझने का मौक़ा देते हुए एक वर्कशीट बनाई गई।

अन्य अन्तर्दृष्टियाँ

यह बहुत आवश्यक है कि हम विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और समुदाय के साथ सम्बन्धों को बेहतर करें क्योंकि इससे सीधे तौर पर विद्यार्थियों की निरन्तरता और उनके सीखने पर असर पड़ता है। महामारी के दौरान हमने देखा कि जब लोगों को यह एहसास हुआ कि उनका

अपना घर या मोहल्ला भी शिक्षा प्रदान करने की जगह हो सकती है तो स्कूल और शिक्षकों के प्रति उनका पूरा दृष्टिकोण बदल गया। इससे और भरोसा बढ़ा, मिलने-जुलने में संवेदनशीलता और प्रयासों में सहयोग बढ़ा और इस सबसे विद्यार्थियों के लिए सीखने का एक बेहतर वातावरण तैयार किया।

एक और समझ यह हासिल हुई कि अपने पूर्व विद्यार्थियों को जोड़े रखना काफ़ी लाभप्रद साबित होता है। वे समुदाय में हमारे स्थानीय प्रतिनिधि होते हैं, जिससे समुदाय को लामबन्द करने में हमें मदद मिलती है। उनकी सफलता छोटी उम्र के विद्यार्थियों को प्रेरित करती है।

इस बात पर ग़ौर करना दिलचस्प है कि ये शिक्षणशास्त्रीय अन्तर्दृष्टियाँ दरअसल वे सामान्य अपेक्षाएँ हैं जो सभी अच्छे शिक्षकों से की जाती हैं, लेकिन हम जानते हैं कि बहुत से शिक्षक इन सुझावों का अनुसरण नहीं करते। *कोविड–19* महामारी ने हमारे लिए ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कीं कि हमें पाठ्यपुस्तक और कक्षा-केन्द्रित शिक्षण के आरामगाह से बाहर निकलना पड़ा। हमने जो कुछ भी सीखा, उसके बारे में सोचते हुए हमने एहसास किया कि हमने जो दृष्टिकोण और पद्धतियाँ अपनाईं वे किसी भी सामान्य स्कूली दिन में होने वाले शिक्षण के लिए भी ठीक हैं और जब स्कूल दुबारा खुलता है तब भी इनका इस्तेमाल जारी रखा जा सकता है।

आगे की राह

अपने विद्यार्थियों के साथ नियमित सम्पर्क में रहने और विभिन्न तरीक़ों से उन्हें अकादमिक रूप से जोड़े रखने से हमें निश्चित रूप से कुछ फ़ायदे मिले हैं। *कोविड–19* का काल भी शिक्षकों के लिए इस रूप में मददगार रहा है कि वे सीखने के विविध स्तरों को बेहतर तरीक़े से सम्भालने के योग्य हो सके हैं। बड़ा सवाल है बच्चों के सीखने में आई दरारों को विस्तार में समझना और इन दरारों को तेज़ी से भरने के ऐसे उपाय प्रयोग में लाना जो विद्यार्थियों को जोड़े रखें और साथ ही शिक्षकों या विद्यार्थियों, दोनों पर ही अनावश्यक दबाव न बनाएँ क्योंकि ऐसा करना नुक़सानदायी हो सकता है।

विद्यार्थियों के लिए हमारे पास निम्न योजना है :

1. सभी बच्चों को धीरे-धीरे नियमित स्कूली अभ्यासों और सीखने की संरचनागत दिनचर्याओं की तरफ़ पुनः उन्मुख किया जाए। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों को ज़्यादा घण्टों तक बैठना और काम करना मुश्किल प्रतीत होने लगा है।
2. हमें पहले से ही विद्यार्थियों के सीखने के नुक़सान का एहसास अच्छी तरह से है, ख़ासतौर पर भाषा और गणित में हुए नुक़सान का। इसलिए सभी शिक्षकों को अब अधिक विस्तार में जाकर यह समझने के लिए कड़ा जतन करना होगा कि विद्यार्थियों को पहले का क्या याद है और वे क्या भूल चुके हैं। सामाजिक विज्ञान और विज्ञान के विषयों के लिए यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि इन पर हम महामारी के दौरान ज़्यादा ध्यान नहीं दे पाए।
3. हमने इस साल के बचे हुए अकादमिक सत्र में विभिन्न कक्षाओं और विषयों के लिए 'सिलेबस रिविजन' अभ्यास शुरू किया है। एक तरफ़ इस अभ्यास का सम्बन्ध किसी विषय/ कक्षा के लिए सीखने के प्रत्याशित परिणामों से है तो दूसरी तरफ़ इसका सम्बन्ध हमारे विद्यार्थियों के सीखने के वर्तमान स्तरों से है।
4. पाठ्यक्रम का यह दोहराव शिक्षण के काम का मार्गदर्शन करेगा। कुछ महीनों के लिए शुरुआती ज़ोर पिछली कक्षाओं की अवधारणाओं और कौशलों को याद कराने/ पढ़ाने पर होगा। कुछ विद्यार्थियों के लिए यह दोहराव होगा और वे पिछड़ रहे बच्चों की सहायता करने में शिक्षकों की मदद करेंगे।
5. प्राथमिक स्तर के लिए हमने विषय के सीखने के उद्देश्यों (Learning Objectives) के अनुसार वर्कशीट

एक तालाब के नज़दीक सामुदायिक कक्षा

विकसित की थीं और उन्हें पाठ्यपुस्तक अध्यायों के साथ जोड़ दिया था। ये बच्चों के सीखने के स्तरों को सुनिश्चित करने और उन्होंने पिछली कक्षाओं में जो कुछ भी सीखा था उसकी यादों को ताज़ा करने में उपयोगी होंगी। उदाहरण के लिए कक्षा 5 का कोई विद्यार्थी कक्षा 3 की वर्कशीट के साथ शुरू कर सकता है और धीरे-धीरे कक्षा 5 के स्तर तक आ सकता है।

6. हमने उन विद्यार्थियों को भी चिह्नित किया जो बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में कमज़ोर हैं। अतः उनके लिए कुछ महीनों तक नियमित कक्षाओं के साथ-साथ अतिरिक्त सुधार कक्षाओं में इन दक्षताओं को प्राप्त करने पर ध्यान दिया जाएगा।
7. इसी तरह हमारे पास वे विद्यार्थी भी हैं जिन्होंने 2020 या 2021 में पूर्व प्राथमिक या कक्षा 1 और कक्षा 2 में स्कूल में दाख़िला लिया था। इन विद्यार्थियों के साथ ज़्यादा काम नहीं हुआ है, अतः इनके लिए अलग तरीक़े से योजना बनाने की ज़रूरत है।
8. उन विद्यार्थियों के लिए, जो वर्तमान कक्षा के स्तर के अनुरूप कुछ हद तक काम कर सकते हैं, उनके साथ हम कक्षा पाठ्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ेंगे। इस समूह के लिए नियत कार्य अधिक समूह प्रोजेक्ट आधारित और साथ ही साथ वर्कशीटों के स्वतः सीखने के तरीक़े वाले हो सकते हैं।
9. इस पूरी योजना में संवाद, डायरी/ जर्नल लिखने के अभ्यासों, विभिन्न तरह की कलाओं, संगीत, नाटक और शारीरिक शिक्षा के लिए विशिष्ट समय नियत करके बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों पर ध्यान देना बहुत महत्त्वपूर्ण रहेगा।

हमें *कोविड–19* के कारण आने वाले महीनों में भी किसी भी स्कूलबन्दी के लिए तैयार रहना होगा। अगर ऐसा होता है तो लॉकडाउन की पिछली अवधियों में हमने जो कुछ सीखा वह हमारे काम आएगा, क्योंकि हम तत्काल विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के अपने विविध तरीक़ों पर लौट सकेंगे।

विद्यार्थियों द्वारा पत्थरों से बनाई गई कलाकृति

सामुदायिक कक्षाओं के लिए एक मन्दिर का इस्तेमाल

मालविका राजनारायण वड़ोदरा, गुजरात में रहने वाली एक दृश्य कलाकार हैं। साल 2017 में वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फ़ेलोशिप कार्यक्रम से जुड़ीं। वर्तमान में वे सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के लिए कला और संगीत की स्रोत व्यक्ति के बतौर काम कर रही हैं। साथ ही साथ वे वड़ोदरा में अपनी कला का अभ्यास भी जारी रखे हुए हैं। वे कला और शिक्षा, दोनों विषयों पर लिखना पसन्द करती हैं। उनसे malavika.rajnarayan@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

जितेन्द्र शर्मा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में क्षमता-निर्माण प्रयासों को समन्वित करते हैं और कई क्षेत्रों में चल रहे सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में अकादमिक समन्वय और सहयोग प्रदान करते हैं। उनके पास शिक्षक, तथा अध्यापक-शिक्षक के रूप में काम करने का कई सालों का अनुभव है। वे बच्चों और शिक्षकों, दोनों के साथ काम करना पसन्द करते हैं। उनसे jitandra.sharma@azimpremjifoundaion.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमिता शीरीं

बुनियादी अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना ज़रूरी है

नन्दिनी शेट्टी

स्कूल बच्चों को सिर्फ़ विभिन्न विषयों को सीखने में सक्षम ही नहीं बनाते बल्कि ये उनके सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास की नींव भी रखते हैं। बच्चे, दूसरे बच्चों के साथ बेहतर ढंग से और जल्दी सीखते हैं। स्कूल बच्चों को पारिवारिक समस्याओं, बालश्रम और नशाखोरी जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रखते हैं। स्कूलों के बन्द होने से बच्चों को उनके सीखने में नुक़सान होने के अलावा अन्य पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। बहुत-से बच्चे लिखना, पढ़ना और गणित के सवालों को हल करना भूल चुके हैं जिससे उनके वापस स्कूल जाने में बाधा खड़ी हो सकती है। इसलिए स्कूलों का शीघ्र फिर से खोला जाना अत्यन्त ज़रूरी है ताकि बच्चों के सीखने में मदद की जाए।

सेतुबन्ध कार्यक्रम

हमारे सरकारी स्कूलों में सेतुबन्ध[1] कार्यक्रम के तहत बच्चों को वर्कशीट दी गईं ताकि स्कूल बन्द रहने के समय भी सीखना लगातार जारी रहे। इन वर्कशीटों के ज़रिए अवधारणाओं को पढ़ाने का प्रयास किया गया। कक्षा–1 से 5 तक के बच्चों के लिए 45 दिनों तक सेतुबन्ध कार्यक्रम चलाया गया। बच्चों से कहा गया कि वे अपने अभिभावकों के साथ स्कूल आएँ और वर्कशीट ले जाएँ। यदि बच्चे स्कूल आने में असमर्थ रहे तो शिक्षकों ने वर्कशीट बच्चों में वितरित करने के लिए समुदाय तक पहुँचा दीं। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में बहुत सारी चुनौतियाँ थीं।

वर्कशीट

वर्कशीट का इस्तेमाल, सीखी गई अवधारणाओं के अभ्यास और मूल्यांकन के लिए प्रभावी तरीक़े से किया जा सकता है। हालाँकि वर्कशीट का इस्तेमाल अवधारणा निर्माण के लिए थोड़ा मुश्किल होता है। चूँकि अभिभावक काम पर जाते हुए अपना मोबाइल फ़ोन भी ले जाते हैं इसलिए शिक्षक सभी बच्चों से फ़ोन पर सम्पर्क नहीं कर पाते थे। बहुत-से शिक्षक *कोविड–19* से जुड़े राहत प्रयासों में भी लगे हुए थे इसलिए जब बच्चे सवाल पूछने या अपने सन्देहों के निराकरण के लिए स्कूल आते थे तो शिक्षक वहाँ मौजूद नहीं होते थे। इनमें से अधिकांश वर्कशीट कक्षा विशेष की अवधारणाओं के अभ्यास के लिए थीं। वे उन अवधारणाओं से सम्बन्धित नहीं थीं जिन्हें पिछले सालों में पढ़ाया गया था। चूँकि बच्चे पढ़-लिख नहीं पा रहे थे और पिछले सालों में उन्होंने जो सीखा था उसे वे भूल चुके थे इसलिए वे वर्कशीटों को पढ़ने, समझने और उनमें दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ थे। बच्चे या तो बिना उत्तर लिखे खाली वर्कशीट लौटा रहे थे या पिछली वर्कशीटों में लिखे उत्तरों की नक़ल कर दे रहे थे। अतः यह कहा जा सकता है कि सेतुबन्ध कार्यक्रम को सार्थक ढंग से लागू करना सम्भव नहीं था।

सीखने का नुक़सान

पिछले डेढ़ साल की स्कूल बन्दी ने बच्चों के सीखने पर कई तरह के प्रभाव डाले हैं। जिन स्कूलों से मैं जुड़ी हुई हूँ, वहाँ मैंने पाया कि जल्दी सीखने वाले बच्चे भी वे सब चीज़ें भूल चुके हैं जो उन्होंने पिछली कक्षाओं में सीखी थीं और मूलभूत कौशलों (पढ़ना, गुणा और भाग देना) के साथ संघर्ष कर रहे थे। हालाँकि, जब हम इन अवधारणाओं पर दुबारा रोशनी डालते हैं तो उन्हें वह सब याद आ जाता है जो उन्होंने सीखा था और वे इसे जल्दी से सीख जाते हैं।

दूसरी तरफ़, वे बच्चे जो सीखने में थोड़ा धीमे थे, वे बच्चे जो चरणबद्ध तरीक़े से सीखते थे उनका सीखने में बहुत ज़्यादा नुक़सान हुआ। उदाहरण के लिए, गणित में शुरुआत में इन बच्चों को अवधारणा निर्माण के लिए ठोस सामग्री मुहैया कराई गई थी, उसके बाद चित्रों की सहायता से उन अवधारणाओं को पुनः स्थापित किया गया था और अन्त में संख्याओं के रूप में अमूर्त सवाल करने के लिए दिए गए थे। कक्षा–4 के तीन बच्चे, जिन्हें इस तरीक़े से सिखाया गया था और जो पहले दो अंकों वाली संख्याओं को बढ़ते और घटते क्रम में पहचान सकते थे और लिख सकते थे, छोटी और बड़ी संख्याओं को पहचान सकते थे, जोड़ने और घटाने के तरीक़े (अपनी कक्षा के उपयुक्त अवधारणा के अनुरूप) को जानते थे और समझते थे, अब उनमें मात्रा की कोई समझ नहीं रह गई थी जिसे कि उन्होंने पहले सीख लिया था। उदाहरण के लिए, अब वे बच्चे बड़ी और छोटी संख्याओं में अन्तर नहीं कर पाते। वे यह भी नहीं बता पाते कि 20 में कितना और जोड़ने से 30 हो जाएगा। वे 3 + 5 = ? जैसे सवालों को भी नहीं समझ पाते और हल भी नहीं कर पाते। इन बच्चों को कक्षा–4 की

विषयवस्तु पढ़ाने का कोई फ़ायदा नहीं होगा क्योंकि वे कुछ भी समझ नहीं पाएँगे। ज़रूरत है कि हम उन्हें कक्षा–1 में पढ़ाई गई अवधारणाओं को फिर से पढ़ाएँ।

इसी तरह, उन बच्चों का इस दौरान कन्नड़ भाषा से कोई सम्पर्क नहीं रहा, जिनकी मातृभाषा कोई दूसरी भाषा थी। वे कन्नड़ वर्णों को पूरी तरह से भूल चुके हैं और ज़रूरत है कि अब उन्हें *अक्षर* (aksharas), *गुणिताक्षर* (gunitaksharas) और *ओत्ताक्षर* (ottaksharas) फिर से पढ़ाए जाएँ। इसलिए हम सीखने के इस नुक़सान की भरपाई 30 से 45 दिनों के अन्दर नहीं कर पाएँगे।

बुनियादी अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना

सेतुबन्ध कार्यक्रम अब बन्द हो गया है और स्कूलों को सारी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें मिल चुकी हैं। इसका अर्थ है कि अब कक्षा विशेष के स्तर के अनुरूप अवधारणाओं को पढ़ाना होगा। कक्षा के अनुरूप अवधारणाओं का निर्माण भाषा और गणित (पढ़ना, लिखना, संख्या की अवधारणाएँ, जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग) की बुनियादी अवधारणाओं व अन्य बुनियादी अवधारणात्मक ज्ञान पर निर्भर करेगा। बुनियादी रूप से, सार्थक तरीक़े से सीखने को सुनिश्चित करने के लिए, हमें यह पक्का करना होगा कि बच्चे बुनियादी भाषा और गणितीय कौशल सीख चुके हों। इन कौशलों को बच्चों के उनके स्तर अनुरूप अवधारणाओं के पहले या उनके साथ सिखाए जाने की ज़रूरत है। विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के पाठ पढ़ाते हुए हमें मूलभूत अवधारणाओं के साथ शुरुआत करनी चाहिए। यदि हम सीखने की प्रक्रिया में आई इन दरारों को भरने का प्रयास नहीं करते हैं तो बच्चे सीखने में अपनी रुचि खो सकते है और स्कूल आना छोड़ भी सकते हैं।

आगे का रास्ता

बच्चों की क्षमताओं का मूल्यांकन करना

पहले बताए गए कारणों की वजह से यह बेहद ज़रूरी हो जाता है कि प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर को समझा जाए। इस मूल्यांकन के लिए हमें साधारण, अनौपचारिक और सार्थक तरीक़ों की ज़रूरत होती है। जब बच्चे स्कूल में आते हैं या जब शिक्षक बच्चों से मिलने उनके समुदायों में जाते हैं तो उनसे बातचीत करते हुए, साधारण सवाल पूछकर, उन्हें साधारण शब्द और वाक्य पढ़वाकर और उनसे साधारण सवाल हल करवाते हुए उनका मूल्यांकन किया जा सकता है। इन तरीक़ों के ज़रिए बुनियादी भाषा, गणित और अन्य विषयों में प्रत्येक बच्चे की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे हमें वह समझ हासिल होगी कि प्रत्येक बच्चे को किस स्तर से पढ़ाना शुरू करना है और बच्चों की सीखने की ज़रूरतों के आधार पर हम उन्हें समूहों में बाँट सकते हैं।

फिर से शुरुआत करना

जब तक स्कूल बन्द हैं, शिक्षकों को पढ़ाने के लिए बच्चों के समुदायों में जाना होगा। हम दो या तीन बच्चों के छोटे समूह बना कर शुरुआत कर सकते हैं। प्रत्येक अवधारणा को पढ़ाने के बाद हमें उन्हें साधारण वर्कशीट देनी होंगी जिन पर वे पढ़े हुए का अभ्यास कर सकें। प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर नज़र रखने के लिए समय-समय पर अनौपचारिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे के लिए एक पोर्टफ़ोलियो बनाया जाना चाहिए और उसमें इन मूल्यांकनों का सार शामिल किया जाना चाहिए। जब बच्चा किसी अवधारणा विशेष की साफ़ समझ हासिल कर ले उसके बाद ही दूसरी अवधारणा के बारे में उसे बताना चाहिए। इसके अलावा किसी एक अवधारणा के लिए भी हम सिर्फ़ एक वर्कशीट का इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि एक समूह के अन्दर भी बच्चे सीखने के विभिन्न स्तरों पर होंगे। अतः प्रत्येक अवधारणा के लिए कई वर्कशीट तैयार करने की ज़रूरत है जो सीखने की विविध ज़रूरतों को पूरा कर सकें। उदाहरण के लिए, यदि हमें चार अंकों वाली संख्याओं का जोड़ सिखाने की ज़रूरत है तो हम इन चरणों का अनुसरण कर सकते हैं :

चरण- 1 : एक अंक की संख्या से शुरुआत करें। बच्चों के सामने ऐसे वक्तव्यों के रूप में साधारण सवाल रखे जाना चाहिए जिन्हें बच्चा अपने रोज़मर्रा के जीवन से जोड़ सके। इससे बच्चा जोड़ने की अवधारणा को समझ सकेगा। यदि बच्चा इन सवालों को हल करने में असमर्थ हो, तो जोड़ना सिखाने के लिए उसके सामने कुछ ठोस वस्तुएँ रखी जानी चाहिए। इसके बाद बच्चों को संख्याओं से इन वस्तुओं का निरूपण करना सिखाया जा सकता है। धीमे सीखने वाले बच्चों के लिए यह ज़रूरी है कि उनके साथ ठोस वस्तुओं और कई तरह की गतिविधियों का इस्तेमाल किया जाए। जब बच्चा संख्याओं के सवालों को ठीक से हल करना शुरू कर दे तब उसे आगे के अभ्यास के लिए वर्कशीट दी जानी चाहिए।

चरण- 2 : अब, दो अंकों वाली संख्याओं (20 तक) के सवाल दिए जाने चाहिए। जैसा कि एक अंक वाले सवालों के साथ किया था, वैसे ही जो बच्चे सवालों को हल करने में कठिनाई महसूस करते हैं उन्हें अभ्यास के लिए ठोस वस्तुएँ प्रदान करनी चाहिए। जब वे सवाल हल करने लगें तब उन्हें अभ्यास के लिए वर्कशीट दी जा सकती हैं।

चरण- 3 : दो अंकों की छोटी संख्याओं के साथ किए जाने वाले दहाई तक के हासिल वाले जोड़ को दहाई के बण्डलों का इस्तेमाल करके समझाया जा सकता है। बहुत-से बच्चों को हासिल के साथ अंकों के जोड़ को समझने में दिक़्क़त होती है। इसलिए उन्हें कई सवालों को दहाई के बण्डलों का

इस्तेमाल करते हुए हल करने के अवसर देना ज़रूरी है। वे जितना ज़्यादा इसका अभ्यास करेंगे, उतनी अच्छी तरह उन्हें यह अवधारणा स्पष्ट होगी। इससे भविष्य में बच्चों को हासिल वाली संख्याओं के जोड़ की कलन विधि (algorithm) को सीखने में मदद मिलेगी।

चरण- 4 : जब बच्चे दहाई के बण्डलों का इस्तेमाल करते हुए जोड़ना सीख जाएँ तब उन्हें कलन विधि का इस्तेमाल करते हुए संख्याओं के सवाल हल करने के लिए दिए जाने चाहिए। उन्हें सही चरणों का इस्तेमाल करते हुए जोड़ करना चाहिए। अभ्यास के लिए उन्हें वर्कशीट दी जानी चाहिए।

चरण- 5 : जब बच्चे उपरोक्त अवधारणाओं से परिचित हो जाएँ तब उन्हें तीन और चार अंकों वाले जोड़ के सवाल दिए जा सकते हैं। जब बच्चे ठोस वस्तुओं के साथ अभ्यास कर चुकें हों तब उन्हें संख्याओं के सवाल दिए जाने चाहिए। प्रत्येक अवधारणा के लिए प्रत्येक स्तर पर अभ्यास के लिए प्रासंगिक वर्कशीट बनाई जानी चाहिए।

चरण- 6 : अब इस चरण में, एक से चार अंकों वाली संख्याओं के जोड़ के सवाल वाली वर्कशीट दी जानी चाहिए। यह अन्तिम मूल्यांकन वर्कशीट होगी। जो बच्चे अन्तिम मूल्यांकन वर्कशीट को सही तरीक़े से पूरा करने में सक्षम हों उन्हें नई अवधारणाएँ बताई जा सकती हैं। जो बच्चे वर्कशीट को पूरा न कर पाएँ, उनकी ग़लतियों को चिन्हित किया जाना चाहिए और उन्हें सम्बन्धित अवधारणाएँ फिर से पढ़ाई जानी चाहिए। इसके बाद, फिर से मूल्यांकन करना चाहिए।

यह बेहतर होगा कि प्रत्येक चरण की शुरुआत ऐसे वक्तव्यों का रूप लिए सवालों से की जाए जो वास्तविक जीवन से जुड़े हों। अन्तिम मूल्यांकन करने से पहले, हर दो चरणों के बाद भी मूल्यांकन किया जा सकता है। हर एक चरण में बच्चे के सीखने और उसके मूल्यांकन के ब्यौरे का दस्तावेज़ीकरण करके उसे बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सभी बच्चों की प्रगति को समय-समय पर जाँचना चाहिए। हमें धीमे सीखने वाले बच्चों पर ख़ास ध्यान देना चाहिए, चाहे इसके लिए हमें कुछ अतिरिक्त प्रयास भी क्यों न करना पड़ें क्योंकि सिर्फ़ इसी तरीक़े से बच्चा बेहतर भविष्य हासिल कर सकता है। बच्चे शिक्षा व्यवस्था में तभी रह पाएँगे जब वे बेहतर तरीक़े से सीखेंगे और जब सीखने की निरन्तरता होगी।

स्कूल छोड़ने से बच्चों को रोका जाए

स्कूल खुलने पर हमारा मुख्य काम होगा कि हम बच्चों को वापस स्कूल ले कर आएँ। हो सकता है कि स्कूल बन्दी के समय में बच्चे विभिन्न प्रकार के शारीरिक, यौनिक और मानसिक दुर्व्यवहार के शिकार हुए हों। हो सकता है कुछ ने अपने माँ-बाप या परिवार के अन्य सदस्यों को खो दिया हो। जैसा कि हम जानते हैं कि बहुत सारे बच्चे अपने घर की आर्थिक दुर्दशा के कारण काम पर जाने लगे हैं। इन बच्चों को वापस स्कूल लाना बहुत कठिन होगा। यह ज़रूरी है कि हम ऐसे बच्चों के माता-पिता और अभिभावकों से बातचीत करें और उन्हें बच्चों को वापस स्कूल भेजने के लिए राज़ी करें। हमें बच्चों से भी बात करने की ज़रूरत है। यह भी एक कठिन काम लग सकता है लेकिन इस ओर प्रयास करना अत्यधिक ज़रूरी है।

वर्तमान में बच्चों में नियमित स्कूल आने की आदत ख़त्म हो चुकी है। वे बच्चे जो पहले ही स्कूल कम आते थे, अब शायद स्कूल वापस आने में रुचि न दिखाएँ। यह ज़रूरी है कि हम इन बच्चों से मिल कर उन्हें वापस स्कूल आने के लिए राज़ी करें। स्कूल में बच्चों की अनुपस्थिति से बचने का एक ही तरीक़ा है कि हम बच्चों की मानसिक स्थिति व उनके सामने आ रही समस्याओं को समझें और उनके साथ प्यार से पेश आएँ। जब वे वापस स्कूल आएँ तो उन्हें चित्रकारी, रंग भरने और ऐसी दूसरी गतिविधियों में शामिल करें जिनमें उनकी रुचि हो और उसके बाद ही उन्हें अकादमिक अधिगम की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। यह उन बच्चों के लिए तो अत्यन्त ज़रूरी है जिन्होंने सीखने की रुचि गँवा दी हो। वे बच्चे जिन्होंने स्कूली शिक्षा में अपनी रुचि खो दी है, उन्हें सीखने की गतिविधियों से तारतम्य बिठाने में थोड़ा समय लग सकता है। कक्षा में सचेत बैठने और पाठ को ध्यान से सुनने की आदत शायद उनमें अब न हो। अतः पाठ की योजना इस तरह बनानी होगी कि उसमें बहुत-सी गतिविधियाँ शामिल की जाएँ और उनमें अवलोकन, प्रायोगिक कार्य और आँकड़ों के संग्रहण के ढेर सारे अवसर हों जिससे बच्चों को कक्षा से बाहर जाने का मौक़ा मिले। इससे बच्चों की उत्साहवर्धक भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी। हमें अनौपचारिक मूल्यांकन पद्धतियों के ज़रिए बच्चों की सीखने की क्षमता को जाँचते रहने की ज़रूरत है।

कोविड–19 महामारी ने बहुत-से बच्चों के जीवन को अस्थिर बना दिया है। इन बच्चों के भविष्य को बचाने की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर है। अगर हम उनके सीखने की निरन्तरता बनाए रखने के लिए उपयुक्त क़दम नहीं उठाते तो बहुत से बच्चे इस शिक्षा व्यवस्था से पूरी तरह बाहर हो जाएँगे। यदि हम बच्चों को शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाने देंगे तो बहुत से परिवारों को भविष्य में आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इससे समाज में व्याप्त असमानता की खाई और ज़्यादा बढ़ जाएगी। इस स्कूलबन्दी

के कारण बच्चों ने आनन्ददायी स्कूली जीवन का महत्त्वपूर्ण डेढ़ साल खो दिया है। गुणवत्ता वाली शिक्षा सभी बच्चों का अधिकार है। किसी भी परिस्थिति में बच्चों को इससे वंचित नहीं किया जा सकता और हमारा कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा का उनका अधिकार सुरक्षित रहे।

Endnotes

i सेतुबन्ध कार्यक्रम, कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा राज्य के सभी सरकारी कन्नड़ माध्यम स्कूलों में लागू किया गया था।

नन्दिनी शेट्टी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की सदस्य हैं और बेंगलूरु शहर में सरकारी स्कूलों के साथ काम करती हैं। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू सेंटर फ़ॉर एडवांस साईंटिफ़िक रिसर्च (JNCASR), बेंगलूरु से पीएचडी की है। उनसे nandini.shetty@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमिता शीरीं

स्तर-उपयुक्त सीखने के लिए क्षमता-वार समूहीकरण

नवनीत बेदार

कोविड-19 ने हमारे आसपास की हर चीज़ को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। इनमें भी सबसे ज़्यादा प्रभावित शिक्षा हुई है। हालाँकि *कोविड-19* का असर हमारी अर्थव्यवस्था पर भी बहुत गहरा पड़ा है, लेकिन उससे उबरना अपेक्षाकृत आसान है। शिक्षा तथा बच्चों के सीखने पर पड़ा असर बहुत गहरा है और इसके परिणाम भी कई पीढ़ियों को देखने होंगे। भय और अनिश्चितता के माहौल में स्कूल बन्द हो गए थे और शुरुआती महीनों में संसाधनों की कमी से बच्चों से सम्पर्क कर पाना शिक्षकों के लिए असम्भव-सा हो गया था। लम्बे समय तक स्कूलों के बन्द रहने से बच्चों के सीखने पर दो तरह से प्रभाव पड़ा है : एक, उनका नियमित सीखना न केवल बाधित हुआ, बल्कि रुक-सा गया। दूसरी ओर, स्कूल के नियमित रूप से न चलने के कारण जो कुछ भी वे पहले सीख चुके थे, उसमें से भी कुछ-कुछ भूलने लगे हैं। यहाँ एक विद्यार्थी के हालात से इसे समझने का प्रयास किया जा रहा है।

मार्च 2020 में करीम ने कक्षा-1 पास की थी। इस कक्षा में उसने लगभग 50 तक की गिनती, हिन्दी और अँग्रेज़ी के वर्णों की पहचान और हिन्दी में बिना मात्रा वाले सरल शब्द पहचानना सीख लिया था। वह अपनी पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के पाठ भी पढ़ लेता था। बिना हासिल वाली जोड़-बाक़ी कर लेता था। कुछ पहाड़े भी उसे याद हो गए थे। वह अपनी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में दिए और उससे इतर आसान टेक्स्ट भी पढ़ लेता था। अँग्रेज़ी में भी कैपिटल और स्मॉल लेटर्स बनाना सीख गया था। वह 'कैट', 'मैट', 'हैट', 'रैट' जैसे शब्द लिख और पढ़ लेता था। सरल शब्दों से बने निर्देश वाक्य जैसे 'सिट डाउन', 'स्टैंड अप', 'कम इन' वग़ैरह समझ लेता था। उसे अँग्रेज़ी की कुछ नर्सरी राइम भी क्रम से याद थीं।

2020-21 के अकादमिक सत्र में, बिना किसी औपचारिक आकलन के वह कक्षा-2 का विद्यार्थी बन गया। स्कूल बन्द होने की वजह से वह स्कूल नहीं आया। अगस्त माह में सामुदायिक केन्द्रों पर जो कुछ पढ़ने-लिखने का काम शुरू हो सका, उसमें भी वह नियमित रूप से शामिल नहीं हो सका। इस बीच उसके गाँव को दो बार कंटेनमेंट जोन घोषित किया गया। इस समय में भी सामुदायिक केन्द्र पर उसका आना नहीं हो सका।

पूरे वर्ष में लगभग दो से तीन माह ही सामुदायिक केन्द्रों पर कक्षाएँ चलीं। इसमें करीम लगभग 20 से 30 फ़ीसद समय ही इस औपचारिक सीखने को दे पाया। जब वह सामुदायिक केन्द्रों पर चलने वाली कक्षा-2 की कक्षाओं में भागीदारी कर रहा था तो उसे एहसास हुआ कि कक्षा-1 में पढ़ी हुई तमाम चीज़ों में से वह काफ़ी कुछ भूल गया है और कक्षा-2 में सिखाई जाने वाली चीज़ें उसके लिए मुश्किल प्रतीत हो रही हैं। करीम के लिए अपने शिक्षक से ऑनलाइन जुड़ना असम्भव था क्योंकि उसके घर में एकमात्र बेसिक फ़ोन था जो उसके पिता के पास रहता था।

करीम जितने दिन भी कक्षा-2 के स्तर के पाठ पढ़ने की कोशिश करता रहा, उसे लगातार महसूस होता रहा कि कक्षा-1 में छूट गई चीज़ें उसे ठीक से समझनी चाहिए थीं। उसे गणित में गुणा-भाग और हासिल वाले जोड़-घटाने के सवाल करने में दिक़्क़त आ रही थी। साथ ही उसे इबारती सवाल समझने में भी मुश्किल हो रही थी। इबारती सवालों की दिक़्क़त केवल गणित की नहीं भाषा की वजह से भी थी।

अप्रैल 2021 में वह कक्षा-3 में प्रमोट किया जा चुका है। कक्षा-1 में सीखे हुए का कक्षा-3 में सीखने के लिए उपयोग कर पाना उसके लिए बेहद मुश्किल है। पढ़ने और समझने की जो अपेक्षा कक्षा-3 की पाठ्यवस्तु करती है उसके लिए करीम पूरी तरीक़े से तैयार नहीं है। अभी भी उसके पास कक्षा-1 के स्तर के कौशल आधे-अधूरे ही हैं। इस दौरान उसकी कक्षा-3 की पाठ्यचर्या में पर्यावरण अध्ययन भी जुड़ गया, जिसमें ऐसी तमाम अवधारणाएँ और विषय शामिल हैं जिनसे उसका ज़्यादा लेना-देना नहीं था।

शिक्षकों के सामने चुनौतियाँ

शिक्षक के सामने इन कामों में भी तमाम क़िस्म की चुनौतियाँ थीं। जैसे, कई बार किसी गाँव या मोहल्ले का कंटेनमेंट जोन

में बदल जाना; बच्चों के साथ काम करने के लिए समुदाय की असहमति; अभिभावकों का सामुदायिक कक्षाओं में बच्चों को न भेजना आदि भी सामने आती रहीं, फिर भी शिक्षक अपनी तरफ़ से बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करने का हर सम्भव प्रयास करते रहे। लेकिन हम जानते हैं कि किसी एक कक्षा के कक्षा-कक्ष में पाँच-छह घण्टे के सतत और नियमित शिक्षण का कोई विकल्प नहीं हो सकता। कक्षा-कक्ष में हुआ काम बच्चों के बीच आपसी संवाद शुरू करने में और कक्षा-कक्ष का माहौल बच्चों के सीखने में मददगार होता है। कक्षा-कक्ष में चल रही चर्चा में जब कोई बच्चा अपने जीवन के अनुभव साझा करता है तो वह किन्हीं अवधारणाओं को बेहतर तरीक़े से समझने में न केवल ख़ुद की मदद करता है, बल्कि सुनने वाले अन्य बच्चे भी उन अनुभवों से जोड़कर देख पाते हैं और इस प्रक्रिया में वे भी उक्त अवधारणाओं को समझ पाते हैं।

ऊपर जो करीम का उदाहरण लिया गया है वह प्राथमिक स्तर का है, लेकिन आगे जिन अनुभवों की बात की गई है वे उच्च प्राथमिक स्तर के हैं। बहुत-से बच्चे जो मार्च, 2020 में कक्षा-4 में थे, वे अब कक्षा-6 में आ चुके हैं और उनके साथ भी कमोबेश उसी क़िस्म की समस्याएँ सामने आ रही हैं। उनके सीखने में भी उसी तरह के गैप दिखाई दे रहे हैं जैसे हम करीम के केस में देख चुके हैं। हाँ, उनका स्कूल का एक्सपोज़र करीम की तुलना में ज़्यादा ज़रूर है लेकिन भूलने में वे भी कम नहीं हैं। दरअसल, अभी हमें सीधे तौर पर और सतत रूप से काम करने के अवसर उच्च प्राथमिक स्कूल के बच्चों के साथ ही मिल पाए हैं। इसी तरह का काम प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ सामुदायिक केन्द्रों में किया जा रहा है, लेकिन वहाँ अभी भी नियमितता की समस्या है।

स्कूलों के मेरे अनुभव

मेरे निजी अनुभव दो स्थानों के स्कूलों से जुड़े हुए हैं— एक धमतरी (छत्तीसगढ़) और दूसरा दिनेशपुर, ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)। दोनों जगह पर उच्च प्राथमिक स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ की जा रही हैं।

धमतरी में औपचारिक रूप से स्कूल नहीं खुला, लेकिन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए बच्चों के साथ लगातार काम करने के प्रयास जारी रहे। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के साथ उनके घर या समुदाय में जाकर काम करना, प्रत्येक अवधारणा और पाठ पर आधारित वर्कशीट बनाना, उनको बच्चों तक पहुँचाना और एक नियमित अन्तराल के बाद बच्चों तक पहुँचकर वर्कशीट पर काम करने में आ रही दिक़्क़तों को सुनना, समझना और उनके हल निकालना शिक्षक लगातार करते रहे।

लेकिन इसके बावजूद सत्रह महीने बाद जब स्कूल खुले, तो हमने देखा कि बच्चे अपने पिछले सीखे हुए में से काफ़ी कुछ भूल चुके हैं। यह समस्या उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में भी साफ़ दिख रही है। गणित में आधारभूत संक्रियाएँ, भिन्न, दशमलव और इस तरह की तमाम अवधारणाएँ बच्चे या तो पूरी तरह से भूल चुके हैं या उनमें कुछ सामान्य ग़लतियाँ कर रहे हैं। इसी तरह से भाषा में उनके पढ़ने और लिखने के कौशल में शब्दों की पहचान, लिपि-चिह्नों की पहचान में समस्या जैसे मुद्दे सामने आ रहे हैं। हिन्दी में तो यह थोड़ा कम है, लेकिन अँग्रेज़ी में यह बहुत ज़्यादा है।

चुनौतियों को पहचानना

इस परिस्थिति से निपटने के लिए भाषा और गणित के लर्निंग आउटकम का एक रूब्रिक बनाने का प्रयास किया गया। इस रूब्रिक के आधार पर यह जाँच की जा सकती थी कि कोई बच्चा किन चीज़ों को सीखने में पास हुआ है, और किन क्षेत्रों में उस पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

इस तरह के व्यवस्थित लर्निंग आउटकम और क्षमताओं के आधार पर बच्चों का बेसलाइन आकलन किया गया। इसमें पाया गया कि लगभग 35% बच्चे आधारभूत क्षमताओं/कौशलों में कहीं-न-कहीं कुछ दिक़्क़त महसूस करते हैं। वे या तो स्तर-उपयुक्त क्षमताओं/कौशलों को विकसित नहीं कर पाए, या लॉकडाउन के दौरान नियमित अभ्यास न होने की वजह से भूल गए। इसके समाधान के लिए बच्चों की क्षमताओं/कौशलों/स्तर और चुनौतियों के आधार पर समूह बनाए गए।

क्षमता-वार समूहीकरण

हिन्दी भाषा का पहला समूह 11 बच्चों का था। इसमें आधारभूत भाषा कौशल यानी वर्ण-पहचान का संकट और त्वरा (तेज़ी) के साथ पढ़ना-लिखना शामिल था। दूसरा समूह 12 बच्चों का था जिन्हें आधारभूत क्षमताओं की दिक़्क़तें तो नहीं थीं, लेकिन लेखन-कौशल और कुछ बारीक ध्वनि भेद और अर्थ-निर्माण की दिक़्क़तें थीं। इस समूह में ऐसे बच्चे भी शामिल थे जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है और कुछ ध्वनियों का उच्चारण या उनमें फ़र्क़ करना उनके लिए आसान नहीं, जैसे ब और व का फ़र्क़, र और ड़ का फ़र्क़।

इसी तरह गणित में भी आधारभूत गणितीय कौशल जैसे संख्या-पहचान व उनके पैटर्न को समझना, आधारभूत सं क्रियाएँ आदि समस्याओं के साथ एक समूह बना जिसमें 12 बच्चे थे। दूसरा समूह ऐसे बच्चों का था जिनके साथ कक्षा-3,4 और 5 के कौशलों को लेकर चुनौतियाँ थीं। इसके साथ ही इन बच्चों के साथ भाषिक चुनौतियाँ भी थीं, जिनके कारण इबारती सवालों में भी इनको काफ़ी दिक़्क़त आती थी।

इन समूहों के आधार पर ही शिक्षकों ने सीखने-सिखाने की योजना बनाई। उच्च प्राथमिक स्तर के सभी शिक्षक इस काम में जुटे। प्रत्येक शिक्षक फोकस तरीक़े से दो या तीन बच्चों के साथ काम कर रहे थे, ताकि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत दिक़्क़त को समझा जा सके और उसे दूर किया जा सके। इस दौरान एक रोचक बात समझ में आई कि बच्चे बेहद शिद्दत से सीखना चाहते हैं, लेकिन कई बार स्कूल के रूटीन में बहुत सारे बच्चों के बीच में कई कारणों से उनका सीखना सुनिश्चित नहीं हो पाता। पर इसकी बात कभी बाद में।

धमतरी और दिनेशपुर दोनों स्कूलों में समस्याएँ लगभग एक-सी ही थीं। इसलिए दोनों जगह लगभग एक-सी ही पद्धति और तरीक़े इस्तेमाल में लिए गए। इस काम को शुरू हुए लगभग दो माह बीत चुके हैं और इसकी प्रगति का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि लगभग 50 प्रतिशत से ज़्यादा बच्चे अपनी चुनौतियों पर पार पा चुके हैं।

पहले प्रयास में उन 23 बच्चों को शामिल किया गया था जिनके साथ संख्या, स्थानीय मान, आधारभूत संक्रियाएँ; भाषा में अक्षरों की पहचान, पढ़ पाने की क्षमता और बोला हुआ सुनकर लिखने की क्षमता जैसी बेहद आधारभूत चुनौतियाँ थीं। दो माह बाद इनमें से लगभग 17-18 बच्चे या तो चुनौतियों को पार कर चुके हैं या ऐसा करने के अन्तिम पड़ाव पर हैं। कुछ बच्चे अन्य कारणों से अभी भी उन चुनौतियों से जूझ रहे हैं, लेकिन उनमें भी बदलाव देखने में आया है और अपेक्षा है कि वह भी जल्द ही इन क्षमताओं को ग्रहण कर लेंगे।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

भाषा के समूह में 'दिगन्तर'[1] के एक पुराने पैकेज 'सहज पठन' को काम में लिया गया। इसमें 6 कहानियों के इर्द-गिर्द लिखने-पढ़ने पर विविध गतिविधियाँ विकसित की गई हैं। हालाँकि यह पैकेज कक्षा-3, 4 व 5 के विद्यार्थियों के लिए है, लेकिन यहाँ इसे कुछ बदलाव के साथ प्रयोग किया गया। कुछ कहानियाँ बदली गईं, कुछ नई जोड़ी गईं, कुछ अभ्यास भी और जोड़े गए। इसमें देखा गया कि चयनित 11 बच्चों में से अधिकांश बच्चों ने उन कहानियों में रुचि ली। इसके माध्यम से उन्होंने वर्णों और उनकी आकृतियों की पहचान, त्वरा के साथ लिखना और पढ़ना जैसी दक्षताएँ तेज़ी-से हासिल कीं।

इस पैकेज में प्रत्येक कहानी का एक पोस्टर, कहानी के प्रत्येक वाक्य की पट्टी, प्रत्येक शब्द का कार्ड उपयोग में लिए गए। नियमित रूप से पहले कहानी सुनाना, फिर उँगली रखकर पढ़ना, इसके बाद वाक्य-पट्टियों को व्यवस्थित कर कहानी बनाना, शब्द कार्ड को व्यवस्थित कर कहानी बनाना— सभी बच्चों के लिए व्यक्तिगत रूप से लगभग रोज़ की प्रक्रिया रही। इसके साथ ही कहानी के आधार पर वर्कशीट पर काम भी करवाया गया। इसमें कहानी के कुछ शब्दों को हटा दिया गया था और बच्चों से कहानी को पूरा करने के लिए उन शब्दों को रिक्त स्थान में भरने के लिए कहा गया था।

हर कहानी के शब्द-कार्डों से ऐसे वाक्य बनवाए गए, जो कहानी में पहले से मौजूद नहीं थे। ऐसे शब्दों की पहचान करना जो उन्होंने पहली बार सुने या समझे हों, उनको लिखना, शब्दों की ध्वनियों को अलग-अलग पहचानना, उनके लिए प्रयुक्त दृश्य प्रतीकों को जोड़ना और नए शब्द बनाना, यह सारे काम बच्चों ने बख़ूबी रुचि लेकर किए। दो महीने के अन्तराल के बाद 11 में से 8 बच्चे *बरखा* सीरीज के स्तर चार के टेक्स्ट को आसानी-से पढ़ लेते हैं और उन पर आधारित सवालों के जवाब भी दे देते हैं। बचे हुए 3 बच्चों के साथ नियमित रूप से स्कूल न आ पाने और कक्षा में लगातार ध्यान केन्द्रित न कर पाने और भूल जाने की चुनौती बनी हुई है।

भाषा के एक अन्य समूह में 12 बच्चे थे। उनकी समस्याएँ कुछ अलग स्तर की थीं। जैसे जिन बच्चों की मातृभाषा अलग थी उन्हें लिंगबोध के व्याकरण के नियमों का अधिक अभ्यास दिया जाना था। इसके लिए शिक्षक ने एक या दो बच्चों पर फोकस कर उनकी व्यक्तिगत समस्या को अभ्यास और वर्कशीट के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में भी पिछले दो माह में लगभग 50 फ़ीसद समस्या का समाधान होता प्रतीत होता है।

संक्षेप में

पिछले दो माह के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि अगर इनपुट स्पष्ट रूप से परिभाषित, योजनाबद्ध और निरन्तर तरीक़े से दिए जाएँ, यानी सीखने में आए गैप्स को पहचान कर उन पर काम किया जाए तो अधिकांश गैप्स जल्द ही भरे जा सकते हैं। कक्षा-6, 7 व 8 के इन बच्चों के साथ आगे की चुनौतियों पर भी योजनाबद्ध रूप से काम जारी है। अपेक्षा है कि इस सत्रान्त तक सभी बच्चे अपने स्तर की क्षमताओं के आसपास ही होंगे।

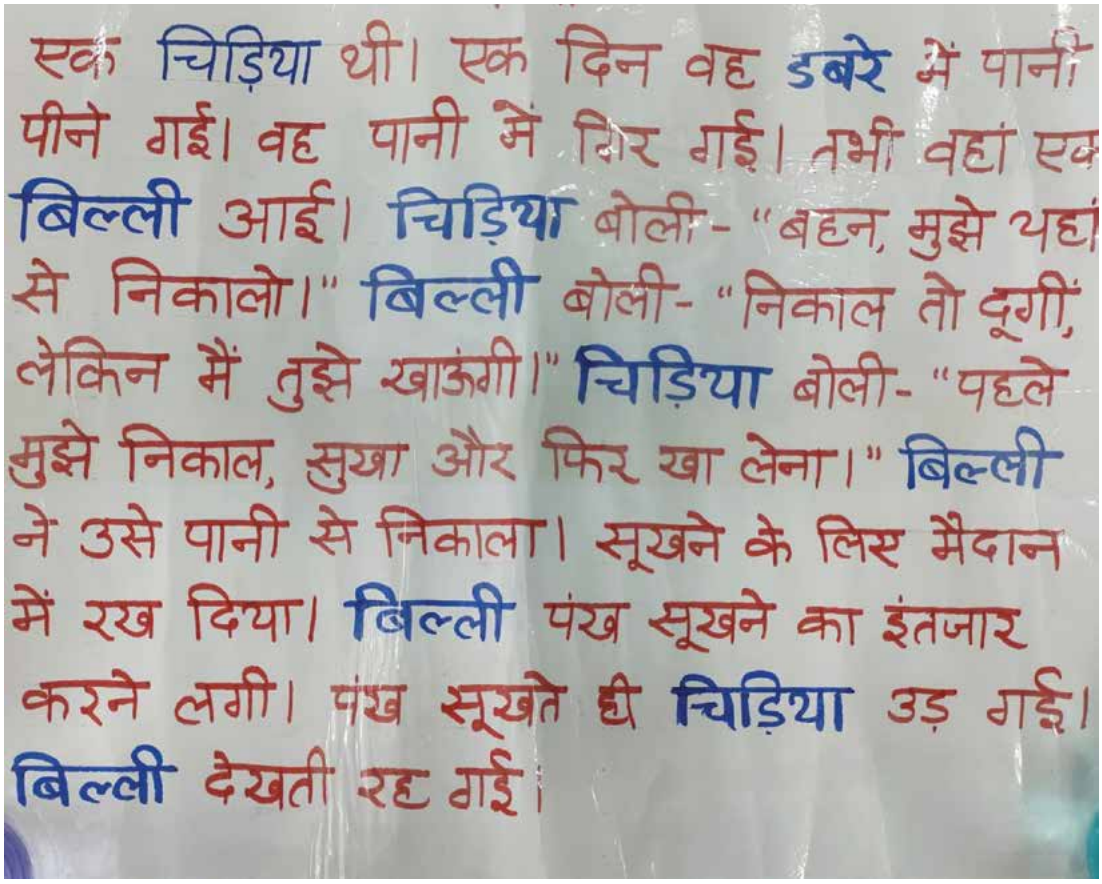

*बच्चों की पहचान छिपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

आभार

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर से *पुष्पा बोरा* और *शिप्रा अग्रवाल* ने मेरे साथ मिलकर बच्चों के साथ काम किया और वे इस काम को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

Endnotes

i *Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti* is a non-profit organisation in Jaipur working in the field of education since 1978.

नवनीत बेदार ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिन्दी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। वह 1999 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने एनसीईआरटी, नई दिल्ली और दिगन्तर, जयपुर में काम किया है। उन्होंने दून स्कूल में अध्यापन के साथ ही भारती फ़ाउण्डेशन में शिक्षक-प्रशिक्षक के तौर पर भी कार्य किया है। पिछले दस वर्षों से वह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से भाषा के स्रोत व्यक्ति और ज़िला प्रमुख के तौर पर जुड़े हुए हैं। वर्तमान में वह अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर के प्रिंसीपल हैं। उनसे navneet.bedar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अशान्त दौर | कोविड-19 का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

रवि कुमार

जैसे ही हमने 2020 की सुबह में प्रवेश किया, महादेश चीन में कहीं एक बीमारी का प्रकोप हुआ, जिसे *कोविड-19* के रूप में जाना जाने लगा। हालाँकि, किसी ने दूर-दूर तक यह कल्पना भी नहीं की थी कि यह दुनिया भर में इतना विनाशकारी प्रभाव छोड़ेगा। इससे पहले कि दुनिया इस पर संज्ञान लेती, बिजली की गति से कई घटनाएँ सामने आईं। संक्रमण के फैलने की दर इतनी तेज़ थी कि कुछ ही हफ़्तों में 200 से अधिक देश प्रभावित हो गए, जिसके चलते विश्व स्वास्थ्य संगठन को 11 मार्च 2020 को इसे 'महामारी' घोषित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस काले दिन ने इस तथ्य को उजागर किया कि सबसे विकसित देशों सहित दुनियाभर के तमाम नीति निर्माताओं के लिए एक ऐसे सूक्ष्म जीव का यह हमला बिल्कुल अप्रत्याशित था, जो सीमाओं को पार कर सकता है और सबसे मज़बूत स्वास्थ्य प्रणालियों को भी ख़तरे में डाल सकता है।

वायरस, उसकी उत्पत्ति, फैलने के कारकों के बारे में स्पष्टता की कमी, वैज्ञानिक समुदाय से परस्पर विपरीत विचारों के आने, असत्यापित जानकारियों और अन्य कारकों ने बढ़ते संकट का समाधान प्रदान करने में मदद करने की बजाय, केवल भ्रम की स्थिति को बढ़ाया। इस बीच, लोग ताश के पत्तों की तरह ढह रहे थे और कई लोगों ने अपने परिजनों, आजीविका और घरों को खो दिया। सभी आयु समूहों में मृत्यु और संक्रमित होने का डर सामने आया और डैशबोर्डों के रूप में मनहूस ख़बरें शेयर बाज़ार की ख़बरों के समान पूरे मीडिया में दिखाई दीं। इन डैशबोर्डों ने शुरू में मृत्युदर पर ध्यान केन्द्रित किया, जिसने घबराहट और मृत्यु का भय पैदा किया और कोमल दिमाग़ वाले लोगों को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया।

तत्काल प्रभाव

बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए, सरकारों ने सभाओं पर सामाजिक बन्दिशें लगाईं और स्कूलों को बन्द कर दिया (जो बच्चों के जीवन के लिए सबसे ज़्यादा हानिकारक था)। साथ ही, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, पार्कों और बाहरी गतिविधियों को बन्द कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप लोगों की दिनचर्या में अचानक बदलाव होने के साथ-साथ भारी वित्तीय नुक़सान भी हुआ।

इसके अलावा, घर पर सामंजस्यहीन परिस्थितियों का शिकार होने, पहले से मौजूद कमज़ोरियों (नशीले पदार्थों और शराब पर निर्भरता, घरेलू हिंसा और परिवार के सदस्यों में मानसिक बीमारी) के और ज़्यादा सम्पर्क में आने, अत्यधिक स्क्रीन उपयोग और अस्वास्थ्यकर आहार ने तनाव बढ़ाने में योगदान दिया है और कमज़ोर व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक सन्तुलन को प्रभावित किया है। इसका तत्काल प्रभाव गम्भीर रूप से बीमार रोगियों द्वारा महसूस किया गया, जिन्हें समय पर उपचार नहीं दिया जा सका। इन जोखिमों के साथ-साथ वातावरणीय कारकों, जैसे लॉकडाउन और विभिन्न सेवाओं के फिर से शुरू होने के बारे में अनिश्चितता ने बच्चों की सीखने की क्षमताओं, अनुकूली व्यवहारों, उत्पादकता, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाला है और उनकी वृद्धि और विकास को ख़तरे में डाला है। ये सब स्थितियाँ उनके समग्र विकास को भी प्रभावित कर सकती हैं।

इन मुद्दों और समस्याओं को सभी लोगों के मन में चल रहे सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न ने और बढ़ा दिया : *कोविड-19* का अन्त कब होगा? इसका आज तक कोई जवाब नहीं है, जिससे इस बीमारी की और लहरें आने का भय व बार-बार की तालाबन्दी का अन्देशा और बढ़ जाता है। यह स्पष्ट हो गया कि इन तमाम परिस्थितियों के चलते बच्चे सबसे अधिक प्रभावित थे, क्योंकि उन्होंने हर समय चारों ओर उदासी और निराशा देखी थी, जबकि वास्तव में उन्हें इस वक़्त अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों का आनन्द लेना चाहिए था।

गहरा प्रभाव

प्रत्येक व्यक्ति अनोखा होता है और कुछ समस्याएँ आमतौर पर जीवन के विभिन्न चरणों में आती ही हैं। लेकिन, इस अजीबोग़रीब स्थिति में, हर कोई एक ही समय में एक-सी समस्याओं से गुज़रा, जिससे अघात और ज़्यादा हुआ क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर लगे सदमे को झेलने के और सहयोग प्रदान करने के बहुत कम तंत्र उपलब्ध थे। बीमारी का जोखिम, सुरक्षात्मक रोक, सामाजिक अलगाव और माता-पिता व देखभाल करने वालों के तनाव के स्तर में वृद्धि, बच्चे के विकास के लिए सम्भावित जोखिम पैदा करने वाली स्थितियाँ हैं। बच्चों में प्रकट रूप से सामने आने वाली कुछ दशाएँ हैं :

व्यग्रता विकार (Anxiety disorders)

यह बच्चों में सबसे आम मानसिक स्वास्थ्य समस्या है और जो लोग व्यग्रता विकार से पीड़ित होते हैं, उन्हें आमतौर पर दैनिक कामकाज के कई क्षेत्रों में नुक़सान उठाना पड़ता है।

- ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई
- हमेशा रोते रहने और क़रीबी व्यक्ति से चिपके रहने की प्रवृत्ति
- ठीक से नींद न आना या रात में बुरे सपने के साथ जागना
- ठीक से भोजन न करना
- आसानी से क्रोधित या चिड़चिड़े हो जाना
- क्रोधित होने के दौरान नियंत्रण खो देना
- हमेशा चिन्ता करना या नकारात्मक विचार मन में आना
- बार-बार तनाव और घबराहट होना
- सामान्य से अधिक शौचालय का उपयोग करना

अवसाद (Depression)

- लम्बे समय तक लगातार उदास या दुखी महसूस करना
- हर समय चिड़चिड़े रहना
- उन चीज़ों में रुचि की कमी हो जाना जो पसन्द थीं
- ज़्यादातर समय थकान और थकावट का प्रदर्शन
- दोषी या बेकार महसूस करने के बारे में बात करना
- भावनाओं का सुन्न होना या निराशा या ख़ालीपन की भावना होना
- आत्महत्या की प्रवृत्तियाँ
- ख़ुद को नुक़सान पहुँचाना, उदाहरण के लिए, अपनी कलाइयों को काटना
- या दवा का ओवरडोज़ लेना
- सामान्य से अधिक या कम खाना

तीव्र तनाव विकार (Acute stress disorder)

- मनोवैज्ञानिक लक्षण जैसे चिन्ता, उदास मन, चिड़चिड़ापन, भावनात्मक उतार-चढ़ाव, ख़राब नींद, ख़राब एकाग्रता, अकेले रहने की चाहत
- किसी के साथ भी भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस न करना
- बार-बार परेशान करने वाले और अप्रिय सपने या यादें आना
- ऐसी किसी भी चीज़ से बचना जो अप्रिय यादों को ज़िन्दा कर सकती हो
- लापरवाह या आक्रामक व्यवहार जो ख़ुद को ख़तरे में डाल सकता है

अभिघातजन्य तनाव विकार (Post-Traumatic Stress Disorder/ PTSD)

- भूतकाल की किसी घटना या घटनाओं के डरावने विचार और यादें आना
- लम्बे समय तक भावनात्मक रूप से सुन्न रहना
- नींद की समस्या
- घबराहट, बेचैनी महसूस करना या सतर्क और सावधान रहना (अपना बचाव करने की मानसिक अवस्था में होना)
- उन चीज़ों में रुचि खोना जो पसन्द थीं और सबसे अलग-थलग, जड़ या निष्क्रिय प्रतीत होना
- स्नेह दिखाने में परेशानी होना
- पहले से ज़्यादा आक्रामक होना, यहाँ तक कि हिंसक हो जाना
- यादों को वापस लाने वाली कुछ जगहों या स्थितियों से दूर रहना
- यादों का लौट-लौटकर आना। ये छवियाँ, ध्वनियाँ, गन्ध या भावनाएँ हो सकती हैं। बच्चे को लग सकता है कि कोई घटना फिर से हो रही है

मनोग्रसित-बाध्यता विकार (Obsessive Compulsive Disorder/ OCD)

- स्वच्छता को लेकर अत्यधिक चिन्ता
- बुरी चीज़ों के होने या कुछ ग़लत करने के बारे में अत्यधिक भय
- बार-बार हाथ धोना
- बार-बार सन्देह करना, उदाहरण के लिए, यह जाँचना कि क्या कोई दरवाज़ा बन्द है या नहीं
- बारीक़ियों पर बहुत अधिक ध्यान
- कुछ बुरा होने के बारे में बहुत ज़्यादा चिन्ता करना
- अपने या दूसरों के शब्दों को दोहराना
- एक ही सवाल बार-बार पूछना
- किसी व्यवस्था के सख़्त नियमों का पालन करना, जैसे कि हर दिन एक ही क्रम में कपड़े पहनना
- दूसरों को चोट पहुँचाने के बारे में परेशान करने वाले और अवांछित विचार या छवियाँ आना

शिक्षक क्या कर सकते हैं

समस्याओं को गम्भीरता से लें

सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु, जो भी बात बच्चे के लिए समस्या पैदा कर रही है, उसे गम्भीरता से लें। हो सकता

है कि आपको यह कोई बड़ी समस्या न लगे, लेकिन बच्चे के लिए यह एक बड़ी समस्या हो सकती है।

बच्चे से बात करें

बच्चे से बात करके, शिक्षक समस्या की प्रकृति को समझ सकता है। यह समस्या बच्चे द्वारा अनुभव की जा रही घबराहट, भय या चिन्ताओं के रूप में हो सकती है। अगर ऐसे बच्चे आपसे बात नहीं करना चाहते, तो उन्हें बताएँ कि आपको उनकी चिन्ता है और अगर उन्हें आपकी ज़रूरत पड़े, तो आप उपलब्ध हैं। उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने के लिए प्रोत्साहित करें जिस पर वे भरोसा करते हों, उदाहरण के लिए, कोई मित्र या परिवार का कोई सदस्य। आत्महत्या के विचार या यौन शोषण जैसे गम्भीर मुद्दों के मामले में, शिक्षकों को तुरन्त कार्रवाई करनी चाहिए और स्वास्थ्य सेवा से जुड़े पेशेवरों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की मदद लेनी चाहिए।

बच्चे की सुरक्षा

सुनिश्चित करें कि किसी दर्दनाक घटना के बाद बच्चा सुरक्षित है और यह जानता है कि आपात स्थिति में मदद कहाँ लेनी है। शिक्षक त्वरित सहायता के लिए लोगों के सम्पर्क विवरण प्रदान कर सकते हैं और बच्चे को उनसे सम्पर्क करने में भी मदद कर सकते हैं।

भावनात्मक सहारा

बच्चों को आमतौर पर परिवार या क़रीबी दोस्तों से भावनात्मक सहारा मिलता है। इस तरह के सहयोग तंत्र के अभाव में, शिक्षक को क़दम उठाना चाहिए। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता *कोविड-19* के सम्भावित परिणामों के बारे में समझाकर और इससे उबरने के कौशल सिखाकर बच्चों को सहायता प्रदान कर सकते हैं।

बदलावों की पहचान करना

बच्चों को उनकी भावनाओं को और व्यवहार में आए बदलावों को पहचानने में मदद करें। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सम्भव है कि तनाव के कारण, बच्चा भ्रमित महसूस करे और स्पष्ट व सही शब्दों में यह न व्यक्त कर पाए कि उसे कैसा लग रहा है।

आत्महत्या के विचारों की जाँच

यह ज़रूरी है कि आत्महत्या की प्रवृत्ति को लेकर अधिक परेशान बच्चों का आकलन किया जाए, विशेष रूप से उन बच्चों का जिनके साथ जोखिम वाले कारक हों, जैसे कि अवसाद जैसी सह-रुग्ण मानसिक स्थितियाँ।

व्यावहारिक सहयोग

यह ऐसे किसी भावनात्मक आघात के मामले में बहुत महत्त्व रखता है, जो माता-पिता या क़रीबी रिश्तेदारों की मृत्यु और शारीरिक और/ या भावनात्मक शोषण से उत्पन्न हो सकता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि ऐसी घटना के ज़बरदस्त भावनात्मक आघात के अलावा, बच्चे को उस घटना की सूचना पुलिस को देने और स्कूल से छुट्टी पाने जैसी किसी आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए किसी को ढूँढ़ने के लिए मदद की आवश्यकता हो सकती है।

अनुवर्ती दौरे

इस अवधि के दौरान गम्भीर आघातकारी घटनाओं का अनुभव करने वाले सभी बच्चों की परामर्शदाता के साथ नियमित अनुवर्ती मुलाक़ातें होनी चाहिए।

अन्तिम बात

तनाव के उच्च स्तर और *कोविड-19* से सम्बन्धित कई अन्य कारकों के परिणामस्वरूप प्रतिकूल बचपन के अनुभव (Adverse Childhood Experiences/ ACE) सामने आए हैं। ये बच्चों के मस्तिष्क के विकास को प्रभावित कर सकते हैं। स्थाई क्षति को रोकने के लिए, सुरक्षा और स्नेह की भावनाओं को बढ़ाने वाली देखभाल और सहायता बच्चों को प्रदान की जानी चाहिए ताकि सामान्य स्थिति को बहाल किया जा सके। इस लेख को मैं एक आशाजनक तथ्य के साथ समाप्त करूँगा। हाल के एक शोध से पता चलता है कि *कोविड-19* की वजह से मजबूरी में आई नज़दीकियों के चलते 68 फ़ीसदी पिता अपने बच्चों के और क़रीब हो गए हैं।

डॉ रवि कुमार एक मनोवैज्ञानिक हैं। उन्हें अपने पेशे का लगभग 30 वर्षों का अनुभव है और उन्होंने यूके व सिंगापुर में काम किया है। अपराधशास्त्र, यौन विज्ञान, तनाव और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के क्षेत्रों में हुए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने विभिन्न विषयों पर कॉरपोरेट वर्ग और स्कूलों के लिए प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु व्यापक यात्राएँ की हैं। उनसे seekapsyche@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : राम कुमार सरोज

बच्चों का स्वास्थ्य और पोषण | कोविड-19 के प्रभाव को कम करना

श्रीलता राव शेषाद्री

बच्चों पर *कोविड-19* का प्रभाव काफ़ी जटिल और दीर्घकालिक होने की सम्भावना है। यह प्रभाव वायरस द्वारा होने वाले संक्रमण तक सीमित न होकर उससे कहीं ज़्यादा गहरा है। सम्भवतः यह वायरस संक्रमण के लिहाज़ से बच्चों के लिए उतना गम्भीर नहीं है, लेकिन यह उनके स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती के निर्धारकों को काफ़ी प्रभावित करता है। इन निर्धारकों में पोषण, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक अलगाव और स्कूली शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में कमी शामिल है।[i] *दी लैंसेट* में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार जुलाई 2021 तक इस महामारी से लगभग एक लाख बीस हज़ार बच्चे अनाथ हो चुके हैं।[ii] हालाँकि अन्य अधिकांश बच्चों के लिए भी, जिन्होंने सम्भवतः ऐसी हृदयविदारक क्षति न झेली हो, संक्रमण को रोकने के लिए उठाए गए लॉकडाउन और स्कूल बन्द करने जैसे क़दम बेहद हानिकारक रहे हैं। बच्चों के पोषण[iii] की स्थिति और उनका मानसिक स्वास्थ्य[iv] ऐसे दो प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें सबसे अधिक हानि हुई है। इसी सन्दर्भ में, बच्चों के स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती को केन्द्र में रखते हुए, स्कूलों को फिर से खोलने के विचार पर चर्चा करने की आवश्यकता है। चूँकि इस स्थिति का हममें से किसी को भी पूर्व अनुभव नहीं है इसलिए सम्भावना है कि यह एक कठिन सफ़र होने वाला है। लेकिन इस चुनौती के लिए हम ख़ुद को जितना बेहतर ढंग से तैयार करें, उम्मीद है कि यह बदलाव उतना ही सुचारू और कुल मिलाकर सकारात्मक रहेगा। इस तैयारी में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और पूरी प्रणाली को ही शामिल होना होगा।

स्वास्थ्य और पोषण पर प्रभाव : कुछ साक्ष्य

स्कूलों को खोलने और बच्चों के लौटने पर सम्भावित स्वास्थ्य जोखिमों से सम्बन्धित चिन्ताएँ निम्नलिखित स्रोतों से उत्पन्न होती हैं :

(i) जैसा कि हम जानते हैं कि 18 वर्ष से ऊपर के सभी लोगों के टीकाकरण को अधिकृत किया जा चुका है और 21 जून 2021 को इसकी शुरुआत भी हो चुकी है। स्कूल जाने वाले बच्चे फिलहाल इन टीकों के पात्र नहीं हैं, लेकिन इसके परीक्षण योजना के चरण में हैं। हालाँकि छोटे आयुवर्ग के बच्चों की अपेक्षा 12 से 17 वर्ष के बच्चों के लिए टीके जल्द ही उपलब्ध होने की सम्भावना है।

(ii) टीकाकरण कार्यक्रमों में तेज़ी आई है। संक्रमण के मामलों में भी कमी आई है। बावजूद इसके केरल जैसे देश के कुछ हिस्सों में संक्रमण के बढ़ते मामलों और टीकाकरण के अनियमित विस्तार से अनुमान है कि हम जल्द ही तीसरी लहर का सामना करने वाले हैं जिसके लिए शायद हमारी पर्याप्त तैयारी नहीं है।[v]

(iii) भले ही यह वायरस बच्चों को वयस्कों जितना प्रभावित न करता हो, लेकिन यह बच्चों के माध्यम से घरों में प्रवेश कर उनके माता-पिता और बुज़ुर्गों को संक्रमित कर सकता है। इस उम्र के लोग अभी भी बहुत जोखिम में हैं, विशेष रूप से अत्यधिक संक्रामक डेल्टा संस्करण उनके लिए काफ़ी घातक हो सकता है। यह उन लोगों को भी संक्रमित करने में सक्षम है जो टीकों की दोनों ख़ुराक ले चुके हैं (भले ही संक्रमण की गम्भीरता कम रहे)। साक्ष्यों से पता चलता है कि बच्चे मोटे तौर पर लक्षणहीन रहते हुए भी काफ़ी प्रभावी ढंग से संक्रमण फैला सकते हैं।[vi]

(iv) ज़मरानी और अन्य (2021) ने वैश्विक आँकड़ों के आधार पर बताया है कि महामारी का बच्चों के पोषण की स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। भारत जैसे कम आय वाले देशों में आजीविका और माता-पिता की आमदनी में नुक़सान के साथ-साथ स्कूल में मिड-डे मील के बन्द होने से अल्पपोषण का गम्भीर संकट पैदा हो गया है (उच्च आय वाले कुछ देशों में जंक फ़ूड के ज़्यादा सेवन और गतिहीन जीवनशैली ने मोटापे को जन्म दिया है)। इसके अतिरिक्त, प्रवासी मज़दूरों और उनके परिवारों की शहर से लम्बी-लम्बी दूरियाँ तय करके अपने घरों को वापस लौटने की दुखद तस्वीरें लम्बे समय तक हमारे साथ रहेंगी। वयस्कों और बच्चों के पोषण पर इस विस्थापन के प्रभाव को अभी तक मापा जाना बाक़ी है। लेकिन प्रवासी श्रमिकों को भोजन व दूसरी मदद देने वाले स्ट्रैंडेड वर्कर्स एक्शन नेटवर्क (SWAN)[vii] और इसके जैसे कई अन्य समूहों से प्राप्त साक्ष्य बताते हैं कि इन लोगों के पास प्रमुख खाद्यों के साथ-साथ फल, सब्ज़ियों जैसे पोषण देने वाली वस्तुओं भी की भयानक कमी है।

(v) इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी स्थिति में ग़रीब और हाशिए पर रहने वाले विद्यार्थियों को वापस स्कूल जाने के लिए अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना होगा। अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की *स्टेट ऑफ़ वर्किंग इंडिया 2021 रिपोर्ट* के अनुसार महामारी के कारण लगभग 23 करोड़ अतिरिक्त भारतीय ग़रीबी की ओर धकेल दिए गए हैं।[viii] इसके नतीजे में आए 'दुख, डर, अनिश्चितता, सामाजिक अलगाव, अधिक स्क्रीन टाइम और माता-पिता की थकान ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाला है।'[ix] एक बार फिर, भारत में अभी इसका कोई ठोस डेटा नहीं है लेकिन अध्ययनों से पता चलता है कि ऐसी आपदाएँ और आपात स्थितियाँ मनोदशा और व्यवहार सम्बन्धी विकार, मादक पदार्थों के सेवन और आत्महत्या की प्रवृत्तियों की ओर ले जा सकती हैं।[x] इस समस्या से निपटने के लिए कई स्वैच्छिक संगठन और जनसमूह लोगों की सहायता करने के लिए आगे आए हैं लेकिन यह इस समस्या का दीर्घकालिक हल नहीं है। इसके लिए तो उन लोगों की तरफ़ से एक सतत, समन्वित और व्यवस्थित प्रतिक्रिया की आवश्यकता है, जिन पर जनता की भलाई को बढ़ावा देने का काम सौंपा जाता है यानी कि सरकार।

एक प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक कार्य

विद्यार्थियों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक प्रोटोकॉल और व्यवस्थाएँ करते हुए स्कूलों को खोलने के लिए तैयार रहना बहुत ज़रूरी है। स्कूलों को तीन स्तरों पर चुनौतियों से निपटना होगा (इसके लिए यूनीसेफ दिशा-निर्देश[xi] पेज 5 देखें) :

पहला, चूँकि विद्यार्थी काफ़ी लम्बे अन्तराल के बाद नियमित स्कूल में वापसी करे रहे हैं इसलिए यह उनमें से कइयों के लिए एक चुनौती होगी। मास्क लगाने, हाथ धोने और आवश्यक दूरी बनाने जैसे मानक प्रोटोकॉल से अब भलीभाँति परिचय होने के बाद भी इन्हें लागू कराना मुश्किल होगा। लेकिन इस बात को ध्यान में रखते हुए कि यह छोटे बच्चे हैं और एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने और खेलने-कूदने की इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, अतः इन सभी प्रोटोकॉल को लागू करना आवश्यक होगा। हालाँकि, स्कूलों को सुरक्षित रूप से खोलने के लिए सरकार द्वारा विस्तृत रूप से दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।[xii]

ये दिशा-निर्देश, बच्चों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त व्यवस्था करने से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर सुझाव प्रदान करते हैं। इनमें स्कूल की मूलभूत सुविधाओं का ठीक तरह से काम करना (विशेष रूप से पानी की आपूर्ति और स्वच्छता), कक्षा में फ़र्नीचर की व्यवस्था के लिए योजना तैयार करना, बच्चों में लक्षणों (जैसे बुखार, खाँसी) की जाँच और *कोविड-19* के परीक्षण सहित बच्चों के स्वास्थ्य स्थिति की समय-समय पर निगरानी करना, आपात परिस्थितियों (जैसे पॉजिटिव मामलों वाले विद्यार्थी) में ज़िम्मेदारियाँ सुनिश्चित करना, समारोहों और विद्यार्थियों की सभाओं को नियंत्रित करने के लिए नियम लागू करना आदि शामिल हैं। स्कूल कर्मियों के लिए इन दिशा-निर्देशों या इसी तरह के दूसरे दिशा-निर्देशों पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि *कोविड-19* सुरक्षा से सम्बन्धित जानकारी, रवैए और अभ्यास को सब समान रूप से समझकर आत्मसात कर लें।

दूसरा, महामारी से पहले भी भारत का पहले से ही पोषण सम्बन्धी संकेतकों में ख़राब प्रदर्शन था। 2020 के ग्लोबल हंगर इंडेक्स में 107 देशों में भारत का 94वाँ स्थान था। इससे भी बदतर, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण राउण्ड 5 (2019-20) के आँकड़ों के अनुसार कई राज्य प्रमुख पोषण संकेतकों, जैसे कम वज़न (उम्र के मुताबिक़ कम वज़न)[xiii] और स्टंटिंग (उम्र के मुताबिक़ कम लम्बाई) की स्थिति में और ख़राबी हो रही है। कुपोषण एक ऐसा बुनियादी और अदृश्य कारक है जो भारत में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की हर साल होने वाली लगभग सात लाख पचास हज़ार मौतों में से आधी से भी ज़्यादा का कारण बनता है। हालाँकि सरकार ने मुख्य रूप से अल्पपोषण के अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभावों को कम करने के लिए वर्ष 2001 में मिड-डे मील का देशभर में विस्तार किया। वर्तमान में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत मिड-डे मील सभी स्कूलों में बच्चों को भोजन कराने वाला विश्व का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। ऐसा अनुमान है कि यह देशभर के सरकारी स्कूलों में प्राथमिक और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले लगभग 12 करोड़ बच्चों को एक समय का भोजन प्रदान करता है।

यह सुनिश्चित करना होगा कि स्कूल शुरू होने के पहले दिन से ही मिड-डे मील पूरी तरह से लागू किया जाए। इसके अलावा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण उपायों को भी संस्थापित करने की आवश्यकता होगी, जैसे :

(i) सभी बच्चों का व्यवस्थित रूप से मानवशास्त्रीय मापन (anthropometric measurement) करना। यानी कि सभी बच्चों की लम्बाई और वज़न का माप लिया जाए और इन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2017 के विकास चार्ट के साथ मिलाया जाए। ऐसा करने से सबसे अधिक ख़तरे में और तत्काल ध्यान देने योग्य बच्चों की तुरन्त पहचान करने में मदद मिलेगी। इस तरह से गम्भीर स्थिति वाले बच्चों को तत्काल नज़दीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भेजना होगा।

(ii) उपलब्ध मिड-डे मील संसाधनों का उपयोग किफ़ायती प्रोटीन युक्त भोजन और जहाँ तक सम्भव हो, फल एवं सब्ज़ियों को उपलब्ध करने के लिए करना। लॉकडाउन के दौरान सबसे असुरक्षित परिवारों के बच्चों की चावल या गेहूँ जैसे प्रमुख भोजनों तक पहुँच लगभग पर्याप्त रही है। लेकिन अन्य खाद्य समूहों की अनुपूर्ति महत्त्वपूर्ण है, जैसे प्रोटीन वाले आहार जैसे मूँगफली (उदाहरण के लिए चिक्की) और हरा अंकुरित चना या स्थानीय बाजरा (रागी या ज्वार); फल जैसे केला, अमरूद, पपीता या सस्ते में उपलब्ध मौसमी फल; और सस्ती एवं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सब्ज़ियाँ भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण हैं। स्कूल अपने परिसर में किचन गार्डन बनाने पर भी विचार कर सकते हैं जो काफ़ी लाभदायक हो सकता है। इससे बच्चों को पौधों और उनके विकास के बारे में जानने का मौक़ा मिलेगा और साथ ही उनके दैनिक आहार में विविधता भी होगी।

(iii) स्कूल न जाने वाले बच्चों, विशेष रूप से लड़कियों को स्कूल वापस लाने की योजना। आजीविका के नुक़सान और अन्य सामजिक-आर्थिक दबावों के कारण कई बड़े बच्चे किसी रोज़गार या फिर घरेलू कामों में लगे रहते हैं जो स्कूल में उनकी वापसी को रोकते हैं। स्कूल कर्मियों को सक्रिय रूप से ऐसे परिवारों तक पहुँचना और उनको बच्चों को दोबारा से स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इस सम्बन्ध में बेहतर ढंग से चलाए जा रहे मिड-डे मील का भी प्रेरक प्रभाव हो सकता है।

अन्त में, स्कूल में बच्चों के भावपूर्ण स्वागत की व्यवस्थाएँ करना काफ़ी आवश्यक है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि इस दौर में सभी तरह के बच्चों ने और विशेष रूप से हाशियाकृत परिवारों के बच्चों ने कई तरह के तनावों का अनुभव किया है। यूनीसेफ ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी ज़रूरतों पर ध्यान देने के लिए कुछ ऐसी सरल क्रियाओं पर आधारित दिशा-निर्देश जारी किए हैं जो घर और स्कूल दोनों में की जा सकती हैं। संक्षेप में, कुछ प्रमुख क्रियाएँ कुछ इस प्रकार हैं :

(i) बच्चों के साथ सरलता, ईमानदारी और शान्त तरीक़े से संवाद करना जिससे उनके प्रियजन के संक्रमित होने या मृत्यु के डर एवं चिन्ताओं को दूर किया जा सके।

(ii) महामारी के दौरान फैल रहे मिथकों और ग़लत सूचनाओं को ख़त्म करना (जैसे गर्म मौसम वायरस को नहीं मारता है और न ही वायरस केवल बुज़ुर्गों पर हमला करता है और युवाओं को बख़्श देता है)।

(iii) उन बच्चों के प्रति संवेदनशील होना जो घरेलू शोषण और हिंसा के या तो ख़ुद शिकार हुए हों या फिर उन्होंने ऐसी घटना अपने सामने देखी हो। ऐसे बच्चे आमतौर पर एकान्त में रहते हैं या उदास रहते हैं या फिर असामान्य व्यवहार करते हैं। इन बच्चों के साथ विश्वास का रिश्ता बनाना महत्त्वपूर्ण है और आवश्यक होने पर चाइल्डलाइन 1098 (हेल्पलाइन) पर कॉल करके पेशेवर मदद या फिर पुलिस (100) से भी मदद ली जा सकती है।

(iv) बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षित रहने के तरीक़े सिखाना। ऑनलाइन रहना हम सभी के लिए और बच्चों के लिए भी जीवन का एक तरीक़ा बन गया है। बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षित रहने के 5 सुनहरे नियम सिखाएँ (#staySafeOnline)।[xv]

(v) विभिन्न तथ्यों और आँकड़ों का उपयोग करके परिवार में हुए *कोविड-19* संक्रमण या मृत्यु के साथ जुड़े लांछन को दूर करना और विद्यार्थियों को एक-दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और करुणामय रवैया अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

मैं फिर दोहरा रही हूँ कि महामारी का अनुभव हम सभी के लिए अभूतपूर्व रहा है और उतनी ही अभूतपूर्व रही है हमारी प्रतिक्रिया। किसी सीमा तक सामान्य स्थिति — ख़ासतौर से उन बच्चों के लिए जो पिछले डेढ़ साल से एक सामान्य बचपन की झलक से भी वंचित रहे हैं — में लौटने के प्रयासों में शुरू में काफ़ी विफलताएँ भी हो सकती हैं और इनमें संशोधन भी करना होगा। हालाँकि टीकाकरण में वृद्धि और *कोविड-19* उपयुक्त व्यवहार के बारे में अधिक जागरूकता के कारण अब हम किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए पहले से बेहतर स्थिति में हैं। इस परिस्थिति पर हमारी वैश्विक सामूहिक समझ से उभरे कुछ सरल दिशा-निर्देशों को लागू करके हम अपने बच्चों को सुरक्षित और स्वस्थ रूप से वापस स्कूल लाने में सफल होने की अपनी सम्भावनाओं को काफ़ी हद तक बढ़ा सकते हैं।

Endnotes

i Zemrani, B., Gehri, M., Masserey, E. et al. A hidden side of the COVID-19 pandemic in chil-dren: the double burden of undernutrition and overnutrition. *Int J Equity Health* 20, 44 (2021). https://doi.org/10.1186/s12939-021-01390-w.
ii https://www.thelancet.com/journals/lancet/article/PIIS0140-6736(21)01253-8/fulltext.
iii https://www.newscientist.com/article/2251523-covid-19-lockdown-means-115-million-indian-children-risk-malnutrition/.
iv Kumar A, Nayar KR, Bhat LD. Debate: COVID-19 and children in India. *Child Adolescent Health*. 2020;25(3):165-166. doi:10.1111/camh.12398.
v https://www.rfi.fr/en/international/20210812-how-prepared-is-india-to-tackle-a-third-wave-of-covid-19.
vi https://www.ecdc.europa.eu/en/covid-19/questions-answers/questions-answers-school-transmission.
vii https://www.thehindu.com/news/resources/article31442220.ece/binary/Lockdown-and-Distress_Report-by-Stranded-Workers-Action-Network.pdf.
viii https://cse.azimpremjiuniversity.edu.in/wp-content/uploads/2021/05/State_of_Working_India_2021-One_year_of_Covid-19.pdf.
ix https://www.unicef.org/india/impact-covid-19-childrens-mental-health
x Danese, A., Smith, P., Chitsabesan, P., & Dubicka, B. (2020). Child and Adolescent mental health amidst emergencies and disasters. *The British journal of psychiatry: the journal of mental science*, 216, 159–162.
xi https://www.unicef-irc.org/publications/pdf/COVID-19_Missing_More_Than_a_Classroom_The_impact_of_school_closures_on_childrens_nutrition.pdf.
xii https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/SOP_Guidelines_for_reopening_schools.pdf.
xiii https://www.weforum.org/agenda/2021/06/covid-19-pandemic-hunger-catastrophe-india-poverty-food-insecurity-relief/.
xiv This is an excellent resource, including many activities and suggestions for children of different age groups. School personnel might want to integrate some of this into their regular classroom interactions. https://www.unicef.org/india/media/3401/file/PSS-COVID19-Manual-ChildLine.pdf
xv https://www.britishcouncil.in/about/what/child-protection

श्रीलता राव शेषाद्री लम्बे समय तक अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल के तहत प्राध्यापक एवं एंकर रहीं। अब वे सार्वजनिक स्वास्थ्य की एक स्वतंत्र विद्वान के रूप में सक्रिय हैं। वे लगभग तीन दशकों से सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में शोध, अमल और शिक्षण में शामिल रही हैं। उन्होंने कई तरह के पेशेवर कार्य किए हैं जिनमें बहुपक्षीय एजेंसियों, वैश्विक शोध उपक्रमों और ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों के साथ काम शामिल हैं। उनकी शोध रुचि स्वास्थ्य नीति व व्यवस्थाओं सम्बन्धी शोध कार्यों पर केन्द्रित है, उनकी ख़ास दिलचस्पी कार्यक्रम क्रियान्वयन व मूल्यांकन पर है। श्रीलता ने सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर बहुत कुछ लिखा और प्रकाशित किया है। इन मुद्दों में प्राथमिक स्कूल के बच्चों के सामने आने वाली पोषण सम्बन्धी चुनौतियाँ; पारम्परिक स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ और उनका रूपान्तरण; और शहरी व ग्रामीण, दोनों परिवेशों स्वास्थ्य व पोषण सेवाओं तक पहुँच से जुड़ी शासन सम्बन्धी समस्याएँ शामिल हैं। उनसे raoseshadri@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** ज़ुबैर सिद्दकी

स्कूल की सीखने की संस्कृति की तरफ़ चरणबद्ध वापसी

श्रीकान्त श्रीधरन

कोविड-19 ने इस तरह की स्थिति पैदा की है, जिसने हमें यह एहसास कराया कि शिक्षा केवल एक हद तक ही डिजिटल की जा सकती है। नतीजा यह हुआ कि प्राइवेट स्कूलों ने दिखावे के साथ सीखने का कुछ आभास बनाए रखा जो उनके ख़ुद के बने रहने के लिए ज़रूरी था। इसी दौरान, सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों पर हुए सबसे बड़े अध्ययन से यह पता चला कि 80-90 प्रतिशत बच्चों ने पिछले साल में गणित और भाषा में सीखी हुई कम-से-कम किसी एक क्षमता को खो दिया है। 20-90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इन विषयों में किन्हीं विशिष्ट क्षमताओं को खोया है। हालाँकि इस नुक़सान को इस आँकड़े में तब्दील करना मुश्किल होगा कि ठीक-ठीक कितने महीनों की पढ़ाई छूट गई, लेकिन इतना तो साफ़ है कि जितने महीने स्कूल बन्द रहे यह उससे कहीं ज़्यादा है। इस लेख को लिखते समय स्कूलों को बन्द हुए 18 महीने हो चुके हैं। परिप्रेक्ष्य के लिए, संयुक्त राज्य अमरीका में हुआ एक अध्ययन यह दिखाता है कि *कोविड-19* सम्बन्धित बन्द के चलते विद्यार्थी 4-5 महीने पीछे हो गए हैं (संयुक्त राष्ट्र में स्कूल भारत की अपेक्षा काफ़ी कम दिनों के लिए बन्द रहे)।

व्यवसायों में 'आकस्मिक योजना' यानी ऐसी परिस्थितियों के लिए एक वैकल्पिक योजना होना एक आम बात होती है, पर शिक्षा जगत के लिए यह काफ़ी हद तक झटका लगने जैसा हुआ। साल 2020 के अन्त के दौरान अन्तरिम अवधियों में स्कूल खोलने की योजना कई बार बनाई गई थी। पुरानी योजना में कुछ फेरबदल करते हुए कुछ पाठों को इस तरह छोटा किया गया कि बचे हुए समय में उन्हें पूरा किया जा सके। लेकिन जब 2020-21 का शिक्षा सत्र ख़त्म हुआ तब इस पद्धति को भी लागू नहीं किया जा सका। जब 2021-22 के शिक्षा सत्र का भी अधिकांश हिस्सा बीत गया, तब यह साफ़ हो गया कि हमें पुरानी योजना में फेरबदल करने की बजाय एक नई योजना बनाने की ज़रूरत है।

यह लेख भारत में सरकारी स्कूलों में स्कूली शिक्षा की वापसी पर केन्द्रित है और इसमें भी प्राथमिक स्कूलों को केन्द्र में रखा गया है।

'सीखने की संस्कृति' का नुक़सान

घर पर बिना किसी पूरक शिक्षा के स्कूल से इतनी लम्बी अनुपस्थिति को केवल सीखने के नुक़सान की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। यह सीखने की उस संस्कृति का नुक़सान है, जिसमें स्कूल विद्यार्थी को आमंत्रित करता है। सरकारी स्कूलों में जाने वाले प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए स्कूल की सीखने की संस्कृति[i] और उनके घरों के बीच एक बड़ी खाई है। स्कूल सीखने के उस रूप की संस्कृति देता है जो इन बच्चों के घरों में उपलब्ध नहीं होती। मध्यम और अभिजात्य वर्ग से आने वाले बच्चों की स्थिति ऐसी नहीं है। इसलिए समस्या स्कूल की सीखने की संस्कृति में वापसी करने की है। यह इस समस्या को केवल सीखने के नुक़सानों को ठीक करने के रूप में देखने की तुलना में कहीं ज़्यादा बड़ा नज़रिया है।

समाधान — एक चरणबद्ध वापसी

सीखने की संस्कृति की तरफ़ वापसी को लेकर एक व्यापक विचार यह है कि इसे एक रेखीय तरीक़े से नहीं पर चरणबद्ध तरीक़े से किए जाने की ज़रूरत है, जिसमें चरणों के बीच कुछ तरह की गतिविधियों में ग़ैर-रेखीय छलाँगें हो सकती हैं।

इसमें हमारे पास एक तंग कार्य योजना की जगह सुझावों और विचारों की एक सूची तैयार हो जाएगी। चूँकि प्रत्येक राज्य के लिए बनने वाले खाक़े में स्थानीय सन्दर्भ को शामिल किया जाना चाहिए, इसलिए एक ऐसी योजना देने की बजाय जो केवल एक सन्दर्भ में काम आए, विचारों की एक सूची ज़्यादा उपयोगी होगी जिसमें से अपने हिसाब से चुनाव किया जा सके।

पहला चरण

पूरे परिदृश्य को परिप्रेक्ष्य में लेने के लिए हमें तब से शुरुआत करनी चाहिए जिस समय स्कूल बन्द हुए थे और विद्यार्थियों का स्कूल आना बन्द कर दिया गया था। सत्र 2020-21 में यह चरण ज़्यादातर राज्यों में मोटे तौर पर व्यर्थ गया था। इस चरण में सीखने की फिर से शुरुआत करने के लिए काफ़ी कुछ किया जा सकता था। इस चरण के प्रमुख कारक हो सकते थे :

- वर्कशीटों का इस्तेमाल

- समुदाय के शिक्षित युवाओं से सहायता
- टीवी और यूट्यूब जैसे प्रसारण माध्यमों एवं व्हाट्सएप जैसे इंटरैक्टिव माध्यम का इस्तेमाल
- उपरोक्त सभी के लिए शिक्षक सहयोग

यहाँ विचार इस स्थिति को व्यवस्थित या नियंत्रित करने का नहीं है क्योंकि इस चरण में हो रही गतिविधियों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसकी बजाय शिक्षक के सहयोग से स्थानीय स्वयंसेवियों द्वारा ध्यानपूर्वक तैयार किए गए संसाधन उपलब्ध कराने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हो सकता है इस लेख के प्रकाशन तक हम इस चरण को पार कर चुके हों पर यह भविष्य के लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

इस चरण का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि सामान्य शिक्षा को टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से घरों में न लाना बेहतर होगा। इसकी बजाय हमें विद्यार्थियों के वर्तमान सीखने के स्तरों, हमारे द्वारा निर्धारित किए हुए सीखने के उद्देश्यों, हर बच्चे की मौजूदा निकटस्थ क्षमताओं को ध्यान में रखकर और इस स्थिति (या इस तरह की किसी भी गम्भीर परिस्थिति) की बाध्यताओं को देखते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जितना अच्छे से हो सके पूरा करना चाहिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, इस चरण की सबसे मुख्य समस्या अवसर की समानता रही है।

इस चरण को समग्र रूप से पूरा करने के लिए इन पाँच क्षेत्रों पर काम करने की ज़रूरत है :

1. प्रसारण माध्यम के ज़रिए कक्षाएँ लगाना

केरल सरकार द्वारा चलाया गया "KITE VICTERS"[ii] यूट्यूब चैनल एक उदहारण के तौर पर देखा जा सकता है। लॉकडाउन के समय में इस चैनल के 30 लाख सब्सक्राइबर थे। इसके अन्तर्गत एक टाइमटेबल के अनुसार कक्षा और विषय के अनुरूप टीवी पर सीधे प्रसारण होते थे। ये बाद में देखे जाने के लिए यूट्यूब पर भी उपलब्ध होते थे। ये भले ही इंटरैक्टिव न रहे हों लेकिन इनके माध्यम से पाठ बुनियादी रूप में बच्चों तक पहुँच जाते थे। टीवी और यूट्यूब चैनल, दोनों पर दिखाए जाने वाले इन पाठों की एक अच्छी पहुँच भी है जिससे लैपटॉप या स्मार्टफ़ोन पर आने वाले पाठों की तुलना में पहुँच की समानता बेहतर तरीक़े से सुनिश्चित हो रही है।

2. सीखने की गतिविधियों के लिए वर्कशीट

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन और कुछ अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की गईं वर्कशीट इसके अच्छे उदाहरण हैं। इसके पीछे यह सोच है कि बच्चे जहाँ कहीं भी हों, वहाँ नियमित रूप से ऐसी गतिविधियाँ कर पाएँ जो अलग-अलग कक्षाओं के सीखने के अपेक्षित प्रतिफलों के अनुसार तैयार की गईं हों। मगर वर्कशीट स्तर के उपयुक्त हो न कि कक्षा के उपयुक्त।

साथ ही, इन वर्कशीटों को इस तरह तैयार किया जाए कि वालिंटियर इनके साथ आसानी से काम कर सकें। ये सामान्य कार्यपुस्तकों से भिन्न रहेंगी, जिन्हें शिक्षक के नेतृत्व में हो रही कक्षाओं की गतिविधियों के पूरक के रूप में तैयार किया जाता था। हालाँकि आदर्श रूप से, वर्कशीटों का इस्तेमाल नई अवधारणाओं से परिचय कराने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इन्हें प्रसारण कक्षाओं के पूरक के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इस तरीक़े में बच्चा केवल सुनने और देखने की अपेक्षा गतिविधियाँ करने में व्यस्त होगा। इन वर्कशीटों का प्रकाशन और वितरण, निश्चित ही एक चुनौती बनी रहेगी क्योंकि बच्चे अलग-अलग जगहों पर हो सकते हैं, जैसे कि प्रवासी मज़दूरों के बच्चे।

3. वालिंटियर से सहयोग

चूँकि इस चरण में शिक्षक हर बच्चे के साथ नहीं हो सकते इसलिए कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसके पास बच्चे से निकटता रखने वाली किसी स्तर की शिक्षा हो, माता-पिता में से कोई या आस-पड़ोस में रहने वाले शिक्षित युवा आगे आकर इस काम में सहयोग कर सकते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा किसी मार्गदर्शक और प्रेरक मौजूदगी के बिना नहीं हो सकती। यह बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की इस अनुशंसा जैसी ही है : 'स्थानीय और ग़ैर-स्थानीय दोनों प्रकार के प्रशिक्षित वालिंटियर के लिए इस बड़े पैमाने के अभ्यास में भाग लेना बहुत आसान बनाया जाएगा। यदि समुदाय का प्रत्येक साक्षर सदस्य किसी एक विद्यार्थी को पढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हो जाए, तो इससे देश का परिदृश्य शीघ्र ही बदल जाएगा। इस दृष्टि से स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों और स्थानीय समुदाय के स्वस्थ वरिष्ठ नागरिकों से उपयुक्त व्यक्तियों की पहचान की जाएगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साक्षर वालिंटियर, सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों/ सरकारी/ अर्द्ध-सरकारी कर्मचारियों, पूर्व विद्यार्थियों और शिक्षाविदों का एक डेटाबेस तैयार किया जाएगा।'

क्या *कोविड* काल से बेहतर मौक़ा हो सकता था इस डेटाबेस को तैयार करने के लिए?

4. शिक्षक की भूमिका

वर्कशीटों के वितरण व उन्हें पूरा करवाने, समुदाय की मदद से वालिंटियर की पहचान करने और वालिंटियर से योजना, समीक्षा व सहयोग के लिए व्हाट्सएप समूहों या टेलीकांफ्रेंस द्वारा नियमित तौर से जुड़ने के इस पूरे तंत्र को समर्थ बनाने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

5. पाठ्यक्रम बनाने वाली संस्थाओं (जैसे की एससीईआरटी) की भूमिका

समानान्तर रूप से, इस चरण का प्रयोग अगले चरणों के लिए संशोधित पाठ्यक्रम बनाने के लिए किया जा सकता है।

मौजूदा पाठ्यपुस्तकों/ कार्डों में से अंश लेने की बजाय, नीचे दी गई चीज़ें करने की ज़रूरत है :

- हर कक्षा स्तर से अगले स्तर पर जाने वाले, सीखने के मुख्य प्रतिफलों का विस्तार से विश्लेषण करें।
- पूरी कक्षा या समूहों या फिर एक विद्यार्थी के लिए ध्यानपूर्वक तैयार की गई गतिविधियों के ज़रिए इस ओर बढ़ने के लिए एक रास्ता बनाएँ।
- बहु-स्तरीय परिदृश्य को देखते हुए, पाठ्यपुस्तक-आधारित पाठ्यक्रम की तुलना में कार्ड-आधारित पाठ्यक्रम चुनना बेहतर हो सकता है।[iii]

दूसरा चरण

दूसरा चरण वह अवधि है, जब बच्चे स्कूल वापस तो लौट आए हैं पर 'सामान्य शिक्षा' अभी भी महीनों दूर है। इस चरण में जल्द-से-जल्द सामान्य होने की तरफ़ लौटने से ज़्यादा ज़रूरी है, धीमी गति से शिक्षकों, विद्यार्थियों और पालकों की स्थिरता की तरफ़ वापसी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देना। इस चरण में दो कारणों की वजह से जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए — चिकित्सीय और शैक्षिक। इस अवधि के मुख्य पहलू हैं :

- जल्दबाज़ी के कारण पहले चरण की तरफ़ पतन न हो इसकी सावधानी रखना
- सीखने की संस्कृति में वापसी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देना

इसका मतलब है कि शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्धों और भावात्मक पक्ष को इसी प्रयोजन के लिए तैयार की गई गतिविधियों के ज़रिए फिर से बनाने की तरफ़ ध्यान देना। इसी दौरान, पहले चरण की कुछ गतिविधियों पर विचार करते हुए उन्हें आगे ले जाया जा सकता है। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करेगा कि पहले कितना काम पूरा किया जा चुका है (और यह स्थिति प्रत्येक स्कूल के भीतर भी व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है)।

कई संस्थाओं ने *कोविड*-उपयुक्त एहतियातों पर साहित्य तैयार किया है, जैसे कि डबल्यूएचओ द्वारा उत्तरित स्कूल पर पूछे गए सामान्य प्रश्न, शिक्षा मंत्रालय का *कोविड एक्शन प्लान* और सेंटर फ़ॉर ग्लोबल डेवलपमेंट का *प्लैनिंग फ़ॉर स्कूल रीओपनिंग* (स्कूलों को दोबारा खोलने के लिए योजना)। इनके तीन मुख्य पहलू हैं :

- लक्षणों के प्रति अतिरिक्त सतर्कता रखना
- शिक्षकों के टीकाकरण की स्थिति
- स्कूल परिसर के अन्दर सभी जगहों में वायुसंचार (वेंटिलेशन)

इस चरण में हम जितना कुछ बाहर कर पाएँ उतना बेहतर होगा। जितना हो सके शिक्षा को फिर से स्कूल परिसर में ही पेड़ों के नीचे या खुली जगहों पर लौटने दें। दूसरा ज़रूरी पहलू यह है कि सभी हितधारक स्कूल में वापसी के लिए सहजता महसूस करें — शिक्षक, विद्यार्थी और पालक। यह महसूस करने के लिए कि स्कूल में सभी तरह की सावधानियाँ बरती जा रही हैं, यह ज़रूरी है कि पालक और समुदाय इसका हिस्सा बनें। अगर कोई भी *कोविड-19* से ग्रसित होता है तो पूर्व-स्थापित प्रोटोकॉल के तहत स्थिति को सम्भालना चाहिए।

बच्चों को शैक्षिक और भावनात्मक रूप से सीखने की गतिविधियों की तरफ़ वापसी के लिए सहज महसूस होना चाहिए। पूरे आसार हैं कि बच्चों को स्कूल आकर, दोस्तों से मिलकर और स्कूल परिसर में खेल कर राहत महसूस होगी। फिर भी सीखने की गतिविधियों की प्रकृति अलग होती है और उनकी तरफ़ चरणबद्ध ढंग से ही वापस आना चाहिए। अगर इस सहजता के लिए एक महीना भी लग जाए तो भी यह अच्छी तरह से बिताया गया समय होगा। इसके बाद हर बच्चे का सीखने का स्तर पहचानने के लिए उनके साथ बेसलाइन गतिविधियों का एक सेट किया जा सकता है। इसके बाद धीरे से पहले चरण में तैयार की गई कार्ड-आधारित पाठ्यचर्या भी शुरू की जा सकती है।

तीसरा चरण

तीसरे चरण में हम ध्यान वापस सीखने के प्रतिफलों पर लाएँगे। इस चरण में ज़रूरी होगा, एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना जिसकी स्पष्ट योजना बच्चों को (जो सीखने के विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं) ध्यानपूर्वक चुनी हुई कई गतिविधियों के ज़रिए एक वाँछित स्तर तक ले जाना हो। इस चरण की सफलता यह सुनिश्चित करने में है कि कार्ड या जिस भी अन्य सामग्री की ज़रूरत हो वह पहले से बन गई हो और इस चरण की शुरुआत से पहले शिक्षक की अच्छे से तैयारी हो। मैं कार्ड का ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इस अत्यधिक विविध स्थिति के लिए एक कार्ड-आधारित बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) पद्धति ज़्यादा वाँछनीय बन जाती है। फिर भी, अलग-अलग राज्यों में इसमें विविधता हो सकती है। यह तरीक़ा कर्नाटक जैसे राज्य के लिए आसान हो सकता है जहाँ कार्ड पहले से ही इस्तेमाल हो रहे हैं पर दूसरे राज्यों के लिए, जहाँ यह तरीक़ा लागू नहीं हुआ है, शायद यह उतना आसान न हो।

इस चरण में, विचार यह है कि नए (संशोधित) पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाए ताकि आयु-उपयुक्त सीखने के प्रतिफलों को हासिल किया जा सके। इसे हासिल करने के बाद, पिछले दो साल में हमने जो कुछ सीखा है उसके आधार पर सामान्य पाठ्यक्रम में संशोधन करके उसका अनुसरण किया जा सकता है। भविष्य को मद्देनज़र रखते हुए इस चरण में इन सभी सीखों को स्कूली शिक्षा में शामिल किया जा सकता है :

- शिक्षक उन गतिविधियों पर ध्यान दे सकते हैं जो सीखने के प्रतिफल के इर्द-गिर्द केन्द्रित हों। कुछ गतिविधियों से समय कम कर ज़्यादा ज़रूरी गतिविधियों पर समय लगाने की गुंजाइश हमेशा रहती ही है।
- घर का माहौल स्कूल में सीखने का पूरक बन सकता है। स्थानीय वालिंटियर कोविड के बाद बच्चों के समूहों के साथ काम कर सकते है, जैसे कि शिक्षा मित्र ।
- चूँकि अब अवधारणाएँ कक्षा में पढ़ाई जा सकती हैं तो हम पहले चरण में जारी की गई वर्कशीटों की जगह ऐसी कार्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकते हैं जो सीखी हुई चीज़ों के सुदृढ़ीकरण और अभ्यास आदि पर ध्यान दे।
- टेक्नोलॉजी की भूमिका अभ्यास और तत्काल प्रतिक्रिया उपलब्ध कराने में देखी जा सकती है। मगर इसमें निवेश ज़्यादा है और इसका इस्तेमाल सन्तुलन में किया जाना चाहिए ताकि इसकी लत या अत्यधिक स्क्रीन-टाइम आदि स्थितियाँ न पैदा हों। हालाँकि टेक्नोलॉजी की बड़ी भूमिका सेवाकालीन शिक्षकों के प्रशिक्षण, आँकड़े इकट्ठे करने और शिक्षकों, पालकों व शैक्षिक अधिकारियों के बीच नियमित और ज़्यादा तेज़ संचार में हो सकती है। साधारण-से व्हाट्सएप समूह भी यह काम अच्छे से कर सकते हैं।

आगे की राह

कोविड-19 की वैश्विक महामारी ने शायद ही कोई नई सामाजिक स्थिति पैदा की हो, बस पहले से मौजूदा स्थितियों का ही परिवर्धन किया है। मध्यम और अभिजात्य वर्ग से आने वाले बच्चों की शिक्षा जारी रही, हालाँकि काफ़ी दरिद्र स्थिति में। सरकारी स्कूलों ने शुरुआत में काफ़ी इन्तज़ार किया, स्थितियों पर नज़र रखी और फिर कुछ पहल कीं, जिनमें अलग-अलग राज्यों के बीच काफ़ी भिन्नता रही।

ऊपर इन्ही बातों पर प्रकाश डाला गया है कि अभी से लेकर स्कूल खुलने तक और स्कूल खुलने के बाद भी कुछ हद तक सामान्य स्थिति लौटने तक क्या-क्या काम चरणों में हो सकते हैं। आने वाले समय में यह भी ज़रूरी है कि हम और ज़्यादा सकारात्मक ढंग से टेक्नोलॉजी और प्रबन्धन को शिक्षा में सम्मिलित करें। हमें शिक्षा में बेहतर प्रबन्धन की ज़रूरत है जो ऐसे समाधानों पर ध्यान दे जो शायद परिपूर्ण न हों पर बच्चों के सीखने के लिए कारगर हों।

प्रबन्धन एक ऐसी कला है जो अत्यधिक प्रसंग-आधारित है और नतीजों पर केन्द्रित होती है। हमें व्यवसाय में, समाज और प्राकृतिक वातावरण के प्रति एक सन्तुलित दृष्टिकोण रखने के लिए प्रबन्धन की ज़रूरत होती है। पर शिक्षा में हमें ज़मीन, इमारतों, सुविधाओं, लोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के कहीं ज़्यादा बेहतर प्रबन्धन की ज़रूरत है। हमें विद्यार्थियों के मूल्यांकन और उनके सरकारी स्कूलों से निरन्तर हो रहे निकास के बाबत मिल रही नियमित प्रतिक्रियाओं के भी बेहतर उपयोग करने की ज़रूरत है।

हमें टेक्नोलॉजी के प्रति भी इसी तरह के अधिक सन्तुलित दृष्टिकोण की ज़रूरत है। हम प्राथमिक कक्षाओं के लिए ऐसी टेक्नोलॉजी देख सकते हैं जिनमें विद्यार्थियों की सीधी भागीदारी न हो, जैसे :

- दीक्षा[iv] (जिसका इस्तेमाल ब्लॉक और ज़िला, दोनों स्तरों पर स्थानीय कार्यशालाओं में होता है) जैसे पोर्टलों के ज़रिए शिक्षकों के लिए सभी भाषाओं में समृद्ध शिक्षाशास्त्रीय विषय वस्तु उपलब्ध कराना।
- सभी सम्बन्धित लोगों — शिक्षकों, पालकों और शैक्षिक अधिकारियों के बीच ऐसे अनुकूलित मैसेंजर एप्स के ज़रिए ज़्यादा तेज़ और नियमित संचार, जो सरकार की आँकड़े इकट्ठे करने की ज़रूरतों को भी पूरा करते हों।
- संरचनात्मक मूल्यांकन के आँकड़ों का विश्लेषण कर उन्हें प्रतिक्रिया सहित वापस शिक्षकों तक पहुँचाना जिसमें उन संशोधनों के संकेत हों जिन्हें शिक्षक आगे होने वाली सीखने की गतिविधियों में अपना सकते हैं।

Endnotes

i Loss of Learning During the Pandemic, February 2021, Azim Premji Foundation. https://tinyurl.com/86jhmf6d

ii https://www.youtube.com/c/itsvicters/featured

iii कर्नाटक की नली-कली जैसी कार्ड-आधारित पाठ्यचर्या वर्तमान के सेतु परिदृश्य में शिक्षण के लिए काफ़ी अच्छा तरीक़ा हो सकती है। कार्डों की मदद से बच्चे, जो किसी भी स्तर पर हों, अपनी-अपनी गति से आगे बढ़ सकते हैं जब तक कि वे अधिक सामान्य स्तर पर न पहुँच जाएँ और फिर वहाँ से पाठ्यपुस्तकें चीज़ों को आगे ले जा सकती हैं।

iv https://diksha.gov.in/

श्रीकान्त श्रीधरन ने लगभग 12 वर्षों तक स्कूली शिक्षा के सुधार के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने व्यवस्थागत बदलाव लाने के लिए विभिन्न स्तरों पर काम किया है, जिनमें शिक्षा में नागरिक समाज संगठनों के नेटवर्क के निर्माण और पोषण के अलावा ज़िला स्तर की टीम के साथ मिलकर किए गए काम शामिल हैं। उनके पास प्रबन्धन और प्रौद्योगिकी की शैक्षिक पृष्ठभूमि और अनुभव है। श्रीकान्त का मानना है कि खोजबीन के लिए एक दार्शनिक मानसिकता और क्रियान्वयन के लिए एक स्टार्ट-अप मानसिकता रखी जाए। उनसे sreekanth.sreedharan@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सिमरन साध

सीआरसी | बीआरसी | डाइट की बदली हुई भूमिका

शुचि दुबे

कोविड-19 महामारी ने बच्चों समेत समूचे मानवीय तंत्र को बेहद बुरी तरह से प्रभावित किया है। वे पारिवारिक, सामाजिक आदि कई तरीक़ों से तो प्रभावित हुए ही हैं, लेकिन सबसे ज़्यादा प्रभावित हुई है उनकी शिक्षा। यूनेस्को के अनुसार दुनिया भर के स्कूल जाने वाले 90 फीसदी बच्चों की शिक्षा महामारी से बाधित हुई है।

ह्यूमन राइट्स वॉच[1] की रिपोर्ट में बताया गया है कि *कोविड-19* के कारण स्कूलों के बन्द होने से कैसे बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान तमाम बच्चों के पास अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए ज़रूरी अवसर, साधन या पहुँच नहीं थी। रिपोर्ट में पाया गया कि महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर अत्यधिक निर्भरता ने शिक्षा सम्बन्धी सहायता के मौजूदा असमान वितरण को बढ़ावा दिया है। अनेक सरकारों के पास ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने के लिए ऐसी नीतियाँ, संसाधन या बुनियादी ढाँचा नहीं था जिससे कि सभी बच्चे समान रूप से शिक्षा हासिल कर सकें।

पृष्ठभूमि

बच्चों को शिक्षित करने की दशकों की धीमी लेकिन स्थायी गति मार्च 2020 में अचानक थम गई। अप्रैल तक नोवल कोरोनावायरस का प्रसार रोकने के लिए देश के करोड़ों विद्यार्थियों को उनके पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में जाना बन्द करना पड़ा। बाद में देश के कुछ हिस्सों में कुछ विद्यार्थियों के लिए स्कूल फिर से खोले गए, जबकि अन्य जगहों पर स्कूलों में विद्यार्थियों की वापसी नहीं हो पाई है। स्कूल बन्द होने के दौरान ज़्यादातर स्थानों पर शिक्षा या तो ऑनलाइन या अन्य दूरस्थ तरीक़ों से प्रदान की गई, लेकिन इसकी सफलता और गुणवत्ता में भारी अन्तर है। इंटरनेट तक पहुँच, कनेक्टिविटी सुलभता, भौतिक तैयारी, शिक्षकों के प्रशिक्षण और घर की परिस्थितियाँ समेत कई मुद्दों ने दूरस्थ शिक्षा की व्यवहार्यता को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया है।

ह्यूमन राइट्स वॉच की सीनियर एजुकेशन रिसर्चर एलिन मार्टिनेज ने कहा, "महामारी के दौरान लाखों बच्चों के शिक्षा से वंचित होने के कारण अब समय आ गया है कि बेहतर और अधिक न्यायपूर्ण एवं मज़बूत शिक्षा-प्रणाली का पुनर्निर्माण कर शिक्षा के अधिकार की सुरक्षा को सुदृढ़ किया जाए। इसका उद्देश्य सिर्फ़ महामारी से पहले की स्थिति बहाल करना नहीं, बल्कि व्यवस्था की उन ख़ामियों को दूर करना होना चाहिए जिनके कारण लम्बे समय से स्कूल के दरवाज़े सभी बच्चों के लिए खुले नहीं हैं।"

लेकिन इस मुद्दे पर सरकारें और ग़ैर-सरकारी शैक्षिक संगठन दोनों ही बहुत ज़्यादा काम नहीं कर पाए। फ़ौरी तौर पर कुछ प्रयास तो हुए लेकिन वे प्रयास सुसंगत नहीं होने के कारण बहुत सफल नहीं हो सके। इसी कड़ी में भारत में भी कई राज्यों ने सरकारी प्रयासों से ऑनलाइन शिक्षण के साथ ही अन्य कई तरीक़ों से बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने की शुरुआत करने की कोशिश की। लेकिन वंचित और ग्रामीण परिवारों के बच्चों तक यह प्रयास नहीं पहुँच पाए क्योंकि वे पर्याप्त डिवाइस या इंटरनेट नहीं ख़रीद सकते थे। कम संसाधनों वाले स्कूलों, जिनके विद्यार्थी पहले से ही शिक्षा सम्बन्धी बड़ी बाधाओं का सामना कर रहे थे, ने डिजिटल सीमाओं के समक्ष अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने में विशेष कठिनाइयों का सामना किया। शिक्षा-प्रणाली विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ऐसा डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करने में अक्सर विफल रही है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि विद्यार्थी और शिक्षक इन तकनीकों का आत्मविश्वास के साथ और सुरक्षित उपयोग कर सकें।

ऐसे विकट समय में शिक्षा के अकादमिक और प्रबन्धन के स्तर पर काम करने वाले सरकारी और ग़ैर-सरकारी शैक्षिक संगठनों की ज़िम्मेदारी में बढ़ोतरी हुई है। देश के शैक्षिक वर्ग, विद्यार्थी और अभिभावक इन संस्थानों की ओर हसरत भरी नज़रों से देख रहे हैं। एनसीईआरटी, एससीईआरटी, डाइट, बीआरसी और सीआरसी जैसे संस्थान वर्तमान परिस्थितियों में अपनी भूमिका को अपडेट करने में प्रयत्नशील हैं। लेकिन करोड़ों बच्चे जो बग़ैर औपचारिक शिक्षा प्राप्त किए निरन्तर दो सत्रों (2020-21, 2021-22) से प्रोन्नत होकर अगली कक्षा में जा रहे हैं, लर्निंग गैप की समस्या से जूझ रहे हैं। यह समस्या आगे कितने समय तक उनके साथ चलती रहेगी इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। प्लान बनाकर हरेक गाँव–देहात तक शिक्षा को सरल, प्रामाणिक और व्यवहारिक बनाने की ज़िम्मेदारी ज़िले से लेकर स्कूल स्तर तक की है। जो लोग या

संस्थाएँ किसी क्षेत्र विशेष के बच्चों के साथ निरन्तर काम कर रही हैं उन्हें योजना बनाते और उसे लागू करते समय उस क्षेत्र की परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए और समय-समय पर उसकी समीक्षा करनी चाहिए।

सरकारी स्तर पर एससीईआरटी ने राज्य स्तर पर बच्चों को शिक्षित करने के ऑनलाइन तरीक़ों को अपनाया है। व्हाट्सऐप के माध्यम से वर्कशीट, वीडियो, क्विज़ आदि को बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। कुछ हद तक यह प्रयास कारगर भी सिद्ध हुए, लेकिन पहले बताई जा चुकी दिक़्क़तों के अलावा कुछ और दिक़्क़तें भी थीं। जैसे कि शिक्षण-सामग्री बच्चों के स्तर के अनुरूप नहीं थी क्योंकि इन सामग्रियों को तैयार करने से पहले बच्चों के शैक्षणिक स्तर का कोई आकलन नहीं किया गया था। साथ ही शिक्षण-सामग्री शिक्षकों की मदद के बिना तैयार की गई थी। क्षेत्रीय परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखा गया था। यह व्यवस्था एससीईआरटी के स्तर पर की गई थी और इसमें अन्य शैक्षिक संस्थाओं का प्रत्यक्ष रूप से कोई दख़ल नहीं था। यही कारण था कि अन्य योजनाओं की तरह धरातल तक आते-आते यह कार्य अरुचिपूर्ण हो गए और व्यवस्थित रूप से कार्य नहीं हो सका।

बहुत सारी सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ निरन्तर कई दशकों से शिक्षा के लिए कार्य कर रही हैं, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में वे अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से संचालित नहीं कर पाईं। जबकि आवश्यकता थी कि वे अपने ज़िले/क्षेत्र के अनुसार बदली हुई परिस्थितियों में बच्चों के लिए योजना बनातीं और काम करतीं।

सरकारी संस्थान

ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (District Institutes of Educational Training)

ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) एक ज़िले के भीतर की शैक्षिक संस्थाओं और स्कूलों के लिए मार्गदर्शन के केन्द्रों के रूप में स्थापित किए गए हैं। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित डाइट शिक्षा के क्षेत्र में लाइट हाउस है। डाइट को शिक्षण-अधिगम संसाधनों को बनाने और प्रदान करने, क्रियात्मक अनुसन्धान को बढ़ावा देने, गतिविधि-आधारित शिक्षा प्रदान करने, आवश्यकता आधारित कार्यक्रमों की व्यवस्था करने, अध्यापकों को मदद करने का काम सौंपा गया है। डाइट की ज़िम्मेदारियों में शिक्षण की शैक्षिक प्रौद्योगिकी से परिचय कराना और मूल्यांकन की आधुनिक विधियों से अवगत कराना भी शामिल है।

वर्तमान परिस्थितियों में डाइट अपनी इन्हीं भूमिकाओं को और अधिक समृद्ध करते हुए यदि शिक्षकों और बच्चों के साथ ज़मीनी स्तर पर कार्य करने की योजना बनाए तो जिन बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षण की सुविधाएँ नहीं हैं, उनके लर्निंग गैप को कम करने के प्रयास किए जा सकते हैं।

इसके लिए निम्न कार्य किए जा सकते हैं :

- पूरे ज़िले को भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक आधार पर चिह्नित करना।
- चिह्नित क्षेत्रों के लिए वहाँ कार्यरत शिक्षकों का समूह बनाकर बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकताओं का आकलन करना।
- इस आकलन के आधार पर कम समयावधि के ऐसे कोर्सेस तैयार करना, जो बच्चों की विषयगत बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। जिनके पास ऑनलाइन संसाधन हों उन तक ऑनलाइन माध्यम से तथा अन्य बच्चों के पास शिक्षक को अपनी पहुँच बनाकर काम करना चाहिए ।
- शिक्षकों के साथ इस सम्बन्ध में प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, बैठकों आदि के माध्यम से निरन्तर चर्चा करना ताकि समय–समय पर योजना की समीक्षा और आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए जा सकें।
- हरेक बच्चे के लिए तय किए गए प्लान के प्रभावी तथा समयबद्ध मूल्यांकन की व्यवस्था करना ताकि पता चलता रहे कि हरेक बच्चे के साथ किन लर्निंग आउटकम्स पर काम किया जाना शेष है।
- बच्चों के लिए उनके स्तर के अनुसार वर्कशीट आदि का निर्माण शिक्षकों की मदद से करना।
- इस पूरे प्लान में वर्कशीट, शिक्षण-अधिगम सामग्री, पुस्तकालय की पुस्तकें आदि को पर्याप्त स्थान देना होगा ताकि बच्चे शिक्षण के प्रभावी संसाधनों के रूप में इनका उपयोग कर सकें।
- इस पूरी प्रक्रिया में अभिभावकों और गाँव के शिक्षित व्यक्तियों को भी सरल और व्यवहारिक प्रशिक्षण देकर स्वयंसेवक के रूप में तैयार करना होगा ताकि वे अपने परिवार, पड़ोस और मोहल्ले के बच्चों के साथ काम कर सकें।

इस प्रकार डाइट संस्थानों को अब वास्तविक रूप में लाइट हाउस का काम करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि डाइट शिक्षकों, बीआरसी, सीआरसी के अतिरिक्त शिक्षा में कार्य करने वाले अन्य संगठनों के साथ समन्वय स्थापित करें ताकि इस कार्य में सभी का अपेक्षित सहयोग प्राप्त किया जा सके।

ब्लॉक रिसोर्स सेंटर्स (बीआरसी)

बीआरसी ब्लॉक स्तर पर ज़िला शिक्षा अधिकारी के साथ क्लस्टर रिसोर्स सेंटर्स (सीआरसी) से समन्वय करके यह सुनिश्चित करती हैं कि विभिन्न सरकारी योजनाएँ विद्यालय स्तर तक पहुँचे, जैसे कि :

1. स्कूलों के भौतिक बुनियादी ढाँचे जैसे कि कक्षाओं, चारदीवारी, शौचालय आदि बनाने के लिए अनुमोदन करना।
2. जिन बच्चों के घर स्कूल से दूर हैं उनके लिए ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का अनुमोदन करना।
3. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री और उपकरण प्रदान करना।

प्रत्येक बीआरसी में पाँच-छह सदस्य होते हैं, जो अपने ब्लॉक के विद्यालयों का निरन्तर निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण करते हैं। उनके अवलोकन सीआरसी के साथ साझा किए जाते हैं और इनके आधार पर योजना, प्रशिक्षण और शिक्षा में गुणवत्ता-सुधार की योजना बनाई जाती है।

बीआरसी के कार्यों में शामिल हैं :

- प्रारम्भिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षणों का आयोजन करना।
- विद्यालयों के कार्यों को सुव्यवस्थित करने एवं सुधारने के लिए सीआरसी को सहयोग करना।
- शिक्षा के अधिकार (आरटीई) क़ानून के अन्तर्गत प्रावधानों के क्रियान्वयन में एनजीओ एवं स्थानीय प्रशासन का सहयोग करना।

बीआरसी की अपने ब्लॉक में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि बीआरसी अपने सदस्यों व अन्य संसाधनों को बच्चों के साथ काम करने में लगा दें तो बच्चों को फ़ायदा होता है। उदाहरण के लिए, वर्तमान में जब स्कूल बन्द हैं तो बीआरसी सामुदायिक कक्षाएँ प्रारम्भ करने के लिए अपने मानव संसाधनों का इस्तेमाल कर सकती है। साथ ही इन सामुदायिक कक्षाओं के लिए बच्चों के स्तर व आवश्यकता अनुसार सामग्री तैयार करने, बच्चों को पढ़ाने व समय-समय पर उनका आकलन करने के लिए सामुदायिक स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित कर सकती है।

वर्तमान परिस्थितियों में बीआरसी अपने इन्हीं कार्यों को अपडेट करते हुए डाइट के साथ समन्वय बनाकर बच्चों के लर्निंग गैप को दूर करने का प्रयास कर सकती है। इससे स्कूल बन्द पर होने पर बच्चे जिस कक्षा में थे कम-से-कम उस कक्षा-स्तर को बनाए रखने में कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। इसके लिए बीआरसी को निम्न कार्य करने होंगे :

- डाइट व अन्य संस्थाओं से समन्वय स्थापित करना।
- *कोविड-19* से उत्पन्न हालातों में बच्चों के साथ कैसे काम किया जाए इस पर शिक्षकों के साथ चर्चा करना और शिक्षकों के अनुभव के आधार पर मॉड्यूल बनाकर ऑनलाइन कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण आयोजित करना।
- स्कूलवार योजना बनाना ताकि सभी बच्चों तक शिक्षकों की पहुँच सुनिश्चित हो सके।
- स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर वर्कशीट व अन्य शिक्षण-सामग्री का निर्माण करना।
- विद्यालय निरीक्षण के दौरान शिक्षकों के अनुभवों/समस्याओं को सुनकर सकारात्मक फीडबैक देना।
- बच्चों के शिक्षण का सही तरह से मूल्यांकन हो यह सुनिश्चित करना।
- गाँवों में वालंटियर हेतु छोटे प्रशिक्षण आयोजित करना। गाँव के शिक्षित युवा या वे जो हायर सैकेण्डरी के स्तर पर पर पढ़ रहे हों, उन्हें अपने पास-पड़ोस या मोहल्ले के बच्चों को प्रारम्भिक भाषा या गणित पढ़ाने के लिए कहा जा सकता है।

क्लस्टर रिसोर्स सेंटर (सीआरसी)

विद्यालयों के साथ कार्यक्रमों को आयोजित करने वाली सभी शैक्षिक संस्थाओं से प्रत्यक्षत: सम्बद्ध सीआरसी ज़िला शिक्षा अधिकारी तथा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के साथ निकटता से कार्य करती है। पंचायत मुख्यालय के उच्चतर विद्यालय को सीआरसी बनाया जाता है, जिसके अधीन उस पंचायत के समस्त विद्यालय होते हैं।

सीआरसी के कार्य हैं :

- कक्षा अवलोकन करना और कक्षा-कक्षीय शिक्षण में शिक्षकों को सम्बलन प्रदान करना।
- विद्यालयों में नामांकन और ठहराव सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों की मासिक बैठकें, प्रशिक्षण आयोजित करना।
- स्कूल प्रबन्धन समिति, अभिभावकों, अन्य संस्थाओं से समन्वय स्थापित करना।

बदली हुई परिस्थितियों में सीआरसी स्कूल प्रबन्धन समिति, अभिभावकों और विभागीय अधिकारियों से चर्चा कर गाँव में 3-4 स्थानों पर शिक्षकों एवं स्वयंसेवकों की मदद से बच्चों के लिए सामुदायिक कक्षाएँ आयोजित कर सकती है। इसके लिए हरेक बच्चे का प्री-टैस्ट लेकर योजना बनाई जा सकती है। शिक्षकों से परामर्श करके यह तय किया जा सकता है कि बच्चों को क्या पढ़ाना है और मूल्यांकन की प्रक्रिया क्या होनी चाहिए।

सीआरसी शिक्षकों से यह चर्चा भी कर सकती है कि उपलब्ध संसाधनों की मदद से बच्चों को सीखने के कौन-से अवसर प्रदान किए जा सकते हैं ताकि वे भाषा और गणित के बुनियादी कौशलों को रोचक तरीक़े से सीख सकें। साथ ही उनके सीखने की निरन्तरता को भी सुनिश्चित किया जा सके। सीआरसी को स्थानीय भाषा में छोटी कविताएँ, कहानी आदि के चार्ट, छोटी किताबिया (बुकलेट) जैसी पाठ्यसामग्री निर्मित करने और इन्हें बच्चों तक पहुँचाने के लिए डाइट और अन्य शैक्षिक संस्थाओं से समन्वय स्थापित करना चाहिए।

कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

इस पूरी प्रक्रिया में ध्यान रखना होगा कि शिक्षक उपेक्षित न हों। पिछले कुछ समय से देखा जा रहा है कि पाठ्यपुस्तक से लेकर वर्कशीट-निर्माण तक का कार्य राज्य की कोई एक या दो संस्थाएँ मिलकर करती हैं। तैयार सामग्री को तय समय में लागू करने के निर्देश देते हुए शिक्षकों तक पहुँचा दिया जाता है। इसमें शिक्षकों की कोई रुचि नहीं होती है और इसे वे केवल सरकारी आदेश मानकर पूरा कर देते हैं। यदि वर्कशीट-निर्माण, बच्चों को पढ़ाने के तरीक़ों जैसे कार्यों में शिक्षकों को स्वतंत्रता दी जाए तो शायद परिणाम ज़्यादा बेहतर और असरकारी होंगे। इसके लिए समय-समय पर शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा में काम करने वाले समस्त लोगों और संस्थाओं को अपनी भूमिका के बारे में सोचना चाहिए। ख़ासतौर पर *कोविड-19* के अनुभव के बाद हमें इस विषय पर शोध करना चाहिए कि अलग-अलग परिस्थितियों में हम बच्चों के साथ कैसे काम कर सकते हैं ।

डाइट, बीआरसी, सीआरसी के साथ ही स्कूलों को भी इसका विश्लेषण करना चाहिए कि कितने विद्यार्थियों ने स्कूल छोड़ा और विद्यार्थियों में से कितनों ने स्कूल छोड़ा, कौन वापस आया और कौन नहीं। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्कूल वापसी कार्यक्रम पढ़ाई छोड़ने वाले सभी बच्चों की खोजबीन करे ताकि समस्त बच्चे जो पढ़ाई में पिछड़ने की समस्या से जूझ रहे हैं वे अपनी उम्र के उपयुक्त कक्षा-स्तर तक पहुँच सकें। हमें उन बच्चों के बारे में सोचना चाहिए जिनकी आर्थिक स्थिति महामारी के कारण प्रभावित हुई है और वे स्कूल नहीं आ पा रहे हैं और उन बच्चों के बारे में भी जिनके माता-पिता *कोविड-19* के संक्रमण के डर से उन्हें स्कूल नहीं भेज रहे हैं।

ऐसे बच्चों और उनके अभिभावकों के साथ निम्न चीज़ें की जा सकती हैं :

1. स्कूल प्रबन्धन समिति/डॉक्टर/शिक्षकों और अन्य प्रभावशाली लोगों जैसे कि सरपंच और जनप्रतिनिधियों द्वारा ऐसे बच्चों व अभिभावकों की काउंसलिंग की जानी चाहिए ताकि बच्चे स्कूल वापिस आ सकें।
2. बच्चों के वास्तविक कक्षा-स्तर और निर्धारित कक्षा-स्तर के बीच के अन्तराल को भरने के लिए बेसलाइन आकलन के आधार पर एक ब्रिज कोर्स तैयार किया जाना चाहिए।

Endnotes

i Years Don't Wait for Them: Increased Inequalities in Children's Right to Education Due to the COVID-19 Pandem-ic. https://www.hrw.org/report/2021/05/17/years-dont-wait-them/increased-inequalities-childrens-right-education-due-covid

ii NCERT: National Council of Educational Research and Training
SCERT: State Council of Educational Research and Training
DIET: District Institute of Educational Training
BRC: Block Resource Centre
CRC: Cluster Resource Centre

शुचि दुबे ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से डिजिटल इंस्ट्रूमेंटेशन में इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की है। 2014 में वह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फेलोशिप कार्यक्रम में शामिल हुईं और पाली ज़िले के बाली ब्लॉक में राजस्थान टीम के साथ काम किया। फेलोशिप पूरी करने के बाद उन्होंने 2020 तक गणित की समझ विकसित करने के लिए बाँसवाड़ा में शिक्षकों के साथ स्रोत व्यक्ति के तौर पर कार्य किया। मार्च 2021, से वह ज़िला संस्थान अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, सिरोही के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। उन्हें चित्र बनाना और बच्चों को कहानियाँ सुनाना बहुत पसन्द है। उनसे suchi.dubay@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आँगनवाड़ियों को पुनः खोलना | शिक्षकों को क्या करना चाहिए

योगेश जी आर

महामारी के कारण आँगनवाड़ी केन्द्र मार्च 2020 से बन्द हैं। लगभग दो वर्षों से आँगनवाड़ी जाने वाले बच्चे पोषण और सुरक्षित वातावरण के साथ-साथ सीखने के अनुभवों से भी वंचित हैं। बहुत-से बच्चे आँगनवाड़ी गए बिना ही सीधे प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेंगे। वर्तमान में ऐसे बहुत-से बच्चे या तो अपने माता-पिता के साथ उनके काम में हाथ बँटाने जाते हैं (मुख्यतः खेती का काम) या उनके दादा-दादी की देखभाल में छोड़ दिए जाते हैं।

छोटे बच्चों पर तालाबन्दी का असर

मस्तिष्क के विकास पर असर

बच्चे के शुरुआती वर्ष (0 से लेकर 8 वर्ष) वृद्धि और विकास के वर्ष होते हैं। मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाओं (न्यूरॉन) के बीच सम्पर्क बहुत तीव्र गति से बनते हैं। यदि इन शुरुआती वर्षों में बच्चों को अच्छा मनो-सामाजिक प्रेरक वातावरण मिलता है तो यह क्रिया और भी विस्तृत ढंग से होती है। शुरुआती बचपन में बच्चों के मस्तिष्क के परिपथ की परिपक्वता और मज़बूती उनके सम्पूर्ण विकास में योगदान देती है। बच्चों को ऐसे अनुभवों की आवश्यकता होती है जो उनके विकास के सभी क्षेत्रों में वृद्धि को बेहतर करें, जैसे शारीरिक/पेशीय, भाषागत, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और सृजनात्मक। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि दीर्घकालिक लाभ हेतु उनके विकास और सीखने के लिए इस अवधि का पूरा-पूरा उपयोग किया जाए।

तालाबन्दी के दौरान और उसके बाद भी आँगनवाड़ियों को बन्द रखने का नतीजा यह रहा कि बच्चे शिक्षकों और अपने साथियों के साथ व्यवस्थित जुड़ाव के अवसर से वंचित रहे और ऐसी गतिविधियों/ कार्यों से वंचित रहे जो गुणवत्तापूर्ण जुड़ाव को सम्भव बनाते हैं जिसके परिणामस्वरूप बेहतर शैक्षिक और सामाजिक विकास होता है, ख़ासकर असुरक्षित घरेलू वातावरण में रहने वाले बच्चों का। स्कूल-पूर्व समय में बच्चों के भीतर ध्यान लगाने, भावनाओं को सम्भालने और व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता का अच्छा-ख़ासा विकास होता है। इस समय का बेकार जाना बच्चों की स्कूली तैयारी के लिए आवश्यक कौशलों के विकास पर उलट प्रभाव डालता है। इन बच्चों को सीखने के अवसरों से वंचित रखना सामाजिक खाई को और भी चौड़ा करता है।

पोषण पर प्रभाव

एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) योजना के तहत आँगनवाड़ी बच्चों को प्रतिदिन गर्मा-गर्म मध्याह्न भोजन दिया जाता था। कई बच्चों के लिए सिर्फ़ यही सम्भवतः पूरे दिन में मिलने वाला पौष्टिक भोजन होता था। कुछ राज्यों में इसमें अण्डा, दूध और फोर्टिफाइड नाश्ता पूरक के तौर पर दिया जाता था। लॉकडाउन के दौरान मध्याह्न भोजन (एमडीएम) योजना बाधित हो गई और इससे बच्चों के समग्र पोषण स्तर पर असर पड़ा है। मध्याह्न भोजन की जगह आँगनवाड़ी शिक्षकों द्वारा घरों में मासिक राशन (टेक-होम राशन) पहुँचाया गया। लेकिन कुछ जगहों पर राशन नियमित नहीं पहुँच रहा था। और जहाँ यह पहुँच भी रहा था वहाँ कम मात्रा में पहुँच रहा था।

चूँकि तालाबन्दी के कारण अविभावकों की आजीविका प्रभावित हुई थी, इसलिए यह मानना ग़लत नहीं होगा कि बच्चों के लिए दिया जा रहा राशन उनके परिवार के बीच बँट रहा होगा। दिन में बच्चे को जो अण्डा मिलना चाहिए था, वह सम्भवतः अण्डा करी बनकर उसके परिवार के बीच बँटा होगा। आमतौर पर बच्चों को घर में दिन में दो बार भोजन मिलता है और कभी-कभी कुछ नमकीन बिस्कुटों के साथ एक कप चाय भी मिल जाती है। आमतौर पर नाश्ते की बजाय थोड़ी देरी से सीधे भोजन किया जाता है, जिसमें पिछले दिन के बचे हुए भात में पानी और नमक मिलाकर अचार के साथ खाया जाता है; या फिर मिर्च पाउडर, इमली के रस और नमक से बनी तरी के साथ भात खाया जाता है। कभी-कभी, भात या रोटियाँ उबली दाल, नमक और कुछ स्थानीय सब्ज़ियों के साथ खाई जाती हैं। अधिकतर, रात के खाने में भी यही होता है।

सन 2016-18[i] का व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण बताता है कि प्री-स्कूल में लगभग 35 प्रतिशत बच्चे नाटे थे; 17 प्रतिशत कमज़ोर थे; 33 प्रतिशत बच्चे कम वज़न के थे और 11 प्रतिशत अत्यधिक कुपोषित थे। आँगनवाड़ी बन्द होने ने इस स्थिति को और भी ख़राब कर दिया है और बच्चों की एक पूरी पीढ़ी पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला है।

खोए हुए अवसर और शिक्षकों को क्या करना चाहिए

आमतौर पर ढाई साल से अधिक उम्र के बच्चों को आँगनवाड़ी में दाख़िल किया जाता है। इनमें से अधिकांश दाख़िले साल की शुरुआत में होते हैं। एक साल में एक आँगनवाड़ी में लगभग 30-40 प्रतिशत नए बच्चे होते हैं, 30-40 प्रतिशत बच्चे ऐसे होते हैं जो डेढ़ साल से कम समय से आँगनवाड़ी आ रहे होते हैं, अन्य 20-30 प्रतिशत बच्चे आँगनवाड़ी में डेढ़ साल से अधिक समय से आ रहे होते हैं। आँगनवाड़ी शिक्षक बच्चों के इस बहु-आयु वर्ग को सम्भालने के अनुभवी होते हैं। अब इस आयु वर्ग के सभी बच्चे, जो लगभग दो साल से आँगनवाड़ी नहीं आए हैं, उनके अनुभव के हिसाब से समान स्तर पर होंगे। आँगनवाड़ी केन्द्र खुलने के बाद शिक्षक प्रतिदिन बच्चों के साथ बुनियादी गतिविधियाँ करके शुरुआत कर सकते हैं।

शिक्षकों को महीने-वार पाठ्यक्रम को पूरा कराने की बजाय बच्चों का आँगनवाड़ी आना सहज बनाने पर ध्यान देना चाहिए। फिर शिक्षक बच्चों को सरल और सार्थक गीतों, कहानियों, अन्दर और बाहर खेले जाने वाले खेलों और चित्र बनाने की गतिविधियों में जोड़ सकते हैं। शुरुआती चार से छह महीनों के लिए सभी आयु वर्ग के बच्चों के साथ एक सामान गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इसके बाद शिक्षक धीरे-धीरे आयु-वार अतिरिक्त गतिविधियाँ/ कार्य कराने की ओर बढ़ सकते हैं।

इसके अलावा, शिक्षकों को बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत करनी चाहिए और बच्चों को यह बताने का अवसर देना चाहिए कि वे क्या और कैसा महसूस कर रहे हैं। शिक्षकों को ज़रूरत है कि वे बच्चों को उनकी चिन्ताएँ साझा करने, सवाल करने, *कोविड-19* से सम्बन्धित अपने डर और भावनाओं को व्यक्त करने और अपने परिवारों और आस-पड़ोस में अनुभव किए गए इसके प्रभावों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सफ़ाई और शारीरिक स्वास्थ्य को लेकर ख़ास ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है। इसके लिए बच्चों में स्वच्छता की अच्छी आदतों को बढ़ावा देने पर ध्यान देना होगा, जैसे खाँसते और छींकते समय मुँह और नाक को ढँकना, बार-बार हाथ धोना और नाक, आँख और मुँह को छूने से बचना।

समूह-1 : तीन से चार वर्ष के बीच के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : ये वे बच्चे हैं जो आँगनवाड़ी बिल्कुल भी नहीं गए होंगे। उन्हें आँगनवाड़ी में अपने हमउम्र या अपने से थोड़े बड़े बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर नहीं मिला, साथ-ही-साथ उन्होंने आयु-उपयुक्त पाठ्यचर्या के तहत सीखने का अवसर भी खोया। हालाँकि, उनके पास अभी भी 4+ आयु वर्ग के साथ आँगनवाड़ी में छह-आठ महीने बिताने के लिए हो सकते हैं।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : ये बच्चे कभी आँगनवाड़ी नहीं आए होंगे, इसलिए पहले उन्हें आँगनवाड़ी केन्द्र से परिचित कराने की आवश्यकता है और शिक्षक द्वारा उनमें बुनियादी स्वच्छता सम्बन्धी आदतें डालने पर ध्यान दिया जा सकता है। एक बार जब बच्चे आँगनवाड़ी के वातावरण के आदी हो जाएँ, तब शिक्षक को बच्चों के साथ बुनियादी बातचीत, कहानी, कविता और खेल पर अच्छा-ख़ासा समय (दो से ढाई घण्टे) बिताने की ज़रूरत होगी।

समूह-2 : चार से पाँच वर्ष के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : चार से पाँच साल के बच्चों ने 2019 के मध्य या 2020 की शुरुआत में आँगनवाड़ी में आना शुरु किया होगा और छह से नौ महीने आँगनवाड़ी में बिताए होंगे। उन्होंने आँगनवाड़ी में अपने हमउम्र या अपने से थोड़े बड़े बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर खोया होगा और अपनी आयु-उपयुक्त पाठ्यचर्या, ख़ासकर संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-पूर्व की अवधारणाओं से जुड़ने का अवसर खोया होगा।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : समूह-1 की तरह के काम इन बच्चों के साथ करने के अलावा शिक्षक छह महीनों के बाद इस समूह के बच्चों के साथ संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-

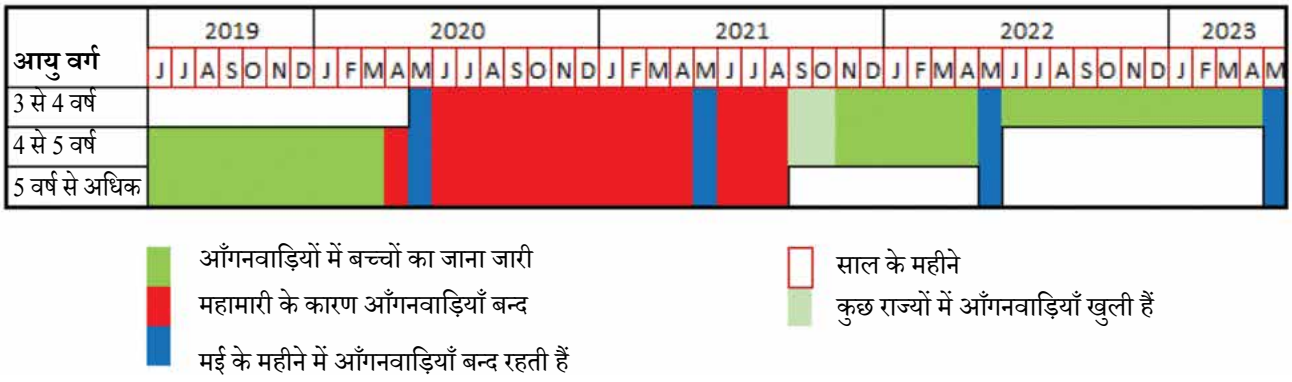

पूर्व की अवधारणाओं पर अधिक ध्यान देना शुरू कर सकते हैं ताकि ये बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार हो सकें।

समूह-3 : पाँच से अधिक उम्र के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : इस आयु वर्ग के बच्चों ने तालाबन्दी के पहले छह से नौ महीने तक बुनियादी अवधारणाएँ पढ़ी होंगी। उन्होंने न केवल विभिन्न क्षेत्रों में विकास के अवसरों का एक बड़ा हिस्सा खोया, बल्कि संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-पूर्व की अवधारणाओं से भी अवगत होने का अवसर खोया जो प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश के लिए महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : ये बच्चे सीधे प्राथमिक स्कूल (पहली कक्षा) में प्रवेश लेंगे, इसलिए प्राथमिक कक्षा के शिक्षक को पहली कक्षा का पाठ्यक्रम शुरू करने से पहले तीन से छह महीनों तक स्कूल की तैयारी वाली गतिविधियाँ करानी चाहिए। स्कूल शुरू होने तक ये बच्चे आँगनवाड़ी गतिविधियों का हिस्सा हो सकते हैं।

आँगनवाड़ियों के बन्द होने के कारण उचित पोषण में हुई कमी से उबरने के लिए आँगनवाड़ियों के दोबारा खुलने के छह महीनों तक अतिरिक्त पूरक भोजन जैसे अतिरिक्त अण्डे, फोर्टिफाइड दूध और नाश्ता देने की योजना बनाई जा सकती है।

पुन: शुरुआत अभी करें

उच्चतर माध्यमिक, उच्च प्राथमिक या प्राथमिक स्कूलों के खुलने से पहले आँगनवाड़ी केन्द्रों को प्राथमिकता के आधार पर खोलना चाहिए, क्योंकि इन सभी में से आँगनवाड़ी केन्द्र सबसे अधिक स्थानीय हैं। किसी विशिष्ट आँगनवाड़ी को खोलने या बन्द करने का निर्णय राज्य स्तर की परिस्थितियों की बजाय स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर ग्राम पंचायत स्तर पर लिया जाना चाहिए। बड़ी संख्या में ऐसे गाँव हैं जो पिछले छह माह से *कोविड-19* मुक्त हैं और यहाँ आँगनवाड़ियाँ खोली जा सकती थीं।

एक आँगनवाड़ी शिक्षिका ने बताया कि गाँवों में ज़्यादातर बच्चे वैसे भी अपनी गलियों में एक-दूसरे के साथ खेल रहे हैं। उन्होंने सवाल किया कि आँगनवाड़ी केन्द्र में खेलना और सीखना इससे ज़्यादा जोखिम भरा कैसे हो सकता है। शिक्षिका ने यह भी बताया कि चूँकि माता-पिता दोनों खेतों में काम करने जाते हैं, इसलिए वे बच्चों को खेतों में अपने साथ ले जाने और उनका धूप-बारिश से सामना कराने या फिर दादा-दादी के पास घर पर छोड़ने की बजाय आँगनवाड़ी में छोड़ने के लिए सहर्ष तैयार हैं। शहरी या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आँगनवाड़ी खुलना और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि महिलाएँ या तो दिहाड़ी मज़दूर हैं या घरेलू बाई का काम करती हैं और उनके पास घर पर बच्चों की देखभाल के लिए कोई सहायक नहीं होता। फिलहाल इन बच्चों को बड़े बच्चों की देखरेख में छोड़ दिया जाता है।

ग्राम पंचायतों के लिए टीकाकरण में तेज़ी लाने और अपने गाँवों में 70 प्रतिशत टीकाकरण का लक्ष्य हासिल करने को अनिवार्य किया जाना चाहिए। इसके बाद इन गाँवों में आँगनवाड़ी केन्द्रों का संचालन शुरू किया जाना चाहिए।

आँगनवाड़ियों को दोबारा खोलने से पहले शिक्षकों को ये कुछ बुनियादी तैयारियाँ करनी चाहिए :

1. चूँकि आँगनवाड़ियों का लम्बे समय से उपयोग नहीं हुआ है और कुछ स्थानों पर इनका उपयोग वितरण के राशन का भण्डारण करने के लिए किया जा रहा था इसलिए यह सुनिश्चित किया जाए कि आँगनवाड़ी बहुत अच्छे से साफ़ की गई हो।
2. खिड़कियों और दरवाज़ों को खुला रखकर कमरों को हवादार रखें।
3. खेलने और सीखने की सभी सामग्रियों को सैनिटाइज़/साफ़ करें।
4. स्वच्छता की आदतों के बारे में समुदाय में जागरूकता लाएँ।
5. यदि दाख़िलों की संख्या अधिक है तो शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँट सकते हैं और दोनों समूहों को बारी-बारी अन्दर और बाहर की जाने वाली गतिविधियाँ करा सकते हैं। हालाँकि, सभी गतिविधियाँ बाहर कराए जाने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए यदि इसके लिए स्थान उपलब्ध है तो।
6. आँगनवाड़ी में अन्य सेवाओं का लाभ लेने आने वाले अन्य सभी लाभार्थियों, जैसे गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं, को बच्चों से अलग रखें।

आँगनवाड़ी शिक्षकों का क्षमता-वर्धन

कार्यशालाओं में भाग लेने वाले कई शिक्षकों ने महसूस किया कि उनके शिक्षण कार्य में एक बड़ा अन्तराल रहा है, जिसके कारण शिक्षण दक्षताओं में उनका अपना विकास पीछे चला गया है। कुछ आँगनवाड़ी शिक्षक राशन वितरण के लिए बच्चों के घर जाने के समय बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते रहे हैं। आँगनवाड़ी शिक्षकों को विभिन्न तरीक़ों से ईसीई (प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा) के कार्यों से फिर से जोड़ना बहुत ज़रूरी है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अपना काम दोबारा सुचारु रूप से कर सकें। ये तरीक़े हो सकते हैं — हमारी कार्यशालाओं की शृंखला, खण्ड और परियोजना

स्तर की बैठकें तथा आँगनवाड़ी केन्द्रों पर उनके लिए मदद। शिक्षकों के साथ किए जाने वाले कार्यों का उद्देश्य पाठ्यचर्या गतिविधियों का अभ्यास होना चाहिए।

कार्यशालाओं के सत्रों में बुनियादी और उपयुक्त गतिविधियों जैसे स्वच्छता की अच्छी आदतों, गीतों, कहानियों, नाटकों और रचनात्मक गतिविधियों पर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे बच्चों के साथ अपने जुड़ावों में अधिक केन्द्र-आधारित सहयोग देने के लिए तैयार रहें।

Endnotes

i Comprehensive National Nutrition Survey 2016-18 conducted by the Union Health Ministry.

References

Ministry of Health and Family Welfare (2019). Comprehensive National Nutrition Survey (2016-2018) Reports. New Delhi. Government of India.

Early Childhood Education Initiative Sangareddy. (2021). ECE focus in phase 2. Sangareddy. Azim Premji Foundation.

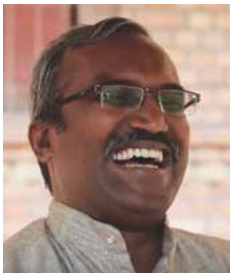

योगेश जी आर संगारेड्डी, तेलंगाना में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पहल का संचालन करते हैं। उन्होंने ईसीई में स्रोत व्यक्तियों की एक टीम का मार्गदर्शन करने में और आँगनवाड़ी शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए एक मापनीय बहु-विध जुड़ाव का तरीक़ा विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके पूर्व उन्होंने फ़ाउण्डेशन के पुडुचेरी ज़िला संस्थान में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए काम किया था। वे 22 से अधिक वर्षों से शिक्षा, आईटी और प्रबन्धन के क्षेत्रों में विभिन्न क्षमताओं में काम कर रहे हैं। उनसे yogesh.r@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** प्रतिका गुप्ता

कोरोना वायरस के बारे में बच्चों से बातचीत | कुछ स्रोत

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता

तीन साल की एक बच्ची 'कोरोना' के बारे में दूसरी बच्ची को बता रही थी। बड़ी-बड़ी सतर्क आँखें खोले वह अपनी दोस्त को खेल के मैदान में नहीं जाने के लिए आगाह कर रही थी क्योंकि 'वहाँ कोरोना है'। एक रोज़ उसने तब रोना ही शुरू कर दिया जब एक व्यक्ति बिना मास्क लगाए उसके पास आया। उसके माता–पिता ने उसमें वायरस का ऐसा डर बैठा दिया था कि घर के बाहर होने पर या अकेली होने पर भी वह हमेशा चौकन्नी रहती थी। माता–पिता की यह सावधानी समझ में आती है, लेकिन जब हम एक गम्भीर स्थिति की वास्तविकता को बच्चों के सामने हौवा खड़ा करते हुए पेश करते हैं, तो हम उन्हें तार्किक समाधान निकालने और अपने डर एवं व्यग्रता को व्यक्त नहीं कर पाने से पैदा होने वाले मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक नुक़सान के प्रति असुरक्षित छोड़ देते हैं। इस विषय में, शिक्षक, माता-पिता या बड़े भाई-बहनों जैसे सभी वयस्कों को चाहिए कि वे बच्चों को इस महामारी के बारे में आयु-उपयुक्त जानकारी दें, जैसे यह महामारी क्या है और कैसे फैलती है। साथ ही उन्हें सवाल पूछने और अपनी भावनाओं को साझा करने के अवसर भी दें।

यहाँ कहानी कहने वालों, शिक्षकों और माता-पिता द्वारा *कोविड-19* महामारी के बारे में बच्चों से बात करने के लिए रचे गए साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत है। शिक्षक इससे सीख लेते हुए बच्चों के सन्दर्भों के मुताबिक़ नई कहानियाँ रच सकते हैं। वे कक्षा में कहानी सुनाने या अन्य रोमांचक तरीक़ों, जैसे कि कठपुतलियों और रोल-प्ले के ज़रिए इन कहानियों को लेकर बच्चों के साथ काम कर सकते हैं।

प्रथम बुक्स का *स्टोरीवीवर* समुदाय

इस मंच की कल्पना वंचित परिवेश में रहने वाले बच्चों की मातृभाषा में पुस्तकों की पहुँच बढ़ाने के लिए की गई थी। यहाँ अधिकांश भारतीय (26) व विदेशी भाषाओं में कहानियाँ मुफ़्त उपलब्ध हैं।

कोरोनावाइरस : हम यूँ बच सकते हैं

लेखन और चित्रांकन दीपा बलसावर एवं अन्य

The Novel Coronavirus : We Can Stay Safe

Written and illustrated by Deepa Balsavar, et al.

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/128586-the-novel-coronavirus-we-can-stay-safe

कोविड-19 से प्रभावी रोकथाम के लिए एक बच्चे को अपने हाथों पर 20 सेकण्ड के लिए साबुन मलने के लिए कहना तो बहुत अच्छा है, लेकिन बच्चा 20 सेकण्ड के समय को कैसे मापेगा? इसके लिए यह क़िताब एक मज़ेदार उपाय सुझाती है, जो सभी बच्चों को पसन्द आएगा। इसमें दादी से लेकर बच्चों तक बहुत सारे पात्र हैं, जो *कोविड-19* से बचने के व्यवहारों का पालन करने के बारे में बात करते हैं, जैसे कि हाथ धोना, कोहनी में छींकना, एक-दूसरे से सुरक्षित दूरी बनाए रखना, आदि। यह स्कूलों के बन्द होने, लोगों को घरों के अन्दर ही रहने और उनके अकेलेपन के बारे में भी बात करती है। कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए यह एक बहुत अच्छा स्रोत है।

दिल में भी रोशनी!

लेखन : नेहा कुमार

चित्रांकन : अलीना अफयवन एवं अन्य

Lights in the Heart too!

Written by Neha Kumar

Illustrated by Alina Aphayvanh, et al.

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/127894-lights-in-the-heart-too

यह सरल कहानी जानवरों के प्रति दयालु होने, उन्हें खिलाने और उनकी देखभाल करने तथा अज्ञात वायरस के डर से उनको छोड़ न देने की बात को छूती है। बच्चों को इस बात से कुछ ढाढ़स बँधेगा कि बाक़ी बच्चे भी उन्हीं के जैसे हालात में हैं; यानी वे भी खेलने या स्कूल या बाज़ार जाने के लिए बाहर नहीं निकल सकते हैं।

कोरोना की कहानी — मैं हूँ रहीनो का भाई

लेखन : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

चित्रांकन : फ़्लोरीना जिओत्ता एवं अन्य

Corona story: I am Rahino's brother

Written by Omprakash Kshatriya 'Prakash'

Illustrated by Floriana Giotta, et al.

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/123427-corona-story-i-am-rahino-s-brother

एक बच्चे और कोरोना वायरस के बीच बातचीत का उपयोग यह समझाने के लिए किया गया है कि कैसे एक वायरस सामान्य सर्दी–ज़ुकाम का और *कोविड-19* का भी कारण बन सकता है। बच्चों को तार्किक रूप से यह समझाना ज़रूरी है कि हाथ धोने से कैसे बचाव हो सकता है, ताकि वे इसका पालन करें और यह कहानी इस बात को बख़ूबी समझाती है। लेकिन इसमें अणुओं और हाइड्रोजन बम की संरचना का भी उल्लेख है, तो अगर यह कहानी विज्ञान का कुछ ज्ञान रखने वाले बच्चों के लिए है तो यह बहुत छोटे बच्चों को अपने साथ जोड़ पाने में विफल हो सकती है और इसके लहजे और समझाने के तरीक़े के कारण बड़े बच्चों को यह बहुत साधारण लग सकती है। अँग्रेज़ी से अनुवाद करते समय स्थानीय भाषाओं में सही शब्दावली और उच्चारण की ध्वनियों का उपयोग करना महत्त्वपूर्ण है। अतः अँग्रेज़ी के 'राइनोवायरस' का हिन्दी में लिप्यान्तरण 'रहीनो' वायरस के रूप में नहीं किया जाना चाहिए था।

आप बदलाव ला सकते हैं : कोरोना की शृंखला तोड़िए

लेखन : रिद्धि नाथ

चित्रांकन : ख़ुशबू वाला एवं लौराइसा ब्लाओ

You can make the change : Break the chain of corona

Written by Riddhi Nath

Illustrated by Khushbu Vala and Louwrisa Blaauw

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/124803-you-can-make-the-change-break-the-chain-of-corona

वायरस वास्तविकता में कैसे फैलता है, इसका एक यथार्थवादी बयान। निश्चित ही, यह बच्चों के ज़ेहन में कोरोना सम्बन्धी प्रोटोकॉल को संक्षेप में और साफ़-साफ़ बिठा देगा।

अम्मा के नाम पत्र

लेखन एवं चित्रांकन : राम्या अय्यर

A Letter for Amma

Written and illustrated by Ramya Iyer

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/132886-a-letter-for-amma

एक नौ साल के बच्चे का अपनी माँ को पत्र, जो एक नर्स है और घर से दूर है; यह कहानी उन बच्चों की मदद कर सकती है जिनके परिवार के सदस्य कोविड-राहत के प्रयासों में लगे हुए हैं, ताकि बच्चे उनके लिए जो व्यग्रता महसूस करते हैं उसे खुलकर व्यक्त कर पाएँ।

बरगद के नीचे बैठे गाँव वालों का समूह

लेखन : एस्टेला रॉड्रिगस एवं अन्य

चित्रांकन : प्रशान्त कुमार सिंह एवं अन्य

A group of villagers sitting under a banyan tree

Written by Estella Rodrigues, et al.

Illustrated by Prashant Kumar Singh, et al.

लिंक : https://storyweaver.org.in/stories/257966-a-group-of-villagers-sitting-under-a-banyan-tree

शहरों से गाँवों को लौटने वाले मज़दूरों को अपने बीच जगह देने का रास्ता खोजने के लिए कैसे एक गाँव एक-साथ आता है। हालाँकि, गाँवों में लौटने वाले इन अपने ही लोगों से डरने का एक वास्तविक कारण भी है क्योंकि वे अपने साथ संक्रमण लेते हुए आ सकते हैं। ऐसे में, यह कहानी तार्किक सोच-विचार के साथ हालात को देखने और *क्वारंटाइन* एवं *आइसोलेशन* की आवश्यकता को समझने में बच्चों की मदद करेगी। यदि कभी बड़े लोग कोविड पॉज़िटिव लोगों पर आधारहीन कलंक लगाएँ तो उनसे सवाल करने के लिए भी यह कहानी बच्चों को तैयार कर सकती है।

मेयो क्लिनिक : अपने बच्चों से कोविड-19 के बारे में कैसे बात करें

[Mayo Clinic: How to talk to your kids about COVID-19]

माता-पिता और शिक्षक इस स्रोत का उपयोग बच्चों से इस बीमारी और इसके प्रभाव के बारे में बात करने के लिए कर सकते हैं। इसमें सुझाए गए तरीक़े बच्चों को तनाव और व्यग्रता से निपटने में मदद करेंगे। इसके अन्त में एक वीडियो भी है, जो जाँच के लिए नाक में फ़ाहा डालकर नमूना लेने के बारे में समझाता है, ताकि बच्चे इसे देखें और अगर कभी ऐसी जाँच ज़रूरी हो तो वे बिल्कुल न घबराएँ।

लिंक : https://www.mayoclinic.org/diseases-conditions/coronavirus/in-depth/kids-covid-19/art-20482508

यूनीसेफ : शिक्षक बच्चों से कोरोना वायरस बीमारी के बारे में कैसे बात कर सकते हैं

[UNICEF: How teachers can talk to children about coronavirus disease]

यहाँ हर उम्र/ स्तर के बच्चों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई

है। शिक्षक को इसमें दी गई जानकारी को अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और उनके सन्दर्भों के अनुरूप बनाकर उपयोग करना चाहिए।

लिंक : https://www.unicef.org/coronavirus/how-teachers-can-talk-children-about-coronavirus-disease-covid-19

कोरोना वायरस : बच्चों के लिए एक क़िताब

प्रकाशक : नोज़ी क्रो

लेखन : एलिज़ाबेथ जेनर, केट विल्सन एवं निआ रॉबर्ट्स

चित्रांकन : एलेक्स शैफ्लर

पठन : ह्यू बॉनविल

Coronavirus: A Book for Children

Published by Nosy Crow

Written by Elizabeth Jenner, Kate Wilson and Nia Roberts

Illustrated by Axel Scheffler

Read Aloud by Hugh Bonneville

नोज़ी क्रो, बाल साहित्य का प्रकाशन करने वाली एक स्वतंत्र ब्रिटिश कम्पनी है, जिसकी एक मुफ़्त ऑडियोबुक यूट्यूब [YouTube] पर है, जो कोरोना वायरस के बारे में बच्चों के लिए व्यापक जानकारी प्रदान करती है। यह एक सकारात्मक नोट पर समाप्त होती है कि यदि हम सभी कोविड के प्रोटोकॉल का पालन करते हैं, तो वह दिन जल्द ही आएगा जब हम इस वायरस पर जीत हासिल कर लेंगे और इस कठिन समय को अलविदा कह देंगे।

लिंक : https://youtu.be/fCjDo9SskQU

बच्चे, वायु और कोरोना : कौन जीतता है लड़ाई?

प्रकाशक : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

लेखन : रवीन्द्र खाईवाल एवं सुमन मोर

Kids, Vaayu & Corona: Who wins the fight?

Published by Ministry of Health and Family Welfare, Government of India

Written by Ravindra Khaiwal and Suman Mor

भारतीय बच्चों के लिए एक कॉमिक बुक, जिसमें 'वायु' नाम का एक सुपरहीरो है; इसे विशेष रूप से बच्चों को कोरोना वायरस के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रकाशित किया गया था। यह बीमारी के बारे में जागरूकता के अलावा बच्चों को सुरक्षित रहने के तरीक़े भी बताती है। नेक इरादे के साथ और अच्छी कल्पना होने के बावजूद इसे जल्दबाज़ी में अन्जाम दिया गया। इसमें कई टाइपोग्राफ़िक ग़लतियाँ हैं। आप सोच में पड़ सकते हैं कि सारी कहानी में सुपरहीरो का लहराता लबादा अन्तिम से एक पृष्ठ पहले कहाँ ग़ायब हो जाता है और क्यों वह कभी बोलने के बुलबुले [speech bubble] तो कभी सोचने के बुलबुले [thought bubble] के ज़रिए बोलता है! लेकिन, इन सभी कमियों के बावजूद, छोटे बच्चों को सुपरहीरो का विचार रोमांचक लग सकता है और इसलिए यह क़िताब उनसे बातचीत शुरू करने का एक अच्छा माध्यम हो सकती है।

PDF: https://online.ndmc.gov.in/covid19/images/corona-comic.pdf.pdf

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता 'लर्निंग कर्व' पत्रिका की सह–सम्पादक हैं। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में काम करती हैं। उनसे shefali.mehta@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** हिमालय तहसीन

पत्र, सम्पादक के नाम

लर्निंग कर्व की विषयवस्तु (यानी हर अंक में, शिक्षण के बारे में और अपनी कक्षाओं में दाख़िल होने वाले बच्चों की मानसिकता के बारे में हमारे शिक्षकों की समझ को विस्तार देने वाले प्रत्यक्ष व ज़मीनी अनुभव और विविध तरह के विषय) से गुज़रने पर इसके किसी एक अंक के बारे में यह कहना कि यह सबसे अच्छा अंक है, काफ़ी मुश्किल काम है। लेकिन मैं अपने पसन्दीदा अंक के बतौर उसे चुनूँगी जो मेरे दिल के क़रीब है और वह है 'खेल' पर आधारित अंक। खेल को हमारे देश में बहुत ही कमतर समझा जाता है और कम महत्त्व दिया जाता है। इसे समय की बर्बादी माना जाता है। खेल चिकित्सा का वह पहला रूप है जिसे हम स्वलीनता (autism) से पीड़ित किसी बच्चे द्वारा अपने इर्द-गिर्द बनाई गई दीवार को भेदने के लिए चुनते हैं। लर्निंग कर्व की आभारी हूँ कि उसने दिसम्बर,2019 के अंक (Perspectives on Teaching Children with Disabilities) में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के मुद्दों को उठाया। और मुझे महसूस हुआ कि मेरे नज़रिए, मेरी भावनाओं को सुना गया क्योंकि मैं एक विशेष अभिभावक के रूप में अपना नज़रिया व्यक्त कर पाई।

लर्निंग कर्व ने स्कूलों में शैक्षणिक विधियों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सराहनीय काम किया है और अगर यह सरकारी स्कूलों की ज़मीनी वास्तविकताओं में भी गहराई से दाख़िल हो सके तो बहुत अच्छा रहेगा। इन वास्तविकताओं से मेरा मतलब योजनाओं, नीतियों और वास्तव में उपलब्ध संसाधनों के बीच मौजूद व्यापक खाइयों से है। इस वजह से शिक्षक समझ नहीं पाते कि वे अपनी कक्षाओं में इन अद्भुत रणनीतियों को कैसे लागू करें।

लर्निंग कर्व के अप्रैल, 2020 के अंक (Every Child Can Learn - Part I) के एक लेख *हर बच्चे के लिए चार संक्रियाएँ* में स्वाती सरकार सही कहती हैं कि बच्चों द्वारा इबारती सवालों को हल न कर पाने का एक कारण है उन सवालों को समझ न पाना। अपनी स्नातक की पढ़ाई के दौरान मैंने देखा है कि होनहार होने के बावजूद ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी अँग्रेज़ी गद्य को पढ़कर समझने में और अँग्रेज़ी शब्दावली में कमज़ोर होने के कारण पढ़ाई में संघर्ष करते हैं और पीछे रह जाते हैं। अगर लर्निंग कर्व इस मुद्दे पर कुछ और प्रकाश डाल सके तो इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को मदद मिलेगी।

आशा है कि आपको मेरे ये विचार प्रासंगिक लगे होंगे। लर्निंग कर्व के अगले अंक की प्रतीक्षा है।

– ***अनुपमा राय,*** *कार्यकर्ता (rights of people with disabilities), नई दिल्ली*

मैं लर्निंग कर्व के हालिया अंक, 'Education for Citizenship' (अप्रैल,2021) के लिए अपनी सराहना व्यक्त करना चाहती हूँ। यह अंक बहुत सही समय पर आया है और इसमें एक ऐसे बेहद विवादास्पद विषय पर बारीक़ प्रतिक्रियाएँ शामिल की गई हैं कि जहाँ देशभक्ति, राष्ट्रवाद और नागरिकता के बोध को वफ़ादारी और अनुरूपता के प्रश्न से जोड़ा जा रहा है। संविधान से प्रेरणा लेने, और 'selfless goodness that is around us' (A. Madan, *Different Cultures of Citizenship*) यानी हमारे इर्द-गिर्द मौजूद निस्वार्थ अच्छाई के प्रति संवेदनशील होने के महत्त्व को समझने की बात, विरोध के प्रभाव और असहमति की ताक़त को लेकर गहराती निराशा के समय एक सकारात्मक सन्देश के रूप में उभरती है।

अरविन्द सरदाना शिक्षकों की स्वायत्तता को बढ़ावा देने के बारे में लिखते हैं और कार्रवाई के 'स्थानीय सन्दर्भ में सहज तरीक़े से प्रकट होने' की आवश्यकता पर टिप्पणी करते हैं। यह अंक उन विभिन्न तरीक़ों की खोज करता है जिनसे यह हो सकता है। जैसे पाठ्यपुस्तक की उस क्षमता को पहचानना कि जहाँ वह विशेष उदाहरणों का इस्तेमाल करके इस बात को प्रदर्शित करती है कि स्थानीय समुदायों में ज़िम्मेदार भागीदारी कैसी होती है; कक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति विकसित करना; और रचनात्मक कलाओं के माध्यम से न्याय से जुड़े मुद्दों को समझना। स्वयं स्कूल का ढाँचा भी लोकतंत्र का एक जीवन्त उदाहरण बन सकता है ताकि समावेशन सामान्य बन जाए और बच्चों को निर्णय लेने में भागीदारी करने का अनुभव मिले।

बच्चे चीज़ों को बड़ी चतुराई से देखते हैं व जिस बात का उपदेश दिया जा रहा हो और जो हक़ीक़त में किया जा रहा हो, अगर उसमें अन्तर्विरोध होते हैं तो इस पर भी बच्चे ग़ौर करते हैं। उपदेश दिए जाने व अभ्यास किए जाने के बीच अन्तर (विरोधाभास) को समझते हैं और इस अंक का प्रत्येक लेख इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि ज़िम्मेदार और विवेचनात्मक नागरिकता के ज़मीनी व्यवहार का क्या अर्थ है।

जेन साही, *शिक्षक एवं शिक्षक एजुकेटर, बेंगलूरु*

अनुवाद : अनुज उपाध्याय

Write to us at learningcurve@apu.edu.in

Earlier issues of the Learning Curve may be downloaded from
https://azimpremjiuniversity.edu.in/learning-curve

This magazine is also printed and published in Hindi and Kannada.

For suggestions, comments and to share your personal experiences, write to us at
learningcurve@apu.edu.in

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए
आदर्श प्रा.लि., 4 शिखरवार्ता,प्रेस काम्पलेक्स, जोन-1,एम.पी.नगर, भोपाल 462 011 से मुद्रित

एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66,बुरुगुंटे विलेज,बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा,बेंगलूरु,कर्नाटक - 562 125 से प्रकाशित
मुख्य सम्पादक : प्रेमा रघुनाथ

LEARNING *for* LIFE

Azim Premji University

UNDERGRADUATE PROGRAMMES 2022

Admissions Open!

3-Year B.A.

(Economics | English | History | Philosophy)

3-Year B.Sc.

(Biology | Mathematics | Physics)

4-Year B.Sc. B.Ed.

(Biology | Mathematics | Physics and Education)

Apply Now

E-mail: ugadmissions@apu.edu.in | Call +91 89718 89988 | www.azimpremjiuniversity.edu.in

अगला अंक

वर्कशीट के साथ काम करना

Azim Premji University
Survey No. 66, Burugunte Village
Bikkanahalli Main Road, Sarjapura
Bengaluru 562125, Karnataka

080-6614 4900
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity
Instagram: @azimpremjiuniv
Twitter: @azimpremjiuniv